ASTADHYAYI

Editor: Medhā Michika, AVG, Anaikatti



Published by:



Arsha Avinash Foundation 104 Third Street, Tatabad, Coimbatore 641012, India

> Phone: + 91 9487373635 E mail: <u>arshaavinash@gmail.com</u> <u>www.arshaavinash.in</u>

ओम्

श्रीपाणिनिमहामुनिविरचितः

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

aṣṭādhyāyīsūtrapāṭhaḥ of pāṇini

अनुवृत्तिवार्तिकपरिभाषासहितः With anuvṛtti, vārtika, and paribhāṣā

> सम्पादिका ब्रह्मचारिणी मेधा मिचिका आर्षविद्यागुरुकुलम्, आनैक्कृटी विक्रमसंवत् २०७०

Editress Brahmacārinī Medhā Michika

ओम् श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

वन्दे परमकारुण्यान् येषां वृद्धिगुणादयः । अस्मिन् ग्रन्थेऽनुवर्तेरन् शब्दार्थसुखसिद्धये ॥

> अथ श्रीपाणिनिमहामुनिविरचितः अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात् । कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ॥

वाक्यकारं वररुचिं भाष्यकारं पतञ्जलिम् । पाणिनिं सूत्रकारं च प्रणतोऽस्मि मुनित्रयम् ॥

अथ राब्दानुशासनम्

- 1. **अइउण्** 2. ऋऌक् 3. एओङ् 4. ऐऔच्
- 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ्
- 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव्

12. **कपय्** 13. शषसर् 14. हल्

इति माहेश्वरसूत्राणि ॥

अथ प्रथमोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| जन ग न | 114. |
|---|---|
| (वृद्धादिसंज्ञा-प्रकरणम्) | 1.1.23 बहु-गण-वतु-डति सङ्ख्या |
| 1.1.1 वृद्धिरादैच् वृद्धिः 3 | सङ्ख्या २५ |
| 1.1.2 अदेङ् गुणः गुणः 3 | 1.1.24 ष्-णान्ता षट् षट् 25 |
| 1.1.3 इको गुण-वृद्धी 6 | 1.1.25 डित च |
| 1.1.4 न धातुलोप आर्घधातुके न 6 | 1.1.26 क्त-क्तवतू निष्ठा |
| 1.1.5 क्कि ङति च | (सर्वनामसंज्ञा-प्रकरणम्) |
| 1.1.6 दीधी-वेवीटाम् | 1.1.27 सर्वादीनि सर्वनामानि |
| 1.1.7 हलोऽनन्तराः संयोगः | सर्वादीनि 32; सर्वनामानि 36 |
| 1.1.8 मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः | 1.1.28 विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ |
| 1.1.9 तुल्यास्य-प्रयत्नं सवर्णम् सवर्णम् 10 | 1.1. 2 9 न बहुव्री हों न 31 |
| (वा॰) ऋऌवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् | 1.1.30 तृतीयासमासे |
| 1.1.10 नाज्झलौ | 1.1.31 द्वन्द्वे च |
| 1.1.11 ईदूदेदु द्विवचनं प्रगृह्यम् | 1.1.32 विभाषा जिस 36 |
| ईदूदेद् 12; प्रगृह्यम् 19 | 1.1.33 प्रथम-चरम-तयाल्पार्ध-कतिपय- |
| 1.1.12 अदसो मात् | नेमाश्च |
| 1.1.13 शे | (वा॰) तीयस्य ङित्सु वा |
| 1.1.14 निपात एकाजनाङ् निपातः 15 | 1.1.34 पूर्व-परावर-दक्षिणोत्तरापराधराणि |
| 1.1.15 ओत् 16 | व्यवस्थायामसंज्ञायाम् |
| 1.1.16 सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे | 1.1.35 स्वमज्ञाति-धनाख्यायाम् |
| शाकल्यस्य, इतौ, अनार्षे 18 | 1.1.36 अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः |
| 1.1.17 ব্ৰুঃ: | (अव्यय-संज्ञाप्रकरणम्) |
| 1.1.18 উঁ | 1.1.37 स्वरादि-निपातमव्ययम् अव्ययम् 41 |
| 1.1.19 ईदूतौ च सप्तम्यर्थे | 1.1.38 तद्धितश्चासर्वविभक्तिः |
| 1.1.20 दा-धा घ्वदाप् | 1.1.39 कृन्मेजन्तः |
| 1.1.21 आद्यन्तवदेकस्मिन् | 1.1.40 त्तवा-तोसुन्-कसुनः |
| 1.1.22 तरप्-तमपौ घः | 1.1.41 अव्ययीभावश्च |

| (सर्वनामस्थानादिसंज्ञा-प्रकरणम्) | (लोपादिसंज्ञा-प्रकरणम्) |
|--|--|
| 1.1.42 शि सर्वनामस्थानम् सर्वनामस्थानम् ४३ | 1.1.60 अदर्शनं लोपः अदर्शनम् 61 |
| 1.1.43 सुडनपुंसकस्य | 1.1.61 प्रत्ययस्य लुक्-श्रु-लुपः |
| 1.1.44 न वेति विभाषा | 1.1.62 प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् 63 |
| 1.1.45 इग्यणः संप्रसारणम् | 1.1.63 न लुमताऽङ्गस्य |
| 1.1.46 आद्यन्तौ ट-कितौ | 1.1.64 अचोऽन्त्यादि टि |
| (परिभाषा-सूत्राणि) | 1.1.65 अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा |
| 1.1.47 मिद्चोऽन्त्यात् परः | 1.1.66 तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य निर्दिष्टे 67 |
| 1.1.48 एच इग्घस्वादेशे | 1.1.67 तस्मादित्युत्तरस्य |
| 1.1.49 षष्ठी स्थानेयोगा षष्ठी 55; स्थाने 51 | (ग्रह्ण-सूत्राणि) |
| 1.1.50 स्थानेऽन्तरतमः | 1.1.68 स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा |
| 1.1.51 उरण् रपरः | स्वं रूपम् ७२ |
| 1.1.52 अलोऽन्त्यस्य अलः 55; अन्त्यस्य 53 | 1.1.69 अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः |
| 1.1.53 ভিच | सवर्णस्य ७० |
| 1.1.54 आदेः परस्य | 1.1.70 तपरस्तत्कालस्य |
| 1.1.55 अनेकाल्-िशत् सर्वस्य | 1.1.71 आदिरन्त्येन सहेता |
| (स्थानिवद्भाव-सूत्राणि) | 1.1.72 येन विधिस्तदन्तस्य |
| 1.1.56 स्थानिवदादेशोऽनित्वधौ | (प॰) यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे |
| स्थानिवत् 58; आदेशः 59 | (वृद्धसंज्ञा-प्रकरणम्) |
| 1.1.57 अचः परस्मिन् पूर्वविधौ | 1.1.73 वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् वृद्धम् ७५ |
| अचः 59; परस्मिन् पूर्वविधौ 58 | (वा॰) वा नामधेयस्य वृद्धसंज्ञा वक्तव्या |
| 1.1.58 न पदान्त-द्विर्वचन-वरे-यलोप-स्वर- | 1.1.74 त्यदादीनि च |
| सवर्णानुस्वार-दीर्घ-जश्-चर्-विधिषु | 1.1.75 एङ् प्राचां देशे |
| न 59 | |
| 1.1.59 द्विर्वचनेऽचि | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

1.2.22 पूङ: त्तवा च

अथ प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः

| (ङित्-प्रकरणम्) | 1.2.23 नोपधात् थ-फान्ताद् वा वा 26 |
|---|---|
| 1.2.1 गाङ्-कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् ङित् 4 | 1.2.24 विश्व-लुञ्चृतश्च |
| 1.2.2 विज इट् इट् ३ | 1.2.25 तृषि-मृषि-कृशेः काश्यपस्य |
| 1.2.3 विभाषोणीः | 1.2.26 रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च |
| 1.2.4 सार्वधातुकमपित् अपित् 5 | (स्वर-प्रकरणम्) |
| (कित्-प्रकरणम्) | 1.2.27 ऊकालोऽज्झस्व-दीर्घ-प्रुतः |
| 1.2.5 असंयोगाल्लिट् कित् लिट् ६; कित् 26 | अच् 31; हस्वदी र्घप्रुतः 28 |
| 1.2.6 इन्धि-भवतिभ्यां च | 1.2.28 अचश्च |
| 1.2.7 मृड-मृद-गुध-कुष-क्रिश-वद-वसः | 1.2.29 उचैरुदात्तः |
| त्तवा त्तवा ८ | 1.2.30 नीचेरनुदात्तः |
| 1.2.8 रुद-विद-मुष-ग्रहि-स्वपि-प्रच्छः संश्च | 1.2.31 समाहारः स्वरितः |
| सन् 10 | 1.2.32 तस्यादित उदात्तमर्धहस्वम् |
| 1.2.9 इको झल इकः 11; झल 13 | (एकश्रुति-प्रकरणम्) |
| 1.2.10 हलन्ताच हलन्तात् 11 | 1.2.33 एकश्रुति दूरात् सम्बुद्धौ एकश्रुति 39 |
| 1.2.11 लिङ्-सिचावात्मनेपदेषु | 1.2.34 यज्ञकर्मण्यजप-न्यूङ्ख-सामसु |
| लिङ्सिचौ 13; आत्मनेपदेषु 17 | यज्ञकर्मणि 35 |
| 1.2.12 उश्च | 1.2.35 उच्चैस्तरां वा वषद्गारः |
| 1.2.13 वा गमः | 1.2.36 विभाषा छन्दसि |
| 1.2.14 हनः सिच् सिच् 17 | 1.2.37 न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः |
| 1.2.15 यमो गन्धने यमः 16 | सुब्रह्मण्यायाम्, स्वरितस्य 38 |
| 1.2.16 विभाषोपयमने | 1.2.38 देव-ब्रह्मणोरनुदात्तः |
| 1.2.17 स्था-घ्वोरिच | 1.2.39 स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम् |
| 1.2.18 न त्तवा सेट् न 22; सेट् 26 | संहितायाम्, अनुदात्तानाम् 40 |
| 1.2.19 निष्ठा शीङ्-स्विदि-मिदि-क्ष्विदि-धृषः | 1.2.40 उदात्त-स्वरितपरस्य सन्नतरः |
| निघा 22 | (अपृक्तादिसंज्ञा-प्रकरणम्) |
| 1.2.20 मृषस्तितिक्षायाम् | 1.2.41 अपृक्त एकाल् प्रत्ययः |
| 1.2.21 उद्दुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् | 1.2.42 तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः |

त्तवा 26

| 1.2.43 प्रथमानिर्दिष्टं समा | ास उपसर्जनम् | 1.2.60 फल्गुनी-प्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे नक्षत्रे 62 |
|------------------------------|---------------------------|--|
| | समासे, उपसर्जनम् ४४ | 1.2.61 छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् |
| 1.2.44 एकविभक्ति चापूर्व | ो निपाते | छन्दसि, एकवचनम् 62 |
| 1.2.45 अर्थवद्धातुरप्रत्य | यः प्रातिपदिकम् | 1.2.62 विशाखयोश्च |
| | प्रातिपदिकम् ४६ | 1.2.63 तिष्य-पुनर्वस्वोर्नक्षत्र-द्वन्द्वे बहुवचनस्य |
| 1.2.46 कृत्-तद्धित-समार | पाश्च | द्विवचनं नित्यम् |
| 1.2.47 हस्वो नपुंसके प्रा | तिपदिकस्य | (एकदोष-प्रकरणम्) |
| | इस्वः, प्रातिपदिकस्य 48 | 1.2.64 सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ |
| 1.2.48 गो-स्त्रियोरुपसर्ज | | एकशेषः 73 |
| | स्त्री, उपसर्जनस्य ४९ | (वा॰) विरूपाणामपि समानार्थानाम् |
| 1.2.49 लुक् तिद्धतलुकि | तिद्धतलुकि 50 | 1.2.65 वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः |
| 1.2.50 इद् गोण्याः | | वृद्धः, यूना ६६; तस्रक्षणश्चेदेव विशेषः ६९ |
| (सङ्ख्यातिदेश | • | 1.2.66 स्त्री पुंवच |
| 1.2.51 लुपि युक्तवद् व्यक्ति | क्तेवचने 52 | 1.2.67 पुमान् स्त्रिया |
| 1.2.52 विशेषणानां चाज | ातेः | 1.2.68 भ्रातृ-पुत्रौ स्वसृ-दुहितृभ्याम् |
| 1.2.53 तद्शिष्यं संज्ञाप्रम | गणत्वात् | 1.2.69 नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् |
| | तद् अशिष्यम् 57 | अन्यतरस्याम् ७१ |
| 1.2.54 लुब् योगाप्रख्यान | गत् | 1.2.70 पिता मात्रा |
| 1.2.55 योगप्रमाणे च तद | | 1.2.71 भ्रशुरः भ्रश्र्वा |
| 1.2.56 प्रधानप्रत्ययार्थवन | वनमर्थस्यान्य- | 1.2.72 त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् |
| प्रमाणत्वात् अ | र्थस्यान्यप्रमाणत्वात् ५७ | (वा॰) त्यदादीनां मिथः सहोक्तौ यत्परं |
| 1.2.57 कालोपसर्जने च | तुल्यम् | तच्छिष्यते |
| 1.2.58 जात्याख्यायामेक | स्मिन् बहुवचन- | (वा॰) पूर्वशेषोऽपि दृश्यते |
| मन्यतरस्याम् | एकस्मिन् 59; | (वा॰) त्यदादितः शेषे पुंनपुंसकतः लिङ्गवचनानि |
| | १ 60; अन्यतरस्याम् 62 | 1.2.73 ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री |
| 1.2.59 अस्मदो द्वयोश्च | द्वयोः 61 | |
| | • | ~ ~ |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

अथ प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः

| (संज्ञा-प्रकरणम्) | 1.3.25 उपान् मन्त्रकरणे उपात् 26 |
|--|--|
| 1.3.1 भूवाद्यो धातवः धातवः 13 | 1.3.26 अकर्मकाच अकर्मकात् 29 |
| 1.3.2 उपदेशेऽजनुनासिक इत् उपदेशे, इत् 8 | 1.3.27 उदु-विभ्यां तपः |
| | 1.3.27 उ द्-ापम्या तपः 1.3.28 आङो यम-हनः |
| 1.3.3 ६०,न्त्यम् 1.3.4 न विभक्तौ तु-स्-माः | |
| 0 | 1.3.29 समो गम्यृच्छिभ्याम् |
| | 1.3.30 नि-समुप-विभ्यो ह्वः ह्वः 31 |
| 1.3.6 षः प्रत्ययस्य प्रत्ययस्य 8 | (वा॰) उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वेति वाच्यम् |
| 1.3.7 चु-टू | 1.3.31 स्पर्धायामाङः |
| 1.3.8 ਲ-श-क्वतिद्विते | 1.3.32 गन्धनावक्षेपण-सेवन-साहसिक्य-प्रति- |
| 1.3.9 तस्य लोपः | यत्न-प्रकथनोपयोगेषु कुञः कुञः ३५ |
| 1.3.10 यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् | 1.3.33 अधेः प्रसहने |
| 1.3.11 स्वरितेनाधिकारः | 1.3.34 वेः शब्दकर्मणः वेः 35 |
| (आत्मनेपद्-प्रकरणम्) | 1.3.35 अकर्मकाच |
| 1.3.12 अनुदात्त-िङत आत्मनेपदम् | 1.3.36 सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरण-ज्ञान-भृति- |
| आत्मनेपदम् ७७ | विगणन-व्ययेषु नियः नियः 37 |
| 1.3.13 भाव-कर्मणोः - '० - ' ० - ` | 1.3.37 कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि |
| 1.3.14 कर्तारे कर्मव्यतिहारे कर्तारे 93; कर्मव्यतिहारे 16 | 1.3.38 वृत्ति-सर्ग-तायनेषु क्रमः |
| C C 1 | वृत्तिसर्गतायनेषु ३९; क्रमः ४३ |
| 1.3.15 न गात-ाहसाथभ्यः न 16 1.3.16 इतरेतरान्योऽन्योपपदा च | 1.3.39 उप-पराभ्याम् |
| 1.3.16 इतरतरान्याऽन्यापपदाच 1.3.17 नेविंशः | 1.3.40 आङ उद्गम ने |
| | 1.3.41 वेः पादविहरणे |
| 1.3.18 परि-व्यवेभ्यः क्रियः | 1.3.42 प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् |
| 1.3.19 वि-पराभ्यां जेः | 1.3.43 अनुपसर्गाद् वा |
| 1.3.20 आङो दोऽनास्यविहरणे आङः 21 | 1.3.44 अपह्नवे ज्ञः |
| 1.3.21 क्रीडोऽनु-सं-परिभ्यश्च | 1.3.45 अकर्मकाच |
| 1.3.22 समव-प्र-विभ्यः स्थः स्थः 26 | 1.3.46 संप्रतिभ्यामनाध्याने |
| 1.3.23 प्रकाशन-स्थेयाख्ययोश्च | 1.3.47 भासनोपसम्भाषा-ज्ञान-यत्न-विमत्युप- |
| 1.3.24 उदोऽनूर्ध्वकर्मणि | मन्त्रणेषु वदः वदः 50 |
| | |

| 1.3.48 व्यक्तवाचां समुचारणे 50 | 1.3.72 स्वरित-ञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले |
|---|--|
| 1.3.49 अनोरकर्मकात् | कर्त्रभिप्राये क्रियाफले <i>77</i> |
| 1.3.50 विभाषा विप्रलापे | 1.3.73 अपाद् वदः |
| 1.3.51 अवादु ग्रः ग्रः 52 | 1.3.74 णिचश्च |
| 1.3.52 समः प्रतिज्ञाने | 1.3.75 समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे |
| 1.3.53 उदश्चरः सकर्मकात् चरः 54 | 1.3.76 अनुपसर्गाज् ज्ञः |
| 1.3.54 समस्तृतीयायुक्तात् 55 | 1.3.77 विभाषोपपदेन प्रतीयमाने |
| 1.3.55 दाणश्च सा चेचतुर्थ्यर्थे | (परस्मैपद-प्रकरणम्) |
| (वा॰) अशिष्ट-व्यवहारे तृतीया चतुर्थ्यर्थे | 1.3.78 शेषात् कर्तरि परस्मैपद्म् |
| 1.3.56 उपाद्यमः स्वकरणे | कर्तारे परस्मैपदम् 93 |
| | 1.3.79 अनु-पराभ्यां कृञः |
| 1.3.57 ज्ञा-श्रु-स्मृ-दृशां सनः सनः 59 1.3.58 नानोर्ज्ञः न 59 | 1.3.80 अभि-प्रत्यतिभ्यः क्षिपः |
| | 1.3.81 प्राद् वहः |
| 1.3.59 प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः | 1.3.82 परेर्मृषः |
| 1.3.60 शदेः शितः शितः 61 | 1.3.83 व्याङ्-परिभ्यो रमः रमः 85 |
| 1.3.61 म्रियतेर्लुङ्-लिङोश्च | 1.3.84 उपाच उपात् 85 |
| 1.3.62 पूर्ववत् सनः | 1.3.85 विभाषाऽकर्मकात् |
| 1.3.63 आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य | 1.3.86 बुध-युध-नश-जनेङ्-प्रु-द्रु-स्रुभ्यो णेः |
| 1.3.64 प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु | णेः 89 |
| 1.3.65 समः क्ष्णुवः | 1.3.87 निगरण-चलनार्थेभ्यश्च |
| 1.3.66 भुजोऽनवने | 1.3.88 अणावकर्मकाचित्तवत्कर्तृकात् |
| 1.3.67 णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ता- | 1.3.89 न पा-दम्याङ्यमाङ्यस-परिमुह-रुचि- |
| ऽनाध्या ने णे 71 | नृति-वद-वसः |
| 1.3.68 भी-स्म्योर्हेतुभये | 1.3.90 वा क्यषः वा 93 |
| 1.3.69 गृधि-वञ्चोः प्रलम्भने प्रलम्भने ७० | 1.3.91 सुद्भ्यो लुङि |
| 1.3.70 लियः संमानन-शालिनीकरणयोश्च | 1.3.92 वृद्भ्यः स्य-सनोः स्यसनोः 93 |
| 1.3.71 मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यासे | 1.3.93 लुटि च क्रृपः |
| | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथ प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः

| (एकसंज्ञाधिकारः) | | (कारकसंज्ञा-प्रकरणम्) |) |
|---------------------------------|------------------|--|------------------|
| 1.4.1 आ कडारादेका संज्ञा | 2.2.38 | 1.4.23 कारके | 55 |
| 1.4.2 विप्रतिषेधे परं कार्यम् | | 1.4.24 ध्रुवमपायेऽपादानम् | अपादानम् ३१ |
| (नद्यादिसंज्ञा-प्रकरणम | I) | 1.4.25 भी-त्रार्थानां भयहेतुः | |
| 1.4.3 यू स्त्र्याख्यौ नदी | 6 | 1.4.26 पराजेरसोढः | |
| (वा॰) प्रथमिलङ्गग्रहणं च | | 1.4.27 वारणार्थानामीप्सितः | |
| 1.4.4 नेयङुवङ्स्थानावस्त्री | 6 | 1.4.28 अन्तर्धों येनादर्शनमिच्छति | |
| 1.4.5 वाऽऽमि | वा 6 | 1.4.29 आख्यातोपयोगे | |
| 1.4.6 ङिति ह्रस्वश्च | ह्रस्वः ७ | 1.4.30 जनिकर्तुः प्रकृतिः | कर्तुः 31 |
| 1.4.7 शेषो घ्यसिव | घि 9 | 1.4.31 भुवः प्रभवः | |
| 1.4.8 पतिः समास एव | पतिः 9 | 1.4.32 कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रद | ानम् |
| 1.4.9 षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा | | | संप्रदानम् ४१ |
| 1.4.10 हस्वं लघु | हस्वम् 11 | (वा॰) क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि स | ांप्रदानम् |
| 1.4.11 संयोगे गुरु | गुरु 12 | 1.4.33 रुच्यर्थानां प्रीयमाणः | |
| 1.4.12 दीर्घं च | | 1.4.34 श्लाघ-हुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्र- | यमानः |
| 1.4.13 यस्मात् प्रत्ययविधिस्तद् | ादि प्रत्यये- | 1.4.35 धारेरुत्तमर्णः | |
| ऽङ्गम् | | 1.4.36 स्पृहेरीप्सितः | |
| (पदादिसंज्ञा-प्रकरणम् | I) | 1.4.37 क्रुध-द्रुहेर्घ्यासूयार्थानां यं प्रा | ति कोपः |
| 1.4.14 सुप्-तिङन्तं पद्म् | पदम् 17 | यम्, | प्रति कोपः 38 |
| 1.4.15 नः क्ये | | 1.4.38 कुध-द्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म | |
| 1.4.16 सिति च | | 1.4.39 राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः | |
| 1.4.17 स्वादिष्वसर्वनामस्थाने | 18 | 1.4.40 प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य क | |
| 1.4.18 यचि भम् | भम् 19 | | र्वृस्य कर्ता 41 |
| 1.4.19 त-सौ मत्वर्थे | | 1.4.41 अनु-प्रति-गृणश्च | |
| 1.4.20 अयस्मयादीनि च्छन्दसि | | 1.4.42 साधकतमं करणम् | 44 |
| 1.4.21 बहुषु बहुवचनम् | | 1.4.43 दिवः कर्म च | |
| 1.4.22 द्व्येकयोर्द्धिवचनैकवचने | | 1.4.44 परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरर | याम् |

| (गतिसंज्ञा-प्रकरणम्) |
|---|
| 1.4.60 गतिश्च गतिः 79 |
| 1.4.61 ऊर्यादि-च्वि-डाचश्च |
| 1.4.62 अनुकरणं चानितिपरम् |
| 1.4.63 आद्रानाद्रयोः सद्सती |
| 1.4.64 भूषणेऽलम् |
| 1.4.65 अन्तरपरिग्रहे |
| (वा॰) अन्तरशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वं |
| वाच्यम् |
| 1.4.66 कणे-मनसी श्रद्धाप्रतीघाते |
| 1.4.67 पुरोऽव्ययम् अव्ययम् छ |
| 1.4.68 अस्तं च |
| 1.4.69 अच्छ गत्यर्थ-वदेषु |
| 1.4.70 अदोऽनुपदेशे |
| 1.4.71 तिरोऽन्तर्धों 72 |
| 1.4.72 विभाषा कृञि विभाषा 76; कृञि 79 |
| 1.4.73 उपाजेऽन्वाजे |
| 1.4.74 साक्षात्प्रभृतीनि च |
| 1.4.75 अनत्याधान उरसि-मनसी |
| अनत्याधाने ७६ |
| 1.4.76 मध्ये पदे निवचने च |
| 1.4.77 नित्यं हस्ते पाणावुपयमने |
| 1.4.78 प्राध्वं बन्धने |
| 1.4.79 जीविकोपनिषदावौपम्ये |
| 1.4.80 ते प्राग्धातोः ते, धातोः 82; प्राक् 81 |
| 1.4.81 छन्दिस परेऽपि छन्दिस ४२ |
| 1.4.82 व्यवहिताश्च |
| |

| | (कर्मप्रवचनीयसंज्ञा-प्रकरणम्) | | | (लादेश-प्र | करणम्) |
|--------|--------------------------------|---------------|---------|--------------------|------------------------|
| 1.4.83 | कर्मप्रवचनीयाः | 98 | 1.4.99 | लः परस्मैपदम् | ਲ: 100 |
| 1.4.84 | अनुर्रुक्षणे अ | नुः 86 | 1.4.100 | तङानावात्मनेप | दम् |
| 1.4.85 | तृतीयार्थे | | 1.4.101 | तिङस्त्रीणि त्रीपि | गे प्रथम-मध्यमोत्तमाः |
| 1.4.86 | हीने | 87 | | | तिङस्त्रीणि त्रीणि 104 |
| 1.4.87 | उपोऽधिके च | | 1.4.102 | तान्येकवचन-द्वि | वचन-बहुवचना- |
| 1.4.88 | अप-परी वर्जने | | | न्येकशः | एकशः 103 |
| 1.4.89 | आङ् मर्यादावचने | | 1.4.103 | सुपः | 104 |
| 1.4.90 | लक्षणेत्थम्भूताख्यान-भाग-वीप्स | गसु | 1.4.104 | विभक्तिश्च | |
| | प्रति-पर्यनवः ह. | .सु ९१ | 1.4.105 | युष्मद्युपपदे सम | ानाधिकरणे |
| 1.4.91 | अभिरभागे | | | स्थानिन्यपि मध्य | यमः |
| 1.4.92 | प्रतिः प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः | | | • | यमः १०६; उपन्यपि १०७ |
| 1.4.93 | अधि-परी अनर्थकौ | | 1.4.106 | प्रहासे च मन्योप | ापदे मन्यतेरुत्तम |
| 1.4.94 | सुः पूजायाम् पूजाय | ाम् 95 | | एकवच | |
| | अतिरतिक्रमणे च | | | अस्मद्युत्तमः | |
| 1.4.96 | अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्ग- | गर्हा- | | शेषे प्रथमः | |
| | समुचयेषु | | 1.4.109 | परः सन्निकर्षः स | ां हिता |
| 1.4.97 | अधिरीश्वरे आ | धेः 98 | 1.4.110 | विरामोऽवसानम | Ţ |
| 1.4.98 | विभाषा कृञि | | | | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (समास-प्रकरणम्) | 2.1.19 सङ्ख्या वंश्येन सङ्ख्या 20 |
|---|---|
| 2.1.1 समर्थः पद्विधिः | 2.1.20 नदीभिश्च नदीभिः 21 |
| 2.1.2 सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे सुप् 2.2.29 | (वा॰) समाहारे चायमिष्यते |
| 2.1.3 प्राक् कडारात् समासः समासः 2.2.38 | 2.1.21 अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् |
| 2.1.4 सह सुपा 2.2.22 | (तत्पुरुषसमास-प्रकरणम्) |
| (वा॰) इवेन समासे विभक्त्यलोपश्च | 2.1.22 तत्पुरुषः 2.2.22 |
| (अव्ययीभावसमास-प्रकरणम्) | 2.1.23 द्विगुश्च |
| 2.1.5 अव्ययीभावः 21 | 2.1.24 द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त- |
| 2.1.6 अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध- | प्राप्तापन्नेः द्वितीया 29 |
| र्थाभावात्ययासम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव- | 2.1.25 स्वयं क्तेन केन 28 |
| पश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य-योगपद्य- | 2.1.26 खट्टा क्षेपे |
| सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्यान्तवचनेषु | 2.1.27 सामि |
| अव्ययम् 8 | 2.1.28 कालाः 29 |
| 2.1.7 यथाऽसादृश्ये | 2.1.29 अत्यन्तसंयोगे च |
| 2.1.8 यावदवधारणे | 2.1.30 तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन |
| 2.1.9 सुप् प्रतिना मात्रार्थे | तृतीया 35 |
| 2.1.10 अक्ष-शलाका-सङ्ख्याः परिणा | 2.1.31 पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण- |
| 2.1.11 विभाषा 2.2.29 | मिश्र-श्रक्ष्णेः |
| 2.1.12 अप-परि-बहिरञ्चवः पञ्चम्या | 2.1.32 कर्तृ-करणे कृता बहुलम् कर्तृकरणे 33 |
| पञ्चम्या १३ | 2.1.33 कृत्येरिधकार्थवचने |
| 2.1.13 आङ् मर्यादाऽभिविध्योः | 2.1.34 अन्नेन व्यञ्जनम् |
| 2.1.14 लक्षणेनाभि-प्रती आभिमुख्ये लन 16 | 2.1.35 भक्ष्येण मिश्रीकरणम् |
| 2.1.15 अनुर्यत्समया अनुः 16 | 2.1.36 चतुर्थी तदर्थार्थ-बिल-हित-सुख-रिक्षतैः |
| 2.1.16 यस्य चायामः | (वा॰) तदर्थेन प्रकृतिविकृतभाव एवेष्टः |
| 2.1.17 तिष्ठद्गु-प्रभृतीनि च | (वा०) अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति |
| 2.1.18 पारे मध्ये षष्ट्या वा | description (|

वक्तव्यम्

| 2.1.37 पञ्चमी भयेन पञ्चमी 39 | 2.1.55 उपमानानि सामान्यवचनैः |
|--|---|
| (वा॰) भय-भीत-भीति-भीभिरिति वक्तव्यम् | 2.1.56 उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे |
| 2.1.38 अपेतापोढ-मुक्त-पतितापत्रस्तैरल्पशः | 2.1.57 विशेषणं विशेष्येण बहुलम् |
| 2.1.39 स्तोकान्तिक-दूरार्थ-कृच्छाणि क्तेन | विशेषणं विशेष्येण 58 |
| (वा॰) शतसहस्रौ परेणेति वक्तव्यम् | 2.1.58 पूर्वापर-प्रथम-चरम-जघन्य-समान- |
| 2.1.40 सप्तमी शौण्डैः सप्तमी 48 | मध्य-मध्यम-वीराश्च |
| 2.1.41 सिद्ध-शुष्क-पक्व-बन्धेश्च | 2.1.59 श्रेण्यादयः कृतादिभिः |
| 2.1.42 ध्वाङ्क्षेण क्षेपे | 2.1.60 क्तेन नञ्चिशिष्टेनानञ् |
| 2.1.43 कृत्येर्ऋणे | (वा०) शाकपार्थिवादीनां सिद्धय उत्तरपद्- |
| 2.1.44 संज्ञायाम् | लोपस्योपसङ्ख्यानम् |
| 2.1.45 क्तेनाहो-रात्रावयवाः क्तेन ४७ | 2.1.61 सन्-महत्-परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः |
| 2.1.46 तत्र | 2.1.62 वृन्दारक-नाग-कुञ्जरैः पूज्यमानम् |
| 2.1.47 क्षेपे 48 | 2.1.63 कतर-कतमौ जातिपरिप्रश्ने |
| 2.1.48 पात्रेसमितादयश्च | 2.1.64 किं क्षेपे |
| 2.1.49 पूर्वकालैक-सर्व-जरत-पुराण-नव- | 2.1.65 पोटा-युवति-स्तोक-कतिपय-गृष्टि-धेनु- |
| केवलाः समानाधिकरणेन | वशा-वेहद्-बष्कयणी-प्रवक्तु-श्रोत्रिया- |
| समानाधिकरणेन 72 | ऽध्यापक-धूर्तैर्जातिः जातिः 66 |
| 2.1.50 दिक्-सङ्ख्ये संज्ञायाम् दिक्संख्ये 51 | 2.1.66 प्रशंसावचनैश्च |
| 2.1.51 तद्धितार्थोत्तरपद-समाहारे च | 2.1.67 युवा खलति-पलित-वलिन-जरतीभिः |
| (वा०) द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे | 2.1.68 कृत्य-तुल्याख्या अजात्या |
| नित्यसमासवचनम् | 2.1.69 वर्णो वर्णेन |
| (वा०) सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः | 2.1.70 कुमारः श्रमणादिभिः |
| 2.1.52 सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः | 2.1.71 चतुष्पादो गर्भिण्या |
| 2.1.53 कुत्सितानि कुत्सनैः | 2.1.72 मयूरव्यंसकादयश्च |
| 2.1.54 पापाणके कत्सितैः | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

अथ द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः

| 2.2.1 पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे | 2.2.20 अमैवाव्ययेन 21 |
|--|--|
| एकदेशिनैकाधिकरणे 3 | 2.2.21 तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् 22 |
| 2.2.2 अर्धं नपुंसकम् | 2.2.22 त्तवा च |
| 2.2.3 द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-तुर्याण्यन्यतर- | (बहुवीहिसमास-प्रकरणम्) |
| स्याम् अन्यतरस्याम् ४ | 2.2.23 रोषो बहुवीहिः 28 |
| 2.2.4 प्राप्तापन्ने च द्वितीयया | 2.2.24 अनेकमन्यपदार्थे अनेकम् 29 |
| 2.2.5 कालाः परिमाणिना | (वा॰) प्रादिभ्यो धातजस्य वाच्यो वा |
| 2.2.6 न ञ् | चोत्तरपदलोपः |
| 2.2.7 ईषद्कृता | (वा॰) नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः |
| 2.2.8 षष्ठी 17 | 2.2.25 सङ्ख्ययाऽव्ययासन्नादूराधिकसङ्ख्याः |
| 2.2.9 याजकादिभिश्च | सङ्ख्येये |
| 2.2.10 न निर्धारणे न 16 | 2.2.26 दिङ्नामान्यन्तराले |
| 2.2.11 पूरण-गुण-सुहितार्थ-सदव्यय-तव्य- | 2.2.27 तत्र तेनेदिमिति सरूपे |
| समानाधिकरणेन | 2.2.28 तेन सहेति तुल्ययोगे |
| 2.2.12 केन च पूजायाम् केन 13 | (द्वन्द्वसमास-प्रकरणम्) |
| 2.2.13 अधिकरणवाचिना च | 2.2.29 चार्थे द्वन्द्वः |
| 2.2.14 कर्मणि च | (पूर्वेनिपात-प्रकरणम्) |
| 2.2.15 तृजकाभ्यां कर्तरि अकेन 17 | 2.2.30 उपसर्जनं पूर्वम् उपसर्जनम् 31; पूर्वम् 38 |
| 2.2.16 कर्तारे च | 2.2.31 राजदन्तादिषु परम् |
| 2.2.17 नित्यं क्रीडा-जीविकयोः नित्यम् 19 | (वा॰) धर्मादिष्वनियमः |
| 2.2.18 कु-गति-प्राद्यः | 2.2.32 द्वन्द्वे घि |
| (वा॰) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया | 2.2.33 अजाद्यद्न्तम् |
| (वा॰) अत्यादयः कान्ताद्यर्थे द्वितीयया | 2.2.34 अल्पाच्तरम् |
| (वा॰) अवादयः कुष्टाद्यर्थे तृतीयया | 2.2.35 सप्तमी-विशेषणे बहुवीहौ बहुवीहौ 37 |
| (वा॰) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या | 2.2.36 निष्ठा 37 |
| (वा॰) निरादयः कान्ताद्यर्थे पञ्चम्या | 2.2.37 वाऽऽहितास्यादिषु वा 38 |
| २ २ १९ उपपदमतिङ उपपदम २२ | 2.2.38 कडाराः कर्मधारये |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

अथ द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः

| (विभक्ति-प्रकरणम्) | 2.3.17 मन्यकर्मण्यनाद्रे विभाषाऽप्राणिषु |
|--|--|
| 2.3.1 अनभिहिते 73 | 2.3.18 कर्तृ-करणयोस्तृतीया तृतीया 23 |
| 2.3.2 कर्मणि द्वितीया कर्मणि ३; द्वितीया ५ | (वा०) प्रकृत्यादिभ्य उपसङ्ख्यानम् |
| (वा॰) उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु | 2.3.19 सहयुक्तेऽप्रधाने |
| ्रितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते | 2.3.20 येनाङ्गविकारः |
| (वा०) अभितः-परितः-समया-निकषा-हा- | 2.3.21 इत्थंभूतलक्षणे |
| प्रतियोगेषु | 2.3.22 संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि |
| 2.3.3 तृतीया च हो ३छन्द िस | 2.3.23 हेतौ 27 |
| _{2.3.4} अन्तरान्तरेण युक्ते | 2.3.24 अकर्तर्यृणे पञ्चमी पञ्चमी 25 |
| 2.3.5 कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे | 2.3.25 विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् |
| कालाध्वनोः 7; अत्यन्तसंयोगे 6 | 2.3.26 षष्ठी हेतुप्रयोगे 27 |
| 2.3.6 अपवर्गे तृतीया | 2.3.27 सर्वनाम्नस्तृतीया च |
| 2.3.7 सप्तमी-पञ्चम्यौ कारकमध्ये | (वा॰) निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् |
| 2.3.8 कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया कक्ते 11 | 2.3.28 अपादाने पञ्चमी पञ्चमी 35 |
| 2.3.9 यस्माद्धिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी | (वा०) गम्यमानापि क्रिया कारकविभक्तीनां |
| 2.3.10 पञ्चम्यपाङ्-परिभिः पञ्चमी 11 | निमित्तम् |
| 2.3.11 प्रतिनिधि-प्रतिदाने च यस्मात् | (वा॰) पञ्चमीविधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसङ्खानम् |
| 2.3.12 गत्यर्थकर्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यों | (वा॰) अधिकरणे चोपसङ्ख्यानम् |
| चेष्टायामनध्वनि | (वा॰) प्रश्नाख्यानयोश्च पञ्चमी वक्तव्या |
| 2.3.13 चतुर्थी संप्रदाने चतुर्थी 17 | (वा॰) यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी वक्तव्या |
| (वा॰) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या | (वा॰) तद्युक्तात् काले सप्तमी वक्तव्या |
| (वा॰) हितयोगे च | (वा॰) अध्वनः प्रथमा सप्तमी च वक्तव्या |
| (वा॰) क्रुपिसम्पद्यमाने चतुर्थी वक्तव्या | 2.3.29 अन्यारादितरर्ते-दिक्छब्दाञ्चूत्तरपदा- |
| 2.3.14 कियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः | जाहि-युक्ते |
| 2.3.15 तुमर्थाच भाववचनात् | 2.3.30 षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन |
| 2.2.16 नम ्स्नस्नि-स्वाहा-स्वधा-ऽलं-वष्ट- | २ ३ ३१ प्रनपा दिनीया |

| 2.3.32 पृथग्-विना-नानाभिस्तृतीयाऽन्य- | 2.3.52 अधीगथे-द्येशां कमीणे कर्मणि 61 |
|--|--|
| तरस्याम् तृतीया ३३ | 2.3.53 कृञः प्रतियत्ने |
| 2.3.33 करणे च स्तोकाल्प-कृच्छ्र-कतिपय- | 2.3.54 रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः |
| स्यासत्त्ववचनस्य असत्त्ववचनस्य ३५ | 2.3.55 आशिषि नाथः |
| 2.3.34 दूरान्तिकार्थैः षष्ट्यन्यतरस्याम् | 2.3.56 जासि-निप्रहण-नाट-क्राथ-पिषां |
| 2.3.35 दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च | हिंसायाम् |
| दूरान्तिकार्थेभ्यः 36 | 2.3.57 व्यवहृ-पणोः समर्थयोः |
| 2.3.36 सप्तम्यधिकरणे च सप्तमी 41 | 2.3.58 दिवस्तदर्थस्य 60 |
| (वा॰) निमित्तात् कर्मसंयोगे सप्तमी वक्तव्या | 2.3.59 विभाषोपसर्गे |
| 2.3.37 यस्य च भावेन भावलक्षणम् 38 | 2.3.60 द्वितीया बाह्मणे |
| 2.3.38 षष्ठी चानादरे षष्टी 41 | 2.3.61 प्रेष्य-ब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने |
| 2.3.39 स्वामीश्वराधिपति-दायाद-साक्षि- | 2.3.62 चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दिस बसि 63 |
| प्रतिभू-प्रस्तैश्च | 2.3.63 यजेश्च करणे |
| 2.3.40 आयुक्त-कुशलाभ्यां चासेवायाम् | 2.3.64 कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे |
| 2.3.41 यतश्च निर्घारणम् 42 | 2.3.65 कर्तृ-कर्मणोः कृति |
| 2.3.42 पञ्चमी विभक्ते | 2.3.66 उभयप्राप्तौ कर्मणि |
| 2.3.43 साधु-निपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः | 2.3.67 क्तस्य च वर्तमाने क्रस्य ६८ |
| सप्तमी 45 | 2.3.68 अधिकरणवाचिनश्च |
| 2.3.44 प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च तृतीया 45 | 2.3.69 न लोकाव्यय-निष्ठा-खलर्थ-तृनाम् |
| 2.3.45 नक्षत्रे च लुपि | न <i>7</i> (|
| 2.3.46 प्रातिपदिकार्थ-लिङ्ग-परिमाण-वचन- | (वा॰) कमेरनिषेधः |
| मात्रे प्रथमा ४९ | 2.3.70 अकेनोर्भविष्यदाधमण्ययोः |
| (वा०) तिङ्-सामानाधिकरण्ये प्रथमा | 2.3.71 कृत्यानां कर्तरि वा |
| 2.3.47 सम्बोधने च सम्बोधने ४९ | 2.3.72 तुल्यार्थेरतुलोपमाभ्यां तृतीया- |
| 2.3.48 साऽऽमन्त्रितम् | ऽन्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् ७३ |
| 2.3.49 एकवचनं सम्बुद्धिः | 2.3.73 चतुर्थी चाशिष्यायुष्य-मद्र-भद्र- |
| 2.3.50 षष्टी शेषे 73 | कुशल-सुखार्थ-हितैः |
| 2.3.51 ज्ञोऽविदर्थस्य करणे | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथ दितीयाध्यायस्य चतर्थः पाटः

| | 111/1 1841 1141 |
|---|--|
| (एकवद्भाव-प्रकरणम्) | 2.4.21 उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् |
| 2.4.1 द्विगुरेकवचनम् एकवचनम् 16 | 2.4.22 छाया बाहुत्त्ये |
| 2.4.2 द्वन्द्वश्च प्राणि-तूर्य-सेनाङ्गानाम् | 2.4.23 सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा सभा 24 |
| द्वन्द्वः 16 | 2.4.24 अशाला च |
| 2.4.3 अनुवादे चरणानाम् | 2.4.25 विभाषा सेना-सुरा-च्छाया-शाला- |
| 2.4.4 अध्वर्युकतुरनपुंसकम् | निशानाम् |
| 2.4.5 अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् | 2.4.26 परविश्वङ्गं द्वन्द्व-तत्पुरुषयोः |
| 2.4.6 जातिरप्राणिनाम् | (वा॰) द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषु |
| 2.4.7 विशिष्टलिङ्गो नदी-देशोऽग्रामाः | प्रतिषेधो वाच्यः |
| 2.4.8 क्षुद्रजन्तवः | 2.4.27 पूर्ववदश्व-वडवौ पूर्ववत् 28 |
| 2.4.9 येषां च विरोधः शाश्वतिकः | 2.4.28 हेमन्त-शिशिरावहो-रात्रे च च्छन्दसि |
| 2.4.10 शूद्राणामनिरवसितानाम् | 2.4.29 रात्राह्णाहाः पुंसि |
| 2.4.11 गवाश्वप्रभृतीनि च | (वा॰) सङ्ख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम् |
| 2.4.12 विभाषा वृक्ष-मृग-तृण-धान्य-व्यञ्जन- | 2.4.30 अपथं नपुंसकम् नपुंसकम् 31 |
| पशु-श्रकुन्यश्ववडव-पूर्वापरा- | 2.4.31 अर्धर्चाः पुंसि च |
| धरोत्तराणाम् विभाषा 13 | 2. 1.31 अन्यार पुरस्य (अन्वादेश-प्रकरणम्) |
| 2.4.13 विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि | 2.4.32 इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ |
| | |
| 2.4.14 न द्धिपयआदीनि | |
| 2.4.14 न द्धिपयआदीनि 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः ३४; अश् ३३ |
| | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतदस्त्र-तसोस्त्र-तसौ चानुदात्तौ एतद् 34 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः ३४; अश् ३३ 2.4.३३ एतदस्त्र-तसोस्त्र-तसो चानुदात्तो एतद् ३४ 2.4.३४ द्वितीया-टौस्स्वेनः |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतदस्त्र-तसोस्त्र-तसौ चानुदात्तौ एतद् 34 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतदस्त्र-तसोस्त्र-तसो चानुदात्तो एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) 2.4.17 स नपुंसकम् नपुंसकम् 25 | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतद्स्त्र-तसोस्त्र-तसौ चानुदात्तौ एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) 2.4.35 आर्धधातुके 57 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) 2.4.17 स नपुंसकम् नपुंसकम् 25 (वा॰) सामन्ये नपुंसकम् | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतद्स्त्र-तसोस्त्र-तसो चानुदात्तौ एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) 2.4.35 आर्धधातुके 57 2.4.36 अदो जग्धिर्त्यप्-ति किति अदः 40 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) 2.4.17 स नपुंसकम् नपुंसकम् 25 (वा॰) सामन्ये नपुंसकम् | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतद्स्त्र-तसोस्त्र-तसौ चानुदात्तौ एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) 2.4.35 आर्धधातुके 57 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) 2.4.17 स नपुंसकम् नपुंसकम् 25 (वा॰) सामन्ये नपुंसकम् 2.4.18 अव्ययीभावश्च (वा॰) पथः सङ्ख्याव्ययादेः क्षीबतेष्यते | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतद्स्त्र-तसोस्त्र-तसो चानुदात्तौ एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) 2.4.35 आर्धधातुके 57 2.4.36 अदो जग्धिर्त्यप्-ति किति अदः 40 |
| 2.4.15 अधिकरणैतावत्त्वे च अत्त्वे 16 2.4.16 विभाषा समीपे (लिङ्ग-प्रकरणम्) 2.4.17 स नपुंसकम् नपुंसकम् 25 (वा॰) सामन्ये नपुंसकम् 2.4.18 अव्ययीभावश्च (वा॰) पथः सङ्ख्याव्ययादेः क्षीबतेष्यते (वा॰) कियाविशेषणानां कर्मत्वं क्षीबता चेष्यते | इदमः, अन्वादेशे, अनुदात्तः 34; अश् 33 2.4.33 एतद्स्त्र-तसोस्त्र-तसो चानुदात्तो एतद् 34 2.4.34 द्वितीया-टौस्स्वेनः (वा॰) अन्वादेशे नपुंसके वा एनद्वक्तव्यः (धात्वादेश-प्रकरणम्) 2.4.35 आर्घधातुके 57 2.4.36 अदो जग्धिर्त्यप्-ति किति अदः 40 2.4.37 छुङ्-सनोर्घस्छ धस्छ 40 |

| - | _ |
|--|--|
| 2.4.41 वेञो वियः | 2.4.65 अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ट-गोतमाङ्गिरोभ्यश्च |
| 2.4.42 हनो वध लिङि हनः, वध 44 | 2.4.66 बह्रच इञः प्राच्य-भरतेषु |
| 2.4.43 ন্তভি च ন্তভি 44 | 2.4.67 न गोपवनादिभ्यः |
| 2.4.44 आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् | 2.4.68 तिक-कितवादिभ्यो द्वन्द्वे |
| 2.4.45 इणो गा लुङि इणः 47 | 2.4.69 उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे |
| 2.4.46 णौ गमिरबोधने गिमः ४८; अबोधने ४७ | 2.4.70 आगस्त्य-कौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच् |
| 2.4.47 सनि च सनि 48 | 2.4.71 सुपो धातु-प्रातिपदिकयोः |
| 2.4.48 হভ ংগ্ৰ | 2.4.72 अदि-प्रभृतिभ्यः श्रपः |
| 2.4.49 गाङ् लिटि गाङ् 51 | अदिप्रभृतिभ्यः 73; शपः 76 |
| 2.4.50 विभाषा सुङ्-लृङोः विभाषा 51 | 2.4.73 बहुलं छन्दि स |
| 2.4.51 णौ च संश्रङोः | 2.4.74 यङोऽचि च |
| 2.4.52 अस्तेर्भूः | 2.4.75 जु होत्यादिभ्यः श्रुः |
| 2.4.53 ब्रुवो वचिः | 2.4.76 बहुलं छन्दि स |
| 2.4.54 चक्षिङः ख्याञ् 55 | 2.4.77 गाति-स्था-घु-पा-भूभ्यः सिचः |
| 2.4.55 वा लिटि | परस्मैपदेषु सिचः 79; परस्मैपदेषु 78 |
| 2.4.56 अजेर्व्यघञपोः अजेः, वी 57 | (वा॰) गा-पोर्चहणे इण्पिबत्योर्चहणम् |
| 2.4.57 वा यो | 2.4.78 विभाषा घ्रा-धेट्-शा-च्छा-सः विभाषा 79 |
| (लुक्-प्रकरणम्) | 2.4.79 तनादिभ्यस्त-थासोः |
| 2.4.58 ण्य-क्षत्रियार्ष-ञितो यूनि लुगणिञोः | 2.4.80 मन्त्रे घस-ह्रर-णश-वृ-दहाद्-वृच्-कृ- |
| यूनि 61; लुक् 83 | |
| 2.4.59 पैलादिभ्यश्च | |
| 2.4.60 इञः प्राचाम् | 2.4.81 आमः |
| 2.4.61 न तौल्वलिभ्यः | 2.4.82 अव्ययादाप्-सुपः सुपः 84 |
| 2.4.62 तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् | 2.4.83 नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः |
| बहुषु तेनैव 70; अस्त्रियाम् 65 | अव्ययीभावाद् अतः अम् ८४ |
| 2.4.63 यस्कादिभ्यो गोत्रे गोत्रे 70 | 2.4.84 तृतीया-सप्तम्योर्बहुलम् |
| 2.4.64 यञ्जोश्च | 2.4.85 लुटः प्रथमस्य डा-रौ-रसः |
| 2.1.01 | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (प्रत्ययाधिकारः) | | | |
|-----------------------------------|------------------------------|--|--|
| 3.1.1 प्रत्ययः | 5.4.160 | | |
| 3.1.2 परश्च | 5.4.160 | | |
| 3.1.3 आद्युदात्तश्च | 5.4.160 | | |
| 3.1.4 अनुद् त्तौ सुप्-पितौ | | | |
| (सनाद्यः) | | | |
| 3.1.5 गुप्-तिज्-किद्भ्यः सन् | सन् 7 | | |
| 3.1.6 मान्-बध-दान्-शान्भ्यो व | रीर्घश्चाभ्या- | | |
| सस्य | | | |
| 3.1.7 धातोः कर्मणः समानकर्तृ | कादिच्छायां | | |
| वा कर्मणः 10; इच्ह | ज्ञायाम् 9; वा 22 | | |
| (वा॰) आशङ्कायामुपसङ्ख्यान | म ् | | |
| 3.1.8 सुप आत्मनः क्यच् | | | |
| सुपः 11; आत्म | नः 9; क्यच् 10 | | |
| 3.1.9 काम्यच | | | |
| 3.1.10 उपमानादाचारे | 11 | | |
| (वा॰) अधिकरणाचेति वक्तव्यम | Ţ | | |
| 3.1.11 कर्तुः क्यङ् सलोपश्च | क्य ङ् 18 | | |
| (वा॰) सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब | त्रा वक्तव्यः | | |
| 3.1.12 भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लीप | श्चि हलः | | |
| | भुवि अच्वेः 13 | | |
| 3.1.13 लोहितादि-डाज्भ्यः क्य | ष् | | |
| 3.1.14 कष्टाय क्रमणे | | | |
| 3.1.15 कर्मणो रोमन्थ-तपोभ्यां | | | |
| | कर्मणः 21 | | |
| 3.1.16 बाष्पोष्माभ्यामुद्वमने | | | |

| 3.1.17 | शब्द-वैर-कलहाभ्र-व | क्रण्व-मेघेभ्यः |
|--------|---------------------------|------------------|
| | करणे | करणे 21 |
| 3.1.18 | सुखादिभ्यः कर्तृ वेद | नायाम् |
| 3.1.19 | नमो-वरिवश्-चित्रङ | ः क्यच् |
| 3.1.20 | पुच्छ-भाण्ड-चीवराप | ग् णिङ् |
| 3.1.21 | मुण्ड-मिश्र-श्रक्ष्ण-ल | वण-व्रत-वस्त्र- |
| | हल-कल-कृत-तूस्ते | म्यो णिच् |
| 3.1.22 | धातोरेकाचो हलादेः | क्रियासमभिहारे |
| | यङ् | धातोः ९०; यङ् २४ |
| 3.1.23 | नित्यं कौटिल्ये गतौ | नित्यम् २४ |
| 3.1.24 | लुप-सद-चर-जप-ज | ામ-दह-दश-ગૄમ્યો |
| | भावगर्हायाम् | |
| 3.1.25 | सत्याप-पाश-रूप-र्व | ोणा-तूल-श्लोक- |
| | सेना-लोम-त्वच-वर्म | -वर्ण-चूर्ण- |
| | चुरादिभ्यो णिच् | णिच् 26 |
| (वा॰) | अर्थवेदसत्यानामापुग | ्वक्तव्यः |
| 3.1.26 | हेतुमति च | |
| (वा०) | आख्यानात्कृतस्तदाच | ष्टे, इति णिच्, |
| 7 | कृ्छुक्, प्रकृतिप्रत्यापी | त्तः, प्रकृतिवच |
| 7 | कारकम ् | |
| 3.1.27 | कण्ड्वादिभ्यो यक् | |
| 3.1.28 | गुपू-धूप-विच्छि-पणि | ा-पनिभ्य आयः |
| 3.1.29 | ऋतेरीयङ् | |
| 3.1.30 | कमेणिंङ् | |
| 3.1.31 | आयादय आर्घधातुवे | 5 वा |
| 3.1.32 | सनाद्यन्ता धातवः | |

| (विकरणाः) | 3.1.50 गुपेश्छन्दसि | छन्दसि 51 |
|---|--|-----------------------------|
| 3.1.33 स्य-तासी ऌ-ऌटोः | 3.1.51 नोनयति-ध्वनय त्येलय | त्यर्दयतिभ्यः |
| 3.1.34 सिब्ब हुलं लेटि | 3.1.52 अस्यति-वक्ति-ख्यातिभ | |
| (वा॰) सिब्बहुलं णिद्वक्तव्यः | 3.1.53 लिपि-सिचि-ह्रश्च | |
| 3.1.35 कास्-प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि | 3.1.54 आत्मनेपदेष्वन्यतरस्या | |
| आम् 40; अमन्त्रे लिटि 39 | 3.1.55 पुषादि-द्युताद्य्लृदितः प | _ |
| (वा०) कास्यनेकाच आम् वक्तव्यः | 3 . 3 . 5 | परस्मैपदेषु ५ <u>५</u> |
| 3.1.36 इजादेश्व गुरुमतोऽनृच्छः | 3.1.56 सर्ति-शास्त्यर्तिभ्यश्च | |
| (वा॰) ऊर्णोतेराम्नेति वाच्यम् | 3.1.57 इरितो वा | वा 59 |
| 3.1.37 दयायासश्च | (वा॰) इर इत्संज्ञा वाच्या | |
| 3.1.38 उष-विद-जागृभ्योऽन्यतरस्याम् | 3.1.58 जॄ-स्तम्भु-म्रुचु-म्लुचु-ऱ् | गु चु-ग्लुचु-ग्लुञ्च |
| अन्यतरस्याम् ३९ | श्विभ्यश्च | |
| 3.1.39 भी-ही-भृ-हुवां श्रुवच | 3.1.59 कृ-मृ-द्द-रु हिभ्य रछर्न्द्रा | से |
| 3.1.40 कृञ् चानुप्रयुज्यते लिटि | 3.1.60 चिण् ते पदः | चिण् 65; ते 66 |
| 3.1.41 विदाङ्कर्वन्वित्यन्यतरस्याम् | 3.1.61 दीप-जन-बुध-पूरि-तानि | ये-प्यायिभ्यो- |
| अन्यतरस्याम् ४२ | ऽन्यतरस्याम् | अन्यतरस्याम् ६३ |
| 3.1.42 अभ्युत्साद्यां-प्रजनयां-चिकयां-रमया- | 3.1.62 अचः कर्मकर्तरि | कर्मकर्तरि 65 |
| मकः पावयांकियाद् विदामकन्निति | 3.1.63 दुहश्च | |
| च्छन्दिस | 3.1.64 न रुधः | न 65 |
| 3.1.43 च्लि लुङ 66 লুङ | 3.1.65 तपोऽनुतापे च | |
| 3.1.44 च्लेः सिच् च्लेः 66 | 3.1.66 चिण् भाव-कर्मणोः | भावकर्मणोः 67 |
| (वा॰) स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपां च्लेः सिज्वा | 3.1.67 सार्वधातुके यक् | सार्वधातुके 82 |
| वाच्यः | 3.1.68 कर्तारे श प् | कर्तरि 88 |
| 3.1.45 शल इगुपधादिनटः क्सः क्सः 47 | 3.1.69 दिवादिभ्यः रयन् | ३ यन् 72 |
| 3.1.46 क्षिष आलिङ्गने | 3.1.70 वा भ्राश-भ्लाश-भ्रमु-व | _ |
| 3.1.47 न दशः | त्रुटि-लषः | बा <i>7</i> 2 |
| 3.1.48 णि-श्रि-द्रु-स्रुभ्यः कर्तरि चङ् | 3.1.71 यसोऽनुपसर्गात् | |
| कर्तारे 61; चङ् 51 | 3.1.72 संयसश्च | |
| (वा॰) कमेश्च्लेश्चङ् वक्तव्यः | 3.1.73 स्वादिभ्यः श्रुः | श्चः 76 |
| 3.1.49 विभाषा धेट्-श्र्व्योः विभाषा 50 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 3 / |

| 3.1.74 | श्रुवः शृ च | (वा०) केलिमर उपसङ्ख्यानम् |
|--------|--|---|
| 3.1.75 | अक्षोऽन्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् ७६ | (वा०) वसंस्तव्यत्कर्तरि णिच |
| 3.1.76 | तनूकरणे तक्षः | 3.1.97 अचो यत् यत् 106 |
| 3.1.77 | तुदादिभ्यः शः | (वा०) तिक-शसि-चित-यित-जिनभ्यो यद्वाच्यः |
| 3.1.78 | रुधादिभ्यः श्रम् | (वा०) हनो वा यद् वधश्च वक्तव्यः |
| 3.1.79 | तनादिकृञ्भ्य उः उः ८० | 3.1.98 पोरदुपधात् |
| 3.1.80 | धिन्वि-कृण्व्योर च | 3.1.99 शकि-सहोश्च |
| 3.1.81 | क्र्यादिभ्यः श्ना श्ना ८२ | 3.1.100 गद्-मद्-चर-यमश्चानुपसर्गे |
| 3.1.82 | स्तन्भु-स्तुन्भु-स्कन्भु-स्कुन्भु-स्कुञ्भ्यः | अनुपसर्गे 108 |
| | શ્રુશ્ચ | (वा०) चरेराङि चागुरौ |
| 3.1.83 | हलः श्नः शानज्झौ श्नः शानज्झौ ८४ | 3.1.101 अवद्य-पण्य-वर्या गर्ह्य-पणितव्या- |
| 3.1.84 | छन्दिस शायजिप छन्दिस ८६ | निरोधेषु |
| 3.1.85 | व्यत्ययो बहुलम् | 3.1.102 वहां करणम् |
| 3.1.86 | लि ड्याशिष्य ङ् | 3.1.103 अर्यः स्वामि-वैश्ययोः |
| | (कर्मकर्तृ-प्रकरणम्) | 3.1.104 उपसर्या काल्या प्रजने |
| 3.1.87 | कर्मवत् कर्मणा तुल्यिकयः | 3.1.105 अजर्थं संगतम् |
| | कर्मवत् 90 | 3.1.106 वदः सुपि क्यप् च |
| 3.1.88 | तपस्तपःकर्मकस्यैव | सुपि 108; क्यप् 121 |
| 3.1.89 | न दुह-स्नु-नमां यक्-चिणौ | 3.1.107 भुवो भावे भावे 108 |
| 3.1.90 | कुषि-रञ्जोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च | 3.1.108 हनस्त च |
| | (घात्वधिकारः) | 3.1.109 एति-स्तु-शास्-वृ-द्द-जुषः क्यप् |
| 3.1.91 | धातोः 3.4.117 | 3.1.110 ऋदुपधाचाक्रृपि-चृतेः |
| 3.1.92 | तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् तत्र 94 | 3.1.111 ई च खनः |
| | (कृत्प्रत्ययाः) | 3.1.112 भृञोऽसंज्ञायाम् |
| 3.1.93 | कृदतिङ् कृत् ३.४.७६ | 3.1.113 मृजेर्विभाषा |
| 3.1.94 | वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् | 3.1.114 राजसूय-सूर्य-मृषोद्य-रुच्य-कुप्य- |
| | (कृत्सु कृत्यप्रत्ययाः) | कृष्टपच्याव्यथ्याः |
| 3.1.95 | कृत्याः 132 | 3.1.115 भिद्योच्यौ नदे |
| 3.1.96 | तव्यत्-तव्यानीयरः | |

| 3.1.116 पुष्य-सिध्यौ नक्षत्रे | 3.1.134) निन्दि-ग्रहि-पचादिभ्यो ल्यु-णिन्यचः |
|---|--|
| 3.1.117 विपूय-विनीय-जित्या मुझ-कल्क- (वा॰) अज्विधिः सर्वधातुभ्यः पठ्यन्ते च | |
| हलिषु | पचादयः । अण्बाधनार्थमेव स्यात् |
| 3.1.118 प्रत्यिपभ्यां ग्रहेः ग्रहेः 119 | सिध्यन्ति श्वपचादयः॥ |
| 3.1.119 पदास्वैरि-बाह्या-पक्ष्येषु च | 3.1.135 इगुपध-ज्ञा-प्री-किरः कः कः 136 |
| 3.1.120 विभाषा कृ-वृषोः | 3.1.136 आतश्चोपसर्गे |
| 3.1.121 युग्यं च पत्रे | 3.1.137 पा-घ्रा-ध्मा-धेट्-दृशः शः शः 139 |
| 3.1.122 अमावस्यदन्यतरस्याम् | 3.1.138 अनुपसर्गािछम्प-विन्द-धारि-पारि- |
| 3.1.123 छन्दसि निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणीयो- | वेद्यदेजि-चेति-साति-साहिभ्यश्च |
| न्नीयोच्छिष्य-मर्य-स्तर्या-ध्वर्य-खन्य- | अनुपसर्गात् 140 |
| खान्य-देवयज्याऽऽपृच्छ्य-प्रतिषीव्य- | (वा॰) गवादिषु विन्देः संज्ञायाम् |
| ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ताव्योपचाय्यपृडानि | 3.1.139 ददाति-दधात्योर्विभाषा विभाषा 140 |
| 3.1.124 ऋ-हलोण्यंत् ण्यत् 131 | 3.1.140 ज्वलिति-कसन्तेभ्यो णः णः 143 |
| 3.1.125 ओरावश्यके | 3.1.141 २याद्-व्यधास्रु-संरुवतीणवसावह् - |
| 3.1.126 आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-चमश्च | लिह-श्चिष-श्वसश्च |
| 3.1.127 आनाच्योऽनित्ये | 3.1.142 दुन्योरनुपसर्गे |
| 3.1.128 प्रणाय्योऽसम्मतौ | 3.1.143 विभाषा ग्रहः ग्रहः 144 |
| 3.1.129 पाय्य-सान्नाय्य-निकाय्य-धाय्या | (वा॰) भवतेश्चेति वक्तव्यम् |
| मान-हविर्निवास-सामिधेनीषु | 3.1.144 गेहे कः |
| 3.1.130 कतौ कुण्डपाय्य-सञ्चाय्यौ | 3.1.145 शिल्पिन ष्वुन् शिल्पिन 147 |
| 3.1.131 असौ परिचाय्योपचाय्य-समृह्याः | (वा॰) नृति-खनि-रिझभ्य एव |
| अम्री 132 | 3.1.146 गस्थकन् गः 147 |
| 3.1.132 चित्याग्निचित्ये च | 3.1.147 ण्युट् च ण्युट् 148 |
| (पूर्वकृदन्त-प्रकरणम्) | 3.1.148 हश्च वीहि-कालयोः |
| 3.1.133 ਾਕ੍ਰਨ੍-तृ चौ | 3.1.149 प्रु-सृ-ल्वः समभिहारे वुन् वुन् 150 |
| | 3.1.150 आशिषि च |
| · · · · | • |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

अथ तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः

| | | अथ तृतीयाध्य | | | |
|--------|----------------------------------|-------------------------|--|--|--|
| | (पूर्वकृदन्तेषूपपद-प्रकरणम्) | | | | |
| 3.2.1 | कर्मण्यण् | कर्मणि ५७; अण् २ | | | |
| (वा०) | शीलि-कामि-भक्ष्याच | ग्रारिभ्यो णः | | | |
| 3.2.2 | ह्या-वा-मश्च | | | | |
| 3.2.3 | आतोऽनुपसर्गे कः | अनुपसर्गे 60; कः 7 | | | |
| (वा०) | मूलविभुजादिभ्यः क | : | | | |
| 3.2.4 | सुपि स्थः | सुपि 83 | | | |
| 3.2.5 | तुन्द-शोकयोः परिमृ | जापनुदोः | | | |
| (वा०) | क-प्रकरणे मूलविभुज | नादिभ्य उपङ्ख्या- | | | |
| | नम् | | | | |
| 3.2.6 | प्रे दा-ज्ञः | | | | |
| 3.2.7 | समि ख्यः | | | | |
| 3.2.8 | गा-पोष्टक् | | | | |
| 3.2.9 | हरतेरनुद्यमनेऽच् | हरतेः 11; अच् 15 | | | |
| 3.2.10 |) वयसि च | | | | |
| 3.2.11 | । आङि ताच्छील्ये | | | | |
| 3.2.12 | 2 अर्हः | | | | |
| 3.2.13 | ः स्तम्ब-कर्णयो रमि- | जपोः | | | |
| 3.2.14 | 🛚 शमि धातोः संज्ञाय | ाम् | | | |
| 3.2.15 | जि धकरणे शेतेः | अधिकरणे 16 | | | |
| 3.2.16 | 5 चरेष्टः | चरेः 17; टः 23 | | | |
| 3.2.17 | ⁷ भिक्षा-सेनाऽऽदायेष् | <u>र</u> ुच | | | |
| 3.2.18 | 🤋 पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्ते | सर्तेः 19 | | | |
| 3.2.19 |) पूर्वे कर्तरि | | | | |
| 3.2.20 |) कृञो हेतु-ताच्छील् | यानुलोम्येषु | | | |
| | | कृञः 24 | | | |

3.2.21 दिवा-विभा-निशा-प्रभा-भास्-कारान्ता-

नन्तादि-बहु-नान्दी-किं-लिपि-लिबि-

बलि-भक्ति-कर्त-चित्र-क्षेत्र-सङ्ख्या-जङघा-बाह्वहर-यत-तद-धनुररुष (वा॰) किंयत्तद्बहुषु कुओऽज्विधानम् 3.2.22 कर्मणि भतौ 3.2.23 न शब्द-श्लोक-कलह-गाथा-वैर-चाट-सत्र-मन्त्र-पदेष 3.2.24 स्तम्ब-शकृतोरिन् इन 27 3.2.25 हरतेर्दृति-नाथयो: पञ्जौ 3226 फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च 3.2.27 छन्दिस वन-सन-रक्षि-मथाम् 3.2.28 एजेः खश **खश** 37 ३२२९ नासिका-स्तनयोध्मा-धेटोः ध्माधेटोः ३० 3.2.30 नाडी-मुष्ट्योश्च 3.2.31 उदि कूले रुजि-वहोः 3.2.32 वहाभ्रे लिहः 3.2.33 **परिमाणे पचः** पच: 34 3 2 34 <mark>मित-नखे च</mark> 3.2.35 विध्वरुषोस्तुदः 3.2.36 असूर्य-ललाटयोर्दशि-तपोः 3.2.37 उग्रम्पश्येरम्मद-पाणिन्धमाश्च 3.2.38 प्रिय-वशे वदः खच् खच् 47 (वा॰) गमेः सुपि वाच्यः (वा०) विहायसो विह च (वा॰) खच डिदु वा वक्तव्यः (वा०) डे च विहायसो विहादेशो वक्तव्यः 3.2.39 द्विषत-परयोस्तापेः 3 2 40 वाचि यमो व्रते

| 3.2.41 | पूः-सर्वयोदारि-सहोः | | 3.2.61 | सत्-सू-द्विष-द्रुह-दु | | भिद- |
|----------------|--|----------------|--------|-----------------------|---------------------------|----------------|
| 3.2.42 | सर्व-कूलाभ्र-करीषेषु कषः | | | च्छिद-जि-नी-राज | ामुपसर्गेऽपि [:] | विवप् |
| 3.2.43 | मेघर्ति-भयेषु कृञः | कृञः 44 | | | उपसर्गे, अ | गपि <i>77</i> |
| 3.2.44 | क्षेम-प्रिय-मद्रेऽण् च | | 3.2.62 | भजो ण्विः | पि | वः 64 |
| 3.2.45 | आशिते भुवः करण-भावयोः | : | 3.2.63 | छन्दिस सहः | छन्द | सि 67 |
| 3.2.46 | संज्ञायां भृ-तृ-वृ-जि-धारि-स | ाहि-तपि- | 3.2.64 | वहश्च | a | हः 66 |
| | दमः सं | iज्ञायाम् ४७ | 3.2.65 | कव्य-पुरीष-पुरीष्ये | षु ञ्युट् 🖼 | युट् 66 |
| 3.2.47 | गमश्च | गमः 48 | 3.2.66 | हव्येऽनन्तः पादम् | | |
| 3.2.48 | अन्तात्यन्ताध्व-दूर-पार-सव | र्गानन्तेषु | 3.2.67 | जन-सन-खन-क्रम | I-गमो विट् f | वेट् 69 |
| | ड ः | ভঃ 50 | 3.2.68 | अदोऽनन्ने | 3 | ादः 69 |
| (वा॰) ः | अन्यत्रापि दृश्यत इति वक्तव्य | ग म् | 3.2.69 | क्रव्ये च | | |
| 3.2.49 | आशिषि हनः | हनः 55 | 3.2.70 | दुहः कब् घश्च | | |
| (वा॰) र | कर्मणि समि च | | 3.2.71 | मन्त्रे श्वेतवहोक्थर | ास्-पुरोडाशो | णिवन् |
| 3.2.50 | अपे क्लेश-तमसोः | | | _ | मन्त्रे, णि | वन् 72 |
| 3.2.51 | कुमार-शीर्षयोणिनिः | | 3.2.72 | अवे यजः | य | जः 73 |
| | लक्षणे जाया-पत्योष्टक् | टक् 54 | 3.2.73 | विजुपे छन्दिस | विच् 75; छन्द | सि 74 |
| | अमनुष्यकर्तृके च | , | 3.2.74 | आतो मनिन्-क्वनि | | |
| | शक्तौ हस्ति-कपाटयोः | | | | मनिन्कनिब्बिनिष् | 1श्च 75 |
| | पाणिघ-ताडघौ शिल्पिन | | | अन्येभ्योऽपि दृश्य | | |
| | आढ्य-सुभग-स्थूल-पलित- | नग्नान्ध- | | क्विप् च | वि | वप् <i>77</i> |
| | प्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः क | | | स्थः क च | | |
| | • | े. आचौ 57 | | सुप्यजातौ णिनिस्त | गच्छिल्ये णि | नेः 86 |
| 3 2 57 | कर्तरि भुवः खिष्णुच्-खुकञ | | , , | साधुकारिणि च | | |
| | स्पृशोऽनुद्के क्विन् | ` क्विन् 60 | | ब्रह्मणि वदः | | |
| | ऋत्विग्-दधृक्-स्नग्-दिगुष्णि | | | कर्तर्युपमाने | | |
| J. <u>Z.</u> J | युजि-कुञ्चां च | · ' 3 | 3.2.80 | व्रते | | |
| 3 2 60 | त्यदादिषु दृशोऽनालोचने क | ਤ ਹ | 3.2.81 | बहुलमाभीक्ष्ण्ये | | |
| | रप्पापुतु दशाउगारम् गा समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम् | ' ' | 3.2.82 | मनः | | 83 |
| ` , | हशेः क्सश्च वक्तव्यः | | 3.2.83 | आत्ममाने खश् च | Í | |

| (भूतार्थकप्रत्यय-प्रकरणम्) | 3.2.111 अनद्यतने लङ् अनद्यतने 119 |
|---|---|
| 3.2.84 भूते 122 | 3.2.112 अभिज्ञावचने ਲੂਟ੍ 114 |
| 3.2.85 करणे यजः | 3.2.113 न यदि |
| 3.2.86 कर्मणि हनः कर्मणि 92; हनः 88 | 3.2.114 विभाषा साकाङ्क्षे |
| 3.2.87 ब्रह्म-भ्रूण-वृत्रेषु क्विप् क्विप् 92 | 3.2.115 परोक्षे लिट् परोक्षे 118; लिट् 117 |
| 3.2.88 बहुलं छन्द् सि | 3.2.116 ह-श्रक्षतोर्लङ् च लङ् 117 |
| 3.2.89 सु-कर्म-पाप-मन्त्र-पुण्येषु कृञः | 3.2.117 प्रश्ने चासन्नकाले |
| 3.2.90 सोमे सुञः | 3.2.118 लट् स्मे |
| 3.2.91 अग्नौ चेः चेः 92 | 3.2.119 अपरोक्षे च |
| 3.2.92 कर्मण्यस्याख्यायाम् | 3.2.120 ननौ पृष्टप्रतिवचने पृष्टप्रतिवचने 121 |
| 3.2.93 कर्मणीनिर्विकियः कर्मणि 95 | 3.2.121 न-न्वोर्विभाषा विभाषा 122 |
| 3.2.94 दशेः क्वनिप् क्वनिप् % | 3.2.122 पुरि लुङ् चास्मे |
| 3.2.95 राजिन युधि-कृञः युधिकृञः 96 | (वर्तमानार्थकप्रत्यय-प्रकरणम्) |
| 3.2.96 सहे च | 3.2.123 वर्तमाने लट् वर्तमाने 3.3.1 |
| 3.2.97 सप्तम्यां जनेर्डः जनेः, डः 101 | 3.2.124 ਲਣ: शतृ-शानचावप्रथमा- |
| 3.2.98 पञ्चम्यामजातौ | समानाधिकरणे लटः, शतृशानचौ 126 |
| 3.2.99 उपसर्गे च संज्ञायाम् | 3.2.125 सम्बोधने च |
| 3.2.100 अनौ कर्मणि | 3.2.126 लक्षण-हेत्वोः कियायाः |
| 3.2.101 अन्येष्वपि दृश्यते | 3.2.127 तौ सत् |
| 3.2.102 निष्ठा | 3.2.128 पूङ्-यजोः शानन् |
| 3.2.103 सु-यजोर्ङ्वनिप् | 3.2.129 ताच्छील्य-वयो-वचन-शक्तिषु चानश् |
| 3.2.104 जीर्यतेरतृन् | 3.2.130 इङ्-धार्योः शत्रकृच्छिणि शत् 133 |
| 3.2.105 छन्दिस िलट् छन्दिस 107 | 3.2.131 द्विषोऽमित्रे |
| 3.2.106 ਲਿਟ: कानज् वा ਲਿਟ:, वा 109 | 3.2.132 सुञो यज्ञसंयोगे |
| 3.2.107 क्वसुश्च क्वसुः 108 | 3.2.133 अर्हः प्रशंसायाम् |
| 3.2.108 भाषायां सद्-वस-श्रुवः | 3.2.134 आ क्वेस्तच्छील-तद्धर्म-तत्साधुकारिषु |
| 3.2.109 उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च | तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु 177 |
| 3.2.110 평 둏 | 3.2.135 तृन् |
| | |

| 3.2.136 | अलंकृञ्-निराकृञ्-प्रजनोत्पचो- | 3.2.154 लष-पत-पद-स्था-भू-वृष-हन-कम- |
|---------|-------------------------------------|---|
| | त्पतोन्मद्-रुच्यपत्रप-वृतु-वृधु-सह- | गम-शॄभ्य उकञ् |
| | चर इष्णुच् इष्णुच् 138 | 3.2.155 जल्प-भिक्ष-कु ट्ट-लुण्ट-वृङः षाकन् |
| 3.2.137 | णेश्छन्दसि छन्दसि 138 | 3.2.156 प्रजोरिनिः इनिः 157 |
| 3.2.138 | भुवश्च भुवः 139 | 3.2.157 जि-द-क्षि-विश्रीण्-वमाव्यथाभ्यम- |
| 3.2.139 | ग्ला-जि-स्थश्च क्स्नुः | परिभृ-प्रसूभ्यश्च |
| 3.2.140 | त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः क्रुः | 3.2.158 स्पृहि-गृहि-पति-दिय-निद्रा-तन्द्रा- |
| 3.2.141 | शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् घिनुण् १४५ | श्रद्धाभ्य आलुच् |
| 3.2.142 | संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यस-परिसृ- | 3.2.159 दा-धेट्-सि-शद-सदो रुः |
| | संसृज-परिदेवि-संज्वर-परिक्षिप- | 3.2.160 सृ-घस्यदः कारच् |
| | परिरट-परिवद-परिदह-परिमुह-दुष- | 3.2.161 भञ्ज-भास-मिदो घुरच् |
| | द्विष-द्रुह-दुह-युजाक्रीड-विविच- | 3.2.162 विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् |
| | त्यज-रज-भजातिचरापचरामुषाभ्या- | 3.2.163 इण्-नश्-जि-सर्तिभ्यः क्वरप् |
| | हनश्च | क्वर प् 164 |
| 3.2.143 | वौ कष-लस-कत्थ-स्नम्भः वौ 144 | 3.2.164 गत्वरश्च |
| 3.2.144 | अपे च लषः | 3.2.165 जागुरूकः जकः 166 |
| 3.2.145 | प्रे लप-सृ-द्रु-मथ-वद्-वसः | 3.2.166 यज-जप-दशां यङः |
| 3.2.146 | निन्द-हिंस-क्लिश-खाद-विनाश- | 3.2.167 निम-किम्प-स्म्यजस-कम-हिंस-दीपो रः |
| | परिक्षिप-परिरट-परिवादि-व्याभाषा- | 3.2.168 सनाशंस-भिक्ष उः उः 170 |
| | सूयो वुञ् वुञ् १४७ | 3.2.169 विन्दुरिच्छुः |
| 3.2.147 | देवि-कुशोश्चोपसर्गे | 3.2.170 क्याच्छन्द्रिस छन्द्रि 171 |
| 3.2.148 | चलन-शब्दार्थादकर्मकाद् युच् | 3.2.171 आद्द-गम-हन-जनः कि-किनौ लिट् च |
| | अकर्मकाद् 149; युच् 153 | (वा॰) भाषायां धाञ्-कृ-सृ-गिम-जिन-निमभ्यः |
| 3.2.149 | अनुदात्तेतश्च हलादेः | 3.2.172 स्वपि-तृषोर्नजिङ् |
| 3.2.150 | जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि- | 3.2.173 श्रृ-वन्द्योरारुः |
| | ज्वल-शुच-लष-पत-पदः | 3.2.174 भियः कु-क्रुकनौ |
| 3.2.151 | कुध-मण्डार्थेभ्यश्च | 3.2.175 स्थेश-भास-पिस-कसो वरच् |
| 3.2.152 | न यः | वरच् 176 |
| 3.2.153 | सूद-दीप-दीक्षश्च | 3.2.176 यश्च यङः |

| 3.2.177 अष्टाध्यायार | नूत्रपाठः | | |
|---|---|--|--|
| 3.2.177 भ्राज-भास-धुर्-विद्युतोर्जि-पॄ-जु- | 3.2.182 दाम्-नी-शस-यु-युज-स्तु-तुद-सि-सिच- | | |
| ग्रावस्तुवः विवप् विवप् 179 | मिह-पत-द्श-नहः करणे करणे 186 | | |
| 3.2.178 अन्येभ्योऽपि दृश्यते | 3.2.183 हल-सूकरयोः पुवः | | |
| (वा०) क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां | 3.2.184 अर्ति-ऌू-धू-सू-खन-सह-चर इत्रः | | |
| दीर्घोऽसम्प्रसारणं च | इत्रः 186 | | |
| 3.2.179 भुवः संज्ञान्तरयोः भुवः 180 | 3.2.185 पुवः संज्ञायाम् पुवः 186 | | |
| 3.2.180 वि-प्र-सम्भ्यो ड्वसंज्ञायाम् | 3.2.186 कर्तरि चर्षि-देवतयोः | | |
| (वा०) डुप्रकरणे मितद्यादिभ्य उपसङ्ख्यानम् | 3.2.187 ञीतः कः कः 188 | | |
| 3.2.181 धः कर्मणि ष्ट्रन् ष्ट्रन् 183 | 3.2.188 मति-बुद्धि-पूजार्थेभ्यश्च | | |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे | ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ | | |
| | | | |
| • | • | | |
| अथ तृतीयाध | त्र्यायस्य तृतीयः पादः | | |
| (उत्तरकृदन्त-प्रकरणम्) | 3.3.14 लृटः सद् वा | | |
| 3.3.1 उणादयो बहुलम् उणादयः 3 | 3.3.15 अनद्यतने लुट् | | |
| 3.3.2 भूतेऽपि दृश्यन्ते | 3.3.16 पद-रुज-विश-स्पृशो घञ् घञ् 55 | | |
| (भविष्यदर्थकप्रत्यय-प्रकरणम्) | 3.3.17 सृ स्थिरे | | |
| 3.3.3 भविष्यति गम्यादयः भविष्यति 15 | (भावाधिकारः) | | |
| 3.3.4 यावत्पुरानिपातयोर्लट् | 3.3.18 भावे 112 | | |
| 3.3.5 विभाषा कदा-कर्ह्योः विभाषा 9 | 3.3.19 अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् 112 | | |
| 3.3.6 किंवृत्ते लिप्सायाम् | 3.3.20 परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः | | |
| 3.3.7 लिप्स्यमानसिद्धौ च | (वा॰) दार-जारौ कर्तारे णिलुक् च | | |
| 3.3.8 लोडर्थलक्षणे च लोडर्थलक्षणे 9 | 3.3.21 इङश्च | | |
| 3.3.9 लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके | 3.3.22 उपसर्गे रुवः | | |
| 3.3.10 तुमुन्-ण्वुलौ कियायां कियार्थायाम् | 3.3.23 समि यु-द्रु-दुवः | | |
| क्रियायां कियार्थायाम् 13 | 3.3.24 श्रि-णी-भुवोऽनुपसर्गे | | |
| 3.3.11 भाववचनाश्च | 3.3.25 वौ क्षु-श्रुवः | | |
| 3.3.12 अण् कर्मणि च | 3.3.26 अवोदोर्नियः | | |
| 3.3.13 लृ ट् शेषे च | | | |

| | <u>«</u> |
|--|--|
| 3.3.27 प्रे द्र-स्तु-स्नुवः | 3.3.55 परौ भुवोऽवज्ञाने |
| 3.3.28 निरभ्योः पू- ल्वोः | 3.3.56 एरच् |
| 3.3.29 उन्न्योर्घः उन्न्योः ३० | (वा०) भयादीनामुपसङ्ख्यानम् |
| 3.3.30 कृ धान्ये | 3.3.57 ऋदोरप् अप् 87 |
| 3.3.31 यज्ञे समि स्तुवः | 3.3.58 ग्रह-वृ-द-निश्चि-गमश्च |
| 3.3.32 प्रे स्त्रोऽयज्ञे स्त्रः 34 | (वा॰) घञर्थे कविधानम् |
| 3.3.33 प्रथने वावराब्दे वौ 34 | 3.3.59 उपसर्गेऽदः अदः 60 |
| 3.3.34 छन्दोनाम्नि च | 3.3.60 नौ ण च |
| 3.3.35 उदि ग्रहः ग्रहः ३६ | 3.3.61 व्यध-जपोरनुपसर्गे अनुपसर्गे 65 |
| 3.3.36 सिम मुष्टौ | 3.3.62 स्वन-हसोर्वा वा 65 |
| 3.3.37 परि-न्योर्नीणोर्चूताभ्रेषयोः | 3.3.63 यमः समुप-नि-विषु च |
| 3.3.38 परावनुपात्यय इणः | 3.3.64 नौ गद-नद-पठ-स्वनः नौ 65 |
| 3.3.39 व्युपयोः शेतेः पर्याये | 3.3.65 क्वणो वीणायां च |
| 3.3.40 हस्तादाने चेरस्तेये चेः 42 | 3.3.66 नित्यं पणः परिमाणे |
| 3.3.41 निवास-चिति-शरीरोपसमाधानेष्वादेश्च | 3.3.67 मदोऽनुपसर्गे |
| कः आदेश्च कः 42 | 3.3.68 प्रमद्-सम्मद्गै हर्षे |
| 3.3.42 सङ्घे चानौत्तराधर्ये | 3.3.69 समुदोरजः पशुषु |
| 3.3.43 कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् | 3.3.70 अक्षेषु ग्लहः |
| 3.3.44 अभिविधौ भाव इनुण् | 3.3.71 प्रजने सर्तेः |
| 3.3.45 आक्रोशेऽव-न्योर्ग्रहः ग्रहः 47 | 3.3.72 ह्वः संप्रसारणं च न्यभ्युप-विषु |
| 3.3.46 प्रे लिप्सायाम् | ह्रः सम्प्रसारणं च 75 |
| 3.3.47 परौ यज्ञे | 3.3.73 आङि युद्धे |
| 3.3.48 नौ वृ धान्ये | 3.3.74 निपानमाहावः |
| 3.3.49 उदि श्रयति-यौति-पू-द्रुवः | 3.3.75 भावेऽनुपसर्गस्य 76 |
| 3.3.50 विभाषाऽऽङि रु-प्लुवोः विभाषा 55 | 3.3.76 हनश्च वधः हनः 87 |
| 3.3.51 अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ग्रहः 53 | 3.3.77 मूर्तौ घनः |
| 3.3.52 प्रे वणिजाम् प्रे 54 | 3.3.78 अन्तर्घनो देशे |
| 3.3.53 र३मो च | 3.3.79 अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च |
| 3.3.54 वृणोतेराच्छादने | 3.3.80 उद्धनोऽत्याधानम् |
| | , |

| 3.3.81 अपघनोऽङ्गम् | 3.3.101 इच्छा |
|---|--|
| 3.3.82 करणेऽयो-वि-द्रुषु करणे 84 | (वा॰) परिचर्या-परिसर्या-मृगयाटाट्यानामुप- |
| 3.3.83 स्तम्बे क च | सङ्ख्यानम् |
| 3.3.84 परो घः | 3.3.102 अ प्रत्ययात् अ 103 |
| 3.3.85 उपघ्न आश्रये | 3.3.103 गुरोश्च हलः |
| 3.3.86 सङ्घोद्घौ गण-प्रशंसयोः | 3.3.104 षिद्भिदादिभ्योऽङ् अङ् 106 |
| 3.3.87 निघो निमितम् | (वा॰) कपेः सम्प्रसारणं च |
| 3.3.88 ड्वितः वित्रः | 3.3.105 चिन्ति-पूजि-कथि-कुम्बि-चर्चश्च |
| 3.3.89 ट्वितोऽथुच् | 3.3.106 आतश्चोपसर्गे |
| 3.3.90 यज-याच-यत-विच्छ-प्रच्छ-रक्षो नङ् | 3.3.107 ण्यास-श्रन्थो युच् |
| 3.3.91 स्वपो नन् | 3.3.108 रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् ण्वुल् 110 |
| 3.3.92 उपसर्गे घोः किः घोः किः 93 | (वा॰) धात्वर्थनिर्देशे ण्वुत्वक्तव्यः |
| 3.3.93 कर्मण्यधिकरणे च | (वा॰) इक्रितपौ धातुनिर्देशे |
| (स्त्र्याधिकारः) | (वा॰) वर्णात्कारः । रादि्फः |
| 3.3.94 स्त्रियां क्तिन् स्त्रियाम् 112; क्तिन् 97 | (वा॰) मत्वर्थाच्छः |
| (वा॰) श्रु-यजि-स्तुभ्यः करणे | (वा॰) इक् कृष्यादिभ्यः |
| (वा॰) ग्ला-स्रा-ज्या-हाभ्यो निः | 3.3.109 संज्ञायाम् |
| (वा॰) ऋकार-ल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः | 3.3.110 विभाषाख्यान-परिप्रश्नयोरिञ् च |
| (वा॰) सम्पदादिभ्यः क्विप् | विभाषा 111 |
| (वा॰) क्तिन्नपीष्यते | 3.3.111 पर्यायार्हणींत्पत्तिषु ण्वुच् |
| 3.3.95 स्था-गा-पा-पचो भावे भावे 96 | 3.3.112 आक्रोशे नञ्यनिः |
| 3.3.96 मन्त्रे वृषेष-पच-मन-विद-भू-वी-रा | 3.3.113 कृत्य-ल्युटो बहुलम् |
| उदात्तः उदात्तः 100 | 3.3.114 नपुंसके भावे क्तः नपुंसके भावे 116 |
| 3.3.97 ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयश्च | 3.3.115 ल्युट् च ल्युट् 117 |
| 3.3.98 व्रज-यजोर्भावे क्यप् क्यप् 100 | 3.3.116 कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः |
| 3.3.99 संज्ञायां समज-निषद्-निपत-मन- | शरीरसुखम् |
| विद-षुञ्-शीङ्-भृञिणः | 3.3.117 करणाधिकरणयोश्च 125 |
| 3.3.100 কৃস: হা च | 3.3.118 पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण |
| | पुंसि संज्ञायाम् 125; घः 119; प्रायेण 121 |

| 3.3.119 गोचर-संचर-वह-व्रज-व्यजापण- | 3.3.140 भूते च |
|---|---|
| निगमाश्च | 3.3.141 वोताप्योः 151 |
| 3.3.120 अवे तॄ-स्त्रोर्घञ् घञ् 125 | 3.3.142 गर्हायां लडपि-जात्वोः |
| 3.3.121 ⋷で恕 | गर्हायाम् 144; लट् 143 |
| 3.3.122 अध्याय-न्यायोद्याव-संहाराश्च | 3.3.143 विभाषा कथमि ਨਿङ् च |
| 3.3.123 उदङ्कोऽनुदके | 3.3.144 किंवृत्ते लिङ्-लृटौ लिङ्लृटौ 145 |
| 3.3.124 जालमानायः | 3.3.145 अनवक्रृप्त्यमर्षयोरिकंवृत्तेऽपि |
| 3.3.125 खनो घ च | अनवक्रुम्यमर्षयोः 148 - |
| 3.3.126 ईषद्दः-सुषु कृच्छाकृच्छार्थेषु खल् | 3.3.146 किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् |
| ईष थेंषु 130; खल् 127 | 3.3.147 जातु-यदोर्लिङ् ਨਿङ् 150 |
| 3.3.127 कर्तृ-कर्मणोश्च भू-कृञोः | 3.3.148 यच्च-यत्रयोः 150 |
| 3.3.128 आतो युच् | 3.3.149 गर्हायां च |
| 3.3.129 छन्दिस गत्यर्थेभ्यः छन्दिस 130 | 3.3.150 चित्रीकरणे च चित्रीकरणे 151 |
| 3.3.130 अन्येभ्योऽपि दृश्यते | 3.3.151 शेषे लृडयदौ |
| (वा०) भाषायां शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषिभ्यो | 3.3.152 उताप्योः समर्थयोर्लिङ् |
| युज्वाच्यः | 3.3.153 कामप्रवेदनेऽकचिति |
| (लकारार्थ-प्रकरणम्) | 3.3.154 सम्भावनेऽलमिति चेत् सिद्धाप्रयोगे |
| 3.3.131 वर्तमान-सामीप्ये वर्तमानवदु वा | 155 |
| वर्तमानवद्वा 132 | 3.3.155 विभाषा धातौ सम्भावन-वचनेऽयदि |
| 3.3.132 आशंसायां भूतवच्च आशंसायाम् 133 | विभाषा 156 |
| 3.3.133 क्षिप्रवचने ऌट् | 3.3.156 हेतु-हेतुमतोर्लिङ् |
| 3.3.134 आशंसावचने लिङ् | 3.3.157 इच्छार्थेषु लिङ्-लोटौ इच्छार्थेषु 159 |
| 3.3.135 नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्ध-सामीप्ययोः | 3.3.158 समानकर्तृकेषु तुमुन् सषु 159 |
| न, अनद्यतनवत् 138 | 3.3.159 लिङ् च लिङ् 160 |
| 3.3.136 भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् | 3.3.160 इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने |
| भति 139; म ने 138; अवरस्मिन् 137 | 3.3.161 विधि-निमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-सम्प्रश्न- |
| 3.3.137 कालविभागे चानहोरात्राणाम् 138 | प्रार्थनेषु लिङ् विषु 162 |
| 3.3.138 परस्मिन् विभाषा | 3.3.162 लोट् च लोट् 163 |
| 3.3.139 लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ | 3.3.163 प्रैषातिसर्ग-प्राप्तकालेषु कृत्याश्च |
| 141 | प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु 165 |

| 3.3.104 | जहाञ्चाचार | रूपाठः |
|---|--------------------|--|
| 3.3.164 लिङ् चोर्घ्वमोहूर्तिके ऊर्घ्व | ोके 165 | 3.3.170 आवश्यकाधमण्ययोणिनिः |
| 3.3.165 स्मे लोट् | 166 | आवश्यकाधमर्ण्ययोः 172 |
| 3.3.166 अधीष्टे च | | 3.3.171 कृत्याश्च कृत्याः 172 |
| 3.3.167 काल-समय-वेलासु तुमुन् | | 3.3.172 शकि लिङ् च |
| कालसमयवेत | जासु 168 | 3.3.173 आशिषि लिङ्-लोटौ आशिषि 174 |
| 3.3.168 लिङ् यदि ्रि | लेङ् 169 | 3.3.174 क्तिच्-क्तौ च संज्ञायाम् |
| 3.3.169 अर्हे कृत्य -तृचश्च | | 3.3.175 माङि लुङ् 176 |
| | | 3.3.176 स्मोत्तरे लङ् च |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ | | |
| | | |
| | | |
| अथ | । तृतायाध | य ायस्य चतुर्थः पादः |
| 3.4.1 धातु-सम्बन्धे प्रत्ययाः धातुः | सम्बन्धे 6 | 3.4.14 कृत्यार्थे तवै-केन्-केन्य-त्वनः |
| 3.4.2 क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिर | स्वौ वा | कृत्यार्थे 15 |
| च त-ध्वमोः लो | ट्मोः ३ | 3.4.15 अवचक्षे च |
| 3.4.3 समुच्चयेऽन्यतरस्याम् | | 3.4.16 भावलक्षणे स्थेण्-कृञ्-वदि-चरि-हु- |
| 3.4.4 यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् | | तिम-जिनभ्यस्तोसुन् भावलक्षणे 17 |
| | प्रयोगः 5 | 3.4.17 सृपि-तृदोः कसुन् |
| 3.4.5 समुच्चये सामान्यवचनस्य | | (त्तवादिप्रत्यय-प्रकरणम्) |
| 3.4.6 छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः छ | न्द् सि 17 | 3.4.18 अलं-खल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा |
| 3.4.7 लिङथें लेट् | लेट् 8 | क्त्वा 24 |
| 3.4.8 उपसंवादाशङ्कयोश्च | | 3.4.19 उदीचां माङो व्यतीहारे |
| 3.4.9 तुमर्थे से-सेनसे-ऽसेन्-क्से-कसे | नध्यै- | 3.4.20 परावरयोगे च |
| अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन्-राध्यै-रा | ध्यैन्- | 3.4.21 समानकर्तृकयोः पूर्वकाले 26 |
| तवै-तवेङ्-तवेनः | तुमर्थे 1 <i>7</i> | 3.4.22 आभीक्ष्ण्ये णमुल् च |
| 3.4.10 प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै | | आभीक्ष्ण्ये 23; णमुऌ 24 |
| 3.4.11 दशे विख्ये च | | 3.4.23 न यद्यनाकाङ्क्षे |
| 3.4.12 शकि णमुल्-कमुलौ | | 3.4.24 विभाषाऽग्रे-प्रथम-पूर्वेषु |
| 3.4.13 ईश्वरे तोसुन्-कसुनौ | | 3.4.25 कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् कृञः 28 |
| | | |

क्तः*,* कर्तरि 72

| | 3.4.50 समासत्तौ |
|---|---|
| 3.4.26 स्वादुमि णमुल् णमुल् 58 | 3.4.51 प्रमाणे च |
| 3.4.27 अन्यथैवं-कथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् | 3.4.52 अपादाने परीप्सायाम् परीप्सायाम् 53 |
| सिद्धाप्रयोगश्चेत् 28 | 3.4.53 द्वितीयायां च द्वितीयायाम् 58 |
| 3.4.28 यथा-तथयोरसूया-प्रतिवचने | 3.4.54 स्वाङ्गेऽध्रुवे स्वाङ्गे 55 |
| 3.4.29 कर्मणि दृशि-विदोः साकल्ये | 3.4.55 परिक्रिश्यमाने च |
| कर्मणि 36 | 3.4.56 विशि-पति-पदि-स्कन्दां व्याप्यमाना- |
| 3.4.30 यावति विन्द-जीवोः | सेव्यमानयोः |
| 3.4.31 चर्मीदरयोः पूरेः पूरेः 32 | 3.4.57 अस्यति-तृषोः क्रियान्तरे कालेषु |
| 3.4.32 वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्यम् | 3.4.58 नाम्पादिशि-ग्रहोः |
| वर्षप्रमाणे ३३ | 3.4.59 अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वा- |
| 3.4.33 चेले कोपेः | णमुलौ कृञः 60; क्त्वाणमुलौ 64 |
| 3.4.34 निमूल-समूलयोः कषः | 3.4.60 तिर्यच्यपवर्गे |
| 3.4.35 शुष्क-चूर्ण-रूक्षेषु पिषः | 3.4.61 स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृ-भ्वोः कृभ्वोः 62 |
| 3.4.36 समूलाकृत-जीवेषु हन्-कृञ्-ग्रहः 3.4.37 करणे हनः करणे 40 | 3.4.62 ना-धार्थप्रत्यये च्व्यर्थे |
| 3.4.37 करणे हनः करणे 40 3.4.38 स्नेहने पिषः | 3.4.63 तूष्णीमि भुवः भुवः 64 |
| 3.4.38 स्त्रह्म । पषः 3.4.39 हस्ते वर्त्ति-ग्रहोः | 3.4.64 अन्वच्यानुलोम्ये |
| 3.4.40 स्वे पुषः | 3.4.65 शक-धृष-ज्ञा-ग्ला-घट-रभ-लभ-क्रम- |
| ^ ` | सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् तुमुन् ६६ |
| | 3.4.66 पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु |
| 3.4.42 संज्ञायाम् 3.4.43 कर्त्रोर्जीव-पुरुषयोर्निश-वहोः | (कृत्प्रत्ययार्थ-प्रकरणम्) |
| 3.4.43 कत्राजाव-पुरुषयानाश-वहाः कर्त्रोः 45 | 3.4.67 कर्तीरे कृत् कर्तीरे 69 |
| 3.4.44 ऊर्ध्वे शुषि-पूरोः | 3.4.68 भव्य-गेय-प्रवचनीयोपस्थानीय- |
| 3.4.45 उपमाने कर्मणि च | जन्याष्ठाव्यापात्या वा |
| 3.4.46 कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः | 3.4.69 ਲ: कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः |
| 3.4.47 उपदंशस्तृ तीयायाम् तृतीयायाम् 51 | कर्मणि, भावे चाकर्मकेभ्यः 72 |
| 3.4.48 हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् | 3.4.70 तयोरेव कृत्य-क्त-खलर्थाः |
| 3.4.49 सप्तम्यां चोप-पीड-रुध-कर्षः | 3.4.71 अदिकर्मणि क्तः कर्तरि च |
| 0.1.1 | क्तः, कर्तरि 72 |

सप्तम्याम् ५१

| 3.4.72 गत्यर्थाकर्मक-श्चिष-शीङ्-स्थास- | 3.4.93 एत ऐ |
|---|--|
| वस-जन-रुह-जीर्यतिभ्यश्च | 3.4.94 लेटोऽडाटौ लेटः 98 |
| 3.4.73 दाश-गोघ्नौ सम्प्रदाने | 3.4.95 आत ऐ ऐ १6 |
| 3.4.74 भीमादयोऽपादाने | 3.4.96 वैतोऽन्यत्र वा 98 |
| 3.4.75 ताभ्यामन्यत्रोणाद्यः | 3.4.97 इतश्च लोपः परस्मैपदेषु लोपः 100 |
| 3.4.76 क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्य-गति- | 3.4.98 स उत्तमस्य 99 |
| प्रत्यवसानार्थेभ्यः | 3.4.99 नित्यं ङितः नित्यम् 100; ङितः 101 |
| (लादेश-प्रकरणम्) | 3.4.100 इतश्च |
| 3.4.77 लस्य 117 | 3.4.101 तस्-थस्-थ-मिपां ताम्-तम्-तामः |
| 3.4.78 तिप्-तस्-झ्नि-सिप्-थस्-थ-मिब्-वस्- | 3.4.102 ਲਿङः सीयुट् ਲਿङः 108 |
| मस्-तातां-झ्-थासाथां-ध्वमिड्-वहि- | 3.4.103 यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच |
| महिङ् | यासुट् परस्मैपदेषूदात्तः 104 |
| 3.4.79 टित आत्मनेपदानां टेरे टितः 80 | 3.4.104 किदाशिषि |
| 3.4.80 थासः से | 3.4.105 झस्य रन् |
| 3.4.81 लिटस्त-झयोरेशिरेच् लिटः 82 | 3.4.106 इटोऽत् |
| 3.4.82 परस्मैपदानां णलतुसुस्-थलथुस- | 3.4.107 सुट् ति-थोः |
| णल्-व-माः 84 | 3.4.108 झेर्जुस 112 |
| 3.4.83 विदो लटो वा लटः, वा ८४ | 3.4.109 सिजभ्यस्त-विदिभ्यश्च |
| 3.4.84 ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः | 3.4.110 आतः 111 |
| 3.4.85 लोटो लङ्वत् लोटः 93 | 3.4.111 लङः शाकटायनस्यैव 112 |
| 3.4.86 एरः | 3.4.112 द्विषश्च |
| 3.4.87 सेर्ह्मपिच सेः, हि, अपित् 88 | (सार्वधातुकार्धधातुकसंज्ञा-प्रकरणम्) |
| 3.4.88 वा छन्द्सि | 3.4.113 तिङ्-िशत् सार्वधातुकम् |
| 3.4.89 मेर्निः | 3.4.114 आर्घघातुकं शेषः आर्घघातुकम् 116 |
| 3.4.90 आमेतः एतः 91 | 3.4.115 लिट् च |
| 3.4.91 स-वाभ्यां वामौ | 3.4.116 লিভাহিা षি |
| 3.4.92 आडुत्तमस्य पिच उत्तमस्य ९३ | 3.4.117 छन्दस्युभयथा |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपारे | ठे तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ |
| • | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

अथ चतुर्थोऽध्यायस्य प्रथमः पादः

| (सुप्प्रत्यय-प्रकरणम्) | 4.1.21 द्विगोः 24 |
|---|--|
| 4.1.1 ङ्याप्-प्रातिपदिकात् 5.4.160 | 4.1.22 अपरिमाण-बिस्ताचित-कम्बल्येभ्यो न |
| 4.1.2 स्वौजसमौट्-छष्टाभ्याम्-भिस्-ङे- | त द्धितलुकि न तद्धितलुकि 24 |
| भ्याम्-भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्यस्- | 4.1.23 काण्डान्तात् क्षेत्रे |
| ङसोसाम्-ङ्योस्-सुप् | 4.1.24 पुरुषात् प्रमाणेऽन्यतरस्याम् |
| (स्त्रीप्रत्यय-प्रकरणम्) | 4.1.25 बहुवीहेरूधसो ङीष् |
| 4.1.3 स्त्रियाम् 81 | बहुव्रीहेः २९; ऊधसः २० |
| 4.1.4 अजाद्यतष्टाप् | 4.1.26 सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप् |
| 4.1.5 ऋन्नेभ्यो ङीप् ङीप् 24 | सङ्ख्यादेः 27; ङीप् ३९ |
| 4.1.6 उगितश्च | 4.1.27 दाम-हायनान्ताच |
| 4.1.7 वनो र च | 4.1.28 अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् |
| 4.1.8 पादोऽन्यतरस्याम् पादः 9 | अनः, उपधालोपिनः २९ |
| 4.1.9 टाबृचि टाप् 10 | 4.1.29 नित्यं संज्ञा-छन्दसोः संज्ञाछन्दसोः ३१ |
| 4.1.10 न षट्-स्वस्रादिभ्यः न 12 | 4.1.30 केवल-मामक-भागधेय-पापापर- |
| 4.1.11 मनः | समानार्य-कृत-सुमङ्गल-भेषजाच |
| 4.1.12 अनो बहुवीहेः | 4.1.31 रात्रेश्चाजसौ |
| 4.1.13 डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् | 4.1.32 अन्तर्वत्-पतिवतोर्नुक् |
| 4.1.14 अनुपसर्जना त् 77 | 4.1.33 पत्युर्नो यज्ञसंयोगे पत्युः, नः ३३ |
| 4.1.15 टिङ्-ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्- | 4.1.34 विभाषा सपूर्वस्य |
| तयप्-ठक्-ठज्-कज्-ववरपः | 4.1.35 नित्यं सपत्न्यादिषु |
| (वा॰) नज्-स्रजीकक्-ख्युंस्तरुण-तलुनाना- | 4.1.36 पूतकतोरें च ऐ.38 |
| मुपसङ्ख्यानम् | 4.1.37 वृषाकप्यग्नि-कुसित-कुसीदानामुदात्तः |
| • • | उदात्तः ३४ |
| . ^ | 4.1.38 मनोरौ वा वा 39 |
| | 4.1.39 वर्णाद्नुदात्तात् तोपधात् तो नः |
| 4.1.18 सर्वत्र लोहितादि-कतन्तेभ्यः | वर्णाद् अनुदात्तात् ४० |
| 4.1.19 कौरव्य-माण्डूकाभ्यां च | 4.1.40 अन्यतो ङीष् ভীष্ 6 |
| 4.1.20 वयसि प्रथमे | |

बहुबीहेः, अन्तोदात्तात 53 4.1.41 षिद-गौरादिभ्यश्च 4.1.53 अस्वाङ्गपूर्वपदाद वा (वा॰) पिप्पल्यादयश्च वा 55 4.1.54 स्वाङ्गाचोपसर्जनादसंयोगोपधात 4.1.42 जानपद-कुण्ड-गोण-स्थल-भाज-(वा०) अङ्गगात्रकण्ठेभ्य इति वक्तव्यम् नाग-काल-नील-कुश-कामुक-कबराद् 4.1.55 नासिकोदरौष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्णशृङ्गाच वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमा-श्राणा-स्थौल्य-4.1.56 न कोडादि-बह्बचः वर्णानाच्छादनायोविकार-मैथनेच्छा-न 58 4.1.57 सह-नज्-विद्यमानपूर्वाच केशवेशेषु 4.1.58 नख-मुखात संज्ञायाम् 4.1.43 शोणातु प्राचाम् 4.1.59 दीर्घजिह्वी च च्छन्दिस 4.1.44 वोतो गुणवचनात् वा 45 4.1.60 दिक्पूर्वपदान् ङीप् 4.1.45 बह्वादिभ्यश्च बह्वादिभ्यः ४६ (वा०) कृदिकारादक्तिनः 4.1.61 **वाहः** (वा॰) सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके 4.1.62 संख्यशिश्वीति भाषायाम 4.1.63 जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् जातेः 64 4.1.46 नित्यं छन्दिस छन्दिस ४७ (वा॰) योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्य-4.1.47 भुवश्च मत्स्यानामप्रतिषेधः 4.1.48 पुंयोगादाख्यायाम् पुंयोगात् ४९ (वा०) मत्स्यस्य ङ्याम् (वा॰) पालकान्तान्न 4.1.64 पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-(वा०) सूर्याद्देवतायां चाप् वाव्यः बालोत्तरपदाच (वा०) सूर्यागस्त्ययोइछे च ड्यां च 4.1.65 इतो मनुष्यजातेः मनुष्यजातेः ६६ 4.1.49 इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मुड-4.1.66 ऊङ उतः हिमारण्य-यव-यवन-मातुलाचार्या-জভ 72 4.1.67 बाह्वन्तात् संज्ञायाम् णामानुक् 4.1.68 पङ्गोश्च (वा॰) हिमारण्ययोर्महत्त्वे (वा॰) श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च (वा०) यवाद्दोषे 4.1.69 ऊरूत्तरपदाद् औपम्ये (वा॰) यवनाल्लिप्याम् **ऊ**..त् 70 4.1.70 संहित-शफ-लक्षण-वामादेश्र (वा॰) मातुलोपाध्याययोरानुग्वा 4.1.71 कदू-कमण्डल्वोश्छन्दिस क..ल्वोः 72 (वा०) अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे 4.1.72 संज्ञायाम् 4.1.50 कीतात् करणपूर्वात् करणपूर्वात् 51 4.1.73 शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् 4.1.51 क्तादल्पाख्यायाम् क्तात् 53 (वा०) नृ-नरयोर्वृद्धिश्च 4.1.52 बहुवीहेश्चान्तोदात्तात्

| 4.1.74 यङश्चाप् चाप् ७५ | 4.1.94 गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् |
|--|---|
| 4.1.75 आवट्याच | 4.1.95 अत इ ञ् |
| 4.1.76 तिद्धताः 5.4.160 | 4.1.96 बाह्वादिभ्यश्च |
| 4.1.77 यूनस्तिः | 4.1.97 सुधातुरकङ् च |
| 4.1.78 अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् | 4.1.98 गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्र्फञ् गोत्रे 111 |
| गोत्रे अणिजोः 79; ष्यङ् 81; गोत्रे 80 | 4.1.99 नडादिभ्यः फक् फक् 103 |
| 4.1.79 गोत्रावयवात् | 4.1.100 हरितादिभ्योऽञः |
| 4.1.80 कोड्यादिभ्यश्च | 4.1.101 यनिजोश्च |
| 4.1.81 दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुग्रि- | 4.1.102 शरद्वच्छुनक-दर्भाद् भृगु-वत्साग्रायणेषु |
| काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् | 4.1.103 द्रोण-पर्वत-जीवन्तादन्यतरस्याम् |
| (तद्धितप्रत्यय-प्रकरणम्) | 4.1.104 अनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ् |
| 4.1.82 समर्थानां प्रथमाद्वा | 4.1.105 गर्गादिभ्यो यञ् यञ् 109 |
| समर्थानां प्रथमाद् 5.2.140; वा 5.4.67 | 4.1.106 मधु-बभ्वोर्बाह्मण-कौशिकयोः |
| 4.1.83 प्राग्दीव्यतोऽण् अण् 4.3.168 | 4.1.107 कपि-बोधादाङ्गिरसे आङ्गिरसे 109 |
| 4.1.84 अश्वपत्यादिभ्यश्च | 4.1.108 वतण्डाच वतण्डात् 109 |
| (वा॰) गोरजादिप्रसङ्गे यत् | 4.1.109 लुक् स्त्रियाम् |
| 4.1.85 दित्यदित्यादित्य-पत्युत्तरपदाण्ण्यः | 4.1.110 अश्वादिभ्यः फ ञ् फञ् 111 |
| (वा॰) देवाद्याञञौ | 4.1.111 भर्गात् त्रैगर्ते |
| (वा०) बहिषष्टिलोपो यञ् च | 4.1.112 शिवादिभ्योऽण् अण् 119 |
| (वा०) ईकक् च | 4.1.113 अवृद्धाभ्यो नदी-मानुषीभ्यस्तन्नामि- |
| 4.1.86 उत्सादिभ्योऽञ् | काभ्यः |
| 4.1.87 स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्-स्नञौ भवनात् 5.2.1 | 4.1.114 ऋष्यन्धक-वृष्णि-कुरुभ्यश्च |
| 4.1.88 द्विगोर्ऌगनपत्ये | 4.1.115 मातुरुत् सङ्ख्या-सं-भद्रपूर्वायाः |
| 4.1.89 गोत्रेऽलुगचि अचि 91 | 4.1.116 कन्यायाः कनीन च |
| 4.1.90 यूनि लुक् 91 | 4.1.117 विकर्ण-शुङ्ग-च्छगलादु वत्स- |
| 4.1.91 फक्फिओरन्यतरस्याम् | भरद्वाजात्रिषु - |
| (तद्धितेष्वपत्याधिकार-प्रकरणम्) | 4.1.118 पीलाया वा |
| 4.1.92 तस्यापत्यम् 178 | 4.1.119 ढक् च मण्डूकात् |
| 4.1.93 एको गोत्रे | 4.1.120 स्त्रीभ्यो ढक् स्त्रीभ्यः 121; ढक् 127 |

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

| | | • |
|----------|--|--|
| 4.1.121 | द्धचः 122 | 4.1.148 वृद्धाट् ठक् सौवीरेषु बहुलम् |
| 4.1.122 | इतश्चानिञः | वृद्धात, ठक् १४९; सौवीरेषु बहुलम् १५० |
| 4.1.123 | शुभ्रादिभ्यश्च | 4.1.149 फेरुछ च |
| | विकर्ण-कुषीतकात् काश्यपे | 4.1.150 फाण्टाहृति-मिमताभ्यां ण-फिञौ |
| 4.1.125 | भ्रुवो वुक् च | 4.1.151 कुर्वादिभ्यो ण्यः ण्यः 152 |
| | कल्याण्यादीनामिनङ् इनङ् 127 | (वा०) सम्राजः क्षत्रिये |
| 4.1.127 | कुलटाया वा | 4.1.152 सेनान्त-लक्षण-कारिभ्यश्च 153 |
| | चटकाया ऐरक् | 4.1.153 उदीचामि ञ् |
| | गोधाया ढूक् गोधायाः 130; ढूक् 131 | 4.1.154 तिकादिभ्यः फिञ् फिञ् 159 |
| 4.1.130 | आरगुदीचाम् | 4.1.155 कौसल्य-कार्मार्याभ्यां च |
| 4.1.131 | क्षुद्राभ्यो वा | 4.1.156 अणो द्यचः |
| | पितृष्वसुरुछण् पिसुः 133; छण् 134 | 4.1.157 उदीचां वृद्धादगोत्रात् 159 |
| 4.1.133 | ढिक लोपः 134 | 4.1.158 वाकिनादीनां कुक् च कुक् 159 |
| 4.1.134 | मातृष्वसुश्च | 4.1.159 पुत्रान्तादन्यतरस्याम् |
| 4.1.135 | चतुष्पादुभ्यो ढञ् ढञ् १३६ | 4.1.160 प्राचामवृद्धात् फिन् बहुलम् |
| 4.1.136 | गृष्ट्यादिभ्यश्च | 4.1.161 मनोर्जातावञ्-यतौ षुक् च |
| 4.1.137 | राज-श्वशुरादु यत् | 4.1.162 अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् |
| (वा०) रा | ाज्ञो जातावेवेति वाच्यम् | अपत्यं पौत्रप्रभृति 165 |
| 4.1.138 | क्षत्रादु घः | 4.1.163 जीवति तु वंश्ये युवा |
| | कुलात् खः कुलात् 140 | जीवति 164; युवा 165 |
| | अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्-ढकञौ | 4.1.164 भ्रातिर च ज्यायिस |
| | अन्यतरस्याम् 142 | 4.1.165 वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति |
| 4.1.141 | महाकुलाद्ञ्-खञौ | 4.1.166 वृद्धस्य च पूजायाम् |
| 4.1.142 | दुष्कुलाड् ढक् | 4.1.167 यूनश्च कुत्सायाम् |
| 4.1.143 | स्वसुरुछः छः 144 | 4.1.168 जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् |
| 4.1.144 | भ्रातुर्व्यच भ्रातुः 145 | जनपद्शब्दात् क्षत्रियाद् १७७; अञ् १७७ |
| | व्यन् सपत्ने | (वा॰) क्षत्तियसमानशब्दाज्जनपदात्तस्य |
| 4.1.146 | रेवत्यादिभ्यष्ठक् ठक् १४७ | राजन्यपत्यवत् |
| 4.1.147 | गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च कुने 149 | (वा॰) पूरोण् वक्तव्यः |
| | | (वा॰) पाण्डोर्ड्यण् |

| 4.1.169 साल्वेय-गान्धारिभ्यां च | 4.1.175 कम्बोजालुक् छक् 178 |
|---|--|
| 4.1.170 द्यञ्-मगध-कलिङ्ग-सूरमसादण् | (वा॰) कम्बोजादिभ्य इति वक्तव्यम् |
| 4.1.171 वृद्धेत्-कोसलाजादाञ् ञ्यङ् | 4.1.176 स्त्रियामवन्ति-कुन्ति-कुरुभ्यश्च |
| 4.1.172 कुरु-नादिभ्यो ण्यः | स्त्रियाम् 178 |
| 4.1.173 साल्वावयव-प्रत्यग्रथ-कलकूटा- | 4.1.177 अतश्च |
| ३मकादि ञ् | 4.1.178 न प्राच्य-भर्गादि-यौधेयादिभ्यः |
| 4.1.174 ते तद्राजाः तद्राजाः 178 | |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे चर् | र्खाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ |
| | 9 |
| | |
| अथ चतुर्थोऽध्याय | स्य द्वितीयः पादः |
| (तद्धितेषु रक्ताद्यर्थ-प्रकरणम्) | 4.2.16 संस्कृतं भक्षाः संस्कृतम् २०; भक्षाः 19 |
| 4.2.1 तेन रक्तं रागात् तेन 12; रक्तं रागात् 2 | 4.2.17 शूलोखाद्यत् |
| 4.2.2 लाक्षा-रोचनाट् ठक् | 4.2.18 दभष्टक् ठक् 19 |
| (वा॰) नीत्त्या अन्, पीतात् कत्, हरिद्रा- | 4.2.19 उद्धितोऽन्यतरस्याम् |
| महारजनाभ्यामञ् इति वक्तव्यम् | 4.2.20 क्षीराड् ढञ् |
| 4.2.3 नक्षत्रेण युक्तः कालः 6 | 4.2.21 साऽस्मिन् पौर्णमासीति 23 |
| 4.2.4 लुबविशेषे लुप्5 | 4.2.22 आग्रहायण्यश्वत्थाट् ठक् ठक् 23 |
| 4.2.5 संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् | 4.2.23 विभाषा फाल्गुनी-श्रवणा-कार्त्तिकी- |
| 4.2.6 द्वन्द्वाच्छः | चैत्रीभ्यः |
| 4.2.7 दृष्टं साम 9 | 4.2.24 साऽस्य देवता 35 |
| 4.2.8 कलेर्डक् | 4.2.25 कस्येत् |
| 4.2.9 वामदेवाड् ड्यड्-ड्यौ | 4.2.26 शुकाद् घन् |
| 4.2.10 परिवृतो रथः 12 | 4.2.27 अपोनप्त्रपान्नपृभ्यां घः अम् 28 |
| 4.2.11 पाण्डु-कम्बलादिनिः | 4.2.28 छ च छ 29 |
| 4.2.12 हैप-वैयाघादञ् | (वा॰) शतरुद्राद् घश्च |
| 4.2.13 कौमारापूर्ववचने | 4.2.29 महेन्द्राद् घाणौ च |
| 4.2.14 तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः तत्र 20 | 4.2.30 सोमाट् ट्यण् |
| 4.2.15 स्थण्डिलाच्छियतिर व्रते | |

| 4.2.31 वाय्वृतु-पित्रुषसो यत् यत् 32 | 4.2.53 राजन्यादिभ्यो वुञ् |
|---|--|
| 4.2.32 द्यावापृथिवी-शुनासीर-मरुत्वदग्नीषोम- | 4.2.54 भौरिक्याचैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ |
| वास्तोष्पति-गृहमेधाच्छ च | 4.2.55 सोऽस्यादिरिति च्छन्दसः प्रगाथेषु |
| 4.2.33 अमेर्दक् | सोऽस्य ५६ |
| 4.2.34 कालेभ्यो भववत् | 4.2.56 संग्रामे प्रयोजन-योद्धृभ्यः |
| 4.2.35 महाराज-प्रोष्टपदाट् ठञ् | 4.2.57 तदस्यां प्रहरणिमति कीडायां णः |
| (वा॰) पूर्णमासादण् वक्तव्यः | 4.2.58 घञः सास्यां क्रियेति ञः |
| 4.2.36 पितृव्य-मातुल-मातामह-पितामहाः | 4.2.59 तदधीते तद्वेद 66 |
| 4.2.37 तस्य समृहः तस्य 54; समृहः 51 | 4.2.60 कतूक्थादि-सूत्रान्ताट् ठक् |
| 4.2.38 भिक्षादिभ्योऽण् | 4.2.61 क्रमादिभ्यो वुन् |
| 4.2.39 गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्र-राज-राजन्य-राजपुत्र- | 4.2.62 अनुब्राह्मणादिनिः |
| वत्स- मनुष्याजादु वु ञ् वुञ् ४० | 4.2.63 वसन्तादिभ्यष्ठक् |
| (वा॰) वृद्धाचेति वक्तव्यम् | 4.2.64 प्रोक्तास्नुक् प्रोक्तात् 66; लुक् 65 |
| 4.2.40 केदारादु यञ् च केदारादु 41 | 4.2.65 सूत्राच कोपधात् |
| 4.2.41 ठञ् कविचनश्च | 4.2.66 च्छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि |
| 4.2.42 ब्राह्मण-माणव-वाडवादु यन् | (तिद्धितेषु चातुरर्थिक-प्रकरणम्) |
| 4.2.43 ग्राम-जन-बन्धुभ्यस्तल् | 4.2.67 तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि |
| (वा॰) गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् | देशे तन्नाम्नि 70 |
| (वा॰) अहः खः कतौ | 4.2.68 तेन निर्वृत्तम् |
| 4.2.44 अनुदात्तादेर ञ् अञ् ४५ | 4.2.69 तस्य निवासः तस्य 70 |
| 4.2.45 खिण्डकादिभ्यश्च | 4.2.70 अदूरभवश्च |
| 4.2.46 चरणेभ्यो धर्मवत् | 4.2.71 ओर ञ् अञ् <i>7</i> 6 |
| 4.2.47 अचित्त-हस्ति-धेनोष्ठक | 4.2.72 मतोश्च बह्दजङ्गात् |
| 4.2.48 केशाश्वाभ्यां यज्-छावन्यतरस्याम् | 4.2.73 बह्रचः कूपेषु कूपेषु 74 |
| 4.2.49 पाशादिभ्यो यः यः 50 | 4.2.74 उदक् च विपाशः |
| 4.2.50 खल-गो- रथा त् | 4.2.75 सङ्कलादिभ्यश्च |
| 4.2.51 इनि-त्र-कट्यचश्च | 4.2.76 स्त्रीषु सौवीर-साल्व-प्राक्षु |
| 4.2.51 शन-त्र-कट्यपश्च (वा॰) खलादिभ्यः इनिर्वक्तव्यः | 4.2.77 सुवास्त्वादिभ्योऽण् अण् <i>7</i> 9 |
| ` / | 4.2.78 रोणी |
| 4.2.52 विषयो देशे 54 | 4.2.79 कोपधाच |

| 4.2.80 वुञ्-छण्-क-ठजिल-सोनि-र-ढञ्-ण्य- | 4.2.102 कन्थायाष्टक् कन्थायाः 103 |
|---|---|
| य-फक्-फिञिञ्-ञ्य-कक्-ठकोऽरीहण- | 4.2.103 वर्णौ वुक् |
| कृशाश्वर्य-कुमुद्-काश-तृण-प्रेक्षाश्म- | 4.2.104 अव्ययात् त्यप् त्यप् 105 |
| सखि-संकाश-बल-पक्ष-कर्ण-सुतङ्गम- | (वा॰) अमेहक्व-तसि-त्रेभ्य एव |
| प्रगदिन्-वराह-कुमुदादिभ्यः | (वा०) त्यब्नेर्ध्रुव इति वक्तव्यम् |
| 4.2.81 जनपदे छुप् छुप् 83 | 4.2.105 ऐषमो-ह्यः-श्वसोऽन्यतरस्याम् |
| 4.2.82 वरणादिभ्यश्च | 4.2.106 तीर-रूप्योत्तरपदादञ्-ञ्यौ |
| 4.2.83 शर्कराया वा | 4.2.107 दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः दिपदाद् 108 |
| 4.2.84 ठक्-छौ च | 4.2.108 मद्रेभ्योऽञ् अञ् 109 |
| 4.2.85 नद्यां मतुप् मतुप् 86 | 4.2.109 उदीच्यग्रामाच बह्वचोऽन्तोदात्तात् |
| 4.2.86 मध्वादिभ्यश्च | 4.2.110 प्रस्थोत्तरपद-पलद्यादि-कोपधादण् |
| 4.2.87 कुमुद्द-नड-वेतसेभ्यो ड्मतुप् | अण् 113 |
| 4.2.8৪ নভ-शादाङ् ভ্वलच् | 4.2.111 कण्वादिभ्यो गोत्रे गोत्रे 113 |
| 4.2.89 शिखाया वलच् | 4.2.112 इञश्च |
| 4.2.90 उत्करादिभ्यश्छः छः ९१ | 4.2.113 न द्यचः प्राच्य-भरतेषु |
| 4.2.91 नडादीनां कुक् च | 4.2.114 वृद्धाच्छः वृद्धात् 118 |
| (तद्धितेषु शैषिक-प्रकरणम्) | 4.2.115 भवतष्ठक्-छसौ |
| 4.2.92 दोषे 4.3.133 | 4.2.116 काश्यादिभ्यष्ठञ्-ञिठौ ठञ्जिठौ 118 |
| 4.2.93 राष्ट्रावारपाराद् घ-खौ | (वा॰) आपदादिपूर्वपदात् कालान्तात् |
| (वा॰) अवरापारद्विगृहीतादपि विपरीताचेति | 4.2.117 वाहीकग्रामेभ्यश्च |
| वक्तव्यम् | 4.2.118 विभाषोशीनरेषु |
| 4.2.94 ग्रामाद् य-ख ञौ ग्रामाद् 95 | 4.2.119 ओर्देशे ठञ् ओः, ठञ् 120; देशे 145 |
| 4.2.95 कत्त्र्यादिभ्यो ढकञ् ७६ | 4.2.120 वृद्धात् प्राचाम् वृद्धात् 126 |
| 4.2.96 कुल-कुक्षि-ग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु | 4.2.121 धन्व-योपधाद् वुञ् वुञ् 130 |
| 4.2.97 नद्यादिभ्यो ढक् | 4.2.122 प्रस्थ-पुर-वहान्ताच |
| 4.2.98 दक्षिणा-पश्चात्-पुरसस्त्यक् | 4.2.123 रोपधेतोः प्राचाम् |
| 4.2.99 कापिश्याः ष्मक् फक् 100 | 4.2.124 जनपद्-तद्वध्योश्च जध्योः 125 |
| 4.2.100 रङ्कोरमनुष्येऽण् च | 4.2.125 अवृद्धाद्पि बहुवचनविषयात् |
| 4.2.101 द्यु-प्रागपागुदक्-प्रतीचो यत् | अवृद्धादपि 126 |

| न.2.120 जहाव्यापार | रूप गठः | |
|---|--|--|
| 4.2.126 कच्छाग्नि-वक्त्र-वर्तोत्तरपदात् | 4.2.137 गर्तोत्तरपदाच्छः छः ४.3.1 | |
| 4.2.127 धूमादिभ्यश्च | 4.2.138 गहादिभ्यश्च | |
| 4.2.128 नगरात् कुत्सन-प्रावीण्ययोः | (वा॰) कुग्जनस्य परस्य च, देवस्य च, स्वस्य च, | |
| 4.2.129 अरण्यान्मनुष्ये | वेणुकादिभ्यञ्छण् वाच्यः | |
| 4.2.130 विभाषा कुरु-युगन्धराभ्याम् | 4.2.139 प्राचां कटादेः | |
| 4.2.131 मद्र-वृज्योः कन् | 4.2.140 राज्ञः क च | |
| 4.2.132 कोपधादण् अण् 133 | 4.2.141 वृद्धादकेकान्त-खोपधात् वृद्धात् 142 | |
| 4.2.133 कच्छादिभ्यश्च कभ्यः 134 | 4.2.142 कन्था-पलद-नगर-ग्राम-ह्रदोत्तरपदात् | |
| 4.2.134 मनुष्य-तत्स्थयोर्वुञ् | 4.2.143 पर्वताच पर्वतात् 144 | |
| मयोः 135; वुज् 136 | 4.2.144 विभाषाऽमनुष्ये | |
| 4.2.135 अपदातौ साल्वात् साल्वात् 136 | 4.2.145 कृकण-पर्णाद्भारद्वाजे | |
| 4.2.136 गो-यवाग्वोश्च | | |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपारे | ऽ चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ | |
| | • | |
| | | |
| अथ चतुर्थोऽध्यायस्य तृतीयः पादः | | |
| 4.3.1 युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च | 4.3.10 द्वीपादनुसमुद्रं यञ् | |
| युष्मदोः 3 | 4.3.11 कालाट् ठञ् कालाट् 24; ठञ् 15 | |
| 4.3.2 तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ | 4.3.12 श्राद्धे शरदः शरदः शरदः 13 | |
| तस्मिन्नणि च 3 | 4.3.13 विभाषा रोगातपयोः विभाषा 15 | |
| 4.3.3 तवक-ममकावेकवचने | 4.3.14 निशा-प्रदोषाभ्यां च | |
| 4.3.4 अर्घाद् यत् अर्घाद् ७; यत् ६ | 4.3.15 श्वसस्तुट् च | |
| 4.3.5 परावराधमोत्तम-पूर्वाच | 4.3.16 सन्धिवेलाद्यृतु-नक्षत्रेभ्योऽण् | |
| 4.3.6 दिक्पूर्वपदाट् ठञ् च दिक्दात् ७ | 4.3.17 प्रावृष एण्यः | |
| 4.3.7 ग्राम-जनपदैकदेशादञ्-ठञौ | 4.3.18 वर्षाभ्यष्ठक् वर्षाभ्यः 19 | |
| 4.3.8 मध्यान्मः मध्यात् १ | 4.3.19 छन्दिस ठ ञ् | |
| (वा॰) आदेश्व | 4.3.20 वसन्ताच | |
| (वा॰) अवोधसोर्लोपश्च | 4.3.21 हेमन्ताच हेमन्तात् 22 | |
| 4.3.9 अ सांप्रतिके | 4.3.22 सर्वत्राण् च तलोपश्च | |
| | 1.0.44 \till x 1 \tild x 1 \tild x 1 | |

| 4.3.23 | सायं-चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्यु-ट्युलौ | 4.3.46 ग्रीष्म-वसन्तादन्यतरस्याम् |
|--------|--|--|
| | तुट् च ट्युट्युलौ तुट् 24 | 4.3.47 देयमृ णे 50 |
| 4.3.24 | विभाषा पूर्वाह्वापराह्वाभ्याम् | 4.3.48 कलाप्यश्वत्थ-यवबुसाद् वुन् |
| 4.3.25 | तत्र जातः तत्र ५१; जातः ३७ | 4.3.49 ग्रीष्मावरसमाद् वुञ् वुज् 50 |
| 4.3.26 | प्रावृषष्ठप् | 4.3.50 संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च |
| 4.3.27 | संज्ञायां शरदो वुञ् संज्ञायाम् 28 | 4.3.51 व्याहरति मृगः |
| 4.3.28 | पूर्वाह्वापराह्वार्द्रा-मूल-प्रदोषावस्कराद् | 4.3.52 तदस्य सोढम् |
| | वुन् ३० | 4.3.53 तत्र भवः 73 |
| 4.3.29 | पथः पन्थ च | 4.3.54 दिगादिभ्यो यत् यत् 55 |
| 4.3.30 | अमावास्याया वा अमावास्यायाः ३१ | 4.3.55 शरीरावयवाच |
| 4.3.31 | अ च | 4.3.56 दृति-कुक्षि-कलशि-वस्त्यस्त्यहेर्ढञ् |
| 4.3.32 | सिन्ध्वपकराभ्यां कन् सिभ्याम् ३३ | ढ ञ् 57 |
| 4.3.33 | अणञौ च | 4.3.57 ग्रीवाभ्योऽण् च |
| 4.3.34 | श्रविष्ठा-फल्गुन्यनुराधा-स्वाति-तिष्य- | 4.3.58 गम्भीराञ्ज्यः ज्यः 59 |
| | पुनर्वसु-हस्त-विशाखाऽषाढा-बहुलाल् | (वा॰) बहिर्देव-पञ्चजनेभ्यश्च |
| | लुक् लुक् 37 | 4.3.59 अव्ययीभावाच अव्ययीभावात् 61 |
| 4.3.35 | स्थानान्त-गोशाल-खरशालाच | 4.3.60 अन्तः पूर्वपदाट् ठ ञ् |
| 4.3.36 | वत्सशालाभिजिदश्वयुक्-छतभिषजो | (वा॰) अध्यात्मादेष्ठजिष्यते |
| | वा | 4.3.61 ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् |
| 4.3.37 | नक्षत्रेभ्यो बहुलम् | 4.3.62 जिह्वामूलाङ्गुले २छः छः 63 |
| 4.3.38 | कृत-लब्ध-क्रीत-कुशलाः | 4.3.63 वर्गान्ताच वर्गान्तात् 64 |
| 4.3.39 | प्रायभवः 40 | 4.3.64 अशब्दे यत्-खावन्यतरस्याम् |
| 4.3.40 | उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् | 4.3.65 कर्ण-ललाटात् कनलङ्कारे |
| 4.3.41 | सम्भूते 43 | 4.3.66 तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यात- |
| | कोशांड् ढञ् | व्यनाम्नः तस्य व्याख्यानः व्याम्नः ७३ |
| 4.3.43 | कालात् साधु-पुष्यत्-पच्यमानेषु | 4.3.67 बह्वचोऽन्तोदात्ताट् ठञ् ১ র্ ১র |
| | कालात् 52 | 4.3.68 कतु-यज्ञेभ्यश्च |
| 4.3.44 | उप्ते च उप्ते 46 | 4.3.69 अध्यायेष्वेवर्षेः |
| 4.3.45 | आश्वयुज्या वुञ् वुञ् ४६ | 4.3.70 पौरोडाश-पुरोडाशात् ष्टन् |

| · · · · · · · · · · · · · · · · · | * |
|--|--|
| 4.3.71 छन्दसो यदणौ | 4.3.96 अचित्ताददेशकालाट् ठक् |
| 4.3.72 द्यजृद्-बाह्मणर्क्-प्रथमाध्वर-पुरश्चरण- | 4.3.97 महाराजाट् ठ ञ् |
| नामाख्याताट् ठक् | 4.3.98 वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् |
| 4.3.73 अणृगयनादिभ्यः | 4.3.99 गोत्र-क्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् |
| 4.3.74 तत आगतः ततः ८४; आगतः ८२ | 4.3.100 जनपदिनां जनपदवत् सर्वं जनपदेन |
| 4.3.75 ठगायस्थानेभ्यः | समानशब्दानां बहुवचने |
| 4.3.76 शुण्डिकादिभ्योऽण् | 4.3.101 तेन प्रोक्तम् 111 |
| 4.3.77 विद्या-योनिसम्बन्धेभ्यो वुज् विभ्यः 78 | 4.3.102 तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिकोखाच्छण् |
| 4.3.78 ऋतष्ठञ् ठञ् ७९ | 4.3.103 काश्यप-कौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः |
| 4.3.79 पितुर्यच | णिनिः 106 |
| 4.3.80 गोत्रादङ्कवत् | 4.3.104 कलापि-वैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च |
| 4.3.81 हेतु-मनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः | 4.3.105 पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु |
| हेतुमनुष्येभ्यः 82 | 4.3.106 शौनकादिभ्यञ्छन्दिस |
| 4.3.82 मयट् च | 4.3.107 कठ-चरकाल्लुक् |
| 4.3.83 प्रभवति 84 | 4.3.108 कलापिनोऽण् |
| 4.3.84 विदूराञ्ज्यः | 4.3.109 छगलिनो ढिनुक् |
| 4.3.85 तद् गच्छति पथि-दूतयोः तद् 88 | 4.3.110 पाराशर्य-शिलालिभ्यां भिक्षु-नटसूत्रयोः |
| 4.3.86 अभिनिष्कामित द्वारम् | भियोः 111 र |
| 4.3.87 अधिकृत्य कृते ग्रन्थे 88 | 4.3.111 कर्मन्द-कृशाश्वादिनिः |
| 4.3.88 शिशुक्रन्द्-यमसभ-द्वन्द्वेन्द्रजननादि- | 4.3.112 तेनैकदिक् तेन 119; एकदिक् 114 |
| भ्यश्छः | 4.3.113 तसिश्च तसिः 114 |
| 4.3.89 सोऽस्य निवासः सोऽस्य 100 | 4.3.114 उरसो यच |
| 4.3.90 अभिजनश्च अभिजनः 94 | 4.3.115 उपज्ञाते |
| 4.3.91 आयुधजीविभ्य २छः पर्वते | 4.3.116 कृते ग्रन्थे कृते 119 |
| 4.3.92 शण्डिकादिभ्यो ञ्यः | 4.3.117 संज्ञायाम् 119 |
| 4.3.93 सिन्धु-तक्षशिलादिभ्योऽणञौ | 4.3.118 कुलालादिभ्यो वुञ् |
| 4.3.94 तूदी-शलातुर-वर्मती-कूचवाराड्-ढक्- | 4.3.119 क्षुद्रा-भ्रमर-वटर-पादपाद ञ् |
| छण्-ढञ्-यकः | 4.3.120 तस्येदम् 133 |
| 4.3.95 भक्तिः 100 | 4.3.121 रथादा रथात् 122 |
| | |

| 4.3.122 पत्त्रपूर्वादञ् अञ् 123 | (वा०) एकाचो नित्यम् |
|--|---|
| 4.3.123 पत्त्राध्वर्यु-परिषद्श्व | 4.3.145 गोश्च पुरी षे |
| 4.3.124 हल-सीराट् ठक् | 4.3.146 पिष्टाच पिष्टात् 147 |
| 4.3.125 द्वन्द्वाद् वुन् वैर-मैथुनिकयोः | 4.3.147 संज्ञायां कन् |
| 4.3.126 गोत्र-चरणाद् वुञ् | 4.3.148 वीहेः पुरोडाशे |
| 4.3.127 सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् | 4.3.149 असंज्ञायां तिल-यवाभ्याम् |
| संघाङ्कलक्षणेषु 128 | 4.3.150 द्यचश्छन्द् सि 151 |
| 4.3.128 शाकलाद् वा | 4.3.151 नोत्वद् वर्ध्र-बिल्वात् |
| 4.3.129 छन्दोगौक्थिक-याज्ञिक-बह्रूचनटाञ् | 4.3.152 तालादिभ्योऽण् अण् 153 |
| ञ्यः | 4.3.153 जातरूपेभ्यः परिमाणे |
| 4.3.130 न दण्डमाणवान्तेवासिषु 4.3.131 रैवतिकादिभ्यश्चः | 4.3.154 प्राणि-रजतादिभ्योऽञ् अञ् 155 |
| • | 4.3.155 ञितश्च तत्प्रत्ययात् |
| 4.3.132 कौपिञ्चल-हास्तिपदादण् अण् 133 4.3.133 आथर्वणिकस्येकलोपश्च | 4.3.156 कीतवत् परिमाणात् |
| 4.3.133 आयवाणकस्यकलापश्च (तद्धितेषु प्राग्दीव्यतीय-प्रकरणम्) | 4.3.157 उष्ट्राद् वु ञ् वुञ् 158 |
| | 4.3.158 उमोर्णयोर्वा |
| 4.3.134 तस्य विकारः 138 4.3.135 अवयवे च प्राण्योषधि-वृक्षेभ्यः | 4.3.159 एण्या ढञ् |
| 4.3.133 अपपप प त्राण्यापाय-पृदान्यः अवयवे च 138 | 4.3.160 गो-पयसोर्यत् यत् 161 |
| 4.3.136 बिल्वादिभ्योऽण् अण् 138 | 4.3.161 द्रोश्च द्रोः 162 |
| 4.3.137 कोपधाच | 4.3.162 माने वयः |
| 4.3.138 त्रपु-जतुनोः पुक् | 4.3.163 फले लुक् फले 167 |
| 4.3.139 ओर ञ् अञ् ₁₄₁ | 4.3.164 प्रक्षादिभ्योऽण् अण् 165 |
| 4.3.140 अनुदात्तादेश्व | 4.3.165 जम्ब्या वा 166 |
| 4.3.141 पलाशादिभ्यो वा | 4.3.166 लुप्च लुप् 167 |
| 4.3.142 शम्याः ष्ट ञ् | (वा॰) फल-पाक-शुषामुपसङ्ख्यानम् |
| 4.3.143 मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादन- | (वा॰) पुष्पमूलेषु बहुलम् |
| योः मयट् 151; भाम्, अभयोः 144 | 4.3.167 हरीतक्यादिभ्यश्च |
| 4.3.144 नित्यं वृद्ध-शरादिभ्यः | 4.3.168 कंसीय-परशव्ययोर्यजञौ लुक् च |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे चतुर्थाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायस्य चतुर्थः पादः

| (तिद्धितेषु प्राग्वहतीय-प्रकरणम्) | 4.4.26 व्यञ्जनैरुपसिक्ते |
|---|--|
| 4.4.1 प्राग्वहतेष्ठक् ठक् ७४ | 4.4.27 ओजः-सहो-ऽम्भसा वर्तते वर्तते 29 |
| (वा०) गच्छतौ परदारादिभ्यः | 4.4.28 तत् प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् तत् ४६ |
| 4.4.2 तेन दीव्यति खनति जयति जितम् | 4.4.29 परिमुखं च |
| तेन 27 | 4.4.30 प्रयच्छति गर्ह्यम् 31 |
| 4.4.3 संस्कृतम् 4 | 4.4.31 कुसीद-दशैकादशात् ष्टन्-ष्टचौ |
| 4.4.4 कुलत्थ-कोपधादण् | 4.4.32 ওভ্জনি |
| 4.4.5 तरि त 7 | 4.4.33 रक्षति |
| 4.4.6 गोपुच्छाट् ठञ् | 4.4.34 शब्द-दुर्दुरं करो ति |
| 4.4.7 नौ-द्यचष्टन् | 4.4.35 पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति |
| 4.4.8 चरति 11 | 4.4.36 परिपन्थं च तिष्ठति |
| 4.4.9 आकर्षात् ष्ठल् | 4.4.37 माथोत्तरपद-पदव्यनुपदं धावति |
| 4.4.10 पर्पादिभ्यः ष्ठन् | धावति 38 |
| 4.4.11 श्वगणाट् ठञ्च | 4.4.38 आक्रन्दाट् ठञ् च |
| 4.4.12 वेतनादिभ्यो जीवति जीवति 14 | 4.4.39 पदोत्तरपदं गृह्णाति गृह्णाति 40 |
| 4.4.13 वस्त-क्रयविक्रयाट् ठन् ठन् 14 | 4.4.40 प्रतिकण्ठार्थ-ललामं च |
| 4.4.14 आयुधाच्छ च | 4.4.41 धर्मं चरति |
| 4.4.15 हरत्युत्सङ्गादिभ्यः हरति 18 | (वा॰) अधर्माचेति वक्तव्यम् |
| 4.4.16 भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ष्टन् १७ | 4.4.42 प्रतिपथमेति ठंश्च |
| 4.4.17 विभाषा विवधात् | 4.4.43 समवायान् समवैति समवैति 45 |
| 4.4.18 अण् कुटिलिकायाः | 4.4.44 परिषदो ण्यः |
| 4.4.19 निर्वृत्तेऽक्षयूतादिभ्यः निर्वृत्ते 21 | 4.4.45 सेनाया वा |
| 4.4.20 त्रेर्मिन्नत्यं | 4.4.46 संज्ञायां ललाट-कुक्कुट्यो पश्यति |
| 4.4.21 अपमित्य-याचिताभ्यां कक्-कनौ | 4.4.47 तस्य धर्म्यम् तस्य 50; धर्म्यम् 49 |
| 4.4.22 संसृष्टे 25 | 4.4.48 अण् महिष्यादिभ्यः |
| 4.4.23 चूर्णादिनिः | 4.4.49 ऋतोऽञ् |
| 4.4.24 लवणास्नुक् | 4.4.50 अवकयः |
| 4.4.25 मुद्रादण् | |

| 4.4.51 तदस्य पण्यम् तदस्य ६५; पण्यम् ५४ | 4.4.78 खः सर्वधुरा त् खः 79 |
|--|---|
| 4.4.52 लवणाट् ठञ् | 4.4.79 एकधुराल्लुक् च |
| 4.4.53 किशारादिभ्यः छन् छन् 54 | 4.4.80 शकटादण् |
| 4.4.54 शलालुनोऽन्यतरस्याम् | 4.4.81 हल-सीराट् ठक् |
| 4.4.55 शिल्पम् 56 | 4.4.82 संज्ञायां जन्याः |
| 4.4.56 मङ्डुक-झर्झरादणन्यतरस्याम् | 4.4.83 विध्यत्यधनुषा |
| 4.4.57 प्रहरणम् 59 | 4.4.84 धन-गणं लब्धा ਲ ब्धा 85 |
| 4.4.58 परश्वधाट् ठ ञ् च | 4.4.85 अन्नाण्णः |
| 4.4.59 शक्ति-यष्ट्योरीकक् | 4.4.86 वशं गतः |
| 4.4.60 अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः | 4.4.87 पदमस्मिन् दृश्यम् |
| 4.4.61 शीलम् 62 | 4.4.88 मूलमस्याबर्हि |
| 4.4.62 छत्रादिभ्यो णः | 4.4.89 संज्ञायां धेनुष्या |
| 4.4.63 कर्माध्ययने वृत्तम् 64 | 4.4.90 गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः |
| 4.4.64 बह्रच्पूर्वपदाट् ठच् | 4.4.91 नौ-वयो-धर्म-विष-मूल-मूल-सीता- |
| 4.4.65 हितं भक्षाः | तुलाभ्यस्तार्य-तुल्य-प्राप्य-वध्यानाम्य- |
| 4.4.66 तदस्मै दीयते नियुक्तम् 68 | सम-समित-सम्मितेषु |
| 4.4.67 श्राणा-मांसौदनाट् टिठन् | 4.4.92 धर्म-पथ्यर्थ-न्यायादनपेते |
| 4.4.68 भक्तादणन्यतरस्याम् | 4.4.93 छन्द सो निर्मिते निर्मिते 94 |
| 4.4.69 तत्र नियुक्तः तत्र ७४; नियुक्तः ७० | 4.4.94 उरसोऽण् च |
| 4.4.70 अगारान्ताट् ठन् | 4.4.95 हृदयस्य प्रियः हृदयस्य % |
| 4.4.71 अध्यायिन्यदेशकालात् | 4.4.96 बन्धने चर्षों |
| 4.4.72 कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानेषु व्यवहरति | 4.4.97 मत-जन-हलात् करण-जल्प-कर्षेषु |
| 4.4.73 निकटे वस ति वसति <i>7</i> 4 | 4.4.98 तत्र साधुः तत्र ११९; साधुः १०६ |
| 4.4.74 आवसथात् ष्ठल् | 4.4.99 प्रतिजनादिभ्यः खञ् |
| (तद्धितेषु प्राग्घितीय-प्रकरणम्) | 4.4.100 भक्ताण्णः |
| 4.4.75 प्राग्धिताद् यत् यत् 5.1.4 | 4.4.101 परिषदो ण्यः |
| 4.4.76 तद्वहति रथ-युग-प्रासङ्गम् | 4.4.102 कथादिभ्यष्ठक् |
| तद् 86; वहति 82 | 4.4.103 गुडादिभ्यष्ठञ् |
| 4.4.77 धुरो यड्-ढकौ | 4.4.104 पथ्यतिथि-वसति-स्वपतेर्द्वज |

| 4.4.105 सभाया यः सभायाः 106 | 4.4.126 अश्विमानण् |
|---|--|
| 4.4.106 ढश्छन्द सि | 4.4.127 वयस्यासु मूर्घो मतुप् |
| 4.4.107 समानतीर्थे वासी | 4.4.128 मत्वर्थे मास-तन्वोः मत्वर्थे 132 |
| 4.4.108 समानोदरे शयित ओ चोदात्तः | (वा॰) लगकारेकाररफाश्च वक्तव्याः |
| श्चितः 109 | 4 4.129 मधोर्ज च |
| 4.4.109 सोद्राद् यः | 4.4.130 ओजसोऽहनि यत्-खौ |
| 4.4.110 भवे छन्द् सि भवे 118; छन्द्सि 144 | 4.4.131 वेशो-यशआदेर्भगाद् यल् 132 |
| 4.4.111 पाथो-नदीभ्यां ड्यण् | 4.4.132 खच |
| 4.4.112 वेशन्त-हिमवद्भ्यामण् | 4.4.133 पूर्वैः कृतमिन-यौ च |
| 4.4.113 स्रोतसो विभाषा ड्यड्-ड्यौ | 4.4.134 अद्भिः संस्कृतम् |
| 4.4.114 सगर्भ-सयूथ-सनुताद् यन् | 4.4.135 सहस्रेण संमितौ घः |
| 4.4.115 तुग्राद् घन् | सहस्रेण, घः 136 |
| 4.4.116 अग्राद् यत् अग्राद् 117 | 4.4.136 मतौ च |
| 4.4.117 घ-च्छो च | 4.4.137 सोममर्हति यः सोमम्, यः 137 |
| 4.4.118 समुद्राभ्राद् घः | 4.4.138 मये च मये 140 |
| 4.4.119 बर्हिषि दत्तम् | 4.4.139 मधोः |
| 4.4.120 दूतस्य भाग-कर्मणी | 4.4.140 वसोः समूहे च |
| 4.4.121 रक्षो-यातूनां हननी | 4.4.141 नक्षत्राद् घः |
| 4.4.122 रेवती-जगती-हविष्याभ्यः प्रशस्ये | 4.4.142 सर्व-देवात् तातिल् तातिल् 144 |
| 4.4.123 असुरस्य स्वम् असुरस्य ₁₂₄ | 4.4.143 शिव-शमरिष्टस्य करे शिस्य 144 |
| 4.4.124 मायायामण् | 4.4.144 भावे च |
| 4.4.125 तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु | |
| लुक् च मतोः 127 | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (तद्धितेषु छ-यद्विधि-प्रकरणम्) | 5.1.21 शताच ठन्-यतावश ते |
|--|--|
| 5.1.1 प्राक् कीताच्छः 35 | 5.1.22 सङ्ख्याया अति-शदन्तायाः कन् |
| 5.1.2 उगवादिभ्यो यत् यत् 4 | कन् 24 |
| (वा॰) शुनः सम्प्रसारणं वा च दीर्घत्वम् | 5.1.23 वतोरिड् वा |
| (वा॰) नामि नभं च | 5.1.24 विंशति-त्रिंशन्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् |
| 5.1.3 कम्बलाच संज्ञायाम् | 5.1.25 कंसाट् टिठन् |
| 5.1.4 विभाषा हविरपूपादिभ्यः | 5.1.26 शूर्पादञन्यतरस्याम् |
| 5.1.5 तस्मै हितम् 11 | 5.1.27 शतमान-विंशतिक-सहस्र-वसनादण् |
| 5.1.6 शरीरावयवाद् यत् यत् यत् 7 | 5.1.28 अध्यर्धपूर्व-द्विगोर्ऌगसंज्ञायाम् |
| 5.1.7 खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्मणश्च | अगोः 35; लुक् 31 |
| 5.1.8 अजाविभ्यां थ्यन् | 5.1.29 विभाषा कार्षापण-सहस्राभ्याम् |
| 5.1.9 आत्मन्-विश्वजन-भोगोत्तरपदात् खः | विभाषा 31 5.1.30 द्वि-त्रिपूर्वान्निष्कात् द्विर्वात् 31 |
| (वा॰) सर्वजनाट् ठञ् खश्च | 5.1.31 बिस्ताच |
| 5.1.10 सर्व-पुरुषाभ्यां ण-ढञौ | 5.1.32 विंशतिकात् खः |
| 5.1.11 माणव-चरकाभ्यां खञ् | 5.1.33 खार्या ईकन् |
| 5.1.12 तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ 15 | 5.1.34 पण-पाद-माष-श्वतादु यत् यत् 36 |
| 5.1.13 छदिरुपधि-बलेर्ह ञ् | 5.1.35 शाणादु वा शाणातु ३६ |
| 5.1.14 ऋषभोपानहोर्ज्यः | 5.1.36 द्वि-त्रिपूर्वादण् च |
| 5.1.15 चर्मणोऽञ् | 5.1.37 ते न की तम् |
| 5.1.16 तदस्य तदस्मिन् स्यादिति 17 | 5.1.38 तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ 41 |
| 5.1.17 परिखाया ढञ् | 5.1.39 गो-द्यचोऽसङ्ख्या-परिमाणाश्वादेर्यत् |
| (तिद्धितेषु प्राग्वतीयाः) | उ.1.59 भा-व्य पाउराङ्ख्या-पारमाना पायपर यत् 40 |
| 5.1.18 प्राग्वतेष्ठञ् ठञ् 114 | 5.1.40 પુત્રાच्छ च |
| (प्राग्वतीयेष्वार्हीय-प्रकरणम्) | 5.1.41 सर्वभूमि-पृथिवीभ्यामणञौ 43 |
| 5.1.19 आर्हादगोपुच्छ-सङ्ख्या-परिमाणाट् | 5.1.42 तस्येश्वरः |
| ठक् आर्हात् 36; ठक् 71 | 5.1.43 तत्र विदित इति च तत्र विदितः 44 |
| 5.1.20 असमासे निष्कादिभ्यः | 5.1.44 लोकसर्वलोकाट् ठञ् |

| 5.1.45 | तस्य वापः 46 | 5.1.68 पात्राद् घंश्च |
|--------|--|--|
| 5.1.46 | पात्रात् छन् | 5.1.69 कडङ्गर-दक्षिणाच्छ च |
| 5.1.47 | तदस्मिन् वृष्याय-लाभ-शुल्कोपदा | 5.1.70 स्थालीबिलात् |
| | दीयते 49 | 5.1.71 यज्ञर्त्विग्भ्यां घ-खञौ |
| 5.1.48 | पूरणार्द्धाट् ठन् ठन् ४९ | (प्राग्वतीयाः) |
| 5.1.49 | भागाद् यच | 5.1.72 पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति |
| 5.1.50 | तद्धरित वहत्यावहित भाराद्वंशादिभ्यः | 5.1.73 संशयमापन्नः |
| | तद् 55; हरति वहत्यावहति 51 | 5.1.74 योजनं गच्छति गच्छति 77 |
| 5.1.51 | वस्न-द्रव्याभ्यां ठन्-कनौ | 5.1.75 पथः ष्कन् पथः 76 |
| 5.1.52 | सम्भवत्यवहरति पचति 55 | 5.1.76 पन्थो ण नित्यम् |
| 5.1.53 | आढकाचित-पात्रात् खोऽन्यतरस्याम् | 5.1. 77 उत्तरपथेनाहृतं च |
| | आत्रात् ५४; अन्यम् ५५ | (प्राग्वतीयेषु कालाधिकार-प्रकरणम्) |
| 5.1.54 | द्विगोः ष्ठंश्च द्विगोः ष्ठन् ५५ | 5.1.78 कालात् 96 |
| 5.1.55 | कुलिजाल् लुक्-खौ च | 5.1.79 ते न निर्वृ त्तम् |
| 5.1.56 | सोऽस्यांश-वस्न-भृतयः | 5.1.80 तमधीष्टो भृतो भूतो भावी |
| 5.1.57 | तद्स्य परिमाणम् 62 | 5.1.81 मासाद्वयसि यत्-खञौ |
| 5.1.58 | सङ्ख्यायाः संज्ञा-संघ-सूत्राध्ययनेषु | मासात् 82; वयसि 83 |
| 5.1.59 | पङ्क्ति-विंशति-त्रिंशच्-चत्वारिशत्- | 5.1.82 द्विगोर्यप् यप् 83 |
| | पञ्चाशत्-षष्टि-सप्तत्यशीति-नवति- | 5.1.83 षण्मासाण्ण्यच षण्.ण्यत् ८४ |
| | शतम् | 5.1.84 अवयसि ठंश्च |
| 5.1.60 | पञ्चद्-द्शतौ वर्गे वा वर्गे 61 | 5.1.85 समायाः खः समायाः 86; खः 88 |
| 5.1.61 | सप्तनोऽञ् च्छन्दिस | 5.1.86 द्विगोर्वा द्विगोः 89; वा 88 |
| 5.1.62 | त्रिंशच्-चत्वारिशतोर्बाह्मणे संज्ञायां | 5.1.87 रात्र्यहःसंवत्सराच |
| | डण् | 5.1.88 वर्षास्त्रुक् च वर्षात् 89 |
| 5.1.63 | तद्र्हिति तद् ७६; अर्हति ७१ | 5.1.89 चित्तवति नित्यम् |
| 5.1.64 | छेदादिभ्यो नित्यम् नित्यम् 65 | 5.1.90 षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते |
| 5.1.65 | शीर्षच्छेदाद् यच यत् 70 | 5.1.91 वत्सरान्ताच्छइछन्द् सि 92 |
| 5.1.66 | दण्डादिभ्यः | 5.1.92 सं-परिपूर्वात् ख च |
| 5.1.67 | छन्दिस च | 5.1.93 तेन परिजय्य-लभ्य-कार्य-सुकरम् |

| 5.1.94 तदस्य ब्रह्मचर्यम् | 5.1.116 तत्र तस्येव | | |
|---|---|--|--|
| (वा॰) गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्टः | 5.1.117 तद्र्हम् | | |
| 5.1.95 तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः | 5.1.118 उपसर्गाच्छन्दिस धात्वर्थे | | |
| 5.1.96 तत्र च दीयते कार्यं भववत् | (तद्धितेषु भावकर्मार्थ-प्रकरणम्) | | |
| तत्र 97; दीयते कार्यम् 98 | 5.1.119 तस्य भावस्त्व-तलौ | | |
| (प्राग्वतीयाः) | तस्य भावः 136; त्वतलौ 139 | | |
| 5.1.97 व्युष्टादिभ्योऽण् | 5.1.120 आचि त्वात् 138 | | |
| 5.1.98 तेन यथाकथाच-हस्ताभ्यां ण-यतौ | 5.1.121 न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषाद्चतुर-सङ्गत- | | |
| 5.1.99 सम्पादिनि 100 | लवण-वट-युध-कत-रस-लसेभ्यः | | |
| 5.1.100 कर्म-वेषाद् यत् | 5.1.122 पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा इ मनिज्वा 123 | | |
| 5.1.101 तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः | 5.1.123 वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च ष्यञ् 124 | | |
| तस्मै प्रभवति 103 | 5.1.124 गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च | | |
| 5.1.102 योगाद्यच | कर्मणि 136 | | |
| 5.1.103 कर्मण उक ञ् | (वा॰) चातुर्वण्यादीनां स्वार्थ उपसङ्ख्यानम् | | |
| 5.1.104 समयस्तदस्य प्राप्तम् | 5.1.125 स्तेनाद् यन् नलोपश्च | | |
| तद्स्य ११४; प्राप्तम् १०७ | 5.1.126 सख्युर्यः | | |
| 5.1.105 ऋतोरण् ऋतोः 106 | 5.1.127 कपि-ज्ञात्योर्ढक् | | |
| 5.1.106 छन्दिस घस् | 5.1.128 पत्यन्त-पुरोहितादिभ्यो यक् | | |
| 5.1.107 कालाद् यत् कालात् 108 | 5.1.129 प्राणभृज्जाति-वयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ | | |
| 5.1.108 प्रकृष्टे ठ ञ् | 5.1.130 हायनान्त-युवादिभ्योऽण् अण् 131 | | |
| 5.1.109 प्रयोजनम् 113 | 5.1.131 इगन्ताच लघुपूर्वात् | | |
| 5.1.110 विशाखाषाढादण् मन्थ-दण्डयोः | 5.1.132 योपधादु गुरूपोत्तमादु वुञ् वुञ् 134 | | |
| 5.1.111 अनुप्रवचनादिभ्यश्च्छः छः 112 | (वा॰) सहायादु वा | | |
| 5.1.112 समापनात् सपूर्वपदात् | 5.1.133 द्वन्द्व-मनोज्ञादिभ्यश्च | | |
| 5.1.113 ऐकागारिकट् चौरे | 5.1.134 गोत्र-चरणाच्छ्लाघात्याकारतद्वेतेषु | | |
| 5.1.114 आकालिकडाद्यन्तवचने | 5.1.135 होत्राभ्यरछः | | |
| (तद्धितेषु वतिप्रत्ययः) | 5.1.136 ब्रह्मणस्त्वः | | |
| 5 1 115 तेन तल्यं क्रिया चेट वृतिः वृतिः 118 | | | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायस्य द्वितीयः पादः

| (तिद्धेतेषु पाश्चमिक-प्रकरणम्) | 5.2.24 तस्य पाकमूले पील्वदि-कर्णादिभ्यः |
|---|--|
| 5.2.1 धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् धात्रे ४ | कुणब्-जाहचौ तस्य मूलम् 25 |
| 5.2.2 वीहि-शाल्योर्ढक् | 5.2.25 पक्षात् तिः |
| 5.2.3 यव-यवक-षष्टिकाद् यत् यत् 4 | 5.2.26 तेन वित्तश्रुञ्जुप्-चणपौ |
| 5.2.4 विभाषा तिल-माषोमा-भङ्गाणुभ्यः | 5.2.27 वि-नञ्भ्यां ना-नाञौ न सह |
| 5.2.5 सर्वचर्मणः कृतः ख-खञौ | 5.2.28 वेः शालच्-छङ्कटचौ वेः २९ |
| 5.2.6 यथामुख-संमुखस्य दर्शनः खः खः 15 | 5.2.29 संप्रोदश्च कटच् कटच् 30 |
| 5.2.7 तत् सर्वादेः पथ्यङ्ग-कर्म-पत्र-पात्रं | (वा॰) विकारे स्नेहे तैलच् |
| व्याप्नोति तत् 17 | 5.2.30 अवात् कुटारच अवात् 31 |
| 5.2.8 आप्रपदं प्राप्नोति | 5.2.31 नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्-नाटज् |
| 5.2.9 अनुपद-सर्वान्नायानयं बद्धा-भक्षयति- | भ्रटचः नते नासिकायाः 33; संज्ञायाम् 34 |
| नेयेषु | 5.2.32 नेर्बिडज्-बिरीसचौ नेः 33 |
| 5.2.10 परोवर-परम्पर-पुत्रपौत्रमनुभवति | 5.2.33 इनच्-पिटच् चिक-चि च |
| 5.2.11 अवारपारात्यन्तानुकामं गामी | 5.2.34 उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः |
| 5.2.12 समांसमां विजायते विजायते 13 | 5.2.35 कर्मणि घटोऽठच् |
| 5.2.13 अद्यश्वीनाऽवष्टब्ये | 5.2.36 तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच् |
| 5.2.14 आगवीनः | तद्स्य ४४ |
| 5.2.15 अनुग्वलङ्गामी अलङ्गामी 17 | 5.2.37 प्र माणे द्वयसज्-दग्न ञ्-मात्रचः 38 |
| 5.2.16 अध्वनो यत्-खौ यत्सौ 17 | 5.2.38 पुरुष-हस्तिभ्यामण् च |
| 5.2.17 अभ्यमित्राच्छ च | 5.2.39 यत्-तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् वतुप् 41 |
| 5.2.18 गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे | 5.2.40 किमिद्म्भ्यां वो घः वो घः 41 |
| 5.2.19 अश्वस्यैकाहगमः | 5.2.41 किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च |
| 5.2.20 शालीन-कौपीने अधृष्टाकार्ययोः | 5.2.42 सङ्ख्याया अवयवे तयप् |
| 5.2.21 व्रातेन जीवति | 5.2.43 द्वि-त्रिभ्यां तयस्यायज् वा तवा ४४ |
| 5.2.22 साप्तपदीनं सख्यम् | 5.2.44 उभादुदात्तो नित्यम् |
| 5.2.23 हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् | (तद्धितेषु डादिप्रत्यय-प्रकरणम्) |
| | 5.2.45 तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड् डः |

तदस्मिन्नधिकमिति ४६

| 5.2.46 शदन्त-विंश तेश्च | 5.2.72 शीतोष्णाभ्यां कारिणि |
|--|--|
| 5.2.47 सङ्ख्याया गुणस्य निमाने मयट् | 5.2.73 अधिकम् |
| सङ्ख्यायाः 58 | 5.2.74 अनुकाभिकाभीकः कमिता |
| 5.2.48 तस्य पूरणे डट् तस्य पूरणे 58; डट् 53 | 5.2.75 पार्श्वेनान्विच्छति अन्विच्छति ७६ |
| 5.2.49 नान्तादसङ्ख्यादेर्मट् नादेः 50 | 5.2.76 अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक्-ठञौ |
| 5.2.50 थट् च छन्द् सि | 5.2.77 तावतिथं ग्रहणमिति छुग् वा |
| 5.2.51 षट्-कति-कतिपय-चतुरां थुक् | 5.2.78 स एषां ग्रामणीः |
| (वा॰) चतुरञ्छयतावाद्यक्षरलोपश्च | 5.2.79 श्रृङ्खलमस्य बन्धनं करभे |
| 5.2.52 बहु-पूग-गण-संघस्य तिथुक् | 5.2.80 उ त्क उन्मनाः |
| 5.2.53 वतोरिथुक् | 5.2.81 काल-प्रयोजनाद् रोगे |
| 5.2.54 द्वेस्तीयः तीयः 55 | 5.2.82 तदस्मिन्नन्नं प्राये संज्ञायाम् 83 |
| 5.2.55 त्रेः संप्रसारणं च | 5.2.83 कुल्माषादञ् |
| 5.2.56 विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् | 5.2.84 श्रोत्रियंरछन्दोऽधी ते |
| तमट् 58 | 5.2.85 श्राद्धमनेन भुक्तमिनि-ठनौ अनेन 88 |
| 5.2.57 नित्यं शतादि-मासार्धमास-संवत्सराच | 5.2.86 पूर्वादिनिः पू र्वात् <i>87;</i> इनिः 91 |
| 5.2.58 षष्ट्यादेश्चासङ्ख्यादेः | 5.2.87 सपूर्वाच |
| 5.2.59 मतौ छः सूक्त-साम्नोः मतौ छः 62 | 5.2.88 इप्रादिभ्यश्च |
| 5.2.60 अध्यायानुवाकयोर्लुक् अयोः 62 | 5.2.89 छन्दसि परिपन्थि-परिपरिणौ पर्यवस्थातरि |
| 5.2.61 विमुक्तादिभ्योऽण् | 5.2.90 अनुपद्यन्वेष्टा |
| 5.2.62 गोषदादिभ्यो वुन् वुन् 63 | 5.2.91 साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् |
| 5.2.63 রেস কুহাল: पथ: রেস 67; कुহা ল: 64 | 5.2.92 क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः |
| 5.2.64 आकर्षादिभ्यः कन् कन् 82 | 5.2.93 इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्ट- |
| 5.2.65 धन-हिरण्यात् कामे | मिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा |
| 5.2.66 स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते प्रसिते 67 | (तिद्धितेषु मत्वर्थीय-प्रकरणम्) |
| 5.2.67 उदराट् ठगाद्यूने | 5.2.94 तद्स्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् |
| 5.2.68 सस्येन परिजातः | 5.2.95 रसादिभ्यश्च |
| 5.2.69 अंशं हारी | 5.2.96 प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् |
| 5.2.70 तन्त्रादिचरापहृते | लच् 99 ; अन्यतरस्याम् 140 |
| 5.2.71 ब्राह्मणकोिष्णिके संज्ञायाम् | |

विनि: 122

छन्दिस 123

वाच: 125

डनिः 137

5.2.118 **एक-गोपूर्वाट् ठञ् नित्यम्** ठञ् 119 5 2 98 वत्सांसाभ्यां काम-बले 5.2.99 फेनादिलच च 5.2.119 शत-सहस्रान्ताच निष्कात 5.2.120 रूपादाहत-प्रशंसयोर्यप 5.2.100 लोमादि-पामादि-पिच्छादिभ्यः श-नेलच: (वा॰) यप्प्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यते 5.2.121 अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः 5.2.101 प्रज्ञा-श्रद्धार्चाभ्यो णः 5.2.102 तपः-सहस्राभ्यां विनीनी त..म 103 5.2.122 **बहुलं छन्दि**स 5.2.103 अण च अण् 105 5.2.123 ऊर्णाया युस् 5 2 104 सिकता-शर्कराभ्यां च सि..म् 105 5.2.124 वाचो गिमनिः 5.2.105 देशे लुबिलचौ च 5.2.125 आलजाटचौ बहुभाषिणि 5.2.106 **दन्त उन्नत उरच्** 5 2 126 स्वामिन्नैश्वर्ये 5.2.107 ऊष-सुषि-मुष्क-मधो रः 5.2.127 अर्शआदिभ्योऽच (वा०) रप्रेकरणे ख-मुख-कुञ्जेभ्य 5.2.128 द्वन्द्वोपताप-गर्ह्यात प्राणिस्थादिनिः उपसङ्ख्यानम् 5.2.108 **द्यु-द्रुभ्यां मः** 5.2.129 वातातिसाराभ्यां कुक् च 5.2.109 केशादु वोऽन्यतरस्याम् **वः** 110 5.2.130 **वयसि प्रणात** (वा॰) अन्येभ्योऽपि दृश्यते 5.2.131 सुखादिभ्यश्च (वा॰) अर्णसो लोपश्च 5 2 132 धर्म-शील-वर्णान्ताच 5.2.110 गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम् 5.2.133 **हस्ताजातौ** 5.2.111 काण्डाण्डादीरन्नीरचौ 5.2.134 वर्णादु ब्रह्मचारिणि 5.2.112 रजः-कृष्यासृती-परिषदो वलच् 5.2.135 पुष्करादिभ्यो देशे **वलच्** 113 (वा॰) अर्थाचासन्निहिते (वा०) वलच्प्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यते (वा॰) तदन्ताचेति वक्तव्यम् 5.2.113 **दन्त-शिखात् संज्ञायाम्** सं..म् 114 5.2.136 बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् 5.2.114 ज्योत्स्ना-तमिस्ना-शृङ्गिणोर्जस्वन्नुर्ज-5.2.137 संज्ञायां मन्-माभ्याम् स्वल-गोमिन-मलिन-मलीमसाः 5.2.138 कं-शम्भ्यां ब-भ-युस्-ति-तु-त-यसः 5.2.115 अत **इनि-ठनौ** इनिठनौ 117 5.2.139 तुन्दि-वलि-वटेर्भः 5.2.116 वीह्यादिभ्यश्च 5.2.140 अहम्-शुभमोर्युस् 5.2.117 तुन्दादिभ्य इलच् च

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायस्य तृतीयः पादः

| | • |
|---|--|
| अथ स्वार्थिकाः | 5.3.24 इदमस्थमुः थ मुः 25 |
| (तद्धितेषु प्राग्दिशीय-प्रकरणम्) | (वा॰) एतदोऽपि वाच्यः |
| 5.3.1 प्राग्दिशो विभक्तिः 26 | 5.3.25 किमश्च किमः 26 |
| 5.3.2 किं-सर्वनाम-बहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः 26 | 5.3.26 था हेतौ च च्छन्दिस |
| 5.3.3 इदम इरा् इदमः 4 | (तिद्धतेषु दिगाद्यर्थकाः) |
| 5.3.4 एतेतौ र-थोः | 5.3.27 दिक्शब्देभ्यः सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यो |
| 5.3.5 एतदोऽन् | दिग्-देश-कालेष्वस्तातिः दिक्शषु 41 |
| 5.3.6 सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि | 5.3.28 दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् अतसुच् 29 |
| 5.3.7 पञ्चम्यास्तिस्र तसिल् १ | 5.3.29 विभाषा परावराभ्याम् |
| 5.3.8 तसेश्च | 5.3.30 अश्रेर्छक् |
| 5.3.9 पर्यभिभ्यां च | 5.3.31 उपर्युपरिष्टात् |
| 5.3.10 सप्तम्यास्त्रल् सप्तम्याः 22 | 5.3.32 पश्चात् |
| 5.3.11 इदमो हः | 5.3.33 पश्च पश्चा च च्छन्दिस |
| 5.3.12 किमोऽत् किमः 13 | 5.3.34 उत्तराधर-दक्षिणादातिः उ त्तणात् 35 |
| 5.3.13 वा ह च च्छन्द् सि | 5.3.35 एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः |
| 5.3.14 इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते | अपञ्चम्याः ३८ |
| 5.3.15 सर्वैकान्य-किं-यत्तदः काले दा | 5.3.36 दक्षिणादाच् द क्षिणात् <i>37;</i> आच् 38 |
| काले 22 | 5.3.37 आहि च दूरे आहि, दूरे 38 |
| 5.3.16 इदमो हिंऌ इदमः 18 | 5.3.38 उत्तरा च |
| 5.3.17 अधुना | 5.3.39 पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चेषाम् |
| 5.3.18 दानीं च दानीम् 19 | पूणाम्, पुरधवः 40 |
| 5.3.19 तदो दा च | 5.3.40 अस्ताति च अस्ताति 41 |
| 5.3.20 तयोर्दा-र्हिलौ च च्छन्दिस | 5.3.41 विभाषाऽवरस्य |
| 5.3.21 अनद्यतने हिंलन्यतरस्याम् | 5.3.42 सङ्ख्याया विधार्थे धा |
| 5.3.22 सद्यः परुत् परार्येषमः परेद्यव्यद्य | सङ्ख्यायाः, धा ४३ |
| पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युर- | 5.3.43 अधिकरणविचाले च |
| धरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः | 5.3.44 एकाद्धो ध्यमुञन्यारयाम् |
| 5.3.23 प्रकारवचने थाल् प्रने 26 | धः, अन्यतरस्याम् ४६ |
| | |

| 5.3.45 | द्वि-त्र्योश्च धमुञ् | द्विज्योः 46 | | (तद्धितेषु प्रागिवीय-प्रकरणम् |) |
|--------|---------------------------|--------------------|--------|---------------------------------|------------------|
| 5.3.46 | एधाच | | 5.3.70 | प्रागिवात् कः | 95 |
| 5.3.47 | याप्ये पाशप् | | 5.3.71 | अव्यय-सर्वनाम्नामकच् प्राक् | टेः 95 |
| 5.3.48 | पूरणाद्भागे तीयादन् | | (वा०) | ओकारसकारभकारादौ सुपि स | र्वनाम्नष्टेः |
| | पूरणात् ४९; भागे | 51; अन् 50 | j | प्रागकच्, अन्यत्र सुबन्तस्य | |
| 5.3.49 | प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि | | 5.3.72 | कस्य च दः | 95 |
| | | च्छन्दसि 50 | 5.3.73 | अज्ञाते | |
| 5.3.50 | षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च | षभ्याम् 51 | 5.3.74 | कुत्सिते | 75 |
| 5.3.51 | मान-पश्चङ्गयोः कन्-लुकौ | | 5.3.75 | संज्ञायां कन् | |
| | | कन्लुकौ 52 | 5.3.76 | अनुकम्पायाम् | 82 |
| | एकादाकिनिचासहाये | | | नीतौ च तदुयुक्तात् | |
| 5.3.53 | भूतपूर्वे चरट् | चरट् 54 | | ~ • | तद्युक्तात् 80 |
| 5.3.54 | षष्ट्या रूप्य च | | 5.3.78 | बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज् वा | |
| 5.3.55 | अतिशायने तमबिष्ठनौ | | | बह्रचः, ठज्वा 80; मन् | ष्यनाम्नः 82 |
| | अतिशायने ! | 57; तमप् 56 | 5.3.79 | घनिलचौ च | यनिलचौ 80 |
| 5.3.56 | तिङश्च | 85 | 5.3.80 | प्राचामुपादेरडज्-वुचौ च | |
| 5.3.57 | द्विवचन-विभज्योपपदे तरब | ोयसुनौ | 5.3.81 | जातिनाम्नः कन् | कन् 82 |
| 5.3.58 | अजादी गुणवचनादेव | अजादी 65 | 5.3.82 | अजिनान्तस्योत्तरपद्लोपश्च | लोपः ८४ |
| 5.3.59 | तुरुछन्दसि | | | ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयाद्चः | |
| 5.3.60 | प्रशस्यस्य श्रः | ाशस्यस्य 61 | | | म्, अचः 84 |
| 5.3.61 | ज्य च | ज्य 62 | 5.3.84 | शेवल-सुपरि-विशाल-वरुणा | र्य-मादीनां |
| 5.3.62 | वृद्धस्य च | | | तृतीयात् | |
| 5.3.63 | अन्तिक-बाढयोर्नेद-साधौ | | 5.3.85 | अल्पे | |
| 5.3.64 | युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम | Į | 5.3.86 | हस्वे | 87 |
| 5.3.65 | विन्-मतोर्छक् | | | संज्ञायां कन् | |
| 5.3.66 | प्रशंसायां रूपप् | | 5.3.88 | कुटी-शमी-शुण्डाभ्यो रः | |
| 5.3.67 | ईषदसमाप्तौ कल्पब्-देश्य- | देशीयरः | 5.3.89 | कुत्वा डुपच् | |
| | ईव | ादसमाप्तौ 68 | | कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् | ष्टरच् 91 |
| 5.3.68 | विभाषा सुपो बहुच् पुरस्ता | तु सुपः 69 | | वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे | ` |
| 5 3 60 | प्रकारवचने जातीयर | | | | |

| 5.3.92 किं-यत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य | 5.3.107 शर्करादिभ्योऽण् | | |
|---|--|--|--|
| डतरच् किंयत्तदः, निर्घारणे, एकस्य 93 | 5.3.108 अङ्गुल्यादिभ्यष्टक् ठक् 109 | | |
| 5.3.93 वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् | 5.3.109 एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् | | |
| 5.3.94 एकाच प्राचाम् | 5.3.110 कर्क-लोहितादीकक् | | |
| 5.3.95 अवक्षेपणे कन् कन् 100 | 5.3.111 प्रत्न-पूर्व-विश्वेमात् थाल् छन्दसि | | |
| (तद्धितेषु स्वार्थिकाः) | 5.3.112 पूगाञ् ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ञ्यः 113 | | |
| 5.3.96 इवे प्रतिकृतौ इवे 111; प्रतिकृतौ 100 | 5.3.113 व्रात-च्फञोरस्त्रियाम् | | |
| 5.3.97 संज्ञायां च संज्ञायाम् 100 | 5.3.114 आयुधजीविसंघाञ् ञ्यङ् वाहीकेष्व- | | |
| 5.3.98 लुम्मनुष्ये लु प् 100 | ब्राह्मण-राजन्यात् आघात् ११७ | | |
| 5.3.99 जीविकार्थे चापण्ये | 5.3.115 वृकाट् टेण्यण् | | |
| 5.3.100 देवपथादिभ्यश्च | 5.3.116 दामन्यादि-त्रिगर्तषष्ठाच्छः | | |
| 5.3.101 वस्तेर्ढ ञ् | 5.3.117 पर्श्वादि-योधेयादिभ्योऽणजो | | |
| 5.3.102 शिलाया ढः | 5.3.118 अभिजिद्-विदभृच्-छालावच्- | | |
| 5.3.103 शाखादिभ्यो यः यः 104 | छिखावच्-छमीवदूर्णावच्-छुमदणो | | |
| 5.3.104 द्रव्यं च भव्ये | यञ् | | |
| 5.3.105 कुशाग्राच्छः छ: 106 | 5.3.119 ञ्यादयस्तद्राजाः | | |
| 5.3.106 समासाच तद्विषयात् | | | |
| , , | • | | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे पञ्चमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायस्य चतुर्थः पादः

| 5.4.1 | पाद-शतस्य सङ्ख्यादेवींप्सायां वुन् | | 5.4.7 अषडक्षाशितङ्ग्वलङ्कर्मालम्पुरुषाध्यु- | |
|-------|------------------------------------|----------|---|------|
| | लोपश्च | 2 | त्तरपदात् खः | खः 8 |
| 5.4.2 | दण्ड-व्यवसर्गयोश्च | | 5.4.8 विभाषाञ्चेरदिक्-स्त्रियाम् | |
| 5.4.3 | स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् | कन् 6 | 5.4.9 जात्यन्ताच्छ बन्धुनि | छ 10 |
| 5.4.4 | अनत्यन्तगतौ क्तात् र | न्नात् 5 | 5.4.10 स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् | |
| 5.4.5 | न सामिवचने | | 5.4.11 किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे | 12 |
| 5.4.6 | बृहत्या आच्छादने | | 5.4.12 अमु च च्छन्द सि | |
| | | | 5.4.13 अनुगादिनष्ठक | |

| | | 2, 113 |
|---------------------------------------|------------------|--|
| 5.4.14 णचः स्त्रियामञ् | | 5.4.40 स-स्नौ प्रशंसायाम् प्रशंसायाम् ४१ |
| 5.4.15 अणिनुणः | अण् 16 | 5.4.41 वृक-ज्येष्ठाभ्यां तिल्-तातिलौ च |
| 5.4.16 विसारिणो मत्स्ये | | च्छन्दसि |
| 5.4.17 सङ्ख्यायाः क्रियाऽभ्यावृत्तिग | गणने | 5.4.42 बह्दल्पार्थाच्छस् कारकादन्यतरस्याम् |
| कृत्वसुच् क्रियाऽभ्यावृत्ति | गणने 20 | कारकात् ४३; अन्यतरस्याम् ५० |
| 5.4.18 द्वि-त्रि-चतुर्भ्यः सुच् | सुच् 19 | 5.4.43 सङ्ख्यैकवचनाच वीप्सायाम् |
| 5.4.19 एकस्य सकृच | | 5.4.44 प्रतियोगे पञ्चम्यास्तिसः |
| 5.4.20 विभाषा बहोर्घाऽविप्रकृष्टकाले | | पश्चम्याः ४५; तसिः ४९ |
| 5.4.21 तत्प्रकृतवचने मयट् | 22 | (वा॰) आद्यादिभ्यस्तसोरुपसङ्ख्यानम् |
| 5.4.22 समूहवच बहुषु | | 5.4.45 अपादाने चाहीय-रुहोः |
| 5.4.23 अनन्तावसथेतिह-भेषजाञ् ञ | यः | 5.4.46 अतिग्रहाव्यथन-क्षेपेष्वकर्तरि |
| 5.4.24 देवतान्तात् तादर्थ्ये यत् | | तृतीयायाः अकर्तरि तृतीयायाः 47 |
| . तादर्थ्ये २० | 5; यत् 25 | 5.4.47 हीयमान-पापयोगाच |
| 5.4.25 पादार्घाभ्यां च | | 5.4.48 षष्ट्या व्याश्रये षष्ट्याः ४९ |
| (वा॰) भाग-रूप-नामभ्यो धेयः | | 5.4.49 रोगाचापनयने |
| 5.4.26 अतिथेञ्र्यः | | 5.4.50 कृ-भ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः |
| 5.4.27 देवात् तल् | | कृगे 57; संरि 52; च्विः 51 |
| 5.4.28 अवेः कः | | (वा॰) अभूततद्भाव इति वक्तव्यम् |
| 5.4.29 यावादिभ्यः कन् | कन् 33 | 5.4.51 अरुर्-मनश्-चक्षुश्-चेतो-रहो-रजसां |
| | हेतान् ३२ | लोपश्च |
| 5.4.31 वर्णे चानित्ये | 33 | 5.4.52 विभाषा साति कार्त्स्ये |
| 5.4.32 र क्ते | 33 | विभाषा 53; साति 55 |
| 5.4.33 和の 電 | 33 | 5.4.53 अभिविधौ सम्पदा च सम्पदा 55 |
| 5.4.34 विनयादिभ्यष्ठक् | ठक् 35 | 5.4.54 तद्धीनवचने 55 |
| , , | याम् 36 | 5.4.55 देये त्रा च त्रा 56 |
| 5.4.36 तद्युक्तात् कर्मणोऽण् | | 5.4.56 देव-मनुष्य-पुरुष-पुरु-मर्त्यभ्यो |
| 5.4.37 ओषधेरजातौ | अण् 38 | द्वितीया-सप्तम्योर्बहुलम् |
| | | 5.4.57 अव्यक्तानुकरणाद् द्यजवरार्धाद्नितौ |
| 5.4.38 प्रज्ञादिभ्यश्च | | डाच् डाच् 67 |
| 5.4.39 मृदस्तिकन् | मृदः 40 | |

| 5.4.58 | कृञो द्वितीय-तृतीय- | शम्ब-बीजात् | 5.4.78 | ब्रह्म-हस्तिभ्याम् व | र्ग्चसः |
|--------|-------------------------|---------------------|---------|-----------------------------------|-------------------------|
| | कृषौ | कृञः 67; कृषौ 59 | 5.4.79 | अव-समन्धेभ्यस्त | मसः |
| 5.4.59 | सङ्ख्यायाश्च गुणान | तायाः | 5.4.80 | श्वसो वसीयः-श्रेय | सः |
| 5.4.60 | समयाच यापनायाम | | 5.4.81 | अन्वव-तप्ताद् रहर | नः |
| 5.4.61 | सपत्त्र-निष्पत्त्राद्ति | व्यथने | 5.4.82 | प्रतेरुरसः सप्तमीस | थात् |
| 5.4.62 | निष्कुलान्निष्कोषणे | | 5.4.83 | अनुगवमायामे | |
| 5.4.63 | सुख-प्रियादानुलोम्ये | | 5.4.84 | द्विस्तावा त्रिस्तावा | । वेदिः |
| 5.4.64 | दुःखात् प्रातिलोम्ये | | 5.4.85 | उपसर्गादध्वनः | |
| 5.4.65 | शूलात् पाके | | | (तत्पुरुषसम | ासान्ताः) |
| 5.4.66 | सत्यादशपथे | | 5.4.86 | तत्पुरुषस्याङ्गुलेः र | · |
| 5.4.67 | मद्रात् परिवापणे | | | | 105; सङ्ख्याव्ययादेः ८८ |
| | (तद्धितेषु समासान्त | ।-प्रकरणम्) | 5.4.87 | अहस्-सर्वैकदेश- | सङ्ख्यात-पुण्याच |
| 5.4.68 | समासान्ताः | 160 | | रात्रेः | |
| 5.4.69 | न पूजनात् | न 71 | 5.4.88 | अह्रोऽह्र एतेभ्यः | अह्रोऽह्नः १८ |
| 5.4.70 | किमः क्षेपे | | | न सङ्ख्यादेः सम | गहारे न 90 |
| 5.4.71 | नञस्तत्पुरुषात् | 72 | 5.4.90 | उत्तमैकाभ्यां च | |
| 5.4.72 | पथो विभाषा | | 5.4.91 | राजाहःसिखभ्यष्टन | व् ट च् 112 |
| 5.4.73 | बहुवीहौ सङ्ख्येये ब | इजबहु-गणात् | 5.4.92 | गोरतद्वितलुकि | |
| | (सर्वसमासा | त्ताः) | 5.4.93 | अग्राख्यायामुरसः | |
| 5.4.74 | ऋक्-पूरब्-धूः-पथाम | गनक्षे | 5.4.94 | अनो-ऽइमायस्-स | ारसां जाति-संज्ञयोः |
| 5.4.75 | अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् | साम-लोम्नः | 5.4.95 | ग्राम-कौटाभ्यां च | तक्ष्णः |
| | _ | अच् 87 | 5.4.96 | अतेः शुनः | शुनः 97 |
| 5.4.76 | अक्ष्णोऽदर्शनात् | | 5.4.97 | उपमानादप्राणिषु | उपमानात् १८ |
| 5.4.77 | अचतुर-विचतुर-सुच | वतुर-स्त्रीपुंस- | 5.4.98 | उत्तर-मृग-पूर्वाच | सक्थनः |
| | धेन्वनडुह-र्क्साम-व | ाङ्मनसाक्षिभ्रुव- | 5.4.99 | नावो द्विगोः | नावः 100; द्विगोः 101 |
| | दारगवोर्वष्ठीव-पद्षठी | व-नक्तन्दिव- | 5.4.100 |) अर्घाच | 101 |
| | रत्रिन्दिवाहर्दिव-सर | जस-निःश्रेयस- | 5.4.10 | । खार्याः प्राचाम् | |
| | पुरुषायुष-द्यायुष-त्र्य | ायुषग्र्यजुष- | 5.4.102 | 2 द्वि-त्रिभ्यामञ्जलेः | |
| | जातोक्ष-महोक्ष-वृद्धो | क्षोपशुन-गोष्ठश्वाः | 5.4.103 | अनसन्तान्नपुंसव | जच्छन्द <u>स</u> ि |

| 5:4:104 | ξ α 110. |
|---|---|
| 5.4.104 ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ब्रह्मणः 105 | 5.4.123 बहुप्रजाश्छन्द् सि |
| 5.4.105 कु-महद्भ्यामन्यतरस्याम् (द्वन्द्वसमासान्तविधिः) | 5.4.124 धर्मादिनिच् केवलात् अनिच् 126 5.4.125 जम्भा सु-हरित-तृण-सोमेभ्यः |
| (क्ष्रस्तमासानसावादः) 5.4.106 द्वन्द्वाच् चु-द-ष-हान्तात् समाहारे (अव्ययीभावसमासान्तविधिः) 5.4.107 अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः अव्ययीभावे 112 5.4.108 अनश्च अनः 109 5.4.109 नपुंसकादन्यतरस्याम् अम् 112 5.4.110 नदी-पौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः 5.4.111 झ्यः | 5.4.126 दक्षिणेमां लुब्धयोगे 5.4.127 इच् कर्मव्यतिहारे इच् 128 5.4.128 द्विदण्ड्यादिभ्यश्च 5.4.129 प्र-सम्भ्यां जानुनोर्ज्ञः जार्ज्ञः 130 5.4.130 ऊर्ध्वाद् विभाषा 5.4.131 ऊधसोऽनङ् अनङ् 133 5.4.132 धनुषश्च धनुषः 133 5.4.133 वा संज्ञायाम् |
| 5.4.112 गिरेश्च सेनकस्य (बहुव्रीहिसमासान्तविधिः) | 5.4.134 जायाया निङ् 5.4.135 गन्धस्येदुत्-पूति-सु-सुरभिभ्यः |
| 5.4.113 बहुवीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् बहुवीहौ 160; षच् 114 5.4.114 अङ्गुलेर्दारुणि 5.4.115 द्वि-त्रिभ्यां ष मूर्ध्नः | गन्धस्य, इत् 137 5.4.136 अल्पाख्यायाम् 5.4.137 उपमानाच उपमानात् 138 5.4.138 पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः |
| 5.4.116 अप् पूरणी-प्रमाण्योः अप् 117 5.4.117 अन्तर्बिहिर्भ्यां च लोम्नः 5.4.118 अञ् नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् | पादस्य लोपः 140 5.4.139 कुम्भपदीषु च 5.4.140 सङ्ख्या-सुपूर्वस्य 5.4.141 वयसि दन्तस्य दतृ दन्तस्य दतृ 145 5.4.142 छन्दसि च |
| अच् 121; नासिकायाः, नसम् 119 5.4.119 उपसर्गाच 5.4.120 सुप्रात-सुश्व-सुदिव-शारिकुक्ष- चतुरश्रेणीपदाजपद-प्रोष्ठपदाः 5.4.121 नज्-दुः-सुभ्यो हिल-सक्थ्योरन्यतर- स्याम् नभ्यः 122 5.4.122 नित्यमिसच् प्रजा-मेधयोः असिच् 123 | 5.4.143 स्त्रियां संज्ञायाम् 5.4.144 विभाषा श्यावारोकाभ्याम् विभाषा १४५ 5.4.145 अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-वराहेभ्यश्च 5.4.146 ककुद्स्यावस्थायां लोपः लोपः १४९ 5.4.147 त्रिककुत् पर्वते 5.4.148 उद्-विभ्यां काकुद्स्य काकुद्स्य १४९ 5.4.149 पूर्णाद् विभाषा |
| -11(1 1120 | |

| 5.4.150 सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः | | 5.4.156 ईयसश्च |
|--|--------------|----------------------------------|
| 5.4.151 उरःप्रभृतिभ्यः कप् | कप् 160 | 5.4.157 वन्दिते भ्रातुः |
| 5.4.152 इनः स्त्रियाम् | | 5.4.158 ऋतरछन्दि स |
| 5.4.153 नद्यृतश्च | | 5.4.159 नाडी-तन्त्र्योः स्वाङ्गे |
| 5.4.154 शेषाद्विभाषा | | 5.4.160 निष्प्रवाणिश्च |
| 5.4.155 न संज्ञायाम् | न 160 | |
| | | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे पञ्चमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (द्वित्व-प्रकरणम्) | (संप्रसारण-प्रकरणम्) | | |
|---|--|--|--|
| 6.1.1 एकाचो द्वे प्रथमस्य 11 | 6.1.13 ष्यङः संप्रसारणं पुत्र-पत्योस्तत्पुरुषे | | |
| 6.1.2 अजादेर्द्वितीयस्य 11 | ष्यङः १४; संप्रसारणम् ३१ | | |
| 6.1.3 न न्-द्-राःसंयोगादयः | 6.1.14 बन्धुनि बहुव्रीहो | | |
| (वा॰) यथेष्टं नामधातुष्चिति वक्तव्यम् | 6.1.15 विच-स्विप-यजादिनां किति किति 16 | | |
| 6.1.4 पूर्वोऽभ्यासः | 6.1.16 ग्रहि-ज्या-वयि-व्यधि-वष्टि-विचति- | | |
| 6.1.5 उभे अभ्यस्तम् अभ्यस्तम् 6 | वृश्चति-पृच्छति-भृज्जतीनां ङिति च | | |
| 6.1.6 जक्षित्यादयः षट् | 6.1.17 लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् | | |
| 6.1.7 तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य | 6.1.18 स्वापेश्चिङ | | |
| 6.1.8 लि टि धातोरनभ्यासस्य धस्य 11 | 6.1.19 स्वपि-स्यमि-व्येञां यङि यङि 21 | | |
| 6.1.9 सन्-यङोः | 6.1.20 न वशः | | |
| 6.1.10 श्लो | 6.1.21 चायः की | | |
| 6.1.11 चिं ङ | 6.1.22 स्फायः स्फी निष्ठायाम् निष्ठायाम् 28 | | |
| 6.1.12 दाश्वान् साह्वान् मीद्वांश्च | 6.1.23 स्त्यः प्रपूर्वस्य | | |

| ७.1.24 | ्रवराठः |
|---|---|
| 6.1.24 द्रवमूर्ति-स्पर्शयोः इयः इयः 26 | 6.1.49 सिध्यतेरपारलौकिके |
| 6.1.25 प्रतेश्व | 6.1.50 मीनाति-मिनोति-दीङां ल्यपि च |
| 6.1.26 विभाषाऽभ्यव-पूर्वस्य विभाषा 28 | ल्यपि 51 |
| 6.1.27 श्रतं पाके | (वा॰) स्थाघ्वोरित्त्वे दीङः प्रतिषेधः |
| 6.1.28 प्यायः पी 29 | 6.1.51 विभाषा लीयतेः विभाषा 56 |
| 6.1.29 लिङ्-यङोश्च लिब्बङोः 30 | 6.1.52 खि देश्छन्द सि |
| 6.1.30 विभाषा श्वेः 31 | 6.1.53 अपगुरो णमुलि |
| 6.1.31 णौ च संश्रङोः 32 | 6.1.54 चि-स्फुरोणीँ णौ 57 |
| 6.1.32 ह्वः संप्रसारणम् ह्वः 34; संप्रसारणम् 36 | 6.1.55 प्रजने वीयतेः |
| 6.1.33 अभ्यस्तस्य च | 6.1.56 बिभेतेर्हेतुभये हेतुभये 57 |
| 6.1.34 बहुलं छन्दसि बहुलम् ३५; छन्दसि ३६ | 6.1.57 नित्यं स्मयतेः |
| 6.1.35 चायः की | 6.1.58 सृजि-दृशोर्झल्यमिकति झति 59 |
| 6.1.36 अपस्पृघेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषे | 6.1.59 अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् |
| तित्याज श्राताः श्रितमाशीराशीर्त्ताः | 6.1.60 शीर्षंश्छन्द सि |
| 6.1.37 न संप्रसारणे संप्रसारणम् | 6.1.61 ये च तद्धिते |
| न संप्रसारणम् 44 | 6.1.62 अचि शीर्षः |
| 6.1.38 लिटि वयो यः लिटि ४०; वयो यः ३९ | 6.1.63 पद् दन् नो मास् हृन् निशसन् यूषन् |
| 6.1.39 वश्चास्यान्यतरस्यां किति | दोषन् यकञ् छकन्नुदन्नासञ् छस्प्रभृतिषु |
| 6.1.40 वेञः 41 | 6.1.64 धात्वादेः षः सः धात्वादेः 65 |
| 6.1.41 ल्यपि च ल्यपि 44 | 6.1.65 णो नः |
| 6.1.42 ज्यश्च | (लोप-प्रकरणम्) |
| 6.1.43 교왕 교: 44 | 6.1.66 लोपो व्योर्विल लोपः 70 |
| 6.1.44 विभाषा परेः | 6.1.67 वेरपृक्तस्य |
| (आत्वादि-प्रकरणम्) | 6.1.68 हल्-ड्याञ्र्यो दीर्घात् सु-तिस्यपृक्तं हल् |
| 6.1.45 आदेच उपदेशेऽशिति | हल् 69 |
| आद्, एचः 57; उपदेशे 64 | 6.1.69 एङ्-ह्रस्वात् सम्बुद्धेः |
| 6.1.46 न व्यो लिटि | 6.1.70 शेश्छन्दिस बहुलम् |
| 6.1.47 स्फुरित-स्फुलत्योर्घनि | (तुगादि-प्रकरणम्) |
| 6.1.48 क्रीङ्-जीनां णौ णौ 49 | 6.1.71 ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् |
| | ह्रस्वस्य ७३; तुक् ७६ |

| (सन्धि-प्रकरणम्) | 6.1.92 वा सुप्यापिश्रालेः |
|---|---|
| 6.1.72 संहितायाम् 158 | 6.1.93 औतो ऽम्-श्र सोः |
| 6.1.73 छे च छे 76 | 6.1.94 एङि पररूपम् पररूपम् 100 |
| 6.1.74 आङ्-माङोश्च | (वा॰) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् |
| 6.1.75 दीर्घात् 76 | 6.1.95 ओमाङोश्च |
| 6.1.76 पदान्ताद्वा | 6.1.96 उस्यपदान्ता त् अपदान्तात् 97 |
| 6.1.77 इको यणचि अचि 125 | 6.1.97 अतो गुणे |
| 6.1.78 एचोऽयवायावः एचः 83 | 6.1.98 अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ |
| 6.1.79 वान्तो यि प्रत्यये | अव्यस्य, अतः 100; इतौ 99 |
| वान्तः ८०; यि प्रत्यये ८३ | 6.1.99 नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा |
| (वा॰) गोर्यूतौ च्छन्दस्युपसङ्ख्यानम् | 6.1.100 नित्यमाम्रेडिते डाचि |
| (वा॰) अध्वपरिमाणे च | 6.1.101 अकः सवर्णे दीर्घः |
| 6.1.80 धातोस्तन्निमित्तस्यैव धातोः 83 | अकः 107; दीर्घः 106 |
| 6.1.81 क्षय्य-जय्यौ शक्यार्थे | (वा॰) ऋति सवर्णे ऋ वा |
| 6.1.82 क य्यस्तदर्थे | (वा॰) लृति सवर्णे लृ वा |
| 6.1.83 भय्य-प्रवय्ये च च्छन्द्सि | 6.1.102 प्रथमयोः पूर्वसवर्णः पूर्वसवर्णः 106 |
| (एकादेशादि-प्रकरणम्) | 6.1.103 तस्माच्छसो नः पुंसि |
| 6.1.84 एकः पूर्वपरयोः 111 | 6.1.104 नादिचि न 105; इचि 106 |
| 6.1.85 अन्तादिव च | 6.1.105 दीर्घाज्ञिस च 106 |
| 6.1.86 षत्व-तुकोरसिद्धः | 6.1.106 वा च्छन्दिस 108 |
| 6.1.87 आद् गुणः आत् 96 | 6.1.107 अमि पूर्वः पूर्वः 110 |
| 6.1.88 वृद्धिरे चि वृद्धिः 92; एचि 89 | 6.1.108 संप्रसारणाच |
| 6.1.89 एत्येधत्यूठ्सु | 6.1.109 एङः पदान्तादति एङः 110; अति 113 |
| (वा॰) अक्षादूहिन्यामुपसङ्ख्यानम् | 6.1.110 ङसिङसोश्च ङसिङसोः 112 |
| (वा॰) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु | 6.1.111 ऋत उत् |
| (वा॰) ऋते च तृतीया-समासे | 6.1.112 ख्यत्यात् परस्य |
| (वा॰) प्रवत्सतर-कम्बल-वसनार्ण-दशानामृणे | 6.1.113 अतो रोरप्लुताद्पुते अतोतात् 114 |
| 6.1.90 आट 왕 | 6.1.114 हिश च |
| 6.1.91 उपसर्गाद् ऋति धा तौ | |
| उपसर्गाद्, धातौ ९४; ऋति ९२ | |

| (प्रकृतिभावादि-प्रकरणम्) | 6.1.136 अडभ्यासव्यवायेऽपि |
|---|--|
| 6.1.115 प्रकृत्याऽन्तःपादमव्यपरे | 6.1.137 सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे |
| प्रकृत्या १३०; अन्तःपादम् ११६ | सम्पर्युपेभ्यः 138; करोतौ 139 |
| 6.1.116 अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्व- | 6.1.138 समवाये च |
| वस्युषु च | 6.1.139 उपात् प्रतियत्न-वैकृत-वाक्याध्याहारेषु |
| 6.1.117 यजुष्युरः यजुषि 121 | उपात् १४१ |
| 6.1.118 आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठेऽम्बे- | 6.1.140 किरतौ लवने किरतौ 142 |
| ऽम्बाले-ऽम्बिकेपूर्वे | 6.1.141 हिंसायां प्र तेश्च |
| 6.1.119 अङ्ग इत्यादौ च | 6.1.142 अपाचतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने |
| 6.1.120 अनुदात्ते च कु-धपरे अनुदात्ते 121 | 6.1.143 कुस्तुम्बुरूणि जातिः |
| 6.1.121 अवपथासि च | 6.1.144 अपरस्पराः क्रियासातत्ये |
| 6.1.122 सर्वत्र विभाषा गोः | 6.1.145 गोष्पदं सेवितासेवित-प्रमाणेषु |
| विभाषा 123; गोः 124 | 6.1.146 आस्पदं प्रतिष्ठायाम् |
| 6.1.123 अवङ् स्फोटायनस्य अवङ् 124 | 6.1.147 आश्चर्यमनित्ये |
| 6.1.124 इन्द्रे च | 6.1.148 वर्चस्केऽवस्करः |
| 6.1.125 स्रुत-प्रगृह्या अचि नित्यम् अचि 130 | 6.1.149 अपस्करो रथाङ्गम् |
| 6.1.126 आङोऽनुनासिकश्चन्दिस | 6.1.150 विष्किरः शकुनौ वा |
| 6.1.127 इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च | 6.1.151 ह्रस्वाचन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे |
| शाकल्यस्य ह्रस्वः च 128 | 6.1.152 प्रतिष्कशश्च कशेः |
| (वा॰) न समासे | 6.1.153 प्रस्कण्व-हरिश्चन्द्रावृषी |
| 6.1.128 ऋत्यकः | 6.1.154 मस्कर-मस्करिणौ वेणु-परिव्राजकयोः |
| 6.1.129 अप्रुतवदुपस्थिते अप्रुतवत् 130 | 6.1.155 कास्तीराजस्तुन्दे नगरे |
| 6.1.130 ईश चाकवर्मणस्य | 6.1.156 कारस्करो वृक्षः |
| 6.1.131 दिव उत् | 6.1.157 पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् |
| 6.1.132 एतत्-तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे | (स्वरप्रकिया) |
| हलि सुलोपः 134; हलि 133 | 6.1.158 अनुदात्तं पदमेकवर्जम् |
| 6.1.133 स्यश्छन्दिस बहुलम् | (उदात्त-प्रकरणम्) |
| 6.1.134 सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् | 6.1.159 कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः |
| (सुट्-प्रकरणम्) | अन्तः 185; <mark>उदात्तः</mark> 220 |
| 6.1.135 सुट् कात् पूर्वः 157 | 6.1.160 ওञ्छादीनां च |

| 6.1.161 अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः | 6.1.186 तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्व- |
|--|---|
| 6.1.162 धातोः | धातुकमनुदात्तमहन्विङोः |
| 6.1.163 चितः 164 | लसार्वधातुकम् 192 |
| 6.1.164 तिद्धतस्य 165 | 6.1.187 आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् |
| 6.1.165 कितः | आदिः, अन्यतरस्याम् 188 |
| 6.1.166 तिसृभ्यो जसः | 6.1.188 स्वपादिर्हिंसामच्यनिटि |
| 6.1.167 चतुरः श सि | अचि, अनिटि 189 |
| 6.1.168 सावेकाचस्त्रतीयादिर्विभक्तिः | 6.1.189 अभ्यस्तानामादिः |
| एकादिः 169; विभक्तिः 184 | अभ्यस्तानाम् 192; आदिः 191 |
| 6.1.169 अन्तोदत्तादुत्तरपदादन्यतरस्याम- | 6.1.190 अनुदात्ते च |
| नित्यसमासे अन्तोदात्तात् 177 | 6.1.191 सर्वस्य सुपि |
| 6.1.170 अञ्चे २ छन्दस्यसर्वनामस्थानम् | 6.1.192 भी-ही-भृ-हु-मद-जन-धन-दरिद्रा- |
| असर्वनामस्थानम् 175 | जागरां प्रत्ययात् पूर्वं पिति |
| 6.1.171 ऊडिदम्-पदाद्यप्-पुं-रै-द्युभ्यः | प्रत्ययात् पूर्वम् 193 |
| 6.1.172 अप्टनो दीर्घात् | 6.1.193 लिति |
| 6.1.173 शतुरनुमो नद्यजादी नद्यजादी 175 | 6.1.194 आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् |
| 6.1.174 उदात्तयणो हल्पूर्वात् 175 | आदिः, अन्यतरस्याम् 196 6.1.195 अचः कर्तृयकि |
| 6.1.175 नोङ्-धात्वोः | 6.1.195 अपः कतृथाक 6.1.196 थिल च सेटीडन्तो वा |
| 6.1.176 हस्व-नुड्भ्यां मतुप् हस्वः, मतुप् 177 | |
| 6.1.177 नामन्यतर स्याम् 187 | 6.1.197 ञ्नित्यादिर्नित्यम् आदिः 216 |
| 6.1.178 ड्यारछन्द सि बहुलम् | 6.1.198 आमन्त्रितस्य च |
| 6.1.179 षट्-त्रि-चतुभ्यों हलादिः | 6.1.199 पथि-मथोः सर्वनामस्थाने |
| षट्त्रिचतुर्भ्यः 181 | 6.1.200 अन्तश्च तवै युगपत् |
| 6.1.180 झल्युपोत्तमम् 181 | 6.1.201 क्षयो निवासे |
| 6.1.181 विभाषा भाषायाम् | 6.1.202 जयः करणम् |
| 6.1.182 न गो-श्वन्-साववर्ण-राडङ्-कुङ्- | 6.1.203 वृषादीनां च |
| कृन्धः न 184 | 6.1.204 संज्ञायामुपमानम् संज्ञायाम् 205 |
| 6.1.183 दिवो झल् झल् 184 | 6.1.205 निष्ठा च द्यजनात् |
| 6.1.184 न चान्यतर स्याम् | 6.1.206 যুচ্ফ-ধৃ্টা |
| 6.1.185 तित् स्वरितम् | 6.1.207 आशितः कर्ता |
| 0.1.100 1114 11111 | |

| | 1 | .208 |
|----|---|-------|
| H. | | . ZUA |

| 6.1.208 अष्टाध्यायीस् | रूत्रपाठः |
|---|---|
| 6.1.208 रिक्ते विभाषा विभाषा 209 6.1.209 जुष्टार्पिते च च्छन्द्सि जुष्टार्पिते 210 6.1.210 नित्यं मन्त्रे 6.1.211 युष्मद्रस्मदोर्ङसि युष्मद्रस्मदोः 212 6.1.212 ङिय च 6.1.213 यतोऽनावः 6.1.214 ईड-वन्द-वृ-शंस-दुहां ण्यतः 6.1.215 विभाषा वेण्विन्धानयोः विभाषा 216 6.1.216 त्याग-राग-हास-कुह-श्वठ-कथानाम् | 6.1.217 उपोत्तमं रिति 6.1.218 चड्यन्यतरस्याम् 6.1.219 मतोः पूर्वमात् संज्ञायां 6.1.220 अन्तोऽवत्याः 6.1.221 ईवत्याः 6.1.222 चौ 6.1.223 समासस्य |
| अथ षष्ठाध्याय (समासस्वरे पूर्वपदप्रकृतिभावः) 6.2.1 बहुवीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् प्रकृत्या 63; पूर्वपदम् 110 6.2.2 तत्पुरुषे तुल्यार्थ-तृतीया- सप्तम्युपमानाव्यय-द्वितीया-कृत्याः तत्पुरुषे 24 6.2.3 वर्णः वर्णेष्यनेते 6.2.4 गाध-लवणयोः प्रमाणे 6.2.5 दायाद्यं दायादे 6.2.6 प्रतिबन्धि चिर-कृच्छुयोः 6.2.7 पदेऽपदेशे | ास्य द्वितीयः पादः 6.2.13 गन्तव्य-पण्यं वाणिजे 6.2.14 मात्रोपज्ञोपकम-च्छाये न 6.2.15 सुख-प्रिययोर्हिते 6.2.16 प्रीतौ च 6.2.17 स्वं स्वामिनि 6.2.18 पत्यावैश्वर्ये 6.2.19 न भू-वाक्-चिद्-दिधिषु 6.2.20 वा भुवनम् 6.2.21 आशङ्काबाध-नेदीयस्सु स् 6.2.22 पूर्वे भूतपूर्वे 6.2.23 सविध-सनीड-समर्याद-स |
| 6.2.8 निवाते वातत्राणे 6.2.9 शारदेनार्तवे 6.2.10 अध्वर्यु-कषाययोर्जातौ 6.2.11 सहश-प्रतिरूपयोः साहश्ये 6.2.12 द्विगौ प्रमाणे | 6.2.25 सायप-समाध-सम्पाद-स सामीप्ये 6.2.24 विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु 6.2.25 श्र-ज्या-वमकन्-पापवत्स् 6.2.26 कुमारश्च |

7 उपोत्तमं रिति उपोत्तमम २१८ 8 चड्यन्यतरस्याम ९ मतोः पूर्वमात् संज्ञायां स्त्रियाम् संज्ञायाम् २२१ ० अन्तोऽवत्याः अन्तः 223 1 ईवत्याः 2 चौ 3 समासस्य

तीयः पादः

गन्तव्य-पण्यं वाणिजे

मात्रोपज्ञोपक्रम-च्छाये नपुंसके

सुख-प्रिययोर्हिते सुखप्रिययोः 16

आशङ्काबाध-नेदीयस्सु संभावने

सविध-सनीड-समर्याद-सवेश-सदेशेषु सामीप्ये

श्र-ज्या-वमकन्-पापवत्सु भावे कर्मधारये

कर्मधारये 28

20

कुमारश्च कुमारः 28

| -131 1111 | 3, 110 |
|---|--|
| 6.2.27 आदिः प्रत्येनसि आदिः 28 | 6.2.50 तादौ च निति कृत्यतौ |
| 6.2.28 पूगेष्वन्यतरस्याम् | 6.2.51 तवे चान्तश्च युगपत् |
| 6.2.29 इगन्त-काल-कपाल-भगाल-शरावेषु | 6.2.52 अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये |
| द्विगो इषु ३०; द्विगौ ३१ | अञ्चतौ वप्रत्यये 53 |
| 6.2.30 बह्दन्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् 31 | 6.2.53 न्यधी च |
| 6.2.31 दिष्टि-वितस्त्योश्च | 6.2.54 ईषदन्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् 63 |
| 6.2.32 सप्तमी सिद्ध-शुष्क-पक्क-बन्धेष्वकालात् | 6.2.55 हिरण्यपरिमाणं धने |
| 6.2.33 परि-प्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु | 6.2.56 प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ |
| 6.2.34 राजन्य-बहुवचन-द्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु | 6.2.57 कतर-कतमौ कर्मधारये कर्मधारये 59 |
| द्वन्द्वे 37 | 6.2.58 आर्यो ब्राह्मण-कुमारयोः ब्रयोः 59 |
| 6.2.35 सङ्ख्या | 6.2.59 राजा च राजा 60 |
| 6.2.36 आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी | 6.2.60 षष्ठी प्रत्येनसि |
| 6.2.37 कार्तकौजपाद्यश्च | 6.2.61 क्ते नित्यार्थे |
| 6.2.38 महान् व्रीह्यपराह्न-गृष्टीष्वास-जाबाल- | 6.2.62 ग्रामः शिल्पिन शिल्पिन 63 |
| भार-भारत-हैलिहिल-रौरव-प्रवृद्धेषु | 6.2.63 राजा च प्रशंसायाम् |
| महान् ३९ | (समासस्वरे पूर्वपदाद्युदात्त-प्रकरणम्) |
| 6.2.39 क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे | 6.2.64 आदिरुदात्तः आदिः 91; उदात्तः 199 |
| 6.2.40 उष्ट्रः सादि-वाम्योः | 6.2.65 सप्तमी-हारिणौ धर्म्येऽहरणे |
| 6.2.41 गौः साद-सादि-सारथिषु | 6.2.66 युक्ते च |
| 6.2.42 कुरुगार्हपत रिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लील- | 6.2.67 विभाषाऽध्यक्षे विभाषा 68 |
| दृढरूपा पारेवडवा तैतिलकद्रूः | 6.2.68 पापं च शिल्पिन |
| पण्यकम्बलो दासीभाराणां च | 6.2.69 गोत्रान्तेवासि-माणव-ब्राह्मणेषु क्षेपे |
| 6.2.43 चतुर्थी तद्थें | 6.2.70 अङ्गानि मैरेये |
| 6.2.44 अर्थे | 6.2.71 भक्ताख्यास्तदर्थेषु |
| 6.2.45 के च के 49 | 6.2.72 गो-बिडाल-सिंह-सैन्धवेषूपमाने |
| 6.2.46 कर्मधारयेऽनिष्ठा | 6.2.73 अ के जीविकाऽर्थे अके 74 |
| 6.2.47 अहीने द्वितीया | 6.2.74 प्राचां कीडायाम् |
| 6.2.48 तृतीया कर्मणि कर्मणि 49 | 6.2.75 अणि नियुक्ते अणि 77 |
| 6.2.49 गतिरनन्तरः गतिः 52; अनन्तरः 51 | 6.2.76 शिल्पिन चाकुञः अकुञः 77 |
| | |

| 6.2.77 संज्ञायां च | 6.2.103 दिक्छब्दा ग्राम-जनपदाख्यान- | | |
|---|--|--|--|
| 6.2.78 गो-तन्ति-यवं पाले | चानराटेषु दिक्छब्दाः 105 | | |
| 6.2.79 णिनि 80 | 6.2.104 आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि | | |
| 6.2.80 उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव | 6.2.105 उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च | | |
| 6.2.81 युक्तारोह्यादयश्च | 6.2.106 बहुवीहौ विश्वं संज्ञ्याम् | | |
| 6.2.82 दीर्घ-काश-तुष-भ्राष्ट्र-वटं जे जे 83 | बहुव्रीहौ 120; संज्ञयाम् 108 | | |
| 6.2.83 अन्त्यात् पूर्वं बह्वचः | 6.2.107 उदराश्वेषुषु 108 | | |
| 6.2.84 ग्रामेऽनिवसन्तः | 6.2.108 क्षेपे | | |
| 6.2.85 घोषादिषु च | 6.2.109 नदी बन्धुनि | | |
| 6.2.86 छात्र्याद्यः शालायाम् | 6.2.110 निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् | | |
| 6.2.87 प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् प्रस्थे 88 | (समासस्वरे उत्तरपदाद्युदात्त-प्रकरणम्) | | |
| 6.2.88 मालादीनां च | 6.2.111 उत्तरपदादिः | | |
| 6.2.89 अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम् | उत्तरपदस्य 199; अदिः 136 | | |
| अ महन्नवं 90 | 6.2.112 कर्णो वर्णलक्षणात् कर्णः 113 | | |
| 6.2.90 अमें चावर्णं द्यच् त्र्यच् अमें 91 | 6.2.113 संज्ञोपम्ययोश्च 115 | | |
| 6.2.91 न भूताधिक-संजीव-मद्राश्म-कज्जलम् | 6.2.114 कण्ठ-पृष्ठ-ग्रीवा-जङ्घं च | | |
| (समासस्वरे पूर्वपदान्तोदात्त-प्रकरणम्) | 6.2.115 श्रङ्गमवस्थायां च | | |
| 6.2.92 अन्तः 110 | 6.2.116 नञो जर-मर-मित्र-मृताः | | |
| 6.2.93 सर्वं गुणकात्स्र्ये | 6.2.117 सोर्मनसी अ-लोमोषसी सोः 120 | | |
| 6.2.94 संज्ञायां गिरि-निकाययोः | 6.2.118 कत्वाद्यश्च | | |
| 6.2.95 कुमार्यां वयसि | 6.2.119 आद्युदात्तं द्यच् छन्दिस छन्दिस 120 | | |
| 6.2.96 उदकेऽकेवले | 6.2.120 वीर-वीर्यों च | | |
| 6.2.97 द्विगो कतो | 6.2.121 कूल-तीर-तूल-मूल-शालाक्ष- | | |
| 6.2.98 सभायां नपुंसके | सममव्ययीभावे | | |
| 6.2.99 पुरे प्राचाम् पुरे 91 | 6.2.122 कंस-मन्थ-शूर्प-पाय्य-काण्डं द्विगौ | | |
| 6.2.100 अरिष्ट-गौड-पूर्वे च | 6.2.123 तत्पुरुषे शालायां नपुंसके | | |
| 6.2.101 न हास्तिन-फलक-मार्देयाः | तत्पुरुषे 139; नपुंसके 125 | | |
| 6.2.102 कुसूल-कूप-कुम्भ-शालं बिले | 6.2.124 कन्था च कन्था 125 | | |
| | 6.2.125 आदिश्चिहणादीनाम् | | |
| | 6.2.126 चेल-खेट-कटुक-काण्डं गर्हायाम् | | |
| | | | |

| 6.2.127 | चीरमुपमानम् | 6.2.149 इत्थम्भूतेन कृतिमति च |
|---------|--------------------------------------|---|
| 6.2.128 | पलल-सूप-शाकं मिश्रे | 6.2.150 अनो भाव-कर्मवचनः |
| 6.2.129 | कूल-सूद-स्थल-कर्षाः संज्ञायाम् | 6.2.151 मन्-क्तिन्-व्याख्यान-शयनासन- |
| 6.2.130 | अकर्मधारये राज्यम् अये 131 | स्थान-याजकादि-क्रीताः |
| 6.2.131 | वर्ग्यादयश्च | 6.2.152 सप्तम्याः पुण्यम् |
| 6.2.132 | पुत्रः पुंभ्यः पुत्रः 133 | 6.2.153 ऊनार्थ-कलहं तृतीयायाः तृयाः 154 |
| 6.2.133 | नाचार्य-राजर्त्विक्-संयुक्त- | 6.2.154 मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ |
| | ज्ञात्याख्येभ्यः | 6.2.155 नञो गुणप्रतिषेधे सम्पाद्यर्ह- |
| 6.2.134 | चूर्णादीन्यप्राणिषष्ट्याः | हितालमर्थास्तद्धिताः |
| | अप्राणिषष्ट्याः 135 | नञः 161; गुधे, तद्धिताः 15 <i>6</i> |
| 6.2.135 | षट् च काण्डादीनि | 6.2.156 य-यतोश्चातदर्थे |
| 6.2.136 | कुण्डं वनम् | 6.2.157 अच्-कावशक्तो अच्को 158 |
| | (समासस्वरे उत्तरपदप्रकृतिभावः) | 6.2.158 आक्रोशे च आक्रोशे 159 |
| | प्रकृत्या भगालम् प्रकृत्या 142 | 6.2.159 संज्ञायाम् |
| 6.2.138 | ि शितेर्नित्याबह्दज्बहुवीहावभसत् | 6.2.160 कृत्योकेष्णुच्-चार्वादयश्च |
| 6.2.139 | गति-कारकोपपदात् कृत् | 6.2.161 विभाषा तृन्नन्न-तीक्ष्ण-शुचिषु |
| 6.2.140 | उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् | 6.2.162 बहुव्रीहाविद्मेतत्-तन्धः प्रथम- |
| | उभे, युगपत् 142 | पूरणयोः क्रियागणने बहुवीहौ 177 |
| | देवताद्वन्द्वे च देवताद्वन्द्वे 142 | 6.2.163 सङ्ख्यायाः स्तनः 164 |
| 6.2.142 | नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवी-रुद्र- | 6.2.164 विभाषा छन्दिस |
| | पूषमन्थिषु | 6.2.165 संज्ञायां मित्राजिनयोः |
| (सग | नासस्वरे उत्तरपदान्तोदात्त-प्रकरणम्) | 6.2.166 व्यवायिनोऽन्तरम् |
| 6.2.143 | | 6.2.167 मुखं स्वाङ्गम् 169 |
| 6.2.144 | थाथ-घञ्-क्ताजबित्र-काणाम् | 6.2.168 नाव्यय-दिक्छब्द-गो-महत्-स्थूल- |
| | सूपमानात् क्तः कः 149 | मुष्टि-पृथु-वत्सेभ्यः |
| 6.2.146 | संज्ञायामनाचितादीनाम् | 6.2.169 निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् |
| | संज्ञायाम् 148 | 6.2.170 जाति-काल-सुखादिभ्योऽनाच्छादनात |
| | प्रवृद्धादीनां च | क्तोऽकृत-मितप्रतिपन्नाः जाभ्यः 171 |
| 6.2.148 | कारकाद्दत्त-श्रुतयोरेवाशिषि | 6.2.171 वा जा ते |
| | कारकार १६१ | V/ ± 11 1111 |

| 6 | 2. | 1 | 72 |
|---|----|---|----|

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

| 6.2.172 नञ्-सुभ्याम् 174 | 6.2.186 अपाच अपात् 187 |
|---|---|
| 6.2.173 कपि पूर्वम् कपि 174 | 6.2.187 स्फिग-पूत-वीणाऽञ्जोऽध्व-कुक्षि- |
| 6.2.174 ह्रस्वान्तेऽन्त्यात् पूर्वम् | सीरनाम-नाम च |
| 6.2.175 बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि बहोः 176 | 6.2.188 अधेरुपरिस्थम् |
| 6.2.176 न गुणाद्योऽवयवाः | 6.2.189 अनोरप्रधान-कनीयसी अनोः 190 |
| 6.2.177 उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु | 6.2.190 पुरुषश्चान्वादिष्टः |
| उपसर्गात् 195 | 6.2.191 अतेरकृत्पदे |
| 6.2.178 वनं समा से वनम् 179 | 6.2.192 नेरनिधाने |
| 6.2.179 अन्तः | 6.2.193 प्रते रंश्वादयस्तत्पुरु षे तत्पुरुषे 196 |
| 6.2.180 अन्तश्च अन्तः 181 | 6.2.194 उपाद् द्यजजिनमगौरादयः |
| 6.2.181 न नि-विभ्याम् | 6.2.195 सोरवक्षेपणे |
| 6.2.182 परेरभितोभावि मण्डलम् | 6.2.196 विभाषोत्पुच्छे विभाषा 198 |
| 6.2.183 प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् | 6.2.197 द्वि-त्रिभ्यां पाद्-दन्-मूर्घसु बहुवीहौ |
| 6.2.184 निरुद्कादीनि च | 6.2.198 सक्थं चाकान्तात् |
| 6.2.185 अभेर्मुखम् मुखम् 186 | 6.2.199 परादिश्छन्द िस बहुलम् |
| | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे षष्टाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

अथ षष्ठाध्यायस्य तृतीयः पादः

| | (अलुक्समासा | द-प्रकरणम्) | 6.3.7 वयाकरणाख्याया चतुथ्याः | 3 |
|-------|--------------------------------|------------------------|--------------------------------------|---|
| 6.3.1 | अलुगुत्तरपदे | अलुक् २४; उत्तरपदे १३९ | 6.3.8 परस्य च | |
| 6.3.2 | पञ्चम्याः स्तोकावि | भ्यः | 6.3.9 हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् | |
| 6.3.3 | .३ ओजः-सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः | | हलदन्तात् १८; सप्तम्याः २० |) |
| | | तृतीयायाः 6 | 6.3.10 कारनाम्नि च प्राचां हलादौ | |
| 6.3.4 | मनसः संज्ञायाम् | मनसः 5 | 6.3.11 मध्याद् गुरौ | |
| 6.3.5 | आज्ञायिनि च | | (वा॰) अन्ताच | |
| 6.3.6 | आत्मनश्च | आत्मनः 7 | 6.3.12 अमूर्घ-मस्तकात् स्वाङ्गादकामे | |
| | | ' | | |

| 6.3.13 | बन्धे च विभाषा | 6.3.36 क्यङ्-मानिनोश्च |
|--------|---|--|
| 6.3.14 | तत्पुरुषे कृति बहुलम् | 6.3.37 न कोपधायाः न 41 |
| 6.3.15 | प्रावृट्-छरत्-काल-दिवां जे जे 16 | 6.3.38 संज्ञा-पूरण्योश्च |
| 6.3.16 | विभाषा वर्ष-क्षर-शर-वरात् | 6.3.39 वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे |
| | विभाषा 18 | 6.3.40 स्वाङ्गाचेतः |
| 6.3.17 | घ-काल-तनेषु कालनाम्नः | 6.3.41 जातेश्व |
| 6.3.18 | शय-वास-वासिष्वकालात् | 6.3.42 पुंवत् कर्मधारय-जातीय-देशीयेषु |
| 6.3.19 | नेन्सिद्ध-बध्नातिषु च न 20 | (वा॰) कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु |
| 6.3.20 | स्थे च भाषायाम् | 6.3.43 घ-रूप-कल्प-चेलड्-ब्रुव-गोत्र-मत- |
| 6.3.21 | षष्ट्या आक्रोरो षष्ट्याः २४; आक्रोरो २२ | हतेषु ड्योऽनेकाचो हस्वः |
| 6.3.22 | पुत्रेऽन्यतरस्याम् पुत्रे 25 | घषु, हस्वः 45 |
| 6.3.23 | ऋतो विद्या-योनिसम्बन्धेभ्यः | 6.3.44 नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् |
| | ऋतः २४; विभ्यः २५ | नद्याः, अन्यतरस्याम् ४५ |
| 6.3.24 | विभाषा स्वसृ-पत्योः | 6.3.45 उगितश्च |
| 6.3.25 | आनङ् ऋतो द्वन्द्वे आनङ् २६ | 6.3.46 आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः |
| 6.3.26 | देवताद्वन्द्वे च देवताद्वन्द्वे 31 | आत् 47 |
| 6.3.27 | ईदग्नेः सोम-वरुणयोः अग्नेः 28 | 6.3.47 द्यप्टनः सङ्ख्यायामबहुवीह्यशीत्योः |
| 6.3.28 | इद् वृद्धौ | संत्योः ४९ |
| 6.3.29 | दिवो द्यावा 30 | 6.3.48 त्रेस्त्रयः |
| 6.3.30 | दिवसश्च पृथिव्याम् | 6.3.49 विभाषा चत्वारिशत्त्रभृतौ सर्वेषाम् |
| 6.3.31 | उषासोषसः | (हृदाद्यादेश-प्रकरणम्) |
| 6.3.32 | मातर-पितरावुदीचाम् | 6.3.50 हृदयस्य हृञ्लेख-यदण्-लासेषु |
| 6.3.33 | पितरा-मातरा च च्छन्दिस | हृदयस्य हृत् 51 |
| | (पुंवद्भावादि-प्रकरणम्) | 6.3.51 वा शोक-ष्यञ्-रोगेषु |
| 6.3.34 | स्त्रियाः पुंवद् भाषितपुंस्कादनूङ् | 6.3.52 पादस्य पदा ज्याति-गोपहतेषु पादस्य 56 |
| | समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी- | 6.3.53 पद् यत्यतद्यै |
| | प्रियादिषु स्त्रियाः, अनूङ् ४२; | 6.3.54 हिम-काषि-हतिषु च |
| | पुंवत् 41; भाषितपुंस्कात् 43 | 6.3.55 ऋचः शे |
| 6.3.35 | तसिलादिष्वाकृत्वसुचः | 6.3.56 वा घोष-मिश्र-शब्देषु |
| (वा०) | भस्याढे तिद्धते | 6.3.57 उदकस्योदः संज्ञायाम् |

| 6.3.58 पेषं-वास-वाहन-धिषु च | (साद्यादेश-प्रकरणम्) |
|---|--|
| 6.3.59 एकहलादौ पूरियतव्येऽन्यतरस्याम् | 6.3.78 सहस्य सः संज्ञायाम् |
| अन्यतरस्याम् 61 | सहस्य 83; सः 89 |
| 6.3.60 मन्थौदन-सक्तु-बिन्दु-वज्र-भार-हार- | 6.3.79 ग्रन्थान्ताधिके च |
| वीवध-गाहेषु च | 6.3.80 द्वितीये चानुपाख्ये |
| (ह्रस्व-प्रकरणम्) | 6.3.81 अव्ययीभावे चाकाले |
| 6.3.61 इको हस्वोऽङ्यो गालवस्य हस्वः 66 | 6.3.82 वोपसर्जनस्य |
| (वा॰) इयङुवङ्भाविनामव्ययानां च न भवति | 6.3.83 प्रकृत्याशिषि |
| 6.3.62 एक तद्धिते च | 6.3.84 समानस्य च्छन्दस्यमूर्द्ध-प्रभृत्युदर्केषु |
| 6.3.63 ङ्यापोः संज्ञा-छन्दसोर्बहुलम् | समानस्य 89 |
| ब्यापोः, बहुलम् 64 | 6.3.85 ज्योतिर्जनपद-रात्रि-नाभि-नाम-गोत्र- |
| 6.3.64 त्वे च | रूप-स्थान-वर्ण-वयो-वचन-बन्धुषु |
| 6.3.65 इष्टकेषीका-मालानां चित-तूल-भारिषु | 6.3.86 चरणे ब्रह्मचारिणि |
| 6.3.66 खित्यनव्ययस्य खिति ६९; अनस्य ६७ | 6.3.87 तीर्थे ये ये 88 |
| (मुमादि-प्रकरणम्) | 6.3.88 विभाषोद्रे |
| 6.3.67 अरुर्द्धिषदजन्तस्य मुम् मुम् 72 | 6.3.89 हग्-दश-वतुषु 91 |
| 6.3.68 इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच | 6.3.90 इदं-किमोरीश्-की |
| 6.3.69 वाचंयम-पुरन्दरौ च | 6.3.91 आ सर्वनाम्नः सर्वनाम्नः 92 |
| 6.3.70 कारे सत्यागदस्य | 6.3.92 विष्वग्-देवयोश्च टेरद्भयञ्चतावप्रत्यये |
| 6.3.71 ३ येन-तिलस्य पाते ञे | अञ्चतौ अप्रत्यये 95 |
| 6.3.72 रात्रेः कृति विभाषा | 6.3.93 समः समि |
| 6.3.73 न-लोपो नञः नञः 77 | 6.3.94 तिरसस्तिर्यलोपे |
| (वा॰) नञो नलोपोऽवक्षेपे तिङ्युपसङ्ख्यानं | 6.3.95 सहस्य सिद्धः सहस्य १६ |
| कर्तव्यम् | 6.3.96 सध माद-स्थयोश्छन्द सि |
| 6.3.74 तस्मान्नुडचि | 6.3.97 द्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् अपः 98 |
| 6.3.75 नभ्राण्-नपान्नवेदा-नासत्या-नमुचि- | 6.3.98 ऊदनोर्देशे |
| नकुल-नख-नपुंसक-नक्षत्र-नक- | 6.3.99 अष छ्यतृ तीयास्थस्यान्यस्य |
| नाकेषु प्रकृत्या प्रकृत्या <i>77</i> | दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोति- |
| 6.3.76 एकादिश्चेकस्य चादुक् | कारक-राग-च्छेषु अषदुक् 100 |
| 6.3.77 नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् | 6.3.100 अर्थे विभाषा |

| 6.3.101 कोः कत् तत्पुरुषेऽचि | 6.3.119 मतौ बह्दचोऽनजिरादीनाम् मतौ 120 |
|---|---|
| कोः 108; कत् 103 | 6.3.120 शरादीनां च |
| 6.3.102 रथ-वद् योश्च | 6.3.121 इको वहेऽपीलोः |
| 6.3.103 तृणे च जातौ | 6.3.122 उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् |
| 6.3.104 का पथ्यक्षयोः का 108 | उपसर्गस्य 124 |
| 6.3.105 ईषद् र्थे | 6.3.123 इकः काशे इकः 124 |
| 6.3.106 विभाषा पुरुषे विभाषा 108 | 6.3.124 दस्ति |
| 6.3.107 कवं चोष्णे कवम् 108 | 6.3.125 अष्टनः संज्ञायाम् अष्टनः 126 |
| 6.3.108 पथि च च्छन्द्सि | 6.3.126 छन्द्सि च |
| 6.3.109 पृषोद्रादीनि यथोपदिष्टम् | 6.3.127 चितेः कपि |
| 6.3.110 सङ्ख्या-वि-सायपूर्वस्याह्रस्याहन्न- | 6.3.128 विश्वस्य वसु-राटोः विश्वस्य 130 |
| न्यतरस्यां ङो | 6.3.129 नरे संज्ञायाम् |
| (दीर्घ-प्रकरणम्) | 6.3.130 मित्रे चर्षीं |
| 6.3.111 द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः द्रलोपे 112; | 6.3.131 मन्त्रे सोमार्थेन्द्रिय-विश्वदेव्यस्य मतौ |
| पूर्वस्य 138; दीर्घः 6.4.18; अणः 6.4.2 | मन्त्रे 132 |
| 6.3.112 सहि-वहोरोदवर्णस्य | 6.3.132 ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् |
| 6.3.113 साढ्ये साङ्घा साढेति निगमे | 6.3.133 ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रोरुष्या- |
| 6.3.114 संहितायाम् 135 | णाम् ऋचि 136 |
| 6.3.115 कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्ट-पञ्च-मणि- | 6.3.134 इकः सुञि |
| भिन्न-छिन्न-च्छिद्र-स्रुव-स्वस्तिकस्य | 6.3.135 द्यचोऽतस्तिङः |
| 6.3.116 नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि- | 6.3.136 निपातस्य च |
| तनिषु क्वौ | 6.3.137 अन्येषामपि दश् यते |
| 6.3.117 वन-गिर्योः संज्ञायां कोटर- | 6.3.138 चौ |
| किंशुलकादीनाम् संज्ञायाम् 120 | 6.3.139 संप्रसारणस्य 6.4.2 |
| 6.3.118 ਕਲੇ | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे षष्टाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथ षष्टाध्यायस्य चतुर्थः पादः

| (अङ्गाधिकारः) | (आभीयम्) |
|--|--|
| 6.4.1 अङ्गस्य 7.4.97 | 6.4.22 असिद्धवद्त्राभात् 175 |
| 6.4.2 हल : | (वा॰) वुग्युटावुवङ्यणोः सिद्धौ वक्तव्यौ |
| 6.4.3 नामि 7 | 6.4.23 श्रान्नलोपः नलोपः 33 |
| 6.4.4 न तिसृ-चतसृ | 6.4.24 अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति |
| 6.4.5 छन्दस्युभयथा उभयथा 6 | उपधायाः ३४ |
| 6.4.6 नृच | 6.4.25 दंश-सञ्ज-स्वञ्जां शपि शपि 26 |
| 6.4.7 नोपधायाः न 10; उपधायाः 18 | 6.4.26 रञ्जेश्व रज्जे: 27 |
| 6.4.8 सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ | 6.4.27 घिञ च भाव-करणयोः घिञ 29 |
| सर्वनामस्थाने 11; असम्बुद्धौ 14 | 6.4.28 स्यदो जवे |
| 6.4.9 वा षपूर्वस्य निगमे | 6.4.29 अवोदेधोद्म-प्रश्रथ-हिमश्रथाः |
| 6.4.10 सान्त महतः संयोगस्य | 6.4.30 नाञ्चेः पूजायाम् न 32 |
| 6.4.11 अप्-तृन्-तृच्-स्वसृ-नप्नृ-नेष्टृ-त्वष्टृ- | 6.4.31 त्तिव स्कन्दि-स्यन्दोः त्तिव 32 |
| क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तॄणाम् | 6.4.32 जान्त-नशां विभाषा विभाषा 33 |
| 6.4.12 इन्-हन्-पूषार्यम्णां शौ इणाम् 13 | 6.4.33 भञ्जेश्च चिणि |
| 6.4.13 सौ च सौ 14 | 6.4.34 शास इदङ्-हलोः शासः 35 |
| 6.4.14 अत्वसन्तस्य चाधातोः | 6.4.35 शा हौ 36 |
| 6.4.15 अनुनासिकस्य विव-झलोः विङति | 6.4.36 हन्तेर्जः |
| विवझलोः 21; वि ङति 19 | 6.4.37 अनुदात्तोपदेश-वनति-तनोत्यादीनाम- |
| 6.4.16 अज्झन-गमां सनि सनि 17 | नुनासिक लोपो झलि क्ङिति |
| 6.4.17 तनोतेर्विभाषा विभाषा 18 | अदीनाम् ३१; अनुनासिकलोपः ४० |
| 6.4.18 क्रमश्च क्तिव | 6.4.38 वा ल्यपि |
| 6.4.19 च्छ्-वोः शूडनुनासिके च | 6.4.39 न क्तिचि दीर्घश्च |
| च्छ्वोः, अनुनासिके 21; शूठ् 20 | 6.4.40 गमः क्वौ |
| 6.4.20 ज्वर-त्वर-स्रिव्यवि-मवामुपधायाश्च | 6.4.41 विड्-वनोरनुनासिकस्यात् आत् 45 |
| 6.4.21 राह्रोपः | 6.4.42 जन-सन-खनां सञ्झलोः जनाम् 43 |
| | 6.4.43 ये विभाषा विभाषा 44 |
| | 6.4.44 तनोतेर्यिक |

| 6.4.45 सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् | 6.4.70 मयतेरिदन्यतरस्याम् |
|--|---|
| 6.4.46 आर्धधातुके 68 | 6.4.71 लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः 75 |
| 6.4.47 भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् | 6.4.72 आडजादीनाम् आट् 75 |
| 6.4.48 अतो लोपः लोपः 54 | 6.4.73 छन्दस्यपि दश् यते |
| 6.4.49 यस्य हलः | 6.4.74 न माङ्योगे 75 |
| 6.4.50 क्यस्य विभाषा | 6.4.75 बहुलं छन्दस्यमा ङ्योगेऽपि |
| 6.4.51 णेरनिटि णेः 57 | बहुलं छन्दसि 76 |
| 6.4.52 निष्ठायां सेटि | 6.4.76 इरयो रे |
| 6.4.53 जनिता मन्त्रे | 6.4.77 अचि श्रु-धातु-भ्रुवां य्वोरियङुवङौ |
| 6.4.54 श मिता यज्ञे | अचि 100; य्वोः 78; इयङुवङौ 80 ~ |
| 6.4.55 अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु अय् 57 | 6.4.78 अभ्यासस्यासवर्णे |
| 6.4.56 ल्यपि लघुपूर्वा त् ल्यपि 59 | 6.4.79 स्त्रियाः 80 |
| 6.4.57 विभाषाऽऽपः | 6.4.80 वाऽम्-श्रसोः |
| 6.4.58 यु-प्रुवोर्दीर्घश्छन्दिस दीर्घः 61 | 6.4.81 इणो यण् यण् ८७ |
| 6.4.59 क्षियः 61 | 6.4.82 एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य 87 |
| 6.4.60 निष्ठायामण्यदर्थे 61 | (वा॰) गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते |
| 6.4.61 वाऽऽक्रोश-दैन्ययोः | 6.4.83 ओः सुपि सुपि 85 |
| 6.4.62 स्य-सिच्-सीयुट्-तासिषु भावकर्मणो- | 6.4.84 वर्षाभ्वश्च |
| रुपदेशेऽज्झन-ग्रह-दशां वा चिण्वद् | (वा०) दृन्करपुनःपूर्वस्य भुवो यण् वक्तव्यः |
| इट् च | 6.4.85 न भू-सुधियोः भूसुधियोः 86 |
| 6.4.63 दीङो युडचि विङति | 6.4.86 छन्दस्युभयथा |
| - अचि 64; क्ङिति 68 | 6.4.87 हु-श्रुवोः सार्वधातुके |
| 6.4.64 आतो लोप इटि च आतः 69 | 6.4.88 भुवो वुग् लुङ्-लिटोः |
| 6.4.65 ईद् यति ईत् 66 | 6.4.89 उत्रुपधाया गोहः |
| 6.4.66 घु-मा-स्था-गा-पा-जहाति-सां हलि | ऊत् ११; उपधायाः १०० |
| घुसाम् 69 | 6.4.90 दोषो णौ दोषः 91; णौ 94 |
| 6.4.67 एलिंडि 68 | 6.4.91 वा चित्तविरा गे |
| 6.4.68 वाऽन्यस्य संयोगादेः | 6.4.92 मितां ह्रस्वः मिताम् 93 |
| 6.4.69 न ल्यपि ल्यपि ७० | 6.4.93 चिण्-णमुलोदींघोंऽन्यतरस्याम् |
| l | 6.4.94 खिंच हस्वः हस्वः 97 |

| | 4 |
|---|---|
| 6.4.95 ह्वादो निष्ठायाम् | 6.4.119 घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च |
| 6.4.96 छादेर्घेऽदुन्युपसर्गस्य छादेः 97 | एत, अभ्यासलोपश्च 126 |
| 6.4.97 इस्-मन्-त्रन्-क्विषु च | 6.4.120 अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि |
| 6.4.98 गम-हन-जन-खन-घसां लोपः | अतः, लिटि 126; एकशादेः 121 |
| विङत्यनिङ लोपः 100; विङति 126 | 6.4.121 थिल च सेटि 126 |
| 6.4.99 तनि-पत्यो ३छन्द िस छन्दिस 100 | 6.4.122 तॄ-फल-भज-त्रपश्च |
| 6.4.100 घसि-भसोईलि च हिल 101 | 6.4.123 राधो हिंसायाम् |
| 6.4.101 हु-झल्भ्यो हेर्घिः हेर्घिः 103 | 6.4.124 वा जॄ-भ्रमु-त्रसाम् वा 125 |
| 6.4.102 श्रु-शृणु-पॄ-कृ-वृभ्यरुछन्दिस | 6.4.125 फणां च सप्तानाम् |
| छन्दसि १०३ | 6.4.126 न शस-द्द-वादि-गुणानाम् |
| 6.4.103 अङितश्च | 6.4.127 अर्वणस्त्रसावनञः तृ 128 |
| 6.4.104 चिणो छुक् छुक् 106 | 6.4.128 मघवा बहुलम् |
| 6.4.105 अतो हेः है: 106 | (भाधिकारः) |
| 6.4.106 उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् | 6.4.129 भस्य 175 |
| उतः, प्रत्ययात् 110; असंयोगपूर्वात् 107 | 6.4.130 पादः पत् |
| 6.4.107 लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः | 6.4.131 वसोः संप्रसारणम् सम् 133 |
| लोपः 109; म्वोः 108 | 6.4.132 वाह ऊठ् |
| 6.4.108 नित्यं करोतेः नित्यम् 109; करोतेः 110 | 6.4.133 श्व-युव-मघोनामतद्धिते |
| 6.4.109 ये च | 6.4.134 अल्लोपोऽनः |
| 6.4.110 अत उत् सार्वधातुके साके 118 | अत् 138; लोपः 145; अनः 137 |
| 6.4.111 श्रसोरह्रोपः लोपः 112 | 6.4.135 षपूर्व-हन्-धृतराज्ञामणि |
| 6.4.112 श्राभ्यस्तयोरातः | 6.4.136 विभाषा ङि-इयोः |
| श्नाभ्यस्तयोः 113; आतः 114 | 6.4.137 न संयोगाद् व-मन्तात् |
| 6.4.113 ई हल्पघोः | 6.4.138 अचः 139 |
| 6.4.114 इद् दरिद्रस्य | 6.4.139 उद ईत् |
| 6.4.115 भियोऽन्यतरस्याम् अम् 117 | 6.4.140 आतो धातोः |
| 6.4.116 जहातेश्च जहातेः 118 | 6.4.141 मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः |
| 6.4.117 आचहों | 6.4.142 ति विंशतेर्डिति डिति 143 |
| 6.4.118 ਲोपो यि | 6.4.143 देः 145 |
| | |

6.4.144 नस्तिद्धिते त्रद्धिते १४९ (वा॰) अव्ययानां भमात्रे टिलोपः (वा०) अश्मनो विकारे टिलोपो वक्तव्यः 6.4.145 **अह्नष्ट-खोरेव** 6.4.146 ओर्गणः ओ: 147 6.4.147 हे लोपोऽकद्रवाः लोपः १५६ 6 4 148 **यस्ये**ति च ईति १५० (वा॰) औङः इयां प्रतिषेधो वाच्यः 6.4.149 सूर्य-तिष्यागस्त्य-मत्स्यानां य उपधायाः **यः** 152; **उपधायाः** 150 (वा॰) तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यलोप इति वाच्यम (वा॰) मतस्यस्य ड्यां यलोपः (वा०) सूर्यागस्तययोइछे च ङयां च 6.4.150 हलस्तिद्धतस्य हल: 152 6.4.151 आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति आपत्यस्य १५२; तद्धिते १५३ 64152 का-च्योश्च 6.4.153 बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् 6.4.154 **तरिष्ठेमेयःस** इष्टेमेयःस 163 6.4.155 **टे**: 6.4.156 स्थूल-दूर-युव-ह्रस्व-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः

6.4.157 प्रिय-स्थिर-स्फिरोरु-बहल-गरु-वद्ध-तप्र-दीर्घ-वन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फ-वर-बंहि-गर-वर्षि-त्रब-द्राघि-वन्दाः 6.4.158 बहोर्लीपो भ च बहोः बहोः, भ च बहोः 159 6.4.159 **इष्टस्य यिट च** 6.4.160 ज्यादादीयसः 6.4.161 **र ऋतो हलादेर्लघोः** रः, ऋतः 162 6.4.162 विभाषजींश्छन्दिस 6.4.163 प्रकृत्यैकाच् प्रकृत्या 170 6.4.164 इनण्यनपत्ये इन् 166; अणि 171 6.4.165 गाथि-विदिथ-केशि-गणि-पणिनश्च 6.4.166 **संयोगादिश्च** 6.4.167 **अन** 170 6.4.168 ये चाभाव-कर्मणोः 6.4.169 आत्माध्वानौ खे 6.4.170 न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः 6.4.171 ब्राह्मो जातौ 6.4.172 कार्मस्ताच्छील्ये 6.4.173 औक्षमनपत्ये 6.4.174 दाण्डिनायन-हास्तिनायनाथर्वणिक-

जैह्माशिनेय-वाशिनायनि-भ्रौणहत्य-

6 4 175 ऋत्व्य-वास्त्व्य-वास्त्व-माध्वी-हिरण्ययानि च्छन्दिस

धैवत्य-सारवैक्ष्वाक-मैत्रेय-हिरण्मयानि

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे षष्टाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे षष्टोऽध्यायः॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (प्रत्ययादेश-प्रकर | .णम्) | 7.1.24 अतो ऽम् | |
|---|---|---|--|
| 7.1.1 यु-वोरनाको | , | 7.1.25 अदुड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः | अदुड् 26 |
| 7.1.2 आयनेयीनीयियः फ-ढ- | ख-छ-घां | (वा॰) एकतरात्प्रतिषेधो वक्तव्यः | ~ ~ |
| प्रत्ययादीनाम् | प्रत्ययस्य ५ | 7.1.26 नेतराच्छन्द सि | |
| 7.1.3 झोऽन्तः | झः 8 | 7.1.27 युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् | युभ्याम् ३३ |
| 7.1.4 अद्भ्यस्तात् | अत् 8 | 7.1.28 ङे प्रथमयोरम् | |
| 7.1.5 आत्मनेपदेष्वनतः | | 7.1.29 श सो न | |
| 7.1.6 शीङो रुट् | रुट् 8 | 7.1.30 भ्यसोऽभ्यम् | भ्यसः 31 |
| 7.1.7 वेत्तेर्विभाषा | | 7.1.31 पञ्चम्या अत् | 32 |
| 7.1.8 बहुलं छन्दिस | | 7.1.32 एकवचनस्य च | |
| 7.1.9 अतो भिस ऐस् अतः | 17; भिस ऐस् 11 | 7.1.33 साम आकम् | |
| 7.1.10 बहुलं छन्दसि | | 7.1.34 आत औ णलः | |
| 7.1.11 नेदमदसोरकोः | | 7.1.35 तु-ह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतः | ए स्याम् |
| 7.1.11 17 17 11 111 | | ` | |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- | स्याः | अन् | यतरस्याम् ३६ |
| • • | स्याः ङेः 14 | अन्य 7.1.36 विदेः श तुर्वसुः | |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- | | अन्य 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् | यतरस्याम् 36 38 |
| 7.1.12 टा -ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 | अन्य 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्दसि | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 | अन्य 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्दसि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 | अन्त 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो त्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्दसि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मे 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 | अन्त 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो त्यप् 7.1.38 त्त्वाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मे 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा 7.1.17 जसः शी | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 शी 19 | 31न्य 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् 7.1.41 लोपस्त आत्मनेपदेषु | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मे 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा 7.1.17 जसः शी 7.1.18 औङ आपः | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 श्री 19 औङः 19 | 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् 7.1.41 लोपस्त आत्मनेपदेषु 7.1.42 ध्वमो ध्वात् | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा 7.1.17 जसः शी 7.1.18 औङ आपः 7.1.19 नपुंसकाच | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 शी 19 औङः 19 नपुंसकात् 20 | 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् 7.1.41 लोपस्त आत्मनेपदेषु 7.1.42 ध्वमो ध्वात् 7.1.43 यजध्वैनमिति च | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 ङेर्यः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा 7.1.17 जसः शी 7.1.18 औङ आपः 7.1.19 नपुंसकाच 7.1.20 जरशसोः शिः | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 शी 19 औङः 19 नपुंसकात् 20 | 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् 7.1.41 लोपस्त आत्मनेपदेषु 7.1.42 ध्वमो ध्वात 7.1.43 यजध्वैनमिति च 7.1.44 तस्य तात् | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 |
| 7.1.12 टा-ङसि-ङसामिनात्- 7.1.13 डेर्चः 7.1.14 सर्वनाम्नः स्मै 7.1.15 ङसि-ङ्योः स्मात्-स्मि 7.1.16 पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा 7.1.17 जसः शी 7.1.18 औङ आपः 7.1.19 नपुंसकाच 7.1.20 जश्शसोः शिः 7.1.21 अष्टाभ्य औश् | ङेः 14 सर्वनाम्नः 17 नौ 16 श्री 19 औङः 19 नपुंसकात् 20 जश्शसोः 22 | 7.1.36 विदेः शतुर्वसुः 7.1.37 समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् 7.1.38 त्तवाऽपि च्छन्द्सि 7.1.39 सुपां सु-लुक्-पूर्वसवर्णाच्छे- याजालः 7.1.40 अमो मश् 7.1.41 लोपस्त आत्मनेपदेषु 7.1.42 ध्वमो ध्वात् 7.1.43 यजध्वैनमिति च | यतरस्याम् 36 38 छन्दिस 50 या-डा-ड्या- |

| 7.1.47 वत्वो यक् सवः 49 | 7.1.70 उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः |
|--|---|
| 7.1.48 इष्ट्वीनमिति च | सर्वनामस्थाने 72 |
| 7.1.49 स्नात्व्यादयश्च | 7.1.71 युजेरसमासे |
| 7.1.50 आज्जसेरसुक् आत् 52; असुक् 51 | 7.1.72 नपुंसकस्य झलचः न पुंसकस्य 77 |
| 7.1.51 अश्व-क्षीर-वृष-लवणानामात्मप्रीतौ | 7.1.73 इकोऽचि विभक्तौ |
| क्यचि | इकः 74; अचि विभक्तौ 75 |
| 7.1.52 आमि सर्वनाम्नः सुट् आमि 57 | (वा॰) वृद्यौत्त्वतृज्वद्घावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रति- |
| 7.1.53 त्रेस्त्रयः | षेधन |
| 7.1.54 हस्व-नद्यापो नुट् नुट् 57 | 7.1.74 तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य |
| (वा॰) नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रति- | तृतीयादिषु ७५ |
| षेधेन | 7.1.75 अस्थि-दघि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः |
| 7.1.55 षट्-चतुर्भ्यश्च | अस्थिक्ष्णाम्, उदात्तः 77; अनङ् 76 |
| 7.1.56 श्री-ग्रामण्योश्छन्दसि छन्दसि 57 | 7.1.76 छन्दस्यपि दृश्य ते छन्दिस <i>77</i> |
| 7.1.57 गोः पादान्ते | 7.1.77 ई च द्विवचने |
| (नुम्-प्रकरणम्) | 7.1.78 नाभ्यस्ताच्छतुः अभ्यस्तात् ७७; शतुः ८१ |
| 7.1.58 इदितो नुम् धातोः नुम् 83 | 7.1.79 वा नपुंसकस्य वा 80 |
| 7.1.59 शे मुचादीनाम् | 7.1.80 आच्छी-नद्योर्नुम् |
| (वा॰) शे तृम्फादीनां नुम्वाच्यः | आच्छीनद्योः 81; नुम् 83 |
| 7.1.60 मस्जि-नशोर्झलि | 7.1.81 शप्-श्यनोर्नित्यम् |
| (वा॰) मस्जेरन्त्यात्पूर्वी नुम्वाच्यः | 7.1.82 सावनडुद्दः सौ 85 |
| 7.1.61 रधि-जभोर चि अचि 64 | 7.1.83 हक्-स्ववस्-स्वतवसां छन्दिस |
| | (आदेश-प्रकरणम्) |
| 7.1.62 नेट्यलिटि रधेः | 7.1.84 दिव औत् |
| 7.1.63 रभेरशब्लिटोः अशब्लिटोः 64 | 7.1.85 पथि-मथ्यृभुक्षामात् पक्षाम् 88 |
| 7.1.64 लमेश्च लमेः 69 | 7.1.86 इतोऽत् सर्वनामस्थाने सने 98 |
| 7.1.65 आङो यि चि 66 | 7.1.87 थो न्थः |
| 7.1.66 उपात् प्रशंसायाम् | 7.1.88 भस्य टेर्लोपः |
| 7.1.67 उपसर्गात् खल्-घञोः 68 | 7.1.89 पुंसोऽसुङ् |
| 7.1.68 न सु-दुर्भ्यां केवलाभ्याम् | (वा॰) अस्य संबुद्धौ वानङ्, नलोपश्च वा वाच्यः |
| 7.1.69 विभाषा चिण्-णमुलोः | 7.1.90 गोतो णित णित 92 |

| 4 | 01 | |
|-------|-------|--|
| • | u i | |
| | . 7 I | |

| | ~` |
|--|--|
| 7.1.91 णलुत्तमो वा | 7.1.98 चतुरनडुहोरामुदात्तः चहोः 99 |
| 7.1.92 सख्युरसम्बुद्धौ सख्युः 93; असम्बुद्धौ 95 | 7.1.99 अम् सम्बुद्धौ |
| 7.1.93 अनङ् सौ 94 | 7.1.100 ऋत इद् धातोः |
| 7.1.94 ऋदुशनस्-पुरुद्ंसोऽनेहसां च | ऋतः, धातोः 103; इत् 101 |
| 7.1.95 तृज्वत् क्रोष्टुः 97 | 7.1.101 उपधायाश्च |
| 7.1.96 स्त्रियां च | 7.1.102 उदोष्ठ्यपूर्वस्य उत् 103 |
| 7.1.97 विभाषा तृतीयादिष्वचि | ^{7.1.103} बहुलं छन्दिस |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसत्रपा | ठे सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ |
| म स्राम्याचाराच्या मार्युगा | ७ (त्तानाचा वर्ष वनवार ।।व् |
| | |
| | |
| अथ सप्तमाध | यायस्य द्वितीयः पादः |
| (वृद्धि-प्रकरणम्) | 7.2.16 आदितश्च आदितः 17 |
| 7.2.1 सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु 7 | 7.2.17 विभाषा भावादिकर्मणोः |
| 7.2.2 अतो ल्रान्तस्य | 7.2.18 क्षुब्य-स्वान्त-ध्वान्त-लग्न-स्लिप्ट-विरिब्य- |
| 7.2.3 वद-व्रज-हलन्तस्याचः हचः ४ | फाण्ट-बाढानि मन्थ-मनस्तमः- |
| 7.2.4 नेटि 7 | सक्ताविस्पष्ट-स्वरानायास-भृशेषु |
| 7.2.5 ह्म्यन्त-क्षण-श्वस-जागृ-णि-श्चोदिताम् | 7.2.19 धृषि-शसी वैयात्ये |
| 7.2.6 ऊर्णीतेर्विभाषा विभाषा 7 | 7.2.20 दृढः स्थूल-बलयोः |
| 7.2.7 अतो हलादेर्लघोः | 7.2.21 प्रभौ परिवृढः |
| (अनिट्-प्रकरणम्) | 7.2.22 कृच्छ्र-गहनयोः कषः |
| 7.2.8 नेड् विश कृति नेट् ३४; कृति १ | 7.2.23 घुषिरविशब्दने |
| 7.2.9 ति-तु-त्र-त-थ-सि-सु-सर-कसेषु च | 7.2.24 अर्देः सं-नि-विभ्यः अर्देः 25 |
| 7.2.10 एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् एकाचः 11 | 7.2.25 अमेश्चाविदूर्ये |
| 7.2.11 श्र्युकः किति उकः 12 | 7.2.26 णेरध्ययने वृत्तम् णेः 27 |
| 7.2.12 सनि ग्रह-गुहोश्च | ७.२.२७ वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-च्छन्न- |
| 7.2.13 कृ-सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवो लिटि | ज्ञप्ताः वा 30 |
| 7.2.14 श्वीदितो निष्ठायाम् निष्ठायाम् ३४ | 7.2.28 रुष्यम-त्वर-संघुषास्वनाम् |
| 7.2.15 यस्य विभाषा | 7.2.29 हृषेर्लोमसु |
| | |

| 7.2.30 अपचितश्च | 7.2.52 वसति-क्षुधोरिट् इट् 78 |
|--|--|
| 7.2.31 हु ह्वरेश्छन्दिस छन्दिस 34 | 7.2.53 अञ्चेः पूजायाम् |
| 7.2.32 अपरिहृताश्च | 7.2.54 सुभो विमोहने |
| 7.2.33 सोमे ह्वरितः | 7.2.55 जॄ-व्रश्च्योः त्तिव त्तिव 56 |
| 7.2.34 ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त- | 7.2.56 उदितो वा वा 57 |
| विकस्ता विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ- | 7.2.57 सेऽसिचि कृत-चृत-च्छृद-तृद-नृतः |
| तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्रीरुज्वलिति- | से 60 |
| क्षरिति-क्षमिति-वमित्यमितीति च | 7.2.58 गमेरिट् परस्मैपदेषु परस्मैपदेषु 60 |
| (इट्-प्रकरणम्) | 7.2.59 न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः न 65 |
| 7.2.35 आर्घघातुकस्येड् वलादेः | 7.2.60 तासि च ऋ्रपः |
| आर्धधातुकस्य 75; इट्, वलादेः 78 | 7.2.61 अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् |
| 7.2.36 स्नु-क्रमोरनात्मनेपदिनमित्ते | तास्वत्, अनिटो नित्यम् ६३; थिल ६६ |
| 7.2.37 ग्रहोऽलिटि दीर्घः अलिटि 38; दीर्घः 40 | 7.2.62 उपदेशेऽत्वतः |
| 7.2.38 वृतो वा वृतः 42 | 7.2.63 ऋतो भारद्वाजस्य |
| 7.2.39 ਜ ਨਿ ঙਿ ਜ 40 | 7.2.64 बभूथाततन्थ-जगृम्भ-ववर्थेति निगमे |
| 7.2.40 सिचि च परस्मैपदेषु | 7.2.65 विभाषा सृजि-दृशोः |
| 7.2.41 इट् सनि वा वा 43 | 7.2.66 इडत्त्यर्ति-व्ययतीनाम् |
| 7.2.42 लिङ्-सिचोरात्मनेपदेषु 43 | 7.2.67 वस्वेकाजाद्-घसाम् वसु 69 |
| 7.2.43 ऋतश्च संयोगादेः | 7.2.68 विभाषा गम-हन-विद-विशाम् |
| 7.2.44 स्वरति-सूति-सूयति-धूञूदितो वा | 7.2.69 सनिंससनिवांसम् |
| वा 51 | 7.2.70 ऋद्धनोः स्ये |
| 7.2.45 रधादिभ्यश्च | 7.2.71 अझेः सिचि सिचि 73 |
| 7.2.46 निरः कुषः 47 | 7.2.72 स्तु-सु-धूञ्भ्यः परस्मैपदेषु पषु ७३ |
| 7.2.47 इण् निष्ठायाम् | 7.2.73 यम-रम-नमातां सक् च |
| 7.2.48 तीष-सह-ऌभ-रुष-रिषः | 7.2.74 स्मि-पूङ्-रञ्चशां सनि सनि ७५ |
| 7.2.49 सनीवन्तर्ध-भ्रस्ज-दम्भु-श्रि-स्वृ-यूर्णु- | 7.2.75 किरश्च पञ्चभ्यः पञ्चभ्यः 76 |
| भर-ज्ञपि-सनाम् | 7.2.76 रुदादिभ्यः सार्वधातुके सार्वधातुके 81 |
| 7.2.50 क्किशः त्तवा-निष्ठयोः त्तवानिष्ठयोः 54 | 7.2.77 ईशः से से 78 |
| 7.2.51 पूङश्च | 7.2.78 ईंड-जनोर्घ्वे च |

| ग.४.१७ | |
|--------------------------------------|---|
| 7.2.79 लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य | 7.2.99 त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ |
| 7.2.80 अतो येयः अतः 82; इयः 81 | तिसृचतसृ 100 |
| 7.2.81 आतो ङितः | 7.2.100 अचि र ऋतः अचि 101 |
| 7.2.82 आने मुक् आने 83 | 7.2.101 जराया जरसन्यतरस्याम् |
| 7.2.83 ईदासः | 7.2.102 त्यदादीनामः |
| (विभक्तिकार्य-प्रकरणम्) | (वा॰) द्विपर्य्यन्तानामेवेष्टिः |
| 7.2.84 अप्टन आ विभक्तौ | 7.2.103 किमः कः किमः 105 |
| आः 88; विभक्तौ 113 | 7.2.104 कु ति-होः |
| 7.2.85 रायो हिल | 7.2.105 काति |
| 7.2.86 युष्मदस्मदोरनादेशे | 7.2.106 तदोः सः सावनन्त्ययोः सौ 108 |
| युष्मदस्मदोः 98; अनादेशे 89 | 7.2.107 अदस औ सुलोपश्च |
| 7.2.87 द्वितीयायां च | 7.2.108 इदमो मः |
| 7.2.88 प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् | 7.2.109 दश |
| 7.2.89 योऽचि | 7.2.110 यः सौ सौ 111 |
| 7.2.90 शेषे लोपः | 7.2.111 इदोऽय् पुंसि |
| 7.2.91 मपर्यन्तस्य 98 | 7.2.112 अनाप्यकः अकः 113 |
| 7.2.92 युवावौ द्विवचने | 7.2.113 हलि लोपः |
| 7.2.93 यूय-वयौ जिस | (वृद्धि-प्रकरणम्) |
| 7.2.94 त्वाहों सो | 7.2.114 मृ जेर्वृद्धिः वृद्धिः 7.3.31 |
| 7.2.95 तुभ्य-मह्यौ ङिय | 7.2.115 अचो ञ्णिति |
| 7.2.96 तव-ममौ ङसि | अचः 7.3.31; ञ्रिणति 7.3.35 |
| 7.2.97 त्व-मावेकवचने 98 | 7.2.116 अत उपधायाः |
| 7.2.98 प्रत्ययोत्तरपद्योश्च | 7.2.117 तद्धितेष्वचामादेः 7.3.31 |
| | 7.2.118 किति च किति 7.3.31 |
| | • |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

अथ सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः

| 7.3.1 देविका-शिंशपा-दित्यवाड्-दीर्घसत्र- | 7.3.24 प्राचां नगरान्ते |
|---|--|
| श्रेयसामात् | 7.3.25 जङ्गल-धेनु-वलजान्तस्य विभाषित- |
| 7.3.2 केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेरियः | मुत्तरम् |
| 7.3.3 न य्वाभ्यां पदान्ताभ्याम् पूर्वौ तु | 7.3.26 अर्घात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा |
| ताभ्यामेच् न व्याभ्याम्, पू. च् 5 | अणस्य २७; पूर्वस्य ३१; तु वा ३० |
| 7.3.4 द्वारादीनां च | 7.3.27 नातः परस्य |
| 7.3.5 न्यग्रोधस्य च केवलस्य | 7.3.28 प्रवाहणस्य ढे प्रवाहणस्य 29 |
| 7.3.6 न कर्मव्यतिहारे न 9 | 7.3.29 तत्प्रत्ययस्य च |
| 7.3.7 स्वागतादीनां च | 7.3.30 नञः शुचीश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल- |
| 7.3.8 श्वादेरिञि श्वादेः 9 | निपुणानाम् नञः 31 |
| 7.3.9 पदान्तस्यान्यतरस्याम् | 7.3.31 यथातथ-यथापुरयोः पर्यायेण |
| 7.3.10 उत्तरपदस्य 31 | 7.3.32 हनस्तोऽचिण्-णलोः |
| 7.3.11 अवयवादतोः | 7.3.33 आतो युक् चिण्-कृतोः चिण्कृतोः 35 |
| 7.3.12 सु-सर्वार्धाज्जनपदस्य जनपदस्य 13 | 7.3.34 नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः |
| 7.3.13 दिशोऽमद्राणाम् | न 35 |
| 7.3.14 प्राचां ग्राम-नगराणाम् | 7.3.35 जिन-वध्योश्च |
| 7.3.15 सङ्ख्यायाः संवत्सर-सङ्ख्यस्य च | (आगम-प्रकरणम्) |
| सङ्ख्यायाः 17 | 7.3.36 अर्त्ति-ही-ब्ली-री-क्रूयी-क्ष्माय्यातां |
| 7.3.16 वर्षस्याभविष्यति | पुङ् णौ णौ 43 |
| 7.3.17 परिमाणान्तस्यासंज्ञा-शाणयोः | 7.3.37 शा-च्छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पां युक् |
| 7.3.18 जे प्रोष्ठपदानाम् | 7.3.38 वो विधूनने जुक् |
| 7.3.19 हृद्-भग-सिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च | 7.3.39 लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने |
| पूर्वपदस्य च 25 | 7.3.40 भियो हेतुभये षुक् |
| 7.3.20 अनुश्रातिकादीनां च | (आदेश-प्रकरणम्) |
| 7.3.21 देवताद्वन्द्वे च देवताद्वन्द्वे 23 | 7.3.41 स्फायो वः |
| 7.3.22 नेन्द्रस्य परस्य न 23 | 7.3.42 शदेरगतौ तः |
| ७ २ २२ टीप्रीच तस्मास्य | 7.3.43 रुहः पोऽन्यतरस्याम |

| | 6/ |
|--|---|
| 7.3.44 प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः | 7.3.70 घोर्लीपो लेटि वा लोपः 72 |
| प्रत्यस्यातः, आप्यसुपः ४९; इत् ४८ | 7.3.71 ओतः श्यनि |
| 7.3.45 न या-सयोः | 7.3.72 क्सस्याचि क्सस्य 73 |
| 7.3.46 उदीचामातः स्थाने य-कपूर्वायाः | 7.3.73 लुग्वा दुह-दिह-लिह-गुहामात्मनेपदे |
| उदीचाम् ४८; आतः स्थाने ४९ | दन्त्ये |
| 7.3.47 भस्त्रैषाजा-ज्ञा-द्वा-स्वा नञ्पूर्वाणामपि | 7.3.74 शमामष्टानां दीर्घः श्यनि दीर्घः 76 |
| नञ्पूर्वाणामपि 49 | 7.3.75 ष्टिवु-क्रुमु-चमां शिति शिति 82 |
| 7.3.48 अभाषितपुंस्काच अस्कात् ४९ | 7.3.76 कमः परस्मैपदेषु |
| 7.3.49 आदाचार्याणाम् | 7.3.77 इषु-गमि-यमां छः |
| 7.3.50 ठस्येकः ठस्य 51 | 7.3.78 पा-घा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश्यर्ति-सर्ति- |
| 7.3.51 इसुसुक्-तान्तात् कः | शद-सदां पिब-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन- |
| 7.3.52 च-जोः कु घिण्-ण्यतोः चजोः कु 69 | यच्छ-पश्यर्च्छ-धौ-शीय-सीदाः |
| 7.3.53 न्यङ्क्वादीनां च | 7.3.79 ज्ञा-जनोर्जा |
| 7.3.54 हो हन्तेञ्जिषु हः 56; हन्तेः 55 | • |
| 7.3.55 अभ्यासाच अभ्यासात् 58 | 7.3.80 प्वादांना हृस्वः हृस्वः 81 7.3.81 मीनातेर्निगमे |
| 7.3.56 हेरचिङ | |
| 7.3.57 सन्-लिटोर्जेः सन्लिटोः 58 | (गुणादि-प्रकरणम्) |
| 7.3.58 विभाषा चेः | 7.3.82 मिदेर्गुणः गुणः 88 |
| 7.3.59 न कादेः न 69 | 7.3.83 जुिस च |
| 7.3.60 अजि-व्रज्योश्च | 7.3.84 सार्वधातुकार्धधातुकयोः 86 |
| 7.3.61 भुज-न्युब्जौ पाण्युपतापयोः | 7.3.85 जाग्रोऽवि-चिण्-णऌ-ङित्सु |
| 7.3.62 प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे | 7.3.86 पुगन्त-लघूपधस्य च लघूपधस्य ८७ |
| 7.3.63 वश्चेर्गतौ | 7.3.87 नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके |
| 7.3.64 ओक उचः के | नाभ्यस्तस्य ८९; पिति ९४; सार्वधातुके १०१ |
| 7.3.65 एय आवश्यके | 7.3.88 भू-सुवोस्तिङि |
| 7.3.66 यज-याच-रुच-प्रवचर्चश्च | 7.3.89 उतो वृद्धिर्छुकि हिल वृद्धिः 90; हिल 100 |
| (वा॰) त्यजेश्च | 7.3.90 ऊर्णोतिर्विभाषा ऊर्णोतेः 91 |
| · | 7.3.91 गुणोऽपृक्ते |
| 7.3.67 वचोऽशब्दसंज्ञायाम् | 7.3.92 तृणह इम् |
| 7.3.68 प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्यार्थे | 7.3.93 ब्रुव ईट् ईट् 98 |
| 7.3.69 भोज्यं भक्ष्ये | |

| 7.3.94 यङो वा वा 95 | 7.3.108 हस्वस्य गुणः हस्वस्य 109; गुणः 111 | | |
|---|---|--|--|
| 7.3.95 तु-रु-स्तु-शम्यमः सार्वधातुके | 7.3.109 जिस च | | |
| 7.3.96 अस्ति-सिचोऽपृक्ते | 7.3.110 ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः | | |
| अस्तिसिचः 97; अपृक्ते 100 | 7.3.111 घेर्डि ति | | |
| 7.3.97 बहुलं छन्द् सि | 7.3.112 आण् नद्याः | | |
| 7.3.98 रुद्श्च पञ्चभ्यः रुद्ः , पञ्चभ्यः 99 | 7.3.113 याडापः आपः 114 | | |
| 7.3.99 अड् गार्ग्य-गालवयोः अट् 100 | 7.3.114 सर्वनाम्नः स्याङ्द्रस्वश्च | | |
| 7.3.100 अदः सर्वेषाम् | स्याट्, ह्रस्वः, च 115 | | |
| 7.3.101 अतो दीर्घो य ञि | 7.3.115 विभाषा द्वितीया-तृतीयाभ्याम् | | |
| अतः 104; दीर्घः यञि 102 | 7.3.116 ङेराम् नद्याम्नीभ्यः | | |
| 7.3.102 सुपि च सुपि 103 | ङेः 119; आम् नद्याः 117 | | |
| 7.3.103 बहुवचने झल्येत् एत् 106 | 7.3.117 इंदुद्भ्याम् 119 | | |
| 7.3.104 ओसि च ओसि 105 | 7.3.118 औत् 119 | | |
| 7.3.105 आङि चापः आपः 106 | 7.3.119 अच घेः घेः 120 | | |
| 7.3.106 सम्बुद्धौ च सम्बुद्धौ 108 | 7.3.120 आङो नाऽस्त्रियाम् | | |
| 7.3.107 अम्बार्थ-नद्योर्हस्वः | | | |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ | | | |
| अथ सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः | | | |
| 7.4.1 णौ चड्युपधाया ह्रस्वः | 7.4.6 जिघ्रतेर्वा वा 7 | | |
| णौ याः 8; ह्रस्वः 3 | 7.4.7 उर्ऋत् 8 | | |
| 7.4.2 नाग्लोपि-शास्वृदिताम् | 7.4.8 नित्यं छन्दसि | | |
| 7.4.3 भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव-मील- | 7.4.9 द्यतेर्दिगि लिटि लिटि 12 | | |
| पीडामन्यतरस्याम् | 7.4.10 ऋतश्च संयोगादेर्गुणः गुणः 11 | | |
| 7.4.4 लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य | 7.4.11 ऋच्छत्यृताम् | | |
| 7.4.5 तिष्ठतेरित् | 7.4.12 शृ-दॄ-प्रां ह्रस्वो वा ह्रस्वः 15 | | |

| 7.4.13 जहाव्यापातूनगठः | | |
|---|---|--|
| 7.4.13 केऽणः अणः 14 | 7.4.39 कव्यध्वर-पृतनस्यर्चि लोपः | |
| 7.4.14 न कपि 15 | 7.4.40 चति-स्यति-मा-स्थामित् ति किति | |
| 7.4.15 आपोऽन्यतरस्याम् | इत् 41 ; ति किति 47 | |
| 7.4.16 ऋ-दृशोऽङि गुणः अङि 20 | 7.4.41 शा-च्छोरन्यतरस्याम् | |
| 7.4.17 अस्यतेस्थुक् | 7.4.42 द् धातेर्हिः हिः 44 | |
| 7.4.18 श्वयतेरः | 7.4.43 जहातेश्च त्तिव जहातेः, त्तिव 44 | |
| 7.4.19 पतः पुम् | 7.4.44 विभाषा छन्दसि छन्दसि 45 | |
| 7.4.20 वच उम् | 7.4.45 सुधित वसुधित नेमधित धिष्व धिषीय च | |
| 7.4.21 शीङः सार्वधातुके गुणः शीङः 22 | 7.4.46 दो दद् घोः दः, घोः 47 | |
| 7.4.22 अयङ् यि किङति यि 29; किङति 25 | 7.4.47 अच उपसर्गात् तः तः 49 | |
| 7.4.23 उपसर्गाद्-ध्रस्व ऊहतेः उस्वः 24 | 7.4.48 अपो भि | |
| 7.4.24 एतेर्लिङ | 7.4.49 सः स्यार्थधातुके सः 52; सि 57 | |
| 7.4.25 अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः | 7.4.50 तासस्त्योर्लोपः तासस्त्योः 52; लोपः 53 | |
| अकृत्सार्वधातुकयोः 29; दीर्घः 26 | 7.4.51 रि च | |
| 7.4.26 च्वो च च्वो 27 | 7.4.52 ह एति | |
| 7.4.27 रीङ् ऋतः ऋतः 30 | 7.4.53 यीवर्णयोर्दीधी-वेव्योः | |
| 7.4.28 रिङ् श-यग्-लिङ्क्षु यग्लिङ्क्षु 29 | 7.4.54 सनि मी-मा-घु-रभ-लभ-शक-पत- | |
| 7.4.29 गुणोऽर्ति-संयोगाद्योः 30 | पदामच इस् सनि 57; अचः 56 | |
| 7.4.30 यिङ च यिङ 31 | 7.4.55 आप्-ज्ञप्यृधामीत् ईत् 56 | |
| 7.4.31 ई घ्रा-ध्मोः | 7.4.56 द्म्भ इच | |
| 7.4.32 अस्य च्वौ अस्य 35 | 7.4.57 मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा | |
| (वा॰) अव्ययस्य चावीत्वं नेति वाच्यम् | (अभ्यास-प्रकरणम्) | |
| 7.4.33 क्यिच च क्यिच 39 | 7.4.58 अत्र लोपोऽभ्यासस्य अभ्यासस्य 97 | |
| 7.4.34 अशनायोदन्य-धनाया बुभुक्षा-पिपासा- | ा - 7.4.59 हस्वः | |
| गर्धेषु | 7.4.60 हलादिः शेषः शेषः 61 | |
| 7.4.35 न च्छन्दस्यपुत्रस्य छन्दसि ३९ | 7.4.61 शर्पूर्वाः खयः | |
| 7.4.36 दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यति रिषण्यति | 7.4.62 कु-होश्रुः चुः 64 | |
| 7.4.37 अश्वाघस्यात् आत् 38 | 7.4.63 न कवतेर्यंङि न, यङि 64 | |
| 7.4.38 देव-सुम्नयोर्यजुषि काठके | 7.4.64 कृषेश्छन्द्सि छन्द्सि 65 | |
| | | |

| ુ | सूत्रपाठः 7.4.97 |
|---|--|
| 7.4.65 दाधर्ति दर्धर्ति दर्धर्षि बोभृतु तेतिक्तेऽ | 7.4.81 स्त्रवति-शृणोति-द्रवति-प्रवति-प्रवति- |
| लर्घ्यापनीफणत् संसनिष्यदत् | च्यवतीनां वा |
| करिकत् कनिकद्द् भरिभ्रद् | 7.4.82 गुणो यङ्-लुकोः यङ्लुकोः 90 |
| दविध्वतो दविद्युतत् तरित्रतः | 7.4.83 दीर्घोऽकितः |
| सरीसृपतं वरीवृजन् | 7.4.84 नीग् वञ्च-स्रंसु-ध्वंसु-भ्रंसु-कस-पत-पद- |
| मर्मृज्यागनीगन्तीति च | स्कन्दाम् |
| 7.4.66 उर त् | 7.4.85 नुगतोऽनुनासिकान्तस्य नुक् 87 |
| 7.4.67 द्युति-स्वाप्योः संप्रसारणम् सम् 68 | (वा०) पदान्ताच्चेति वक्तव्यम् |
| 7.4.68 르괴ਘો ਲਿਟਿ | 7.4.86 जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशां च |
| 7.4.69 दीर्घ इणः किति दीर्घः 70 | 7.4.87 चर-फलोश्च चरफलोः 89 |
| 7.4.70 अत आदेः | 7.4.88 उत् परस्यातः उत्, अतः 89 |
| 7.4.71 तस्मान्नुड् द्विहलः तस्मात, नुट् 72 | 7.4.89 ति च |
| 7.4.72 अश्लोतेश्व | 7.4.90 रीगृदुपधस्य च रीक् 92; ऋदुपधस्य 91 |
| 7.4.73 भवतेरः अः 74 | (वा॰) रीगृत्वत इति वक्तव्यम् |
| 7.4.74 ससूवेति निगमे | 7.4.91 रुग्निको च लुकि रुग्निको, लुकि 92 |
| 7.4.75 निजां त्रयाणां गुणः श्लौ | 7.4.92 ऋतश्च |
| त्रयाणाम् ७६; श्लौ ७८ (७.४.९३) सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे | |
| 7.4.76 भृञामित् इत् 81 | लघुनि, अनग्लोपे 94; चङ्परे 97 |
| 7.4.77 अर्ति-पिपर्त्योश्च | 7.4.94 दीर्घो लघोः |
| 7.4.78 बहुलं छन्द् सि | 7.4.95 अत् स्मृ-द्द-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तॄ-स्पशाम् |
| 7.4.79 सन्यतः सनि 81 | अत् 97 |
| 7.4.80 ओ: पु-यण्-ज्यपरे 81 | 7.4.96 विभाषा वेष्टि-चेष्ट्योः |
| | 7.4.97 ई च गणः |
| | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

अथ प्रथमः पादः

| (द्विरुक्ति-प्रकरणम्) | (अनुदात्त-प्रकरणम्) | | |
|--|--|--|--|
| 8.1.1 सर्वस्य द्वे 15 | 8.1.18 अनुदात्तं सर्वमपादादौ 74 | | |
| 8.1.2 तस्य परमाम्रेडितम् आम्रेडितम् ३ | 8.1.19 आमन्त्रितस्य च | | |
| 8.1.3 अनुदात्तं च | 8.1.20 युष्मदस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयास्थयो- | | |
| 8.1.4 नित्य-वीप्सयोः | र्वान्नावौ युष्मदस्मदोः २६; षस्थयोः २२ | | |
| 8.1.5 परेर्वर्जने | (वा॰) एकवाक्ये युश्मदस्मदादेशा वक्तव्याः | | |
| 8.1.6 प्र-समुपोदः पादपूरणे | (वा॰) एते वान्नावादयोऽनन्वादेशे वा वक्तव्याः | | |
| 8.1.7 उपर्यध्यधसः सामीप्ये | 8.1.21 बहुवचनस्य वस्-नसौ | | |
| 8.1.8 वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूया-सम्मति- | 8.1.22 ते-मयावेकवचनस्य एकवचनस्य 23 | | |
| कोप-कुत्सन-भर्त्सनेषु | 8.1.23 त्वा-मौ द्वितीयायाः | | |
| 8.1.9 एकं बहुन्रीहिवत् बहुन्रीहिवत् 10 | 8.1.24 न च-वा-हाहैवयुक्ते न 26 | | |
| 8.1.10 आबाधे च | 8.1.25 पश्यार्थेश्चानालोचने | | |
| 8.1.11 कर्मधारयवदुत्तरेषु कर्मधारयवत् 15 | 8.1.26 सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा | | |
| 8.1.12 प्रकारे गुणवचनस्य | 8.1.27 तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः | | |
| (वा॰) डाचि विवक्षिते द्वे बहलम् | 8.1.28 तिङ्कतिङः तिङ् 66 | | |
| (वा॰) कर्मव्यतिहारे सर्वनाम्नो द्वे वाच्ये | 8.1.29 न छुट् न 66 | | |
| समासवच बहुलम् | 8.1.30 निपातैर्यद्-यदि-हन्त-कुविन्-नेच्-चेच्- | | |
| (वा॰) स्त्री-नपुंसकयोरुत्तरपदस्य चाम्भावो | चण्-कचिद्-यत्रयुक्तम् | | |
| वक्तव्यः | 8.1.31 नह प्रत्यारम्भे | | |
| 8.1.13 अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोरन्यतरस्याम् | 8.1.32 सत्यं प्रश्ने | | |
| 8.1.14 यथास्वे यथायथम् | 8.1.33 अङ्गाप्रातिलोम्ये अप्रातिलोम्ये 64 | | |
| 8.1.15 द्वन्द्वं रहस्य-मर्यादावचन-व्युत्क्रमण- | 8.1.34 हि च हि 35 | | |
| यज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु | 8.1.35 छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् | | |
| (पदाधिकारः) | 8.1.36 यावद्-यथाभ्याम् 38 | | |
| 8.1.16पदस्य8.3.54 | 8.1.37 पूजायां नानन्तरम् 38 | | |
| 8.1.17 पदात् 68 | 8.1.38 उपसर्गव्यपेतं च | | |

| 8.1.39 तु-पश्य-पश्यताहैः पूजायाम् | 8.1.57 चन-चिदिव-गोत्रादि-तद्धिताम्रेडिते- | |
|--|---|--|
| पूजायाम् ४० | ष्यगतेः अगतेः 58 | |
| 8.1.40 अहो च अहो 41 | 8.1.58 चादिषु च | |
| 8.1.41 शेषे विभाषा विभाषा 42 | 8.1.59 च-वा-योगे प्रथमा प्रथमा 65 | |
| 8.1.42 पुरा च परीप्सायाम् | 8.1.60 हेति क्षियायाम् क्षियायाम् 61 | |
| 8.1.43 नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् | 8.1.61 अहेति विनियोगे च | |
| 8.1.44 किं कियाप्रश्लेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् 45 | 8.1.62 चाहलोप एवेत्यवधारणम् | |
| 8.1.45 लोपे विभाषा | 8.1.63 चादिलोपे विभाषा विभाषा 65 | |
| 8.1.46 ए हि-मन्ये प्रहासे ऌट् | 8.1.64 वै-वावेति च च्छन्दिस छन्दिस 65 | |
| 8.1.47 जात्वपूर्वम् अपूर्वम् ४९ | 8.1.65 एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् | |
| 8.1.48 किंवृत्तं च चिदुत्तरम् | 8.1.66 यदुवृत्तान्नित्यम् | |
| 8.1.49 आहो उताहो चानन्तरम् | 8.1.67 पूजनात पूजितमनुदात्तं काष्टादिभ्यः | |
| आहो, उताहो 50 | पूजनात् पूजितम् 68 | |
| 8.1.50 शेषे विभाषा | 8.1.68 सगतिरपि तिङ् 69 | |
| 8.1.51 गत्पर्थलोटा लृण् न चेत् कारकं | 8.1.69 कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ | |
| सर्वान्यत् गत्यर्थलोटा, नन्यत् ५३ | 8.1.70 गतिर्गतौ गतिः 71 | |
| 8.1.52 लोट् च लोट् 54 | 8.1.71 तिङि चोदात्तवति | |
| 8.1.53 विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् 54 | 8.1.72 आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् 74 | |
| 8.1.54 हन्त च | 8.1.73 नामन्त्रिते समानाधिकरणे | |
| 8.1.55 आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके | सामान्यवचनम् आमन्त्रिरणे 74 | |
| 8.1.56 यद्धि-तु-परं छन्दिस | 8.1.74 विभाषितं विशेषवचने | |
| | | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठेऽष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

॥ इति सपादसप्ताध्यायी ॥

॥ अथ त्रिपादी ॥

अथाष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः

| 8.2.1 पूर्वत्रासिद्धम् 8.4.68 | 8.2.20 म्रो यङि मः 21 | |
|--|--|--|
| 8.2.2 नलोपः सुप्-स्वर-संज्ञा-तुग्विधिषु कृति | 8.2.21 अचि विभाषा विभाषा 22 | |
| 8.2.3 नमुने | 8.2.22 परेश्च घाङ्कयोः | |
| (वा॰) निष्ठादेशः षत्व-स्वर-प्रत्ययविधीड्- | 8.2.23 संयोगान्तस्य लोपः | |
| विधिषु सिद्धो वक्तव्यः | संयोगान्तस्य २४; लोपः २९ | |
| (वा॰) सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वाच्यः | (वा॰) यणः प्रतिषेधो वाच्यः | |
| 8.2.4 उदात्त-स्वरितयोर्यणः स्वरितो- | 8.2.24 रात् सस्य 28 | |
| ऽनुदात्तस्य | 8.2.25 धि च | |
| 8.2.5 एकादेश उदात्तेनोदात्तः एकात्तेन 6 | 8.2.26 झलो झिल | |
| 8.2.6 स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ | 8.2.27 हस्वादङ्गात् | |
| 8.2.7 नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य 8 | 8.2.28 इट ईटि | |
| 8.2.8 न ङि-सम्बुद्योः | 8.2.29 स्कोः संयोगाद्योरन्ते च अन्ते च 38 | |
| (वा॰) वा नपुंसकानाम् | 8.2.30 चोः कुः | |
| (वा॰) ङावुत्तरपदे प्रतिषेधो वक्तव्यः | 8.2.31 हो ढः हः 35 | |
| 8.2.9 मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः | 8.2.32 दादेर्घातोर्घः धातोः 38; घः 33 | |
| मतोः 16; वः 15 | 8.2.33 वा दुह-मुह-ष्णुह-ष्णिहाम् | |
| 8.2.10 झयः | 8.2.34 नहों धः | |
| 8.2.11 संज्ञायाम् 13 | 8.2.35 आहस्थः | |
| 8.2.12 आसन्दीवद्षीवचकीवत्-कक्षीवद्रुम- | 8.2.36 व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज- | |
| ण्वच्-चर्मण्वती | च्छ-शां षः | |
| 8.2.13 उदन्वानुदधौ च | (वा॰) परौ व्रजेः षः पदान्ते | |
| 8.2.14 राजन्वान् सौराज्ये | 8.2.37 एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः | |
| 8.2.15 छन्दसीरः छन्दसि 17 | बशोस्घ्वोः 38 | |
| 8.2.16 अनो नुट् | 8.2.38 दधस्त-थोश्च | |
| 8.2.17 नाद् घस्य | 8.2.39 झलां जशोऽन्ते | |
| 8.2.18 कृपो रो लः रो लः 22 | 8.2.40 झषस्त-थोर्घोऽधः | |
| 8.2.19 उपसर्गस्यायतौ | 8.2.41 ष-ढोः कः सि | |

| (निष्ठादेश-प्रकरणम्) | 8.2.67 अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च | | |
|---|---|--|--|
| 8.2.42 र-दाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः | 8.2.68 अहन् 69 | | |
| निष्टातो नः 61 | (वा०) रूप-रात्रि-रथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम् | | |
| 8.2.43 संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः | 8.2.69 रोऽसुपि रः 71 | | |
| 8.2.44 ल्वादिभ्यः | 8.2.70 अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि | | |
| 8.2.45 ओदितश्च | ७.८.७० जन्नरूपरपारत्युनपया छन्दास उभयथा छन्दसि ७१ | | |
| 8.2.46 क्षियो दीर्घात् | 8.2.71 भुवश्च महाव्याहृतेः | | |
| 8.2.47 इयोऽस्पर्शे | 8.2.72 वसु-स्रंसु-ध्वंस्वन<u>ख</u>हां दः दः 75 | | |
| 8.2.48 अञ्चोऽनपादाने | 8.2.73 तिप्य नस्तेः | | |
| 8.2.49 दिवोऽविजिगीषायाम् | 8.2.74 सिपि धातो रुवी | | |
| 8.2.50 निर्वाणोऽवाते | सिपि, रुर्वा 75; धातोः 79 | | |
| 8.2.51 शुषः कः | 8.2.75 दश्च | | |
| 8.2.52 पचो वः | 8.2.76 वींरुपधाया दीर्घ इकः 79 | | |
| 8.2.53 क्षायो मः मः 54 | 8.2.77 हिंत च हिंत 78 | | |
| 8.2.54 प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् | 8.2.78 उपधायां च | | |
| ৪.2.55 अनुपसर्गात् फुल्ल-क्षीब-कृशोल्लाघाः | 8.2.79 न भ-कुर्छुराम् | | |
| 8.2.56 नुद-विदोन्द-त्रा-घ्रा-हीभ्योऽन्यतर- | 8.2.80 अदसोऽसेर्दादु दो मः | | |
| स्याम् | अदसः, असेः, दात, दः, मः 81 | | |
| 8.2.57 न ध्या-ख्या-पृ-मूर्च्छि-मदाम् न 61 | 8.2.81 एत ईद् बहुवचने 82 | | |
| 8.2.58 वित्तो भोग-प्रत्यययोः | (प्रुत-प्रकरणम्) | | |
| 8.2.59 भित्तं शकलम् | 8.2.82 वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः | | |
| 8.2.60 ऋणमाधमण्यें | वाक्यस्रुतः 108; उदात्तः 99 | | |
| 8.2.61 नसत्त-निषत्तानुत्त-प्रतूर्त-सूर्त-गूर्तानि | 8.2.83 प्रत्यभिवादेऽश्रूदे | | |
| छन्दसि | 8.2.84 दूराद्भृते च दूराद्भृते 86 | | |
| (कादि-प्रकरणम्) | 8.2.85 है-हेप्रयोगे हैं-हयोः | | |
| 8.2.62 विवन्प्रत्ययस्य कुः कुः 63 | 8.2.86 गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् | | |
| 8.2.63 नशेर्वा | 8.2.87 ओमभ्यादाने | | |
| 8.2.64 मो नो धातोः 65 | 8.2.88 ये यज्ञकर्मणि यज्ञकर्मणि 92 | | |
| 8.2.65 म्वोश्च | 8.2.89 प्रणवष्टेः टे: 90 | | |
| 8.2.66 स-सजुषो रुः रु: 71 | 8.2.90 याज्यान्तः | | |

8.3.12 कानाम्रेडिते

| 0.2.71 अशब्याया | ·C | |
|--|---|--|
| 8.2.91 ब्रूहि-प्रेष्य-श्रौषड्-वौषडावहानामादेः आदेः 92 | 8.2.101 चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने 8.2.102 उपरि-स्विदासीदिति च | |
| 8.2.92 अग्नीत्प्रेषणे परस्य च | 8.2.102 उपार-ास्वदासाादात च 8.2.103 स्वरितमाम्रेडिते-ऽसूया-सम्मति-कोप- | |
| 8.2.93 विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः विभाषा 94 | • | |
| 8.2.94 निगृह्यानुयोगे च | कुत्सनेषु स्वरितम् 105 | |
| 8.2.95 आम्रेडितं भर्त्सने भर्त्सने 96 | 8.2.104 क्षियाशीः-प्रैषेषु तिङाकाङ्क्षायाम् | |
| | 8.2.105 अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः | |
| 8.2.96 अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् | 8.2.106 स्रुतावैच इदुतौ | |
| 8.2.97 विचार्यमाणानाम् 98 | 8.2.107 एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्भूते पूर्वस्यार्धस्या- | |
| 8.2.98 पूर्व तु भाषायाम् | दुत्तरस्येदुतौ | |
| 8.2.99 प्रतिश्रवणे च | 8.2.108 तयोर्घ्वावचि संहितायाम् | |
| 8.2.100 अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः | संहितायाम् 8.4.68 | |
| अनुदात्तम् 102 | | |
| ॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठेऽष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ | | |
| | | |
| अथाष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः | | |
| (रूँ-प्रकरणम्) | 8.3.13 ढो ढे लोपः लोपः 14 | |
| 8.3.1 मतु-वसो रूँ सम्बुद्धौ छन्द्सि रूँ 12 | 8.3.14 रो रि रः 15 | |
| 8.3.2 अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा | 8.3.15 खरवसानयोर्विसर्जनीयः वियः 16 | |
| > | 0.3.13 (4(4(11)4)14(14)14) 144. 10 | |
| 8.3.3 आतोऽटि नित्यम् | 8.3.16 रोः सुपि | |
| 8.3.3 आताऽाट ानत्यम् 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः | 8.3.16 रोः सुपि | |
| · | | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि | 8.3.16 रोः सुपि | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः8.3.5 समः सुटि(वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः | 8.3.16 रोः सुपि | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि (वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः 8.3.6 पुमः खय्यम्परे अम्परे 8 | 8.3.16 रो: सुपि रो: 17 8.3.17 भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य यो ऽशि भोस्य 22; अशि 20 8.3.18 व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि (वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः 8.3.6 पुमः खय्यम्परे अम्परे 8 8.3.7 नरछव्यप्रशान नः 12; छवि 8 | 8.3.16 रोः सुपि रोः 17 8.3.17 भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽिश भोस्य 22; अशि 20 8.3.18 व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य व्योः 22 | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि (वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः 8.3.6 पुमः खय्यम्परे अम्परे 8 8.3.7 नश्ख्यप्रशान नः 12; छवि 8 8.3.8 उभयथर्धु उभयथा 11; ऋक्षु 9 | 8.3.16 रो: सुपि रो: 17 8.3.17 भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽिश भोस्य 22; अशि 20 8.3.18 व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य व्यो: 22 (सन्यि-प्रकरणम्) | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि (वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः 8.3.6 पुमः खय्यम्परे अम्परे 8 8.3.7 नश्छव्यप्रशान नः 12; छवि 8 8.3.8 उभयथा 11; ऋक्षु 9 8.3.9 दीर्घादिट समानपादे | 8.3.16 रो: सुपि रो: 17 8.3.17 भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽिश भो.स्य 22; अशि 20 8.3.18 व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य व्योः 22 (सन्धि-प्रकरणम्) 8.3.19 लोपः शाकल्यस्य लोपः 22 | |
| 8.3.4 अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः 8.3.5 समः सुटि (वा॰) संपुंकानां सो वक्तव्यः 8.3.6 पुमः खय्यम्परे अम्परे 8 8.3.7 नश्ख्यप्रशान नः 12; छवि 8 8.3.8 उभयथर्धु उभयथा 11; ऋक्षु 9 | 8.3.16 रो: सुपि रो: 17 8.3.17 भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽिरा भोस्य 22; अशि 20 8.3.18 व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य व्योः 22 (सन्धि-प्रकरणम्) 8.3.19 लोपः शाकल्यस्य लोपः 22 8.3.20 ओतो गार्ग्यस्य | |

| 8.3.23 मोऽनुस्वारः मः 26; अनुस्वारः 24 | 8.3.49 छन्दिस वाऽप्राम्रेडितयोः छन्दिस ५४ | |
|--|--|--|
| 8.3.24 नश्चापदान्तस्य झिल | 8.3.50 कः-करत्-करति-कृधि-कृतेष्वनदितेः | |
| 8.3.25 मो राजि समः क्वौ मः 27 | 8.3.51 पञ्चम्याः परावध्यर्थे पञ्चम्याः 52 | |
| 8.3.26 हे मपरे वा हे 27; वा 31 | 8.3.52 पातौ च बहुलम् | |
| (वा॰) यवलपरे यवला वा | 8.3.53 षष्ट्याः पति-पुत्र-पृष्ठ-पार-पद-पयस्- | |
| 8.3.27 नपरे नः | पोषेषु 54 | |
| 8.3.28 ङ्-णोः कुक्-टुक् शरि | 8.3.54 इंडाया वा | |
| 8.3.29 डः सि धुट् सि धुट् 30 | (मूर्घन्यादेश-प्रकरणम्) | |
| 8.3.30 ન 왕 | 8.3.55 अपदान्तस्य मूर्धन्यः | |
| 8.3.31 शि तुक् | 8.3.56 सहेः साडः सः सः ११९ | |
| 8.3.32 ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् | 8.3.57 इण्-कोः | |
| अचि 33 | 8.3.58 नुम्-विसर्जनीय-शर्व्यवायेऽपि 119 | |
| 8.3.33 मय उञो वो वा | 8.3.59 आदेश-प्रत्यययोः | |
| 8.3.34 विसर्जनीयस्य सः विसर्जनीयस्य 54 | 8.3.60 शासि-वसि-घसीनां च | |
| 8.3.35 शर्परे विसर्जनीयः विसर्जनीयः 36 | 8.3.61 स्तौति-ण्योरेव षण्यभ्यासात् | |
| 8.3.36 वा शरि | णेः, षणि, अभ्यासात् ६२ | |
| (वा॰) खर्परे शरि वा विसर्गलोपः | 8.3.62 सः स्विदि-स्विद-सहीनां च | |
| 8.3.37 कुप्वोः ४क ४पौ च कुप्वोः 49 | 8.3.63 प्राक्सितादड्व्यवायेऽपि | |
| 8.3.38 सोऽपदादौ सः 54; अपदादौ 39 | प्राक्सितात् 64; अड्व्यवायेऽपि | |
| 8.3.39 इणः षः षः 48 | 8.3.64 स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य 70 | |
| 8.3.40 नमस्-पुरसोर्गत्योः | 8.3.65 उपसर्गात् सुनोति-सुवति-स्यति- | |
| 8.3.41 इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य | स्तौति-स्तोभति-स्था-सेनय-सेध-सिन | |
| 8.3.42 तिरसोऽन्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् ४४ | सञ्ज-स्वञ्जाम् उपसर्गात् ७७ | |
| 8.3.43 द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे | 8.3.66 सदिरप्रतेः | |
| 8.3.44 इसुसोः सामर्थ्य इसुसोः 45 | 8.3.67 स्तन्भोः 68 | |
| 8.3.45 नित्यं समासे ऽ नुत्तरपदस्थस्य 47 | 8.3.68 अवाचालम्बनाविदूर्ययोः अवात् ६९ | |
| 8.3.46 अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा- | 8.3.69 वेश्व स्वनो भोजने | |
| कर्णीष्वनव्ययस्य | 8.3.70 परि-नि-विभ्यः सेव-सित-सय-सिवु- | |
| 8.3.47 अधः-शिरसी पदे | सह-सुट्-स्तु-स्वञ्जाम् परिनिविभ्यः ७१ | |
| 8.3.48 कस्कादिष च | 8.3.71 सिवादीनां वाऽड्व्यवायेऽपि वा <i>76</i> | |

| 8.3.72 अनु-वि-पर्यभि-निभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु | 8.3.97 अम्बाम्ब-गो-भूमि-सव्याप-द्वि-त्रि-कु- | |
|---|---|--|
| 8.3.73 वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् स्कन्देः 74 | शेकु-शङ्क्वङ्गु-मञ्जि-पुञ्जि-परमे- | |
| 8.3.74 परेश्व | बर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः | |
| 8.3.75 परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु | 8.3.98 सुषामादिषु च | |
| 8.3.76 स्फुरति-स्फुलत्योर्निर्नि-विभ्यः | 8.3.99 एति संज्ञायामगात् 10 | |
| 8.3.77 वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् | 8.3.100 नक्षत्राद्वा | |
| 8.3.78 इणः षीध्वं-लुङ्-लिटां धोऽङ्गात् | 8.3.101 ह्रस्वात् तादौ तद्धिते तादौ 104 | |
| इधः 79 | 8.3.102 निसस्तपतावनासेवने | |
| 8.3.79 विभाषेटः | 8.3.103 युष्मत्-तत्-ततक्षुःष्वन्तःपादम् | |
| 8.3.80 समासेऽङ्गुलेः सङ्गः समासे 85 | युष्मत्तत्ततक्षुःषु 104 | |
| 8.3.81 भीरोः स्थानम् | 8.3.104 यजुष्येकेषाम् एकेषाम् 106 | |
| 8.3.82 अग्नेः स्तुत्-स्तोम-सोमाः | 8.3.105 स्तुत-स्तोमयो <mark>३छन्दसि</mark> छन्दिस 109 | |
| 8.3.83 ज्योतिरायुषः स्तोमः | 8.3.106 पूर्वपदात् 107 | |
| 8.3.84 मातृ-पितृभ्यां स्वसा स्वसा 85 | 8.3.107 सुञः | |
| 8.3.85 मातुः-पितुर्भ्यामन्यतरस्याम् | 8.3.108 सनोतेरनः | |
| अन्यतरस्याम् ८६ | 3.200 | |
| 8.3.86 अभि-निसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम् | 8.3.110 न रपर-सृपि-सृजि-स्पृत्रि-स्पृहि- | |
| 8.3.87 उपसर्ग-प्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः | सवनादीनाम् न 119 | |
| 8.3.88 सु-वि-निर्दुर्भ्यः सुपि-सूति-समाः | 8.3.111 सात्-पदाद्योः | |
| 8.3.89 नि-नदीभ्यां स्नातेः कौशले | 8.3.112 सिचो यङि | |
| 8.3.90 सूत्रं प्रतिष्णातम् | 8.3.113 सेघतेर्गतौ | |
| 8.3.91 कपिष्ठलो गोत्रे | 8.3.114 प्रतिस्तब्ध-निस्तब्धौ च | |
| 8.3.92 प्रष्ठोऽग्रगामिनि | 8.3.115 सोढः | |
| 8.3.93 वृक्षासनयोर्विष्टरः विष्टरः 94 | 8.3.116 स्तम्भु-सिवु-सहां चङि | |
| 8.3.94 छन्दोनाम्नि च | 8.3.117 सुनोतेः स्य-सनोः | |
| 8.3.95 गवि-युधिभ्यां स्थिरः | 8.3.118 सदेः परस्य लिटि | |
| 8.3.96 वि-कु-श्रामि-परिभ्यः स्थलम् | 8.3.119 नि-व्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि | |
| | • | |

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठेऽष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

अथाष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः

| 8.4.18 शेषे विभाषाऽक-खादाव | षान्त उपदेशे |
|----------------------------------|---|
| 8.4.19 अनितेः | 21 |
| 8.4.20 अन्तः | |
| 8.4.21 उभौ साभ्यासस्य | |
| 8.4.22 हन्तेरत्पूर्वस्य | 24 |
| 8.4.23 व-मोर्वा | |
| 8.4.24 अ न्तरदेशे | 25 |
| 8.4.25 अ यनं च | |
| 8.4.26 छन्दस्यृदवग्रहात् | छन्दसि २७ |
| 8.4.27 नश्च धातुस्थोरु-षुभ्यः | नः 28 |
| 8.4.28 उपसर्गादनोत्परः | उपसर्गात् ३४ |
| 8.4.29 कृत्यचः | 34 |
| (वा॰) कृतस्थस्य णत्वे निर्विण्णस | योपसङ्ख्यानं |
| कर्तव्यम् | · |
| 8.4.30 णेर्विभाषा | विभाषा 31 |
| 8.4.31 हलश्चेजुपधात् | हलः ३२ |
| 8.4.32 इजादेः सनुमः | |
| 8.4.33 वा निंस-निक्ष-निन्दाम् | |
| 8.4.34 न भा-भू-पू-कमि-गमि-प | यायी-वेपाम् |
| | न 39 |
| 8.4.35 षात् पदान्तात् | |
| 8.4.36 नशेः षान्तस्य | |
| 8.4.37 पदान्तस्य | |
| 8.4.38 पदव्यवायेऽपि | |
| 8.4.39 क्षुभादिषु च | |
| (वा०) आचार्याद्णत्वं च | |
| | |
| | 8.4.19 अनितेः 8.4.20 अन्तः 8.4.21 उभौ साभ्यासस्य 8.4.22 हन्तेरत्पूर्वस्य 8.4.23 व-मोर्वा 8.4.24 अन्तरदेशे 8.4.25 अयनं च 8.4.26 छन्दस्यृदवग्रहात 8.4.27 नश्च धातुस्थोरु-षुभ्यः 8.4.28 उपसर्गादनोत्परः 8.4.29 कृत्यचः (वा॰) कृत्स्थस्य णत्वे निर्विण्णस् कर्तव्यम् 8.4.30 णोर्विभाषा 8.4.31 हलश्चेजुपधात 8.4.32 इजादेः सनुमः 8.4.33 वा निस-निक्ष-निन्दाम् 8.4.34 न भा-भू-पू-किम-गिम-ष् 8.4.35 षात् पदान्तात् 8.4.36 नशेः षान्तस्य 8.4.37 पदान्तस्य 8.4.38 पद्व्यवायेऽपि 8.4.39 क्षुभ्रादिषु च |

(हल्सन्धि-प्रकरणम्) (हल्सन्धि-प्रकरणम्) 8.4.40 स्तोः श्वना श्वः 8.4.53 झलां जश झशि स्तो: 42 झलाम 56: जश 54 8 4 54 अभ्यासे चर्च 8.4.41 **प्टना प्टः** चर् 56 8 4 55 खिर च 8.4.42 न पदान्ताद्दोरनाम ਜ 44 (वा०) अनाम्नवति-नगरीणामिति वाच्यम् 8456 वाऽवसाने 57 8 4 43 तो: षि 8.4.57 अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः तो: 44 8.4.58 अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः 8444 शात अ..चि ५९: परसवर्णः ६०: सवर्णः ६२ 8.4.45 यरोऽननासिकेऽननासिको वा 8.4.59 वा पदान्तस्य यरः, वा 47 8.4.60 तोर्लि (वा॰) प्रत्यये भाषायां नित्यम् (द्वित्व-प्रकरणम्) 8.4.61 उदः स्था-स्तम्भोः पूर्वस्य पूर्वस्य 62 8.4.46 अचो **र-हाभ्यां द्वे अचः** 47: हे 52 8.4.62 **झयो होऽन्यतरस्याम** 8.4.47 अनचि च झयः 63; अन्यतरस्याम 65 8.4.63 शक्छोऽटि (वा०) शरः खयो हे भवत इति वक्तव्यम्। (वा॰) छत्वममीति वाच्यम् (वा॰) अवसाने च यरो द्वे भवत इति वक्तव्यम् 8.4.48 नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य 8.4.64 हलो यमां यमि लोपः हलः, लोपः 65 8.4.65 झरो झरि सवर्णे (वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति 8.4.66 उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः वाच्यम

8 4 51 सर्वत्र जाकल्यस्य

8.4.50 त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य

8.4.49 शरोऽचि

8.4.52 दीर्घादाचार्याणाम्

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठेऽष्टमाध्यायस्य चतर्थः पादः ॥

8.4.68 अ अ

अनुदात्तस्य स्वरितः 67

8.4.67 नोदात्त-स्वरितोदयमगार्ग्य-काश्यप-

गालवानाम

॥ इति त्रिपादी ॥

॥ इति अष्टाध्यायीसूत्रपाठे अष्टमोऽध्यायः॥

॥ इति पाणिनीयाष्टाध्यायीसूत्रपाठः॥

| <i>-</i> अ - | अङ्गुल्यादिभ्यष्टक् 5.3.108 | अद्गुप्वाङ्गुम्व्य० 8.4.2 | अत् स्मृदृत्वर ० 7.4.95 |
|---------------------------|----------------------------------|---------------------------|--------------------------------|
| अ अ 8.4.68 | अच उपसर्गात्तः 7.4.47 | अडभ्यासव्यवा॰ 6.1.136 | अत्यन्तसंयोगे च 2.1.29 |
| अच 4.3.31 | अचः 6.4.138 | अङ्गार्ग्यगालवयोः 7.3.99 | अत्र लोपोऽभ्या॰ 7.4.58 |
| अ प्रत्ययात् 3.3.102 | अचः कर्तृयिक 6.1.195 | अणञौ च 4.3.33 | अत्रानुनासिकः ० 8.3.2 |
| अ साम्प्रतिके 4.3.9 | अचः कर्मकर्तरि 3.1.62 | अणावकर्मकाच् • 1.3.88 | अत्रिभृगुकुत्सव ० 2.4.65 |
| अंशं हारी 5.2.69 | अचः परस्मिन् ० 1.1.57 | अणि नियुक्ते 6.2.75 | अत्वसन्तस्य ० 6.4.14 |
| अकः सवर्णे ० 6.1.101 | अचतुरविचतुर० 5.4.77 | अणिञोरनार्षयो ० 4.1.78 | अदः सर्वेषाम् 7.3.100 |
| अकथितं च 1.4.51 | अचश्च 1.2.28 | अणिनुणः 5.4.15 | अदभ्यस्तात् 7.1.4 |
| अकर्तरि च ० 3.3.19 | अचस्तास्वत् ० 7.2.61 | अणुदित् ० 1.1.69 | अदर्शनं लोपः 1.1.60 |
| अकर्तर्यृणे पञ्चमी 2.3.24 | अचि र ऋतः 7.2.100 | अणृगयनादिभ्यः ४.३.७३ | अ दस औ सु ० 7.2.107 |
| अकर्मकाच 1.3.26 | अचि विभाषा 8.2.21 | अणो द्यचः 4.1.156 | अदसो मात् 1.1.12 |
| अकर्मकाच 1.3.35 | अचि शीर्षः 6.1.62 | अणोऽप्रगृह्यस्य ० ८.४.५७ | अदसोऽसेर्दादु ० 8.2.80 |
| अकर्मकाच 1.3.45 | अचि श्रुधातुभ्रुवां० 6.4.77 | अण् कर्मणि च 3.3.12 | अदिकर्मणि क्तः ० 3.4.71 |
| अकर्मधारये ० 6.2.130 | अचित्तहस्तिधे ० 4.2.47 | अण् कुटिलिकायाः 4.4.18 | अद्प्रिभृतिभ्यः ० 2.4.72 |
| अकृच्छ्रे ० 8.1.13 | अचित्ताददेश ० 4.3.96 | अण्च 5.2.103 | अदूरभवश्च 4.2.70 |
| अकृत्सार्वधातु ० 7.4.25 | अचो ञ्णिति 7.2.115 | अण् महिष्यादिभ्यः 4.4.48 | अदेङ् गुणः 1.1.2 |
| अके जीविकाऽर्थे 6.2.73 | अचो यत् 3.1.97 | अत आदेः 7.4.70 | अदो जग्धिर्ल् ० 2.4.36 |
| अकेनोर्भविष्य ० 2.3.70 | अचो रहाभ्यां द्वे 8.4.46 | अत इञ् 4.1.95 | अदोऽनन्ने 3.2.68 |
| अक्षरालाका ॰ 2.1.10 | अचोऽन्त्यादि टि 1.1.64 | अत इनिठनो 5.2.115 | अदोऽनुपदेशे 1.4.70 |
| अक्षेषु ग्लहः 3.3.70 | अच् प्रत्यन्वव॰ 5.4.75 | अत उत् सार्व ० 6.4.110 | अदुड् डतरादि ० 7.1.25 |
| अक्षोऽन्यतरस्याम् 3.1.75 | अच्कावशक्तौ 6.2.157 | अत उपधायाः 7.2.116 | अद्भिः संस्कृतम् 4.4.134 |
| अक्ष्गोऽदर्शनात् 5.4.76 | अच घेः 7.3.119 | अत एकहल् ० 6.4.120 | अद्यश्वीनाऽवष्टब्ये 5.2.13 |
| अगारान्ताहुन् 4.4.70 | अच्छ गत्यर्थवदेषु 1.4.69 | अतः कृकमिकंस० 8.3.46 | अधःशिरसी पदे 8.3.47 |
| अगारैकदेशे ॰ 3.3.79 | अजर्यं संगतम् 3.1.105 | अतश्च 4.1.177 | अधिकम् 5.2.73 |
| अग्नीत्प्रेषणे ० 8.2.92 | अजादी गुण ० 5.3.58 | अतिग्रहाव्यथ ० 5.4.46 | अधिकरणवा ० 2.3.68 |
| अग्नेः स्तुत्स्तो० 8.3.82 | अजादेर्द्वितीयस्य 6.1.2 | अतिथेर्ज्यः 5.4.26 | अधिकरणवा ० 2.2.13 |
| अम्रेर्हक् 4.2.33 | अजाद्यतष्टाप् 4.1.4 | अतिरतिक्रमणे च 1.4.95 | अधिकरणविचा ॰ 5.3.43 |
| अग्नौ चेः 3.2.91 | अजाद्यदन्तम् 2.2.33 | अतिशायने ० 5.3.55 | अधिकरणे बन्धः 3.4.41 |
| अग्नौ परिचाय्य० 3.1.131 | अजाविभ्यां थ्यन् 5.1.8 | अतेः शुनः 5.4.96 | अधिकरणे शेतेः 3.2.15 |
| अग्राख्यायामुरसः 5.4.93 | अजिनान्तस्योत्तर० 5.3.82 | अतेरकृत्पदे 6.2.191 | अधिकरणैता ० 2.4.15 |
| अग्राद्यत् ४.4.116 | अजिवृज्योश्च 7.3.60 | अतो गुणे 6.1.97 | अधिकृत्य कृते ० 4.3.87 |
| अग्रान्तशुद्ध० 5.4.145 | अजेर्व्यघञपोः 2.4.56 | अतो दीर्घों यञि 7.3.101 | अधिपरी अन ० 1.4.93 |
| अङितश्च 6.4.103 | अज्झनगमां सनि 6.4.16 | अतो भिस ऐस् 7.1.9 | अधिरीश्वरे 1.4.97 |
| अङ्ग इत्यादौ च 6.1.119 | अज्ञा ते 5.3.73 | अतो येयः 7.2.80 | अधिशीङ्स्था ० 1.4.46 |
| अङ्गयुक्तं तिङ्० 8.2.96 | अञ्चेः पूजायाम् 7.2.53 | अतो रोरप्नुताद् ० 6.1.113 | अधीगर्थदयेशां • 2.3.52 |
| अङ्गस्य 6.4.1 | अश्रेर्छक् 5.3.30 | अतो लोपः 6.4.48 | अधीष्टे च 3.3.166 |
| अङ्गानि मैरेये 6.2.70 | अञ्चेश्छन्दस्य ० 6.1.170 | अतो ल्रान्तस्य 7.2.2 | अधुना 5.3.17 |
| अङ्गाप्रातिलोम्ये 8.1.33 | अञ्चोऽनपादाने 8.2.48 | अतो हलादेर्लघोः 7.2.7 | अधेः प्रसहने 1.3.33 |
| अङ्गुलेर्दारुणि 5.4.114 | अञ्जेः सिचि 7.2.71 | अतो हेः 6.4.105 | अधेरुपरिस्थम् 6.2.188 |
| 3 . | अञ्नासिकायाः० 5.4.118 | अतोऽम् 7.1.24 | अध्ययनतो ० 2.4.5 |
| | | | |

| अध्यर्धपूर्वद्विगो ० 5.1.28 | अनुदात्तादेरञ् ४.2.44 | अन्तःपूर्वपदाटुञ् ४.3.60 | अपरस्पराः ० 6.1.144 |
|-----------------------------|-----------------------------|----------------------------|----------------------------------|
| अध्यायन्यायो ० 3.3.122 | अनुदात्तादेश्च 4.3.140 | अन्तरं बहिर्योगो ० 1.1.36 | अपरिमाणबि ॰ 4.1.22 |
| अध्यायानुवाक ० 5.2.60 | अनुदात्ते च 6.1.190 | अन्तरदेशे 8.4.24 | अपरिह्नताश्च 7.2.32 |
| अध्यायिन्यदेश ० 4.4.71 | अनुदात्ते च ० 6.1.120 | अन्तरपरिग्रहे 1.4.65 | अपरोक्षे च 3.2.119 |
| अध्यायेष्वेवर्षेः ४.३.६९ | अनुदात्तेतश्च ॰ 3.2.149 | अन्तराऽन्तरेण ० 2.3.4 | अपवर्गे तृतीया 2.3.6 |
| अध्वनो यत्खौ 5.2.16 | अनुदात्तोपदेश ० 6.4.37 | अन्तर्घनो देशे 3.3.78 | अपस्करो रथाङ्गम् 6.1.149 |
| अध्वर्युकषाय ० 6.2.10 | अनुनासिकस्य ० 6.4.15 | अन्तर्धौ येनादर्श ० 1.4.28 | अपस्पृधेथामा ० 6.1.36 |
| अध्वर्युक्रतुरन ० 2.4.4 | अनुनासिकात् ० 8.3.4 | अन्तर्बहिभ्याँ ० 5.4.117 | अपह्नवे ज्ञः 1.3.44 |
| अन उपधालो ० 4.1.28 | अनुपदसर्वा ० 5.2.9 | अन्तर्वत्पति ० 4.1.32 | अपाच 6.2.186 |
| अनङ् सौ 7.1.93 | अनुपद्यन्वेष्टा 5.2.90 | अन्तश्च 6.2.180 | अपाचतुष्पा ० 6.1.142 |
| अनचि च 8.4.47 | अनुपराभ्यां कृञः 1.3.79 | अन्तश्च तवै ० 6.1.200 | अपादाने ० 5.4.45 |
| अनत्यन्तगतौ क्तात् 5.4.4 | अनुपसर्गाज्ज्ञः 1.3.76 | अन्तात्यन्ता ० 3.2.48 | अपादाने पञ्चमी 2.3.28 |
| अनत्याधान ॰ 1.4.75 | अनुपसर्गात् ० 8.2.55 | अन्तादिवच 6.1.85 | अपादाने ० 3.4.52 |
| अनद्यतने र्हिल् ० 5.3.21 | अनुपसर्गाद्वा 1.3.43 | अन्तिकबाढ ० 5.3.63 | अपाद्धदः 1.3.73 |
| अनद्यतने लङ् 3.2.111 | अ नुपसर्गा ० 3.1.138 | अन्तोऽवत्याः 6.1.220 | अपिः पदार्थस ० 1.4.96 |
| अनद्यतने लुट् 3.3.15 | अनुपसर्जनात् 4.1.14 | अन्तोदत्तादुत्तर ० 6.1.169 | अपूर्वपदादन्य ० 4.1.140 |
| अनन्तावसथे ० 5.4.23 | अनुप्रतिगृणश्च 1.4.41 | अन्त्यात् पूर्वं ० 6.2.83 | अपृक्त एकाल् ० 1.2.41 |
| अनन्त्यस्यापि ० 8.2.105 | अनुप्रवचनादि ० 5.1.111 | अन्नाण्णः 4.4.85 | अपे क्लेशतमसोः 3.2.50 |
| अनभिहिते 2.3.1 | अनुब्राह्मणादिनिः 4.2.62 | अन्नेन व्यञ्जनम् 2.1.34 | अपे च लषः 3.2.144 |
| अनवक्रृप्यमर्ष ० 3.3.145 | अनुर्यत्समया 2.1.15 | अन्यतो ङीष् 4.1.40 | अपेतापोढमुक्त ० 2.1.38 |
| अनश्च 5.4.108 | अनुर्रुक्षणे 1.4.84 | अन्यथैवंकथम् ० 3.4.27 | अपो भि 7.4.48 |
| अनसन्तान्नपुं ० 5.4.103 | अनुवादे चरणानाम् 2.4.3 | अन्यपदार्थे च ० 2.1.21 | अपोनम्रपा ० 4.2.27 |
| अनाप्यकः 7.2.112 | अनुविपर्यभि ॰ 8.3.72 | अन्यारादितरर्त्ते ० 2.3.29 | अप् पूरणी ० 5.4.116 |
| अनिगन्तोऽञ्चतौ ० 6.2.52 | अनुश्रातिकादीनां ० 7.3.20 | अन्येभ्योऽपि ० 3.2.178 | अप्तृन्तृच्स्वसृन ० 6.4.11 |
| अनितेः 8.4.19 | अनुस्वारस्य ० 8.4.58 | अन्येभ्योऽपि • 3.3.130 | अप्रुतवदुपस्थिते 6.1.129 |
| अनिदितां हल ० 6.4.24 | अनृष्यानन्तर्ये ० 4.1.104 | अन्येभ्योऽपि ० 3.2.75 | अभाषितपुंस्काच 7.3.48 |
| अनुकम्पायाम् 5.3.76 | अनेकमन्यपदार्थे 2.2.24 | अन्येषामपि ॰ 6.3.137 | अभिजनश्च 4.3.90 |
| अनुकरणं चा ० 1.4.62 | अनेकाल्शित्सर्वस्य 1.1.55 | अन्येष्वपि दृश्यते ३.२.१०१ | ' अभिजिद्दिद्भृ ० 5.3.118 |
| अनुकाभिका ० 5.2.74 | अनो नुट् 8.2.16 | अन्वच्यानुलोम्ये 3.4.64 | अभिज्ञावचने लृट् 3.2.112 |
| अनुगवमायामे 5.4.83 | अनो बहुव्रीहेः 4.1.12 | अन्ववतप्ताद्रह्सः 5.4.81 | अभिनिविशश्च 1.4.47 |
| अनुगादिनष्ठक 5.4.13 | अनो भावक ॰ 6.2.150 | अपगुरो णमुलि 6.1.53 | अभिनिष्कामति ० 4.3.86 |
| अनुग्वलंगामी 5.2.15 | अनोऽरुमाय ० 5.4.94 | अपघनोऽङ्गम् 3.3.81 | अभिनिसः ० 8.3.86 |
| अनुदत्तौ सुप्पितौ 3.1.4 | अनोरकर्मकात् 1.3.49 | अपचितश्च 7.2.30 | अभिप्रत्यतिभ्यः ॰ 1.3.80 |
| अनुदात्तं च 8.1.3 | अनोरप्रधानक ॰ 6.2.189 | अपत्यं पौत्र ० 4.1.162 | अभिरभागे 1.4.91 |
| अनुदात्तं पदम् ० 6.1.158 | अनौ कर्मणि 3.2.100 | अपथं नपुंसकम् 2.4.30 | अभिविधौ भाव ० 3.3.44 |
| अनुदात्तं प्रश्ना ० 8.2.100 | अन् 6.4.167 | अपदातौ ० 4.2.135 | अभिविधौ ॰ 5.4.53 |
| अनुदात्तं सर्वम् ० 8.1.18 | अन्तः 6.2.92 | अपदान्तस्य ० 8.3.55 | अभूततद्भावे ० 5.4.50 |
| अनुदात्तङित ० 1.3.12 | अन्तः 6.2.143 | अपपरिबहिरञ्च ० 2.1.12 | अभेर्मुखम् 6.2.185 |
| अनुदात्तस्य च ० 6.1.161 | अन्तः 6.2.179 | अपपरी वर्जने 1.4.88 | अभेश्चाविदूर्ये 7.2.25 |
| अनुदात्तस्य ० 6.1.59 | अन्तः 8.4.20 | अपमित्यया ० 4.4.21 | अभ्यमित्राच्छ च 5.2.17 |
| | | | |

| 2 |
|-------------|
| |
| $\mathbf{}$ |

| | | <u> </u> | |
|------------------------------------|------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|
| अभ्यस्तस्य च 6.1.33 | अर्मे चावर्णं ० 6.2.90 | अव्यक्तानुकरणा ० 5.4.57 | अस्थिदधिस ० 7.1.75 |
| अभ्यस्तानामादिः 6.1.189 | अर्यः स्वामिवै ० 3.1.103 | अव्ययं विभक्ति ० 2.1.6 | अस्मदो द्वयोश्च 1.2.59 |
| अभ्यासस्यासवर्णे 6.4.78 | अर्वणस्त्रसावनञः 6.4.127 | अव्ययसर्वनाम्ना ० 5.3.71 | अस्मद्युत्तमः 1.4.107 |
| अभ्यासाच 7.3.55 | अर्शआदिभ्योऽच् 5.2.127 | अव्ययात्त्यप् 4.2.104 | अस्मायामेधा ॰ 5.2.121 |
| अभ्यासे चर्च 8.4.54 | अर्हः 3.2.12 | अव्ययादाप्सुपः 2.4.82 | अस्य चौ 7.4.32 |
| अभ्युत्साद्यांप्र ० 3.1.42 | अर्हः प्रशंसायाम् ३.२.१३३ | अव्ययीभावः 2.1.5 | अस्यतितृषोः ० 3.4.57 |
| अमनुष्यकर्तृके च 3.2.53 | अर्हे कृत्यतृचश्च 3.3.169 | अव्ययीभावश्च 1.1.41 | अस्यतिवक्ति ० 3.1.52 |
| अमहन्नवं नगरे ॰ 6.2.89 | अलंकृञ्निरा ॰ 3.2.136 | अव्ययीभावश्च 2.4.18 | अस्यतेस्थुक् 7.4.17 |
| अमावस्यदन्य ० 3.1.122 | अलङ्खल्वोः ० 3.4.18 | अव्ययीभावाच 4.3.59 | अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा 4.1.53 |
| अमावास्याया वा 4.3.30 | अलुगुत्तरपदे 6.3.1 | अव्ययीभावे ० 6.3.81 | अहंशुभमोर्युस् 5.2.140 |
| अमि पूर्वः 6.1.107 | अलोऽन्त्यस्य 1.1.52 | अव्ययीभावे श ० 5.4.107 | अहन् 8.2.68 |
| अमु च च्छन्दिस 5.4.12 | अलोऽन्त्यात् ० 1.1.65 | अव्ययेऽयथाभि • 3.4.59 | अहस्सर्वैकदेश ० 5.4.87 |
| अमूर्धमस्तकात् ० 6.3.12 | अल्पाख्यायाम् 5.4.136 | अव्यादवद्यादव ० 6.1.116 | अहीने द्वितीया 6.2.47 |
| अमैवाव्ययेन 2.2.20 | अल्पाच्तरम् 2.2.34 | अशनायोदन्य ० 7.4.34 | अहेति विनियोगे च 8.1.61 |
| अमो मश् 7.1.40 | अल्पे 5.3.85 | अशब्दे यत्खा ० 4.3.64 | अहो च 8.1.40 |
| अम् सम्बुद्धौ 7.1.99 | अल्लोपोऽनः 6.4.134 | अशाला च 2.4.24 | अह्रष्टखोरेव 6.4.145 |
| अ म्नरूधरवरि ० 8.2.70 | अवकयः 4.4.50 | अश्लोतेश्च 7.4.72 | अह्रोऽदन्तात् 8.4.7 |
| अम्बाऽर्थन ० 7.3.107 | अवक्षेपणे कन् 5.3.95 | अश्वक्षीरवृषल ० 7.1.51 | अह्रोऽह्न एतेभ्यः 5.4.88 |
| अम्बाम्बगोभू ० 8.3.97 | अवङ् स्फोटा ० 6.1.123 | अश्वपत्यादिभ्यश्च 4.1.84 | - आ - |
| अयःशूलदण्डा ० 5.2.76 | अवचक्षे च 3.4.15 | अश्वस्यैकाहगमः 5.2.19 | आ कडारादेका ० 1.4.1 |
| अयङ् यि क्ङिति 7.4.22 | अवद्यपण्य ० 3.1.101 | अश्वाघस्यात् ७.4.3७ | आ च त्वात् 5.1.120 |
| अयनं च 8.4.25 | अवपथासि च 6.1.121 | अश्वादिभ्यः फञ् 4.1.110 | आचहौ 6.4.117 |
| अयस्मयादीनि ० 1.4.20 | अवयवादृतोः 7.3.11 | अश्विमानण् 4.4.126 | आ सर्वनाम्नः 6.3.91 |
| अयामन्ताल्वा ० 6.4.55 | अवयवे च • 4.3.135 | अषडक्षाशितङ्ग ० 5.4.7 | आकर्षात् ष्ठल् 4.4.9 |
| अरण्यान्मनुष्ये 4.2.129 | अवयसि ठंश्च 5.1.84 | अषष्ट्यतृतीया ० 6.3.99 | आकर्षादिभ्यः कन् 5.2.64 |
| अरिष्टगौडपूर्वे च 6.2.100 | अवयाःश्वेतवाः ० 8.2.67 | अप्टन आ विभक्तौ 7.2.84 | आकालिक ० 5.1.114 |
| अरुर्द्विषद्जन्त ० 6.3.67 | अवसमन्धेभ्य • 5.4.79 | अष्टनः संज्ञायाम् 6.3.125 | आकन्दाहुञ्च 4.4.38 |
| अरुर्मनश्रक्षुश्चे ० 5.4.51 | अवाचालम्बना ॰ 8.3.68 | अष्टनो दीर्घात् 6.1.172 | आक्रोशे च 6.2.158 |
| अर्तिपिपर्त्योश्च 7.4.77 | अवात् कुटारच 5.2.30 | अष्टाभ्य औश 7.1.21 | आक्रोशे नञ्य ० 3.3.112 |
| अर्तिऌ्धूस् ० 3.2.184 | अवाद्रः 1.3.51 | असंज्ञायां तिल ॰ 4.3.149 | आक्रोशेऽ ० 3.3.45 |
| अर्त्तिहीब्लीरी ० 7.3.36 | अवारपारात्य ० 5.2.11 | असंयोगाल्लिट् कित् 1.2.5 | आक्वेस्तच्छील ० ३.२.१३४ |
| अर्थवद्धातु ० 1.2.45 | अवृद्धादपि बहु ० 4.2.125 | असमासे • 5.1.20 | आख्यातोपयोगे 1.4.29 |
| अर्थे 6.2.44 | अवृद्धाभ्यो नदी ० 4.1.113 | असिद्धवदत्राभात् 6.4.22 | आगवीनः 5.2.14 |
| अर्थे विभाषा 6.3.100 | अवे ग्रहो ० 3.3.51 | असुरस्य स्वम् 4.4.123 | आगस्त्यकौ ० 2.4.70 |
| अर्देः संनिविभ्यः 7.2.24 | अवे तृस्त्रोर्घञ् 3.3.120 | असूर्यललाट ॰ 3.2.36 | आग्रहायण्य ० 4.2.22 |
| अर्धं नपुंसकम् 2.2.2 | अवे यजः 3.2.72 | अस्तं च 1.4.68 | आङ उद्गमने 1.3.40 |
| अर्धर्चाः पुंसि च 2.4.31 | अवेः कः 5.4.28 | अस्ताति च 5.3.40 | आङि चापः 7.3.105 |
| अर्घाच 5.4.100 | अवोदैधौद्मप्र ० 6.4.29 | अस्तिनास्तिदिष्टं ॰ 4.4.60 | आङि ताच्छील्ये 3.2.11 |
| अर्धात् परिमाण ० 7.3.26 | अवोदोर्नियः 3.3.26 | अस्तिसिचोऽपृक्ते 7.3.96 | आङि युद्धे 3.3.73 |
| अर्घाद्यत् ४.3.4 | अव्यक्तानुकरण ० 6.1.98 | अस्तेर्भ <u>ू</u> ः 2.4.52 | ~ |

आ

| आङो दोऽना ० 1.3.20 | आदरानादरयोः ० 1.4.63 | आम्रेडितं भर्त्सने 8.2.95 | इको गुणवृद्धी 1.1.3 |
|--------------------------------|-----------------------------|-----------------------------------|--|
| आङो ना ० 7.3.120 | आदाचार्याणाम् 7.3.49 | आयनेयीनीयि ० 7.1.2 | इको झल् 1.2.9 |
| आङो यमहनः 1.3.28 | आदिः प्रत्येनसि 6.2.27 | आयादय आर्ध ॰ 3.1.31 | इको यणचि 6.1.77 |
| आङो यि 7.1.65 | आदिः सिचो ० 6.1.187 | आयुक्तकुशला ॰ 2.3.40 | इको ह्रस्वोऽङ्यो ० 6.3.61 |
| आङोऽ नुना ० 6.1.126 | आदितश्च 7.2.16 | आयुधजीविभ्य ० 4.3.91 | इकोऽचि विभक्तौ 7.1.73 |
| आङ् मर्यादा ० 2.1.13 | आदिरन्त्येन ० 1.1.71 | आयुधजीविसं० 5.3.114 | इकोऽसवर्णे ० 6.1.127 |
| आङ् मर्यादावचने 1.4.89 | आदिरुदात्तः 6.2.64 | आयुधाच्छ च 4.4.14 | इगन्तकालक ० 6.2.29 |
| आ জ ্ঞাङोश्च 6.1.74 | आदिर्भिटुडवः 1.3.5 | आरगुदीचाम् 4.1.130 | इगन्ताच ० 5.1.131 |
| आचार्योपसर्ज ० 6.2.104 | आदिर्णमुल्य ० 6.1.194 | आर्द्धधातुकं शेषः 3.4.114 | इगुपधज्ञा ० 3.1.135 |
| आचार्योपसर्ज ० 6.2.36 | आदिश्चिहणा ॰ 6.2.125 | आर्घधातुके 2.4.35 | इग्यणः सम्प्र ० 1.1.45 |
| आच्छीनद्योर्नुम् 7.1.80 | आदगमहनज ० 3.2.171 | आर्घधातुकस्येड् ० 7.2.35 | इङश्च 2.4.48 |
| आज्जसेरसुक् 7.1.50 | आदेः परस्य 1.1.54 | आर्घधातुके 6.4.46 | इङश्च 3.3.21 |
| आज्ञायिनि च 6.3.5 | आदेच उपदेशे ० 6.1.45 | आर्यो ब्राह्मण ॰ 6.2.58 | इ ङ्घार्योः शत्र ० 3.2.130 |
| आटश्च 6.1.90 | आदेशप्रत्यययोः 8.3.59 | आर्हादगोपुच्छ ० 5.1.19 | इच एकाचो ० 6.3.68 |
| आडजादीनाम् 6.4.72 | आद्भुणः 6.1.87 | आलजा ट चौ ॰ 5.2.125 | इच् कर्मव्यतिहारे 5.4.127 |
| आडुत्तमस्य पिच 3.4.92 | आद्यन्तवदेकस्मिन् 1.1.21 | आवट्याच 4.1.75 | इच्छा 3.3.101 |
| आढकाचितपा ० 5.1.53 | आद्यन्तौ टकितौ 🛮 1.1.46 | आवश्यकाधम ॰ 3.3.170 | इच्छार्थेभ्यो ० 3.3.160 |
| आढ्यसुभगस्थू ० 3.2.56 | आद्युदात्तं द्यच् ० 6.2.119 | आवसथात् ष्ठल् 4.4.74 | इच्छार्थेषु लिङ् • 3.3.157 |
| आण्नद्याः 7.3.112 | आद्युदात्तश्च 3.1.3 | आशंसायां • 3.3.132 | इजादेः सनुमः 8.4.32 |
| आत ऐ 3.4.95 | आधारोऽधिक ० 1.4.45 | आशंसावचने ० 3.3.134 | इजादेश्च गुरु ० 3.1.36 |
| आत औ णलः 7.1.34 | आनङ् ऋतो द्वन्द्वे 6.3.25 | आशङ्काबाधने ० 6.2.21 | इञः प्राचाम् 2.4.60 |
| आतः 3.4.110 | आनाय्योऽनित्ये 3.1.127 | आशितः कर्ता 6.1.207 | इञश्च 4.2.112 |
| आतश्चोपसर्गे 3.1.136 | आनि लोट् 8.4.16 | आशिते भुवः० 3.2.45 | इट ईटि 8.2.28 |
| आतश्चोपसर्गे 3.3.106 | आने मुक् 7.2.82 | आशिषि च 3.1.150 | इटोऽत् 3.4.106 |
| आतो ङितः 7.2.81 | आन्महतः ० 6.3.46 | आशिषि नाथः 2.3.55 | इट् सनि वा 7.2.41 |
| आतो धातोः 6.4.140 | आपत्यस्य च ० 6.4.151 | आ शिषि लिङ् ० 3.3.173 | इडत्त्यर्ति ० 7.2.66 |
| आतो मनिन्क ० 3.2.74 | आपोऽन्यतरस्याम् 7.4.15 | आशिषि हनः 3.2.49 | इडाया वा 8.3.54 |
| आतो युक् ० 7.3.33 | आपोजुषाणोवृ ० 6.1.118 | आश्चर्यमनित्ये 6.1.147 | इणः षः 8.3.39 |
| आतो युच् 3.3.128 | आप्ज्ञप्यृधामीत् 7.4.55 | आश्वयुज्या वुज् 4.3.45 | इणः षीध्वं ० 8.3.78 |
| आतो लोप इटि च 6.4.64 | आप्रपदं प्राप्नोति 5.2.8 | आसन्दीवदष्ठी ० 8.2.12 | इणो गा लुङि 2.4.45 |
| आतोऽटि नित्यम् 8.3.3 | आबाधे च 8.1.10 | आसुयुवपिर ० 3.1.126 | इणो यण् 6.4.81 |
| आतोऽनुपसर्गे कः 3.2.3 | आभीक्ष्ण्ये • 3.4.22 | आस्पदं प्रतिष्ठा ० 6.1.146 | इण्कोः 8.3.57 |
| आत्मनश्च पूरणे 6.3.6 | आम एकान्तरमा ० 8.1.55 | आहस्थः 8.2.35 | इण्निइजसर्त्ति ० 3.2.163 |
| आत्मनेपदेष्वनतः 7.1.5 | आमः 2.4.81 | आहि च दूरे 5.3.37 | इण्निष्ठायाम् 7.2.47 |
| आत्मनेपदेष्व ० 2.4.44 | आमन्त्रितं पूर्वम् ० 8.1.72 | आहो उताहो ० 8.1.49 | इतराभ्योऽपि ० 5.3.14 |
| आत्मनेपदेष्वन्य ० ३.1.54 | आमन्त्रितस्य च 6.1.198 | - इ - | इतरेतरान्यो ० 1.3.16 |
| आत्मन्विश्वजन • 5.1.9 | आमन्त्रितस्य च 8.1.19 | इकः कारो 6.3.123 | इतश्च 3.4.100 |
| आत्ममाने खश्च 3.2.83 | आमि सर्वनाम्नः ० 7.1.52 | इको वहेऽपीलोः 6.3.121 | इतश्च लोपः ० 3.4.97 |
| आत्माध्वानौ खे 6.4.169 | आमेतः 3.4.90 | इकः सुञि 6.3.134 | इतश्चानिञः 4.1.122 |
| आथर्वणिक ० 4.3.133 | आम्प्रत्य ॰ 1.3.63 | , 9. | इतो मनुष्यजातेः 4.1.65 |
| | | | |

| | | अष्टाध्याया | सूत्रसूची | 3 |
|------------------------|---------|-----------------------------------|-------------------------------------|-----------------------------|
| इतोऽत् सर्व ० | 7.1.86 | ई घ्राध्मोः 7.4.31 | उत्क उन्मनाः 5.2.80 | उद्विभ्यां तपः 1.3.27 |
| इत्थंभूतलक्षणे | 2.3.21 | ई च खनः 3.1.111 | उत्करादिभ्यश्छः ४.२.९० | उन्न्योर्गः 3.3.29 |
| इत्थम्भूतेन ० | 6.2.149 | ई च गणः 7.4.97 | उत्तमैकाभ्यां च 5.4.90 | उपकादिभ्योऽन्य ० 2.4.69 |
| इदङ्किमोरीक्की | 6.3.90 | ई च द्विवचने 7.1.77 | उत्तरपथेनाहृतं च 5.1.77 | उपघ्न आश्रये 3.3.85 |
| इदन्तो मसि | 7.1.46 | ई हल्यघोः 6.4.113 | उत्तरपदवृद्धौ ० 6.2.105 | उपजानूपकर्णो ० 4.3.40 |
| इदम इश् | 5.3.3 | ई ३ चाकवर्मणस्य 6.1.130 | उत्तरपदस्य 7.3.10 | उपज्ञा ते 4.3.115 |
| इदमस्थमुः | 5.3.24 | ईडजनोर्ध्वे च 7.2.78 | उत्तरपदादिः 6.2.111 | उपज्ञोपकमं ० 2.4.21 |
| इदमो मः | 7.2.108 | ईडवन्दवृशं ० 6.1.214 | उत्तरमृगपूर्वाच ० 5.4.98 | उपदंशस्तृती ० 3.4.47 |
| इदमो हिंऌ | 5.3.16 | ईदग्नेः सोमव ० 6.3.27 | उत्तराच 5.3.38 | उपदेशेऽजनु ० 1.3.2 |
| इदमो हः | 5.3.11 | ईदासः 7.2.83 | उत्तराधरदक्षि ० 5.3.34 | उपदेशेऽत्वतः 7.2.62 |
| इदमोऽन्वादेशे ० | | ईदूतौ च सप्तम्यर्थे 1.1.19 | उत्सादिभ्योऽञ् 4.1.86 | उपधायां च 8.2.78 |
| इदितो नुम् धातोः | 7.1.58 | ईदूदेद्विवचनं ० 1.1.11 | उद ई त् 6.4.139 | उपधायाश्च 7.1.101 |
| इदुदुपधस्य ० | 8.3.41 | ई चिति 6.4.65 | उदः स्था स्त ० 8.4.61 | उपपदमतिङ् 2.2.19 |
| इदुन्धाम् | 7.3.117 | ईयसश्च 5.4.156 | उदकस्योदः ० 6.3.57 | उपपराभ्याम् 1.3.39 |
| इदोऽय् पुंसि | 7.2.111 | ई वत्याः 6.1.221 | उदकेऽकेवले 6.2.96 | उपमानं शब्दा ० 6.2.80 |
| इद्गोण्याः | 1.2.50 | ईशः से 7.2.77 | उदक् च विपाशः 4.2.74 | उपमानाच 5.4.137 |
| इद्दरिद्रस्य | 6.4.114 | ईश्वरे तोसुन्कसुनौ 3.4.13 | उदङ्कोऽनुदके 3.3.123 | उपमानादप्राणिषु 5.4.97 |
| इद्वृद्धौ | 6.3.28 | ईषद्कृता 2.2.7 | उदन्वानुदधौ च 8.2.13 | उपमानादाचारे 3.1.10 |
| इनः स्त्रियाम् | 5.4.152 | ईषदन्यतरस्याम् 6.2.54 | उदराहुगाद्यूने 5.2.67 | उपमानानि सा ० 2.1.55 |
| इनच्पिट ० | 5.2.33 | ईषद र्थे 6.3.105 | उदराश्वेषुषु 6.2.107 | उपमाने कर्मणि च 3.4.45 |
| इनण्यनपत्ये | 6.4.164 | ईषद्समाप्तौ ० 5.3.67 | उदश्चरः सकर्म ० 1.3.53 | उपमितं व्याघ्रा ० 2.1.56 |
| इनित्रकट्यचश्च | 4.2.51 | ईषदुःसुषु ० 3.3.126 | उद्धितोऽन्यत ० 4.2.19 | उपरिस्विदा ० 8.2.102 |
| इन्द्रवरुणभवश | | <i>-</i> ਤ - | उदात्तयणो ० 6.1.174 | उपर्यध्यधसः ० 8.1.7 |
| 'इन्द्रियमिन्द्र ० | 5.2.93 | उगवादिभ्योऽत् 5.1.2 | उदात्तस्वरित ॰ 1.2.40 | उपर्युपरिष्टात् 5.3.31 |
| इन्द्रे च (नित्यम्) | | उगितश्च 4.1.6 | उदात्तस्वरितयो ० 8.2.4 | उपसंवादाशङ्कयोश्च 3.4.8 |
| इन्धिभवतिभ्यां च | | उ गितश्च 6.3.45 | उदात्ताद्नुदात्त ० 8.4.66 | उपसर्गप्रादुर्भ्या ० 8.3.87 |
| इन्हर्न्यूषार्यम्णां ३ | | उगिदचां सर्व ० 7.1.70 | उदि कूले ० 3.2.31 | उपसर्गव्यपेतं च 8.1.38 |
| इरयो रे | 6.4.76 | उग्रम्पश्येरम्म ॰ 3.2.37 | उदि ग्रहः 3.3.35 | उपसर्गस्य घञ् ० ६.३.१२२ |
| इरितो वा | 3.1.57 | उचैरुदात्तः 1.2.29 | उदि श्रयति ० 3.3.49 | उपसर्गस्यायतौ 8.2.19 |
| इवे प्रतिकृतौ | 5.3.96 | उचैस्तरां वा ॰ 1.2.35 | उदितो वा 7.2.56 | उपसर्गाः ॰ 1.4.59 |
| इषुगमियमां छः | 7.3.77 | उञः 1.1.17 | उदीचां माङो ० 3.4.19 | उपसर्गाच 5.4.119 |
| इष्टकेषीकामा ० | 6.3.65 | उ ञि च पदे 8.3.21 | उदीचां वृद्धा ० 4.1.157 | उपसर्गाच्छन्द ० 5.1.118 |
| इष्टादिभ्यश्च | 5.2.88 | उ ञ्छति 4.4.32 | उदीचामातः ० 7.3.46 | उपसर्गात् ख ० 7.1.67 |
| इष्ट्वीनमिति च | 7.1.48 | उञ्छादीनां च 6.1.160 | उदीचामिञ् 4.1.153 | उपसर्गात् सुनो० 8.3.65 |
| इष्ठस्य यिट् च | 6.4.159 | उणादयो बहुलम् 3.3.1 | उदीच्यग्रामाच ० 4.2.109 | उपसर्गात् स्वा ० 6.2.177 |
| इसुसुक्तान्तात् क | | उतश्च प्रत्यया ० 6.4.106 | उदुपधाद्भावा ० 1.2.21 | उपसर्गादध्वनः 5.4.85 |
| इसुसोः सामर्थ्ये | 8.3.44 | उ ताप्योः ० 3.3.152 | उदोऽनूर्द्धकर्मणि 1.3.24 | उपसर्गादसमा ० 8.4.14 |
| इस्मन्त्रन्किषु च | 6.4.97 | उतो वृद्धिर्लुकि ० 7.3.89 | उदोष्ट्यपूर्वस्य 7.1.102 | उपसर्गादृति धातौ 6.1.91 |
| - ई - | | उत् परस्यातः 7.4.88 | उद्धनोऽत्याधानम् 3.3.80 | उपसर्गादनोत्परः 8.4.28 |
| | | | उद्विभ्यां काकु० 5.4.148 | उपसर्गाद्धस्व ० 7.4.23 |

| उपसर्गे घोः किः 3.3.92 | - ऊ - | ऋदुपधाचाक्षु ० 3.1.110 | एच इग्घस्वादेशे 1.1.48 |
|---------------------------------------|--------------------------------|--|---------------------------------|
| उपसर्गे च ॰ 3.2.99 | उँ 1.1.18 | ऋदुशनस्पुरु ० 7.1.94 | एचोऽप्रगृह्य ० 8.2.107 |
| उपसर्गे रुवः 3.3.22 | ऊकालोऽज्झ ० | ऋदृशोऽङि गुणः 7.4.16 | एचोऽयवायावः 6.1.78 |
| उपसर्गेंऽदः 3.3.59 | ऊङ्नतः 4.1.66 | ऋदोर प् 3.3.57 | एजेः खश 3.2.28 |
| उपसर्जनं पूर्वम् 2.2.30 | ऊडिदम्पदाद्य ० 6.1.171 | ऋद्धनोः स्ये 7.2.70 | एण्या ढञ् 4.3.159 |
| उपसर्या का ० 3.1.104 | ऊतियूतिजूति ० 3.3.97 | ऋन्नेभ्यो ङीप् 4.1.5 | एत ईद्बहुवचने 8.2.81 |
| उपाच 1.3.84 | ऊदनोर्देशे 6.3.98 | ऋषभोपानहोर्ञ्यः 5.1.14 | एत ऐ 3.4.93 |
| उपाजेऽन्वाजे 1.4.73 | उ दुगधाया गोहः | ऋष्यन्धक ० 4.1.114 | एतत्तदोः सुलो ० 6.1.132 |
| उ पात् प्रतिय ० 6.1.139 | ऊधसोऽनङ् 5.4.131 | ऋहलोर्ण्यत् 3.1.124 | एतदस्त्रतसोस्त्र • 2.4.33 |
| उपात् प्रशंसायाम् 7.1.66 | ऊनार्थकलहं ॰ 6.2.153 | - ॠ - | एतदोऽश 5.3.5 |
| उपाद् द्यज ० 6.2.194 | ऊरूत्तरपदादौपम्ये ४.1.69 | ऋत इद्धा तोः | एतिस्तुशास्व ० 3.1.109 |
| उपाद्यमः स्वकरणे 1.3.56 | ऊर्णाया युस् 5.2.123 | | ए तेतौ रथोः 5.3.4 |
| उपाधिभ्यां त्यक ० 5.2.34 | ऊ र्णोतेर्विभाषा 7.2.6 | - ए- | एतेर्लिङि 7.4.24 |
| उपान्मन्त्रकरणे 1.3.25 | ऊर्णोतेर्विभाषा 7.3.90 | एक तद्धिते च 6.3.62 • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | एत्येधत्यूठ्सु 6.1.89 |
| उपान्वध्याङ्गसः 1.4.48 | ऊर्ध्वाद्विभाषा 5.4.130 | एकं बहुवीहिवत् 8.1.9 | एधाच 5.3.46 |
| उपेयिवानना ॰ 3.2.109 | ऊर्ध्वे शुषिपूरोः 3.4.44 | एकः पूर्वपरयोः 6.1.84 | एनपा द्वितीया 2.3.31 |
| उपोऽधिके च 1.4.87 | ऊर्यादिचिंडाचश्च 1.4.61 | एकगोपूर्वाट्टञ् ० 5.2.118 | एनबन्यतरस्या ० 5.3.35 |
| उ पोत्तमं रिति 6.1.217 | ऊषसुषिमुष्क ॰ 5.2.107 | एकधुराह्नुक च 4.4.79 | एरच् 3.3.56 |
| उप्ते च 4.3.44 | , , | एकवचनं संबुद्धिः 2.3.49 | एरनेकाचोऽसं ० 6.4.82 |
| उभयथर्भु 8.3.8 | - ऋ - | एकवचनस्य च 7.1.32 | एरुः 3.4.86 |
| उभयप्राप्तौ कर्मणि 2.3.66 | ऋक्पूरप्धूःपथा ० 5.4.74 | एकविभक्ति ० 1.2.44 | ए ਨਿੰडਿ 6.4.67 |
| उभादुदात्तो ० 5.2.44 | ऋचः शे 6.3.55 | एकशालायाष्ठ • 5.3.109 | एहिमन्ये प्रहासे ० 8.1.46 |
| उभे अभ्यस्तम् 6.1.5 | ऋचि तुनुघम० 6.3.133 | एकश्रुति दूरात् ० 1.2.33 | - ऐ - |
| उ भे वनस्य ० 6.2.140 | ऋच्छत्यॄताम् ७.४.11 | एकस्य सकृच 5.4.19 | ऐकागारिकट् ० 5.1.113 |
| उभौ साभ्यासस्य 8.4.21 | ऋणमाधमण्यें 8.2.60 | एकहलादौ ० 6.3.59 | ऐति संज्ञायामगात् 8.3.99 |
| उमोर्णयोर्वा 4.3.158 | ऋत उत् 6.1.111 | एकाच उपदेशे ० 7.2.10 | ऐषमोह्यःश्वसो ० 4.2.105 |
| उरःप्रभृतिभ्यः ० 5.4.151 | ऋतश्च 7.4.92 | एकाचो द्वे प्रथमस्य 6.1.1 | - ओ - |
| उरण् रपरः 1.1.51 | ऋतश्च संयोगादेः 7.2.43 | एकाचो बशो ० 8.2.37 | |
| उरत् 7.4.66 | ऋतश्च संयोगा ० 7.4.10 | एकाच प्राचाम् 5.3.94 | ओः पुराण्ज्यपरे 7.4.80 |
| उर सो यच 4.3.114 | ऋतश्छन्दं सि 5.4.158 | एकाजुत्तरपदे णः 8.4.12 | ओः सुपि 6.4.83 |
| उर सोऽण् च 4.4.94 | ऋतष्ठञ् 4.3.78 | एकादाकिनि ० 5.3.52 | ओक उचः के 7.3.64 |
| उर्ऋत् ७.4.७ | ऋतेरीयङ् 3.1.29 | एकादिश्चैकस्य ० 6.3.76 | ओजःसहोऽम्भ ० 6.3.3 |
| বश্ব 1.2.12 | ऋतो ङिसर्वना ० 7.3.110 | एकादेश उदा ० 8.2.5 | ओजसोऽहनि ० 4.4.130 |
| उषविदजागृभ्यो ० 3.1.38 | ऋतो भारद्वाजस्य 7.2.63 | एकाद्धो ध्यमु ० 5.3.44 | ओजस्सहो ० 4.4.27 |
| उषासोषसः 6.3.31 | ऋतो विद्यायोनि ० 6.3.23 | एकान्याभ्यां ० 8.1.65 | ओतः श्यनि 7.3.71 |
| उष्ट्रः सादिवाम्योः 6.2.40 | ऋतोऽञ् 4.4.49 | एको गोत्रे 4.1.93 — — — | ओतो गार्ग्यस्य 8.3.20 |
| उष्ट्राद्धुञ् 4.3.157 | ऋतोरण् 5.1.105 | एङः पदान्तादति <i>6.1.109</i> | ओत् 1.1.15 |
| उस्यपदान्तात् 6.1.96 | ऋत्यकः 6.1.128 | एङि पररूपम् | ओदितश्च 8.2.45 |
| | ऋत्विग्दधृक्स ० 3.2.59 | एङ् प्राचां देशे 1.1.75 | ओमभ्यादाने 8.2.87 |
| | ऋत्व्यवा ॰ 6.4.175 | एङ्ह्रस्वात् ० 6.1.69 | ओमाङोश्च 6.1.95 |

| 1 | $\overline{}$ | |
|---|---------------|---|
| 1 | 7 | _ |
| Į | ٦ | 4 |

| ओरञ् | 4.2.71 | कपिज्ञात्योर्ढक् 5.1.127 | कर्मण्यस्याख्या ० 3.2.92 | कार्तकौजपादयश्च 6.2.37 |
|--------------------------------|-----------|--|------------------------------|--|
| ओरञ् | 4.3.139 | कपिबोधादाङ्गिरसे 4.1.107 | कर्मण्यण् 3.2.1 | कार्मस्ताच्छील्ये 6.4.172 |
| ओरावश्यके | 3.1.125 | कपिष्ठलो गोत्रे 8.3.91 | कर्मण्यधिकरणे च 3.3.93 | कालप्रयोजनाद्रोगे 5.2.81 |
| ओर्गुणः | 6.4.146 | कमेर्णिङ् 3.1.30 | कर्मण्याकोशे ० 3.4.25 | कालविभागे ० 3.3.137 |
| ओर्देशे ठञ् | 4.2.119 | कम्बलाच संज्ञायाम् 5.1.3 | कर्मधारयवत् ० 8.1.11 | कालसमयवे ० 3.3.167 |
| ओषधेरजातौ | 5.4.37 | कम्बोजाल्लुक् 4.1.175 | कर्मधारयेऽनिष्ठा 6.2.46 | कालाः 2.1.28 |
| ओषधेश्च विभ ० | 6.3.132 | करणाधिकरण ० 3.3.117 | कर्मन्दकृशाश्वा ० 4.3.111 | कालाः परिमाणिना 2.2.5 |
| ओसि च | 7.3.104 | करणे च स्तोका० 2.3.33 | कर्मप्रवचनीय ० 2.3.8 | कालाच 5.4.33 |
| - औ | _ | करणे यजः 3.2.85 | कर्मप्रवचनीयाः 1.4.83 | कालाहुञ् 4.3.11 |
| औक्षमनपत्ये आक्षमनपत्ये | 6.4.173 | करणे हनः 3.4.37 | कर्मवत् कर्मणा ० 3.1.87 | कालात् 5.1.78 |
| आँङ आपः | 7.1.18 | करणेऽयोविद्रुषु 3.3.82 | कर्मवेषाद्यत् 5.1.100 | कालात् साधुपु ० 4.3.43 |
| आतोऽम्श्रासोः औतोऽम्श्रासोः | 6.1.93 | कर्कलोहि ० 5.3.110 | कर्मव्यतिहारे ० 3.3.43 | कालाद्यत् 5.1.107 |
| औत् औत् | 7.3.118 | कर्णललाटात् ० 4.3.65 | कर्माध्ययने वृत्तम् 4.4.63 | कालाध्वनोर ० 2.3.5 |
| | | कर्णे लक्षण० 6.3.115 | कर्म्माणि च 2.2.14 | कालेभ्यो भववत् 4.2.34 |
| - क | | कर्णो वर्णलक्ष ० 6.2.112 | कर्षात्वतो घञो ० 6.1.159 | कालोपसर्जने ० 1.2.57 |
| कंशंभ्यां बभयु ० | | कर्तारे कृत् 3.4.67 | कलापिनोऽण् 4.3.108 | काश्यपकौशि ० 4.3.103 |
| कंसमन्थशूर्पपा व | 6.2.122 | कर्तारे चर्षिदे ॰ 3.2.186 | कलापिवैशम्पा ० ४.3.104 | काश्यादिभ्यष्ठ ० 4.2.116 |
| कंसाट्टिठन् | 5.1.25 | कर्तारे भुवः ० 3.2.57 | कलाप्यश्वत्थय ० 4.3.48 | कासूगोणीभ्यां ० 5.3.90 |
| कंसीयपरश ० | 4.3.168 | कर्तारे शप् 3.1.68 | कलेर्डक् 4.2.8 | कास्तीराजस्तु ० 6.1.155 |
| कःकरत्करति ० | 8.3.50 | कर्तर्युपमाने 3.2.79 | कल्याण्यादी ० 4.1.126 | कास्प्रत्ययादा ० 3.1.35 |
| ककुदस्याव ० | 5.4.146 | कर्तुः क्यङ् ० 3.1.11 | कवं चोष्णे 6.3.107 | किं कियाप्रश्ले ० 8.1.44 |
| कच्छादिभ्यश्च | 4.2.133 | कर्तुरीप्सित • 1.4.49 | कव्यध्वरपृतन ० 7.4.39 | किं क्षेपे 2.1.64 |
| कठचरकाल्लुक् | 4.3.107 | कर्तृकरणयोस्तृ ० 2.3.18 | कव्यपुरीषपुरीष्ये ० 3.2.65 | किंकिलास्त्य • 3.3.146 |
| कठिनान्तप्रस्ता व | 4.4.72 | कर्तृकरणे कृता ० 2.1.32 | कषादिषु यथावि ० 3.4.46 | किंयत्तदो नि ० 5.3.92 |
| कडङ्गरदक्षिणा ० | 5.1.69 | कर्तृकर्मणोः कृति 2.3.65 | कष्टाय क्रमणे 3.1.14 | किंवृत्ते लिङ्लृटौ 3.3.144 |
| कडाराः कर्मधरा | | कर्तृकर्मणोश्च ० 3.3.127 | कस्कादिषु च 8.3.48 | किंवृत्ते लिप्सायाम् 3.3.6 |
| कणेमनसी श्रद्धा | • 1.4.66 | कर्तृस्थे चाशरीरे ० 1.3.37 | कस्य च दः 5.3.72 | किंसर्वनामबहु • 5.3.2 |
| कण्ठपृष्ठग्री ० | 6.2.114 | कर्त्तारे कर्म्म ० 1.3.14 | कस्येत् 4.2.25 | कितः 6.1.165 |
| कण्ड्वादिभ्यो यक् | | कर्त्तारे च 2.2.16 | का पथ्यक्षयोः 6.3.104 | किति च 7.2.118 |
| कण्वादिभ्यो गोत्रे | 4.2.111 | कर्जोर्जीवपुरुष ० 3.4.43 | काण्डाण्डादी ० 5.2.111 | किदाशिषि 3.4.104 |
| कतरकतमौ ० | 6.2.57 | कर्मण उक ञ् 5.1.103 | काण्डान्तात् क्षेत्रे 4.1.23 | किमः कः 7.2.103 |
| कतरकतमौ जा व | 2.1.63 | कर्मणो रोमन्थ ० 3.1.15 | कानाम्रेडिते 8.3.12 | किमः क्षेपे 5.4.70 |
| कत्त्र्यादिभ्यो ढक | স্ 4.2.95 | कर्मणा यमभि ० 1.4.32 | कापिश्याः ष्फक् 4.2.99 | किमः सङ्ख्या ० 5.2.41 |
| कथाऽऽदिभ्यष्टक् | 4.4.102 | कर्मणि घटोऽठच् 5.2.35 | कामप्रवेदने ० 3.3.153 | किमश्च 5.3.25 |
| कदुकमण्डल्वो ० | 4.1.71 | कर्मणि च येन ० 3.3.116 | काम्यच 3.1.9 | किमिदंभ्यां वो घः 5.2.40 |
| कन्था च | 6.2.124 | कर्मणि दृशि ० 3.4.29 | कारकाद्दत्तश्रु ० 6.2.148 | किमेत्तिङव्यय ० 5.4.11 |
| कन्थापलदनग ० | 4.2.142 | कर्मणि द्वितीया 2.3.2 | कार के 1.4.23 | किमोऽत् 5.3.12 |
| कन्थायाष्टक् | 4.2.102 | कर्मणि भृतौ 3.2.22 | कारनाम्नि च ० 6.3.10 | किंवृत्तं च चिदु ० 8.1.48 |
| कन्यायाः ० | 4.1.116 | कर्मणि हनः 3.2.86 | कारस्करो वृक्षः 6.1.156 | किरतौ लवने 6.1.140 |
| कपि पूर्वम् | 6.2.173 | कर्मणीनिर्विक्रियः 3.2.93 | कारे सत्यागदस्य 6.3.70 | किरश्च पञ्चभ्यः 7.2.75 |
| • | | W. C. H. H. H. H. 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 17 | (1) 14/3 0.0.70 | 131 \ 20 1 \ 10 1 \ 1 1 \ 1 20 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ 1 \ |

| कु | अष्टाध्यायीस | ्त्रपाठः | |
|-----------------------------|-----------------------------------|-------------------------------|---|
| किशरादिभ्यः ष्टन् 4.4.53 | कुञो द्वितीय ० 5.4.58 | क्तक्तवतू निष्ठा 1.1.26 | क्यादिभ्यः श्ना 3.1.81 |
| कु तिहोः 7.2.104 | कृओ हेतुता ० 3.2.20 | क्तस्य च वर्तमाने 2.3.67 | क्रिशः त्तवानिष्ठयोः 7.2.50 |
| कुगतिप्रादयः 2.2.18 | कृञ् चानुप्रयु ० 3.1.40 | क्तादल्पाख्यायाम् 4.1.51 | क्वणो वीणायां च 3.3.65 |
| कुटीशमीशुण्डा ० 5.3.88 | कृतलब्धकीत ॰ 4.3.38 | क्तिच्क्तौ च ॰ 3.3.174 | क्वसुश्च 3.2.107 |
| कुण्डं वनम् 6.2.136 | कृते ग्रन्थे 4.3.116 | क्ते च 6.2.45 | काति 7.2.105 |
| कुत्वा डुपच् 5.3.89 | कृत्तद्धितसमासाश्च 1.2.46 | क्ते नित्यार्थे 6.2.61 | विवन्प्रत्ययस्य कुः 8.2.62 |
| कुत्सने च सुप्य ० 8.1.69 | कृत्यचः 8.4.29 | क्तेन च पूजायाम् 2.2.12 | क्विप्च 3.2.76 |
| कुत्सितानि ॰ 2.1.53 | कृत्यतुल्याख्या ० 2.1.68 | क्तेन नञ्चिश ० 2.1.60 | क्षत्राद्धः 4.1.138 |
| कुत्सिते 5.3.74 | कृत्यल्युटो ० 3.3.113 | क्तेनाहोरात्रावयवाः 2.1.45 | क्षयो निवासे 6.1.201 |
| कुप्वोः XकXपौ च 8.3.37 | कृत्याः प्राङ् ॰ 3.1.95 | क्तोऽधिकरणे ० 3.4.76 | क्षय्यजय्यौ ॰ 6.1.81 |
| कुमति च 8.4.13 | कृत्यानां कर्तरि वा 2.3.71 | क्रेर्मम् नित्यं 4.4.20 | क्षायो मः 8.2.53 |
| कुमहन्द्र्यामन्यत ० 5.4.105 | कृत्यार्थे तवैके ० 3.4.14 | त्तवा च 2.2.22 | क्षिप्रवचने लृट् 3.3.133 |
| कुमारः श्रमणा ० 2.1.70 | कृत्याश्च 3.3.171 | त्तवाऽपि छन्दसि 7.1.38 | क्षियः 6.4.59 |
| कुमारशीर्षयो ० 3.2.51 | कृत्यैरिधकार्थवचने 2.1.33 | त्त्वातोसुन्कसुनः 1.1.40 | क्षियाऽऽशीःप्रै ० 8.2.104 |
| कुमारश्च 6.2.26 | कृत्यैर्ऋणे 2.1.43 | त्तिव स्कन्दिस्यन्दोः 6.4.31 | क्षियो दीर्घात् 8.2.46 |
| कुमार्यां वयसि 6.2.95 | कृत्योकेष्णु ० 6.2.160 | क्त्वो यक् 7.1.47 | क्षीराङ्कज् 4.2.20 |
| कुमुदनडवेतसे ० 4.2.87 | कृत्वोऽर्थप्रयो ० 2.3.64 | क्यङ्मानिनोश्च 6.3.36 | क्षुद्रजन्तवः 2.4.8 |
| कुम्भपदीषु च 5.4.139 | कृद तिङ् 3.1.93 | क्यचि च 7.4.33 | क्षुद्राभ्यो वा 4.1.131 |
| कुरुगार्हपतरिक्त ० 6.2.42 | कृन्मेजन्तः 1.1.39 | क्य च्च्योश्च 6.4.152 | क्षुद्राभ्रमरवटर ॰ 4.3.119 |
| कुरुणादिभ्यो ण्यः 4.1.172 | कृपो रो लः 8.2.18 | क्यस्य विभाषा 6.4.50 | क्षुब्यस्वान्तध्वा ० 7.2.18 |
| कुर्वादिभ्यो ण्यः 4.1.151 | कृमृदरु हि ० 3.1.59 | क्याच्छन्दि स 3.2.170 | क्षुभ्नाऽऽदिषु च 8.4.39 |
| कुलकुक्षिग्रीवा ० 4.2.96 | कृषेश्छन्दिस 7.4.64 | कतुयज्ञेभ्यश्च 4.3.68 | क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे 6.2.39 |
| कुलटाया वा 4.1.127 | कृसृभृवृस्तुद्ध • 7.2.13 | कत्क्थादिसूत्रा ० 4.2.60 | क्षेत्रियच् परक्षेत्रे ० 5.2.92 |
| कुलत्थकोपधादण् ४.4.4 | कृ धान्ये 3.3.30 | कतौ कुण्ड ॰ 3.1.130 | क्षेपे 2.1.47 |
| कुलात् खः 4.1.139 | केऽणः 7.4.13 | कत्वादयश्च 6.2.118 | क्षेपे 6.2.108 |
| कुलालादिभ्यो ० 4.3.118 | केकयमित्र ० 7.3.2 | क्रमः परस्मैपदेषु 7.3.76 | क्षेमप्रियमद्रेऽण् च 3.2.44 |
| कुलिजाल्लुक्खौ च 5.1.55 | केदाराद्यञ् च 4.2.40 | क्रमश्च त्तिव 6.4.18 | क्सस्याचि 7.3.72 |
| कुल्माषाद्ञ् 5.2.83 | केवलमामकभा ॰ 4.1.30 | क्रमादिभ्यो वुन् 4.2.61 | - ख - |
| कुशाग्राच्छः 5.3.105 | केशाद्वोऽन्य ० 5.2.109 | क्रय्यस्तदर्थे 6.1.82 | खच 4.4.132 |
| कुषिरज्जोः ० 3.1.90 | केशाश्वाभ्यां ० 4.2.48 | क्रव्ये च 3.2.69 | खः सर्वधुरात् 4.4.78 |
| कुसीददशैका ० 4.4.31 | कोः कत् तत्पु ० 6.3.101 | क्रियार्थोपपदस्य ० 2.3.14 | खचि हस्व ः 6.4.94 |
| कुसूलकूपकुम्भ ० 6.2.102 | कोपधाच 4.2.79 | क्रियासमभिहारे ० 3.4.2 | खद्वा क्षेपे 2.1.26 |
| कुस्तुम्बुरूणि ० 6.1.143 | कोपधाच 4.3.137 | क्रीङ्गीनां णौ 6.1.48 | खण्डिकादिभ्यश्च 4.2.45 |
| कुहोश्चुः 7.4.62 | कोपधादण् 4.2.132 | क्रीडोऽनुसम्परि ० 1.3.21 | खनो घ च 3.3.125 |
| कूलतीरतूलम् ० 6.2.121 | कोशाङ्ख्ञ् 4.3.42 | क्रीतवत् परि ० 4.3.156 | खरवसानयो ० 8.3.15 |
| कूलसूदस्थलक o 6.2.129 | कौपिञ्जलहा ० 4.3.132 | क्रीतात् क रण ० 4.1.50 | खरि च 8.4.55 |
| कृकणपर्णाद्भा ० 4.2.145 | कौमारापूर्ववचने 4.2.13 | कुधदुहेर्ष्या ० 1.4.37 | खलगोरथात् 4.2.50 |
| कृच्छ्रगहनयोः ० 7.2.22 | कौरव्यमाण्डूका ० 4.1.19 | कुधदुहोरुपसृष्ट ० 1.4.38 | खलयवमाष ॰ 5.1.7 |
| कृञः प्रतियत्ने 2.3.53 | कौसल्यकार्मा ० 4.1.155 | कुधमण्डार्थेभ्यश्च 3.2.151 | खार्या ईकन 5.1.33 |
| कृञः श च 3.3.100 | क्अच्छाग्निवऋ ० ४.२.१२६ | कौड्यादिभ्यश्च 4.1.80 | VII II K II V V V V V V V V V V V V V V |

| | 0 | • |
|----------|-------|---------|
| अष्टाध्य | ायास् | त्रसूचा |

| ₹ |
|---|
| |

| | अष्टाध्यायी | सूत्रसूची | चा |
|----------------------------|---------------------------------|---|--------------------------------------|
| खार्याः प्राचाम् 5.4.101 | गुडादिभ्यष्ठञ् 4.4.103 | गोस्त्रियोरुपस ० 1.2.48 | ङसिङसोश्च 6.1.110 |
| खित्यनव्ययस्य 6.3.66 | गुणवचनब्राह्म ॰ 5.1.124 | गौः सादसादि ० 6.2.41 | ङसिङ्योः स्मा ० 7.1.15 |
| खिदेश्छन्दिस 6.1.52 | गुणो यङ्खुकोः 7.4.82 | ग्क्ङित च 1.1.5 | ভিৰ 1.1.53 |
| ख्यत्यात् परस्य 6.1.112 | गुणोऽपृक्ते 7.3.91 | ग्रन्थान्ताधिके च 6.3.79 | ङिति हस्वश्च 1.4.6 |
| - ग - | गुणोऽर्तिसंयो ० 7.4.29 | ग्रसितस्कभित ० 7.2.34 | ङे प्रथमयोरम् 7.1.28 |
| गतिकारकोप ० 6.2.139 | गुपूधूपविच्छि ० 3.1.28 | ग्रहवृद्दनिश्चिगमश्च 3.3.58 | ङेराम्नद्याम्नीभ्यः 7.3.116 |
| गतिबुद्धिप्रत्यव ० 1.4.52 | गुपेश्छन्दसि 3.1.50 | ग्रहिज्यावयि ० 6.1.16 | डेर्चः 7.1.13 |
| गतिरनन्तरः 6.2.49 | गुप्तिज्किन्धः सन् 3.1.5 | ग्रहोऽलिटि दीर्घः 7.2.37 | ङ्णोः कुक्टुक् ० 8.3.28 |
| गतिर्गतौ 8.1.70 | गुरोरनृतो० 8.2.86 | ग्रामः शिल्पिन 6.2.62 | ड्यापोः संज्ञाछ ० 6.3.63 |
| गतिश्च 1.4.60 | गुरोश्च हलः 3.3.103 | ग्रामकौटाभ्यां ० 5.4.95 | ङ्याप्प्रा तिपदिकात् 4.1.1 |
| गत्यर्थकर्मणि ० 2.3.12 | गृधिवञ्च्योः ० 1.3.69 | ग्रामजनपदैक ॰ 4.3.7 | ङ्यारछन्द् सि ० 6.1.178 |
| गत्यर्थलोटा ० 8.1.51 | गृष्ट्यादिभ्यश्च 4.1.136 | ग्रामजनबन्धु ० 4.2.43 | - च - |
| गत्यर्थाकर्मक ० 3.4.72 | गृहपतिना ० 4.4.90 | ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ४.३.६१ | चक्षिङः ख्याञ् 2.4.54 |
| गत्वरश्च 3.2.164 | गेहे कः 3.1.144 | ग्रामाद्यखञौ 4.2.94 | चंङि 6.1.11 |
| गदमदचरयम ० 3.1.100 | गोः पादान्ते 7.1.57 | ग्रामेऽनिवसन्तः 6.2.84 | चब्यन्यतरस्याम् 6.1.218 |
| गन्तव्यपण्यं ० 6.2.13 | गोचरसंचर ० 3.3.119 | ग्राम्यपशुसंघेष्व ० 1.2.73 | चजोः कु घि ० 7.3.52 |
| गन्धनावक्षेपण ० 1.3.32 | गोतन्तियवं पाले 6.2.78 | ग्रीवाभ्योऽण् च 4.3.57 | चटकाया ऐरक् 4.1.128 |
| गन्धस्येदुत्यूति ० 5.4.135 | गोतो णित् 7.1.90 | ग्रीष्मवसन्ताद् ० 4.3.46 | चतुरः शसि 6.1.167 |
| गमः क्वौ 6.4.40 | गोत्रक्षत्रियाख्ये ० 4.3.99 | ग्रीष्मावरसमाद्वुञ् ४.३.४९ | चतुरनडुहोरामु ० 7.1.98 |
| गमश्च 3.2.47 | गोत्रचरणाच्श्रा ० 5.1.134 | ग्रो यङि 8.2.20 | चतुर्थी चाशिष्या ० 2.3.73 |
| गमहनजनख ॰ 6.4.98 | गोत्रचरणाद्भुञ् 4.3.126 | ग्लाजिस्थश्च क्सुः 3.2.139 | चतुर्थी तदर्था ० 2.1.36 |
| गमेरिट् परस्मैपदेषु 7.2.58 | गोत्रस्त्रियाः ० 4.1.147 | - घ - | चतुर्थी तदर्थे 6.2.43 |
| गम्भीराञ्ज्यः 4.3.58 | गोत्रादङ्कवत् 4.3.80 | घकालतनेषु ० 6.3.17 | चतुर्थी सम्प्रदाने 2.3.13 |
| गर्गादिभ्यो यञ् ४.1.105 | गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् 4.1.94 | घच्छौ च 4.4.117 | चतुर्थ्यर्थे बहुलं ० 2.3.62 |
| गर्तोत्तरपदाच्छः ४.२.१३७ | गोत्रान्तेवासिमा ० 6.2.69 | घञः साऽस्यां ० 4.2.58 | चतुष्पादो गर्भिण्या 2.1.71 |
| गर्हायां च 3.3.149 | गोत्रावयवात् 4.1.79 | घञपोश्च 2.4.38 | चतुष्पाद्यो ढञ् ४.1.135 |
| गर्हायां लडपि ० 3.3.142 | गोत्रे कुञ्जादिभ्य ० 4.1.98 | घञि च भाव ० 6.4.27 | चनचिदिवगो ० 8.1.57 |
| गवाश्वप्रभृतीनि च 2.4.11 | गोत्रेऽलुगचि 4.1.89 | घनिलचौ च 5.3.79 | चरणे ब्रह्मचारिणि 6.3.86 |
| गवियुधिभ्यां ० 8.3.95 | गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्ररा ० 4.2.39 | घरूपकल्पचेल ० 6.3.43 | चरणेभ्यो धर्मवत् ४.२.४६ |
| गस्थकन् 3.1.146 | गोद्यचोरसङ्ख्या ० 5.1.39 | घसिभसोईलि च 6.4.100 | चर ति 4.4.8 |
| गहादिभ्यश्च 4.2.138 | गोधाया ढूक् 4.1.129 | घुमास्थागापा ० 6.4.66 | चरफलोश्च 7.4.87 |
| गाङ् लिटि 2.4.49 | गोपयसोर्यत् 4.3.160 | घुषिरविशब्दने 7.2.23 | चरेष्टः 3.2.16 |
| गाङ्कटादिभ्यो ० 1.2.1 | गोपुच्छाहुञ् 4.4.6 | घेङिति 7.3.111 | चर्मोदरयोः पूरेः 3.4.31 |
| गाण्ड्यजगात् ० 5.2.110 | गोविडालसिंह ० 6.2.72 | घोर्लोपो लेटि वा 7.3.70 | चर्मणोऽञ् 5.1.15 |
| गातिस्थाघुपा ० 2.4.77 | गोयवाग्वोश्च 4.2.136 | घोषादिषु 6.2.85 | चलनशब्दार्था ॰ 3.2.148 |
| गाथिविदिथ ० 6.4.165 | गोरतद्धितलुकि 5.4.92 | घ्वसोरेद्धावभ्या ० 6.4.119 | चवायोगे प्रथमा 8.1.59 |
| गाधलवणयोः ० 6.2.4 | गोश्च पुरीषे 4.3.145 | - ङ - | चादयोऽसत्त्वे 1.4.57 |
| गापोष्टक् 3.2.8 | गोषदादिभ्यो वुन् 5.2.62 | - ७ - ङमो ह्रस्वादचि ० 8.3.32 | चादिलोपे विभाषा 8.1.63 |
| गिरेश्च सेनकस्य 5.4.112 | गोष्ठात् खञ् ० 5.2.18 | ^ | चादिषु च 8.1.58 |
| | गोष्पदं सेविता ० 6.1.145 | ङियं च 6.1.212 | - |



| | | | 6 | |
|------------------------|----------|--|-------------------------------|------------------------------|
| चायः की | 6.1.21 | छन्दिस ठञ् 4.3.19 | जनिकर्तुः प्रकृतिः 1.4.30 | जुसि च 7.3.83 |
| चायः की | 6.1.35 | छन्दिस निष्ट ॰ 3.1.123 | ज िता मन्त्रे 6.4.53 | जुहोत्यादिभ्यः श्रुः 2.4.75 |
| चार्थे द्वंद्वः | 2.2.29 | छन्दिस परि ० 5.2.89 | जनिवध्योश्च 7.3.35 | जृस्तम्भुम्रुचुम्रु ० 3.1.58 |
| चाहलोप एवेत्य | 8.1.62 | छन्दसि परेऽपि 1.4.81 | जपजभदहद्श ० 7.4.86 | जृब्रश्च्योः त्तिव 7.2.55 |
| चिणो लुक् | 6.4.104 | छन्दंसि पुनर्व० 1.2.61 | जम्ब्वा वा 4.3.165 | जे प्रोष्टपदानाम् 7.3.18 |
| चिण् ते पदः | 3.1.60 | छन्दि स लिट् 3.2.105 | जम्भा सुहरित ० 5.4.125 | ज्ञाजनोर्जा 7.3.79 |
| चिण् भावकर्मणोः | 3.1.66 | छन्दि स लुङ् ० 3.4.6 | जयः करणम् 6.1.202 | ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः 1.3.57 |
| चिण्णमुलोर्दीर्घो | • 6.4.93 | छन्दि स वनस ० 3.2.27 | जराया जरसन्य ०७.२.१०१ | ज्ञोऽविदर्थस्य ० 2.3.51 |
| चितः | 6.1.163 | छन्दि स वा ० 8.3.49 | जल्पभिक्षकु ॰ 3.2.155 | ज्य च 5.3.61 |
| चितेः कपि | 6.3.127 | छन्दिस शायजपि 3.1.84 | जश्शसोः शिः 7.1.20 | ज्यश्च 6.1.42 |
| चित्तवति नित्यम् | 5.1.89 | छन्दि स सहः 3.2.63 | जसः शी 7.1.17 | ज्यादादीयसः 6.4.160 |
| चित्याग्निचित्ये च | 3.1.132 | छन्दसीरः 8.2.15 | जिस च 7.3.109 | ज्योतिरायुषः ० 8.3.83 |
| चित्रीकरणे च | 3.3.150 | छन्द सो निर्मिते 4.4.93 | जहातेश्च 6.4.116 | ज्योतिर्जनपदरा ० 6.3.85 |
| चिदिति चोपमा व | 8.2.101 | छन्दसो यदणौ 4.3.71 | जहातेश्च त्तिव 7.4.43 | ज्योत्स्नातमि ० 5.2.114 |
| चिन्तिपूजिक ० | 3.3.105 | छन्दस्यनेक ० 8.1.35 | जागुरूकः 3.2.165 | ज्वरत्वरश्रिव्य ॰ 6.4.20 |
| चिस्फुरोणीँ | 6.1.54 | छन्दस्यपि दृश्य ते 6.4.73 | जाग्रोऽविचि ० 7.3.85 | ज्वलितिकस • 3.1.140 |
| चीरमुपमानम् | 6.2.127 | छन्दस्यपि दश् यते 7.1.76 | जातरूपेभ्यः ० 4.3.153 | झयः 5.4.111 |
| चुटू | 1.3.7 | छन्दस्युभयथा 3.4.117 | जातिकालसु ० 6.2.170 | झयः 8.2.10 |
| चूर्णादिनिः | 4.4.23 | छन्दस्युभयथा 6.4.5 | जातिनाम्नः कन् 5.3.81 | झयो हो ० 8.4.62 |
| चूर्णादीन्यप्रा ० | 6.2.134 | छन्दस्युभयथा 6.4.86 | जातिरप्राणिनाम् 2.4.6 | झरो झरि सवर्णे 8.4.65 |
| चेलखेटकटु ० | 6.2.126 | छन्दस्यृदवग्रहात् ८.4.26 | जातुयदोर्लिङ् 3.3.147 | झलां जशोऽन्ते 8.2.39 |
| चेले क्रोपेः | 3.4.33 | छन्दोगौक्थि ० 4.3.129 | जातेरस्त्रीवि ० 4.1.63 | झलां जश् झिश 8.4.53 |
| चोः कुः | 8.2.30 | छन्दोनाम्नि च 3.3.34 | जातेश्च 6.3.41 | झलो झलि 8.2.26 |
| चौ | 6.1.222 | छन्दोनाम्नि च 8.3.94 | जात्यन्ताच्छ बन्धुनि 5.4.9 | झल्युपोत्तमम् 6.1.180 |
| चौ | 6.3.138 | छन्दोब्राह्मणा ० 4.2.66 | जात्याख्याया ० 1.2.58 | झषस्तथोर्घोऽधः 8.2.40 |
| च्छ्वोः शूडनुना ० | 6.4.19 | छात्र्यादयः • 6.2.86 | जात्वपूर्वम् 8.1.47 | झस्य रन् 3.4.105 |
| च्लि लुङि | 3.1.43 | छादेर्घेऽद्युपसर्गस्य <i>6</i> .4.96 | जानपद्कुण्ड ० 4.1.42 | झेर्जुस् 3.4.108 |
| च्लेः सिच् | 3.1.44 | छाया बाहुत्त्ये 2.4.22 | जान्तनशां विभाषा 6.4.32 | झोऽन्तः 7.1.3 |
| चौ च | 7.4.26 | छेच 6.1.73 | जायाया नि ङ् 5.4.134 | <i>-</i> ञ - |
| - छ - | - | <mark>छेदादिभ्यो नित्यम्</mark> 5.1.64 | जालमानायः 3.3.124 | সিনश্ব ॰ 4.3.155 |
| छ च | 4.2.28 | - ज - | जासिनिप्रह ० 2.3.56 | जीतः क्तः 3.2.187 |
| छ । छगलिनो ढिनुक् | | जिक्षत्यादयः षट् 6.1.6 | जिघ्रतेर्वा 7.4.6 | ञ्चिपत्यादि ० 6.1.197 |
| छत्रादिभ्यो णः | 4.4.62 | जङ्गलधेनुवल ० 7.3.25 | जिद्दक्षिविश्रीण्व ० 3.2.157 | ज्य्आदय ० 5.3.119 |
| छदिरुपधिबलेर्डञ | | जनपदतदवध्योश्च 4.2.124 | जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ४.३.६२ | • |
| छन्दसि ग ० | 3.3.129 | जनपदशब्दात् ॰ 4.1.168 | जीर्यतेरतृन् 3.2.104 | - ट - |
| छन्दांस घस् | 5.1.106 | जनपदिनां ज ॰ 4.3.100 | जीवति तु ० 4.1.163 | टाङसिङसा ० 7.1.12 |
| छन्दांस च छन्दांस च | 5.1.67 | जनपदे छुप् 4.2.81 | जीविकाऽर्थे चा ० 5.3.99 | टाबृचि 4.1.9 |
| छन्दांस च छन्दांस च | 5.4.142 | जनसनखनक ॰ 3.2.67 | जीविकोपनिष ० 1.4.79 | टिङ्ढाणञ्द्वयस ० 4.1.15 |
| छन्दास प छन्दसि च | 6.3.126 | जनसनखनां ० 6.4.42 | जुचङ्कम्यदन्द्र ० 3.2.150 | टित आत्मने ० 3.4.79 |
| अन्यारा च | 0.0.120 | -1.1(1)(1)(1) - (1.11/2) | जुष्टार्पिते च ० 6.1.209 | देः 6.4.143 |
| | | | | |

| टेः | 6.4.155 | ण्यासश्रन्थो युच् 3.3.107 | तद्स्मिन्नस्तीति ० 4.2.67 | तर ति 4.4.5 |
|--|------------------|--|------------------------------------|--------------------------------|
| द्वितोऽथुच् | 3.3.89 | ण्युट् च 3.1.147 | त द स्मै दीयते ० 4.4.66 | तरप्तमपौ घः 1.1.22 |
| - ठ - | | ण्वुल्तृचौ 3.1.133 | तदस्य तदस्मिन् ० 5.1.16 | तवकममका ० 4.3.3 |
| ठक्छौ च | 4.2.84 | - त - | तदस्य पण्यम् 4.4.51 | तवममौ ङसि 7.2.96 |
| ठगायस्थानेभ्यः | 4.3.75 | तङानावात्म ० 1.4.100 | तदस्य परिमाणम् 5.1.57 | तवै चान्तश्च ० 6.2.51 |
| ठञ् कवचिनश्च | 4.2.41 | तत आगतः 4.3.74 | तदस्य ब्रह्मचर्यम् 5.1.94 | तव्यत्तव्यानीयरः 3.1.96 |
| ठस्येकः ठ स्येकः | 7.3.50 | तत् प्रत्यनुपूर्व ॰ 4.4.28 | तदस्य संजातं ० 5.2.36 | तसिलादिषु ॰ 6.3.35 |
| ठाजादावूर्ध्वं ० | 5.3.83 | तत्पुरुषः 2.1.22 | तदस्य सोढम् 4.3.52 | तसिश्च 4.3.113 |
| | | तत्पुरुषः समा ० 1.2.42 | तदस्यां प्रहर ० 4.2.57 | तसेश्च 5.3.8 |
| <i>- </i> | | तत्पुरुषस्याङ्ग् ० 5.4.86 | तदस्यास्त्यस्मि ० 5.2.94 | तसौ मत्वर्थे 1.4.19 |
| डः सि धुट् | 8.3.29 | तत्पुरुषे कृति ० 6.3.14 | तदो दा च 5.3.19 | तस्थस्थमिपां ० 3.4.101 |
| डति च | 1.1.25 | तत्पुरुषे तुल्यार्थ ० 6.2.2 | तदोः सः ० 7.2.106 | तस्माच्छसो ० 6.1.103 |
| डाबुभाभ्याम ० | 4.1.13 | तत्पुरुषे शाला ० 6.2.123 | तद र्हति 5.1.63 | तस्मादित्युत्तरस्य 1.1.67 |
| द्वेतः क्रिः | 3.3.88 | तत्पुरुषोऽनञ् ० 2.4.19 | तद्ग च्छ ति ० 4.3.85 | त स्मान्नुड चि 6.3.74 |
| - ढ - | | तत्प्रकृतवचने ० 5.4.21 | तद्धरति वह ० 5.1.50 | तस्मान्नुड् द्विहलः 7.4.71 |
| इकि लोपः | 4.1.133 | तत्प्रत्ययस्य च 7.3.29 | तद्धितश्चासर्व ० 1.1.38 | तस्मिन् नणि ० 4.3.2 |
| इक् च मण्डूकात् | 4.1.119 | तत्प्रयोजको हेतुश्च 1.4.55 | तिद्धतस्य 6.1.164 | तस्मिन्निति ० 1.1.66 |
| : इछन्दसि | 4.4.106 | तत्र 2.1.46 | तिद्धताः 4.1.76 | तस्मै प्रभवति ० 5.1.101 |
| हे लोपोऽकद्याः | 6.4.147 | तत्र कुशलः पथः 5.2.63 | तद्धितार्थोत्तर ० 2.1.51 | तस्मै हितम् 5.1.5 |
| हो हे लोपः | 8.3.13 | तत्र च दीयते ० 5.1.96 | तद्धितेष्वचामादेः 7.2.117 | तस्य च दक्षिणा ० 5.1.95 |
| इलोपे पूर्वस्य ० | 6.3.111 | तत्र जातः 4.3.25 | तद्युक्तात् कर्म ० 5.4.36 | तस्य तात् 7.1.44 |
| - ण - | | तत्र तस्येव 5.1.116 | तद्राजस्य बहुषु ० 2.4.62 | तस्य धर्म्यम् 4.4.47 |
| - ग - गचः स्त्रियामञ् | | तत्र तेनेदमिति ॰ 2.2.27 | तद्वहति रथयु ० 4.4.76 | तस्य निमित्तं ० 5.1.38 |
| गयः ।स्त्रयामञ् गलुत्तमो वा | 5.4.14 7.1.91 | तत्र नियुक्तः 4.4.69 | तद्वानासामुप ० 4.4.125 | तस्य निवासः 4.2.69 |
| गलुत्तमा वा णेचश्च | | तत्र भवः 4.3.53 | तनादिकुञ्भ्य उः 3.1.79 | तस्य परमाम्रेडितम् 8.1.2 |
| णचश्च णेनि | 1.3.74 | तत्र विदित इति च 5.1.43 | तनादिभ्यस्त ० 2.4.79 | तस्य पाकमूले ० 5.2.24 |
| | 6.2.79 | तत्र साधुः 4.4.98 | तनिपत्योञ्छन्दसि 6.4.99 | तस्य पूरणे डट् 5.2.48 |
| गेश्रिद्धस्त्रभ्यः ० ोरणौ यत् ० | 3.1.48 | तत्रोद्धतममत्रेभ्यः 4.2.14 | तनूकरणे तक्षः 3.1.76 | तस्य भाव ० 5.1.119 |
| | 1.3.67 | तत्रोपपदं ० 3.1.92 | तनोतेर्यिक 6.4.44 | तस्य लोपः 1.3.9 |
| गेरध्ययने वृत्तम् गेरनिटि | 7.2.26 | तत्सर्वादेः ॰ 5.2.7 | तनोतेर्विभाषा 6.4.17 | तस्य वापः 5.1.45 |
| गरानाट गेर्विभाषा | 6.4.51 | तथायुक्तं चानि ० 1.4.50 | तन्त्रादिचरापहृते 5.2.70 | तस्य विकारः 4.3.134 |
| | 8.4.30 | • • • | तपःसहस्राभ्यां ० 5.2.102 | तस्य व्याख्यान ० 4.3.66 |
| गे ३ छन्दसि ~ | 3.2.137 | | तपरस्तत्कालस्य 1.1.70 | तस्य समूहः 4.2.37 |
| गो नः | 6.1.65 | 0 | तपस्तपःकर्म ० 3.1.88 | तस्यादित उदात्त ० 1.2.32 |
| गौ गमिरबोधने ———— | 2.4.46 | • | तपोऽनुतापे च 3.1.65 | तस्यापत्यम् 4.1.92 |
| गौ च सँश्चङोः | 2.4.51 | | तप्तनप्तनथनाश्च 7.1.45 | तस्येदम् 4.3.120 |
| गौ च संश्वङोः | 6.1.31 | तद्शिष्यं ० 1.2.53 | तमधीष्टो भृतो ० 5.1.80 | तस्येश्व रः 5.1.42 |
| गौ चड्युपधा ० | 7.4.1 | तदस्मिन् वृद्धा ० 5.1.47 तदस्मिन्नधि ० 5.2.45 | तयोरेव कृत्य ० 3.4.70 | ताच्छील्यव ० 3.2.129 |
| ` | T 0 (F | acithisis 5745 | - | |
| ण्य आवश्यके ण्यक्षत्रियार्ष ० | 7.3.65 2.4.58 | तद् रिमन्नन्नं प्राये ० 5.2.82 | तयोर्दार्हिलौ च ० 5.3.20 | तादौ च निति ० 6.2.50 |

ता

| ताभ्यामन्यत्रो ० 3.4.75 | तुमर्थाच भाव ० 2.3.15 | तेमयावेकवचनस्य 8.1.22 | द्धातेर्हिः 7.4.42 |
|--------------------------------|--|-------------------------------|---------------------------------|
| तालादिभ्योऽण् ४.३.१५२ | तुमर्थे सेसेन ० 3.4.9 | तोः षि 8.4.43 | द्ध्र ष्टक् 4.2.18 |
| तावतिथं ग्रहण ० 5.2.77 | तुमुन्ण्वुलौ ० 3.3.10 | तोर्कि 8.4.60 | दन्त उन्नत उर च् 5.2.106 |
| तासस्त्योर्लोपः 7.4.50 | तु रि ष्टेमेयस्सु 6.4.154 | तौ सत् 3.2.127 | दन्तशिखात् ० 5.2.113 |
| तासि च क्रृपः 7.2.60 | तुरुस्तुशम्यमः ० 7.3.95 | त्यदादिषु दृशो ० 3.2.60 | दन्शसञ्जस्वञ्जां ० 6.4.25 |
| तास्यनुदात्ते ० 6.1.186 | तुल्यार्थैरतुलोप ० 2.3.72 | त्यदादीनामः 7.2.102 | दम्भ इच 7.4.56 |
| ति च 7.4.89 | तुल्यास्यप्रयत्नं ० 1.1.9 | त्यदादीनि च 1.1.74 | दयतेर्दिगि लिटि 7.4.9 |
| ति विंशतेर्डिति 6.4.142 | तुश्छन्दि स 5.3.59 | त्यदादीनि ० 1.2.72 | द्यायासश्च 3.1.37 |
| तिककितवा ० 2.4.68 | तुह्योस्तातङ्ङा ० 7.1.35 | त्यागरागहास ॰ 6.1.216 | दश्च 7.2.109 |
| तिकादिभ्यः फिञ् ४.1.154 | तूदीशलातुरवर्म ० 4.3.94 | त्रपुजतुनोः षुक् 4.3.138 | दश्च 8.2.75 |
| तिङश्च 5.3.56 | तूष्णीमि भुवः 3.4.63 | त्रिसगृधिधृ • 3.2.140 | दस्ति 6.3.124 |
| तिङस्त्रीणि ॰ 1.4.101 | तृजकाभ्यां कर्तरि 2.2.15 | त्रिंशचत्वारि ० 5.1.62 | दाणश्च सा ॰ 1.3.55 |
| तिङि चोदात्तवति 8.1.71 | तृज्वत् क्रोष्टुः 7.1.95 | त्रिककुत् पर्वते 5.4.147 | दाण्डिनायन ० 6.4.174 |
| तिङो गोत्रादीनि ० 8.1.27 | तृणह इम् 7.3.92 | त्रिचतुरोः स्त्रियां ० 7.2.99 | दादेर्घातोर्घः 8.2.32 |
| तिङ्कतिङः 8.1.28 | तृणे च जातौ 6.3.103 | त्रिप्रभृतिषु ० 8.4.50 | दाधर्तिदर्धर्तिद ० 7.4.65 |
| तिङ्गित्सार्व ० 3.4.113 | तृतीया कर्मणि 6.2.48 | त्रेः सम्प्रसारणम् ० 5.2.55 | दाधा घ्वदाप् 1.1.20 |
| तितुत्रतथसिसु • 7.2.9 | तृतीया च हो ० 2.3.3 | त्रेस्त्रयः 6.3.48 | दाधेद्विशदसदो ० 3.2.159 |
| तित्तिरिवरतन्तु ० 4.3.102 | तृतीया तत्कृ ० 2.1.30 | त्रेस्त्रयः 7.1.53 | दानीं च 5.3.18 |
| तित्स्वरितम् 6.1.185 | तृतीयाऽऽदि ० 7.1.74 | त्वमावेकवचने 7.2.97 | दामन्यादित्रि ० 5.3.116 |
| तिप्तस्झिसिप्थ • 3.4.78 | तृतीयाऽर्थे 1.4.85 | त्वामौ द्वितीयायाः 8.1.23 | दामहायनान्ताच 4.1.27 |
| तिप्यनस्तेः 8.2.73 | तृतीयाप्रभृती ० 2.2.21 | त्वाहौ सौ 7.2.94 | दाम्नीशसयुयुज ० 3.2.182 |
| तिरसस्तिर्यलोपे 6.3.94 | तृतीयासप्तम्यो ० 2.4.84 | त्वे च 6.3.64 | दायाद्यं दायादे 6.2.5 |
| तिरसोऽन्यत ० 8.3.42 | तृतीयासमासे 1.1.30 | - थ - | दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने 3.4.73 |
| तिरोऽन्तर्द्धौ 1.4.71 | तृन् 3.2.135 | थट् च च्छन्दि स 5.2.50 | दाश्वान् साह्वान् ० 6.1.12 |
| तिर्यच्यपवर्गे 3.4.60 | तृषिमृषिकृशेः ० 1.2.25 | थिल च सेटि 6.4.121 | दिक्पूर्वपदाष्टुञ् च 4.3.6 |
| तिष्ठतेरित् 7.4.5 | तॄफलभजत्रपश्च 6.4.122 | थिल च ॰ 6.1.196 | दिक्पूर्वपदाद ० 4.2.107 |
| तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च 2.1.17 | ते तद्राजाः 4.1.174 | था हेतौ च ० 5.3.26 | दिक्पूर्वपदान्ङीप् 4.1.60 |
| तिष्यपुनर्वस्वो ० 1.2.63 | ते प्राग्धातोः 1.4.80 | थाथघञ्क्ताज ० 6.2.144 | दिक्शब्दा ग्राम ० 6.2.103 |
| तिसृभ्यो जसः 6.1.166 | तेन क्रीतम् 5.1.37 | थासस्से 3.4.80 | दिक्शब्देभ्यः ० 5.3.27 |
| तीररूप्योत्तर ० 4.2.106 | ते न तुल्यं ० 5.1.115 | थो न्थः 7.1.87 | दिक्संख्ये ॰ 2.1.50 |
| तीर्थे ये 6.3.87 | तेन दीव्यति ० 4.4.2 | | दिगादिभ्यो यत् 4.3.54 |
| तीषसहस्र ० 7.2.48 | तेन निर्वृत्तम् 4.2.68 | - द् - | दिङ्गामान्यन्तराले 2.2.26 |
| तुग्राद्धन् 4.4.115 | ते न निर्वृ त्तम् 5.1. <i>7</i> 9 | दक्षिणादाच् 5.3.36 | दित्यदित्या ॰ 4.1.85 |
| तुजादीनां दीर्घो ० 6.1.7 | ते न परि जय्य ० 5.1.93 | दक्षिणापश्चा ० 4.2.98 | दिव उत् 6.1.131 |
| तुदादिभ्यः शः 3.1.77 | तेन प्रोक्तम् 4.3.101 | दक्षिणेर्मा ० 5.4.126 | दिव औत् 7.1.84 |
| तुन्दशोकयोः परि ० 3.2.5 | ते न यथाकथा ० 5.1.98 | दक्षिणोत्तरा ० 5.3.28 | दिवः कर्म च 1.4.43 |
| तुन्दादिभ्य ० 5.2.117 | तेन रक्तं रागात् 4.2.1 | दण्डव्यवसर्गयोश्च 5.4.2 | दिवसश्च पृथिव्याम् 6.3.30 |
| तुन्दिवलिवटेर्भः 5.2.139 | तेन वित्तश्रुञ्जु ० 5.2.26 | दण्डादिभ्यः 5.1.66 | दिवस्तदर्थस्य 2.3.58 |
| तुपश्यपश्य ० 8.1.39 | तेन सहेति ० 2.2.28 | ददातिद्धा ० 3.1.139 | दिवादिभ्यः श्यन् 3.1.69 |
| तुभ्यमह्यौ ङिय 7.2.95 | तेनैकदिक् 4.3.112 | द धस्तथोश्च 8.2.38 | |
| | | | |

| | | ` | <u> ઝષ્ટા</u> ધ્યાપા | तूत्रसूचा | | | -'' |
|-----------------------|----------|----------------------------|----------------------|--------------------------|----------------|--------------------|-------------------|
| दिवाविभानि ० | 3.2.21 | देवताद्वन्द्वे च | 6.3.26 | द्विगोष्ठंश्च | 5.1.54 | धनगणं लब्धा | 4.4.84 |
| दिवो झल् | 6.1.183 | देवताद्वन्द्वे च | 7.3.21 | द्विगौ कतौ | 6.2.97 | धनहिरण्यात् कामे | 5.2.65 |
| दिवो द्यावा | 6.3.29 | देवतान्तात्ताद ० | 5.4.24 | द्विगौ प्रमाणे | 6.2.12 | धनुषश्च 5 | 5.4.132 |
| दिवोऽविजि ० | 8.2.49 | देवपथादिभ्यश्च | 5.3.100 | द्वितीयतृती ० | 2.2.3 | धन्वयोपधाद्रुञ् 4 | 1.2.121 |
| दिशोऽमद्राणाम् | 7.3.13 | देवब्रह्मणोरनु ० | 1.2.38 | द्वितीया ब्राह्मणे | 2.3.60 | | 4.4.41 |
| दिष्टिवितस्त्योश्च | 6.2.31 | देवमनुष्यपुरुष ० | 5.4.56 | द्वितीया श्रिता ० | 2.1.24 | धर्मपथ्यर्थ ० | 4.4.92 |
| दीङो युडचि ० | 6.4.63 | देवसुम्नयोर्यजु ० | 7.4.38 | द्वितीयाटौस्स्वेनः | 2.4.34 | धर्मशीलवर्णा ० 🛭 | 5.2.132 |
| दीधीवेवीटाम् | 1.1.6 | देवात्तल | 5.4.27 | द्वितीयायां च | 3.4.53 | धर्मादनिच् ० 5 | 5.4.124 |
| दीपजनबुधपू ० | 3.1.61 | देविकाशिंशपा ० | 7.3.1 | द्वितीयायां च | 7.2.87 | धातुसम्बन्धे ० | 3.4.1 |
| दीर्घ इणः किति | 7.4.69 | देविकुशोश्चोप ० | 2.147 | द्वितीये चानुपाख्ये | 6.3.80 | धातोः | 3.1.91 |
| दीर्घं च | 1.4.12 | देशे लुबिलचौ च | 5.2.105 | द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच | 5.4.18 | धातोः 6 | 5.1.162 |
| दीर्घकाशतु ० | 6.2.82 | दैवयज्ञिशौचिवृ ० | 4.1.81 | द्वित्रिपूर्वादण् च | 5.1.36 | धातोः कर्मणः ० | 3.1.7 |
| दीर्घजिह्वी च ० | 4.1.59 | दो दद् घोः | 7.4.46 | द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् | 5.1.30 | धातोरेकाचो ० | 3.1.22 |
| दीर्घाच वरुणस्य | 7.3.23 | दोषो णौ | 6.4.90 | द्वित्रिभ्यां तय ० | 5.2.43 | धातोस्तन्निमि ० | 6.1.80 |
| दीर्घाज्जिस च | 6.1.105 | द्यतिस्यतिमा ० | 7.4.40 | द्वित्रिभ्यां पाद्द ० | 6.2.197 | धात्वादेः षः सः | 6.1.64 |
| दीर्घात् | 6.1.75 | द्यावापृथिवीशु ० | 4.2.32 | द्वित्रिभ्यां ष मूर्घः | 5.4.115 | धान्यानां भवने ० | 5.2.1 |
| दीर्घादिट समानपार | दे 8.3.9 | द्युतिस्वाप्योः ० | 7.4.67 | द्वित्रिभ्यामञ्जलेः | 5.4.102 | धारेरुत्तमर्णः | 1.4.35 |
| दीर्घादाचार्याणाम् | 8.4.52 | चुऱ्यो लुङि | 1.3.91 | द्वित्र्योश्च धमुञ् | 5.3.45 | धि च | 8.2.25 |
| दीर्घो लघोः | 7.4.94 | द्युद्धभ्यां मः | 5.2.108 | द्विदण्ड्यादिभ्यश्च | 5.4.128 | धिन्विकृण्योर च | 3.1.80 |
| दीर्घोऽकितः | 7.4.83 | | 4.2.101 | द्विर्वचनेऽचि | 1.1.59 | धुरो यहुकौ | 4.4.77 |
| दुःखात् ० | 5.4.64 | द्रवमूर्तिस्प ० | 6.1.24 | द्विवचनविभ ० | 5.3.57 | धूमादिभ्यश्च 4 | 1.2.127 |
| दुन्योरनुपसर्गे | 3.1.142 | द्रव्यं च भव्ये | 5.3.104 | द्विषत्परयोस्तापेः | 3.2.39 | धृषिशसी वैयात्ये | 7.2.19 |
| दुरस्युर्द्रविणस्यु ० | 7.4.36 | द्रोणपर्वतजीव ० | 4.1.103 | द्विषश्च | 3.4.112 | ध्रुवमपाये ० | 1.4.24 |
| दुष्कुलाड्वक् | 4.1.142 | द्रोश्च | 4.3.161 | द्विषोऽमित्रे | 3.2.131 | ध्वमो ध्वात् | 7.1.42 |
| दुहः कब् घश्च | 3.2.70 | द्वन्द्वमनोज्ञा ० | 5.1.133 | द्विस्तावा त्रिस्ता व | 5.4.84 | ध्वाङ्क्षेण क्षेपे | 2.1.42 |
| दुहश्च | 3.1.63 | द्वन्द्वश्च प्राणित् ० | 2.4.2 | द्विस्त्रिश्चतुरिति ० | 8.3.43 | - न - | |
| दूतस्य भाग ० | 4.4.120 | द्वन्द्वाचुद्षहा ० | 5.4.106 | द्वीपादनुसमुद्रं यञ | 4.3. 10 | • | 7.4.14 |
| दूराद्धूते च | 8.2.84 | द्वन्द्वाच्छः | 4.2.6 | द्वेस्तीयः | 5.2.54 | न कर्मव्यतिहारे | 7.3.6 |
| दूरान्तिकार्थे ० | 2.3.35 | द्वन्द्वाद्वुन् वैर ० | 4.3.125 | द्वैपवैयाघ्रादञ् | 4.2.12 | - 0- | 7.4.63 |
| दूरान्तिकार्थैः ० | 2.3.34 | द्वन्द्वे घि | 2.2.32 | द्यचः | 4.1.121 | _ | 6.3.37 |
| दृक्खवस्स्वत ० | 7.1.83 | द्वन्द्वोपतापग ० | 5.2.128 | द्यचञ्छन्दसि | 4.3.150 | | 6.4.39 |
| दग्दशवतुषु | 6.3.89 | द्वन्द्वं रहस्यम ० | 8.1.15 | द्यचोऽतस्तिङः | 6.3.135 | | 1.2.18 |
| दृढः स्थूलबलयोः | 7.2.20 | द्वन्द्वे च | 1.1.31 | द्यजृद्वाह्मणक्प्रं ० | 4.3.72 | ` ` ` | 4.1.56 |
| दृतिकुक्षिकलश्चि ० | 4.3.56 | द्वारादीनां च | 7.3.4 | द्यञ्मगधक ० | 4.1.170 | | 7.3.59 |
| दृशे विख्ये च | 3.4.11 | द्विगुरेकवचनम् | 2.4.1 | द्यन्तरुपसर्गे ० | 6.3.97 | | 1.3.15 |
| दृशेः क्वनिप् | 3.2.94 | द्विगुश <u>्</u> च | 2.1.23 | द्यष्टनः सङ्ख्याय | T •6.3.47 | _ | 5.2.176 |
| दृष्टं साम | 4.2.7 | द्विगोः | 4.1.21 | द्येकयोर्द्विव ० | 1.4.22 | | 2.4.67 |
| देयमृणे | 4.3.47 | द्विगोर्यप् | 5.1.82 | - घ - | | | 2.4.07 5.1.182 |
| देये त्रा च | 5.4.55 | द्विगोर् <u>ज</u> ुगनपत्ये | 4.1.88 | धः कर्मणि ष्टुन् | 3.2.181 | न ङिसम्बुद्धोः | 8.2.8 |
| देवताद्वन्द्वे च | 6.2.141 | द्विगोर्वा | 5.1.86 | 1. 1. 1. 1. Ž.Ž | J.Z.101 | . 10 (1 3 | 0.2.0 |
| | | | | | | | |

| न चवाहाहैवयुक्ते 8.1.24 | न ल्यपि 6.4.69 | नद्यां मतुप् 4.2.85 | नातः परस्य 7.3.27 |
|-----------------------------------|---------------------------------------|-------------------------------|--|
| न च्छन्दस्यपुत्रस्य 7.4.35 | न वशः 6.1.20 | नद्याः शेषस्या ० 6.3.44 | नादिचि 6.1.104 |
| | न विभक्तौ तुस्माः 1.3.4 | नद्यादिभ्यो ढक् 4.2.97 | नादिन्याकोशे ० 8.4.48 |
| न तौल्वलिभ्यः 2.4.61 | न वृद्धश्चतुर्भ्यः 7.2.59 | नद्यतश्च 5.4.153 | नाद्धस्य 8.2.17 |
| न दण्डमाण ० 4.3.130 | न वेति विभाषा 1.1.44 | ननौ पृष्टप्रति ॰ 3.2.120 | नाधाऽर्थप्र ० 3.4.62 |
| न द्घिपयआदीनि 2.4.14 | न व्यो लिटि 6.1.46 | नन्दिग्रहिप ० 3.1.134 | नानद्यतनवत् ॰ 3.3.135 |
| न दुहस्नुनमां ० 3.1.89 | न शब्दश्लोकक ॰ 3.2.23 | नन्वित्यनु ० 8.1.43 | नानोर्ज्ञः 1.3.58 |
| न दशः 3.1.47 | न शसददवा ० 6.4.126 | नन्वोर्विभाषा 3.2.121 | नान्तादसङ्ख्या ० 5.2.49 |
| न द्यचः प्राच्य ० 4.2.113 | न षद्धस्रादिभ्यः 4.1.10 | नपरे नः 8.3.27 | नाभ्यस्तस्या ० 7.3.87 |
| न धातुलोप ० 1.1.4 | न सङ्ख्याऽऽदेः ० 5.4.89 | नपुंसकमन ० 1.2.69 | नाभ्यस्ताच्छतुः 7.1.78 |
| न ध्याख्यापृम् ० 8.2.57 | न संज्ञायाम् 5.4.155 | नपुंसकस्य झलचः 7.1.72 | नामन्त्रिते ० 8.1.73 |
| न नञ्पूर्वात्त ० 5.1.121 | न संयोगाद्वम ० 6.4.137 | नपुंसकाच 7.1.19 | नामन्यतरस्याम् 6.1.177 |
| न निर्धारणे 2.2.10 | न सम्प्रसारणे ० 6.1.37 | नपुंसकाद ० 5.4.109 | नामि 6.4.3 |
| न निविभ्याम् 6.2.181 | न सामिवचने 5.4.5 | नपुंसके भावे क्तः 3.3.114 | नाम्प्रादिशिग्रहोः 3.4.58 |
| न न्द्राः संयोगादयः 6.1.3 | न सुदुर्भ्यां केव ० 7.1.68 | नभ्राण्नपान्न • 6.3.75 | नाम्रेडितस्या ० 6.1.99 |
| न पदान्तद्विर्व ० 1.1.58 | न सुब्रह्मण्या ० 1.2.37 | नमःस्वस्तिस्वा ० 2.3.16 | नावो द्विगोः 5.4.99 |
| न पदान्ताद्दोरनाम् 8.4.42 | न हास्तिनफल ० 6.2.101 | नमस्पुरसोर्गत्योः 8.3.40 | नाव्ययदिक्० 6.2.168 |
| न पादम्याङ्यमा ० 1.3.89 | नः क्ये 1.4.15 | निमकस्पिस्म्य ॰ 3.2.167 | नाव्ययीभावा ० 2.4.83 |
| न पूजनात् 5.4.69 | नक्षत्राद्धः 4.4.141 | नमोवरिवश्चि ० 3.1.19 | नासिकास्तन ० 3.2.29 |
| न प्राच्यभर्गा ० 4.1.178 | नक्षत्राद्वा 8.3.100 | नरे संज्ञायाम् 6.3.129 | नासिकोदरौ ० 4.1.55 |
| न बहुव्रीहौ 1.1.29 | नक्षत्रे च लु पि 2.3.45 | नलोपः प्राति ॰ 8.2.7 | निकटे वसति 4.4.73 |
| न भकुर्छुराम् 8.2.79 | नक्षत्रेण युक्तः 4.2.3 | नलोपः सुप्स्व ० 8.2.2 | निगरणचल ० 1.3.87 |
| न भाभूपूर्काम ० 8.4.34 | नक्षत्रेभ्यो बहुलम् 4.3.37 | नलोपो नञः 6.3.73 | निगृह्यानुयोगे च 8.2.94 |
| न भूताधिकसं ० 6.2.91 | नखमुखात् ० 4.1.58 | नशेः षान्तस्य 8.4.36 | निघो निमितम् 3.3.87 |
| न भूवाकिद्दिधिषु 6.2.19 | नगरात् ॰ 4.2.128 | नशेर्वा 8.2.63 | निजां त्रया ० 7.4.75 |
| न भूसुधियोः 6.4.85 | नगोऽप्राणिष्व ० 6.3.77 | ন श্च 8.3.30 | नित्यं करोतेः 6.4.108 |
| न मपूर्वोऽप ० 6.4.170 | नञः शुचीश्वर ० 7.3.30 | নश्च धातु ॰ 8.4.27 | नित्यं कौटि ॰ 3.1.23 |
| न माङ्योगे 6.4.74 | नञस्तत्पुरुषात् 5.4.71 | नश्चापदान्त ॰ 8.3.24 | नित्यं क्रीडा ० 2.2.17 |
| न मु ने 8.2.3 | नञो गुण ० 6.2.155 | नश्ख्यप्र ॰ 8.3.7 | नित्यं ङितः 3.4.99 |
| न यः 3.2.152 | न ञो ज र ० 6.2.116 | नसत्तनिषत्ता ० 8.2.61 | नित्यं छन्दिस 4.1.46 |
| न यदि 3.2.113 | नञ् 2.2.6 | नस्तद्धि ते 6.4.144 | नित्यं छन्दिस 7.4.8 |
| न यद्यनाकाङ्क्षे 3.4.23 | न ञ्दुःसुभ्यो ० 5.4.121 | नह प्रत्यारम्भे 8.1.31 | नित्यं पणः ॰ 3.3.66 |
| न यासयोः 7.3.45 | नञ्सुभ्याम् 6.2.172 | नहिवृतिवृषि ० 6.3.116 | नित्यं मन्त्रे 6.1.210 |
| न व्याभ्यां ० 7.3.3 | नडशादाड्ड्वलच् 4.2.88 | नहो धः 8.2.34 | नि त्यं वृद्धश ० 4.3.144 |
| न रपरसृपि ० 8.3.110 | नडादिभ्यः फक् 4.1.99 | नाग्लोपिशा ० 7.4.2 | नित्यं शतादि ० 5.2.57 |
| न रुधः 3.1.64 | नडादीनां कुक् च 4.2.91 | नाचार्यराज ० 6.2.133 | नित्यं संज्ञाछन्द ० 4.1.29 |
| ਜ ਲਿ ঙি 7.2.39 | नते नासिका ० 5.2.31 | नाज्झलौ 1.1.10 | नित्यं सपत्न्य्आ ० 4.1.35 |
| न लुट् 8.1.29 | नदी बन्धुनि 6.2.109 | नाञ्चेः पूजायाम् 6.4.30 | नित्यं समासे ० 8.3.45 |
| न लुमताऽङ्गस्य 1.1.63 | नदीपौर्णमा ० 5.4.110 | नाडीतन्त्र्योः 5.4.159 | नित्यं स्मयतेः 6.1.57 |
| न लोकाव्यय ० 2.3.69 | नदीभिश्च 2.1.20 | नाडीमुष्ट्योश्च 3.2.30 | नित्यं हस्ते ० 1.4.77 |
| | | | |

| 1 | |
|---|---|
| • | ч |
| | • |

| | अष्टाध्यायी | सूत्रसूचा | ٩ |
|-----------------------------------|--------------------------------|-------------------------------|-------------------------------------|
| नित्यमसिच् ० 5.4.122 | नेटि 7.2.4 | पञ्चम्याः परा ० 8.3.51 | पराजेरसोढः 1.4.26 |
| नित्यमाम्रेडिते ॰ 6.1.100 | नेट्यलिटि रधेः 7.1.62 | पञ्चम्याः स्तो ० 6.3.2 | परादिश्छन्दिस ० 6.2.199 |
| नित्यवीप्सयोः 8.1.4 | नेड् विश कृति 7.2.8 | पञ्चम्यामजातौ 3.2.98 | परावनुपात्यय ० 3.3.38 |
| निनदीभ्यां ॰ 8.3.89 | नेतराच्छन्दिस 7.1.26 | पञ्चम्यास्त्रिसिल् 5.3.7 | परावरयोगे च 3.4.20 |
| निन्द हिंसक्कि ० 3.2.146 | नेदमदसोरकोः 7.1.11 | पणपादमाष ० 5.1.34 | परावराधमो ० 4.3.5 |
| निपात एकाजनाङ् 1.1.14 | नेन्द्रस्य परस्य 7.3.22 | पतः पुम् 7.4.19 | परिक्रयणे ० 1.4.44 |
| निपातस्य च 6.3.136 | नेन्सिद्धबध्नातिषु 6.3.19 | पतिः समास एव 1.4.8 | परिक्लिश्यमाने च 3.4.55 |
| निपातैर्यचदि ० 8.1.30 | नेयङुवङ्स्था ० 1.4.4 | पत्त्रपूर्वादञ् ४.3.122 | परिखाया ढञ् 5.1.17 |
| निपानमाहावः 3.3.74 | नेरनिधाने 6.2.192 | पत्ताध्वर्यु ॰ 4.3.123 | परिनिविभ्यः ० 8.3.70 |
| निमूलसमूल ० 3.4.34 | नेर्गद्नद्पतपद ० 8.4.17 | पत्यन्तपुरोहि ० 5.1.128 | परिन्योर्नीणो ० 3.3.37 |
| निरः कुषः 7.2.46 | नेर्बिडज्बिरीसचौ 5.2.32 | पत्यावैश्वर्ये 6.2.18 | परिपन्थं च तिष्ठति 4.4.36 |
| निरभ्योः पूल्वोः 3.3.28 | नेर्विशः 1.3.17 | पत्युर्नो यज्ञसंयोगे 4.1.33 | परिप्रत्युपापा • 6.2.33 |
| निरुद्कादीनि च 6.2.184 | नोङ्घात्वोः 6.1.175 | पथः पन्थ च 4.3.29 | परिमाणाख्यायां ० 3.3.20 |
| निर्वाणोऽवाते 8.2.50 | नोत्तरपदे ऽनु ० 6.2.142 | पथः ष्कन् 5.1.75 | परिमाणान्त ० 7.3.17 |
| निर्वृत्तेऽक्षद्यूता ० 4.4.19 | नोत्वद्वर्भ्रविल्वात् 4.3.151 | पथि च च्छन्दिस 6.3.108 | परिमाणे पचः 3.2.33 |
| निवाते वातत्राणे 6.2.8 | नोदात्तस्वरि ० 8.4.67 | पथिमथोः सर्व ० 6.1.199 | परिमुखं च 4.4.29 |
| निवासचितिश ० 3.3.41 | नोदात्तोपदेश ० 7.3.34 | पथिमथ्यृभुक्षामात् 7.1.85 | परिवृतो रथः 4.2.10 |
| निव्यभिभ्यो ० 8.3.119 | नोनयतिध्वनय ० 3.1.51 | पथो विभाषा 5.4.72 | परिव्यवेभ्यः क्रियः 1.3.18 |
| निशाप्रदोषाभ्यां च 4.3.14 | नोपधात्थफान्ताद्वा 1.2.23 | पथ्यतिथिवस ० 4.4.104 | परिषदो ण्यः 4.4.44 |
| निष्कुलान्निष्कोषणे 5.4.62 | नोपधायाः 6.4.7 | पदमस्मिन् दृश्यम् 4.4.87 | परिषदो ण्यः 4.4.101 |
| निष्ठा 2.2.36 | नौ गदनदपठ ० 3.3.64 | पदरुजविश ॰ 3.3.16 | परिस्कन्दः ० 8.3.75 |
| निष्ठा 3.2.102 | नौ ण च 3.3.60 | पदव्यवायेऽपि 8.4.38 | परेर भितोभा ० 6.2.182 |
| निष्ठा च द्यजनात् 6.1.205 | नौ वृ धान्ये 3.3.48 | पदस्य 8.1.16 | परेर्मृषः 1.3.82 |
| निष्ठा शिक्षिदि ० 1.2.19 | नौद्यचष्टन् 4.4.7 | पदात् 8.1.17 | परेर्वर्जने 8.1.5 |
| निष्ठायामण्यदर्थे 6.4.60 | नौवयोधर्मविष ० 4.4.91 | पदान्तस्य 8.4.37 | परेश्च 8.3.74 |
| निष्ठायां सेटि 6.4.52 | न्यग्रोधस्य ० 7.3.5 | पदान्तस्या ० 7.3.9 | परेश्च घाङ्कयोः 8.2.22 |
| निष्ठोपमानाद ० 6.2.169 | न्यङ्कादीनां च 7.3.53 | पदान्ताद्वा 6.1.76 | परोक्षे लिट् 3.2.115 |
| निष्ठोपसर्गपूर्व ० 6.2.110 | न्यधी च 6.2.53 | पदास्वैरिबा ० 3.1.119 | परोवरपरम्प ० 5.2.10 |
| निष्प्रवाणिश्च 5.4.160 | <i>-</i> प - | पदेऽपदेशे 6.2.7 | परौ घः 3.3.84 |
| निसमुपविभ्यो ह्वः 1.3.30 | पक्षात्तिः 5.2.25 | पदोत्तरपदं गृह्णाति 4.4.39 | परौ भुवोऽवज्ञाने 3.3.55 |
| निसस्तपता ० 8.3.102 | पक्षिमत्स्यम् ॰ 4.4.35 | पद् यत्यतदर्थे 6.3.53 | परौ यज्ञे 3.3.47 |
| नीग्वञ्चस्रंसुध्वं ० 7.4.84 | पङ्किविंशतित्रिं ० 5.1.59 | पद्दन्नोमास्ह ० 6.1.63 | पर्पादिभ्यः ष्टन् 4.4.10 |
| नीचैरनुदात्तः 1.2.30 | पङ्गोश्च 4.1.68 | पन्थो ण नित्यम् 5.1.76 | पर्यभिभ्यां च 5.3.9 |
| नी तौ च तद्युक्तात् 5.3.77 | पचो वः 8.2.52 | परः संनिकर्षः ० 1.4.109 | पर्याप्तिवचने ० 3.4.66 |
| नुगतोऽनुना ० 7.4.85 | पञ्चद्दशतौ वर्गे वा 5.1.60 | परविञ्जङ्गं द्वन्द्व ० 2.4.26 | पर्यायार्हणींत्प ० 3.3.111 |
| नुद्विदोन्दत्रा ० 8.2.56 | पञ्चमी अपा ० 2.3.10 | परश्च 3.1.2 | पर्वताच 4.2.143 |
| नुम्विसर्जनीय ० 8.3.58 | पञ्चमी भयेन 2.1.37 | परश्वधादु ञ्च 4.4.58 | पर्श्वादियौधे ० 5.3.117 |
| ㅋ = 6.4.6 | पञ्चमी विभक्ते 2.3.42 | परस्मिन् विभाषा 3.3.138 | पललसूपशा ० 6.2.128 |
| नृ चान्यतरस्याम् <i>6.</i> 1.184 | पञ्चम्या अत् 7.1.31 | परस्मैपदानां ० 3.4.82 | पलाशादिभ्यो वा 4.3.141 |
| नॄन् पे 8.3.10 | ત્યાં ગાંધ /.1.31 | परस्य च 6.3.8 | पश्च पश्चा च ० 5.3.33 |
| | | | |

प

| पश्चात् 5.3.32 | पुच्छभाण्डची ० 3.1.20 | पूर्ववदश्ववडवौ 2.4.27 | प्रतिनिधिप्रति ॰ 2.3.11 |
|----------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|
| पश्यार्थेश्चाना॰ 8.1.25 | पुत्रः पुंभ्यः 6.2.132 | पूर्वसदृशसमो ० 2.1.31 | प्रतिपथमेति ठंश्च 4.4.42 |
| पाककर्णपर्णपु ० 4.1.64 | पुत्राच्छ च 5.1.40 | पूर्वादिनिः 5.2.86 | प्रतिबन्धि चिर ० 6.2.6 |
| पाघ्राध्माधेट् • 3.1.137 | पुत्रान्तादन्य ० 4.1.159 | पूर्वादिभ्यो ० 7.1.16 | प्रतियोगे पञ्च • 5.4.44 |
| पाघाध्मास्था ० 7.3.78 | पुत्रेऽन्यतरस्याम् 6.3.22 | पूर्वाधरावरा ० 5.3.39 | प्रतिश्रवणे च 8.2.99 |
| पाणिघताडघौ ० 3.2.55 | पुमः खय्यम्परे 8.3.6 | पूर्वापरप्रथमच • 2.1.58 | प्रतिष्कशश्च कशेः 6.1.152 |
| पाण्डुकम्बलादिनिः 4.2.11 | पुमान् स्त्रिया 1.2.67 | पूर्वापराधरोत्तर ० 2.2.1 | प्रतिस्तब्ध • 8.3.114 |
| पातौ च बहुलम् 8.3.52 | पुरा च परीप्सायाम् 8.1.42 | पूर्वाह्वापराह्वा ० 4.3.28 | प्रतेरंश्वादय ॰ 6.2.193 |
| पात्रात् छन् 5.1.46 | पुराणप्रोक्तेषु ० 4.3.105 | पूर्वे कर्तारे 3.2.19 | प्रतेरुरसः ० 5.4.82 |
| पात्राद्धंश्च 5.1.68 | पुरि लुङ् चास्मे 3.2.122 | पूर्वे भूतपूर्वे 6.2.22 | प्रतेश्च 6.1.25 |
| पात्रेसमितादयश्च 2.1.48 | पुरुषश्चान्वादिष्टः 6.2.190 | पूर्वैः कृतमिनि ० 4.4.133 | प्रत्नपूर्वविश्वेमा ॰ 5.3.111 |
| पाथोनदीभ्यां ० 4.4.111 | पुरुषहस्ति • 5.2.38 | पूर्वीऽभ्यासः 6.1.4 | प्रत्यिपभ्यां ० 3.1.118 |
| पादः पत् 6.4.130 | पुरुषात् प्रमा ॰ 4.1.24 | पृथग्विनानाना ० 2.3.32 | प्रत्यभिवादेअशूद्रे 8.2.83 |
| पादशतस्य ० 5.4.1 | पुरे प्राचाम् 6.2.99 | पृथ्वादिभ्य ॰ 5.1.122 | प्रत्ययः 3.1.1 |
| पादस्य पदा ० 6.3.52 | पुरोऽग्रतो ० 3.2.18 | पृषोदरादीनि ० 6.3.109 | प्रत्ययलोपे ० 1.1.62 |
| पादस्य लोपो ० 5.4.138 | पुरोऽव्ययम् 1.4.67 | पेषंवासवाह ० 6.3.58 | प्रत्ययस्थात् ० 7.3.44 |
| पादार्घाभ्यां च 5.4.25 | पुवः संज्ञायाम् 3.2.185 | पैलादिभ्यश्च 2.4.59 | प्रत्ययस्य ० 1.1.61 |
| पादोऽन्यतरस्याम् 4.1.8 | पुषादिद्युता ० 3.1.55 | पोटायुवतिस्तो ० 2.1.65 | प्रत्ययोत्तरपदयोश्च 7.2.98 |
| पानं देशे 8.4.9 | पुष्करादिभ्यो देशे 5.2.135 | पोरदुपधात् 3.1.98 | प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः 1.3.59 |
| पापं च शिल्पिन 6.2.68 | पुष्यसिद्धौ नक्ष त्रे 3.1.116 | पौरोडाशपुरो ० 4.3.70 | प्रत्याङ्भ्यां ० 1.4.40 |
| पापाणके कुत्सितैः 2.1.54 | पूःसर्वयोर्दारिसहोः 3.2.41 | प्यायः पी | प्रथने वावशब्दे 3.3.33 |
| पाय्यसान्नाय्य ० 3.1.129 | पूगाञ्ज्यो ० 5.3.112 | प्रकारवचने जा ॰ 5.3.69 | प्रथमचरमतया ० 1.1.33 |
| पारस्करप्रभृ ० 6.1.157 | पूरोष्वन्यतरस्याम् 6.2.28 | प्रकारवचने थाल् 5.3.23 | प्रथमयोः पूर्व ० 6.1.102 |
| पारायणतुरा ० 5.1.72 | पूङः त्तवा च 1.2.22 | प्रकारे गुण ० 8.1.12 | प्रथमानिर्दिष्टं ॰ 1.2.43 |
| पाराशर्यशि ॰ 4.3.110 | पूङश्च 7.2.51 | प्रकाशनस्थे ० 1.3.23 | प्रथमायाश्च • 7.2.88 |
| पारे मध्ये षष्ट्या वा 2.1.18 | पूड्यजोः शानन् 3.2.128 | प्रकृत्या भगालम् 6.2.137 | प्रथमोऽचिरो ० 6.2.56 |
| पार्श्वेनान्विच्छति 5.2.75 | पूजनात् ० 8.1.67 | प्रकृत्याऽऽशि ॰ 6.3.83 | प्रधानप्रत्यया ० 1.2.56 |
| पाशादिभ्यो यः 4.2.49 | पूजायां नानन्तरम् 8.1.37 | प्रकृत्याऽन्तः ० 6.1.115 | प्रनिरन्तःशरे ० 8.4.5 |
| पितरामातरा ० 6.3.33 | पूतकतोरै च 4.1.36 | प्रकृत्यैकाच् 6.4.163 | प्रभवति 4.3.83 |
| पिता मात्रा 1.2.70 | पूरणगुणसुहि ० 2.2.11 | प्रकृष्टे ठञ् 5.1.108 | प्रभौ परिवृढः 7.2.21 |
| पितुर्य च 4.3.79 | पूरणाद्भागे ती ० 5.3.48 | प्रजने वीयतेः 6.1.55 | प्रमदसम्मदौ हर्षे 3.3.68 |
| पितृव्यमातुलमा ० 4.2.36 | पूरणार्द्धाट् ठन् 5.1.48 | प्रजने सर्तेः 3.3.71 | प्रमाणे च 3.4.51 |
| पितृष्वसुरुछण् 4.1.132 | पूर्णाद्विभाषा 5.4.149 | प्रजोरिनिः 3.2.156 | प्रमाणे द्वयस ० 5.2.37 |
| पिष्टाच 4.3.146 | पूर्वं तु भाषायाम् 8.2.98 | प्रज्ञादिभ्यश्च 5.4.38 | प्रयच्छति गर्ह्यम् 4.4.30 |
| पीलाया वा 4.1.118 | पूर्वकालैकसर्व ० 2.1.49 | प्रज्ञाश्रद्धाऽर्चा ० 5.2.101 | प्रयाजानुयाजौ ० 7.3.62 |
| पुंयोगादाख्यायाम् 4.1.48 | पूर्वत्रासिद्धम् 8.2.1 | प्रणवष्टेः 8.2.89 | प्रयै रोहिष्यै ॰ 3.4.10 |
| पुंवत् कर्मधारय ० 6.3.42 | पूर्वपदात् 8.3.106 | प्रणाय्योऽसंमतौ 3.1.128 | प्रयोजनम् 5.1.109 |
| पुंसि संज्ञायां ० 3.3.118 | पूर्वपदात् सं ० 8.4.3 | प्रतिः प्रतिनि ॰ 1.4.92 | प्रयोज्यनियो ॰ 7.3.68 |
| पुंसोऽसुङ् 7.1.89 | पूर्व परावरद ० 1.1.34 | प्रतिकण्ठार्थ ० 4.4.40 | प्रवाहणस्य ढे 7.3.28 |
| पुगन्तलघूप ० 7.3.86 | पूर्ववत् सनः 1.3.62 | प्रतिजनादिभ्यः ० 4.4.99 | प्रवृद्धादीनां च 6.2.147 |
| | w | | |

| 1 | |
|---|---|
| • | |
| | • |

| | | | • |
|--------------------------------|---|----------------------------------|---------------------------------|
| प्रशंसायां रूपप् 5.3.66 | | | |
| प्रशंसावचनैश्च 2.1.66 | प्राद्धहः 1.3.81 | बन्धे च विभाषा 6.3.13 | बह्रादिभ्यश्च 4.1.45 |
| प्रशस्यस्य श्रः 5.3.60 |) प्राध्वं बन्धने 1.4.78 | बभूथाततन्थ ० 7.2.64 | बाष्पोष्माभ्यां ० 3.1.16 |
| प्रश्ने चासन्नकाले 3.2.117 | प्राप्तापन्ने च ० 2.2.4 | बर्हिषि दत्तम् 4.4.119 | बाह्दन्तात् ० 4.1.67 |
| प्रष्ठोऽग्रगामिनि 8.3.92 | प्रायभवः 4.3.39 | बलादिभ्यो ॰ 5.2.136 | बाह्वादिभ्यश्च 4.1.96 |
| प्रसमुपोदः ० 8.1.6 | प्रावृङ्गरत्काल ॰ 6.3.15 | बहुगणवतुड ० 1.1.23 | बिभेतेर्हेतुभये 6.1.56 |
| प्रसम्भ्यां ० 5.4.129 |) प्रावृष एण्यः 4.3.17 | बहुपूगगणसंघ ० 5.2.52 | बिल्वकादिभ्य ० 6.4.153 |
| प्रसितोत्सु ० 2.3.44 | प्रावृषष्ठप् 4.3.26 | बहुप्रजा २छन्द सि 5.4.123 | बिल्वादिभ्योऽण् 4.3.136 |
| प्रस्कण्वहरि ० 6.1.153 | प्रियवशे वदः खच् 3.2.38 | बहुलं छन्दिस 2.4.39 | बिस्ताच 5.1.31 |
| प्रस्त्योऽन्यतर ० 8.2.54 | प्रियस्थिर ॰ 6.4.157 | बहुलं छन्दि स 2.4.73 | बुधयुधनशज ० 1.3.86 |
| प्रस्थपुरवहान्ताच 4.2.122 | ९ प्रीतौ च 6.2.16 | बहुलं छन्दिस 2.4.76 | बृहत्या आच्छादने 5.4.6 |
| प्रस्थेऽवृद्धमक ० 6.2.87 | ⁷ प्रुसृत्वः ० 3.1.149 | बहुलं छन्दिस 3.2.88 | ब्रह्मणस्त्वः 5.1.136 |
| प्रस्थोत्तरप ० 4.2.110 |) प्रे दा ज्ञः 3.2.6 | बहुलं छन्दिस 5.2.122 | ब्रह्मणो जान ० 5.4.104 |
| प्रहरणम् 4.4.57 | ⁷ प्रे द्रस्तुस्रुवः 3.3.27 | बहुलं छन्दिस 6.1.34 | ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु किप् 3.2.87 |
| प्रहासे च 1.4.106 | 5 प्रे लपसृद्धम ० 3.2.145 | बहुलं छन्दिस 7.1.8 | ब्रह्महस्ति ० 5.4.78 |
| प्राक् कडारात् ० 2.1.3 | प्रे लिप्सायाम् 3.3.46 | बहुलं छन्दिस 7.1.10 | ब्राह्मणको ० 5.2.71 |
| प्राक् कीताच्छः 5.1.1 | प्रे वणिजाम् 3.3.52 | बहुलं छन्दि स 7.1.103 | ब्राह्मणमा ० 4.2.42 |
| प्राक्सिताद ० 8.3.63 | ३ प्रेस्रोऽयज्ञे ३.३.३२ | बहुलं छन्दिस 7.3.97 | ब्राह्मोअजातौ 6.4.171 |
| प्रागिवात्कः 5.3.70 |) प्रेष्यब्रुवोर्हवि ० 2.3.61 | बहुलं छन्दिस 7.4.78 | ब्रुव ईर् 7.3.93 |
| प्रागेकादशभ्यो ० 5.3.49 |) प्रैषातिसर्ग ० 3.3.163 | बहुलं छन्दस्य ० 6.4.75 | ब्रुवः पञ्चाना ० 3.4.84 |
| प्राग्घिताद्यत् 4.4.75 | त्र प्रोक्ताञ्जुक् 4.2.64 | बहुलमाभीक्ष्ण्ये 3.2.81 | ब्रुवो वचिः 2.4.53 |
| प्राग्दिशो विभक्तिः 5.3.1 | प्रोपाभ्यां ० 1.3.64 | बहुवचने झल्येत् 7.3.103 | ब्रूहिप्रेष्यश्रौष ० 8.2.91 |
| प्राग्दीव्यतोऽण् 4.1.83 | प्रोपाभ्यां ० 1.3.42 | बहुवचनस्य व ० 8.1.21 | - भ - |
| प्राग्रीश्वरान्निपाताः 1.4.56 | ५ प्रक्षादिभ्योऽण् ४.३.१६४ | बहुव्रीहाविद ० 6.2.162 | भक्ताख्यास्तदर्थेषु 6.2.71 |
| प्राग्वतेष्ठञ् 5.1.18 | • | बहुव्रीहेरूधसो ० 4.1.25 | भक्ताण्णः 4.4.100 |
| प्राग्वहतेष्ठक् 4.4.1 | • | बहुव्रीहेश्चा ० 4.1.52 | भक्ताद्गन्य ० 4.4.68 |
| प्राचां कटादेः 4.2.139 |) | बहुव्रीहौ प्रकृ ० 6.2.1 | भक्तिः 4.3.95 |
| प्राचां कीडायाम् 6.2.74 | = 10 - | बहुव्रीहौ विश्वं ० 6.2.106 | भक्ष्येण मिश्री ० 2.1.35 |
| प्राचां ग्रामन ० 7.3.14 | Til | बहुवीहौ संख्ये ० 5.4.73 | भजो ण्विः 3.2.62 |
| प्राचां नगरान्ते 7.3.24 | फणां च सप्ता ० 6.4.125 | बहुव्रीहौ सक्थ्य ० 5.4.113 | भञ्जभासमि ० 3.2.161 |
| प्राचां ष्फ तिद्धतः 4.1.17 | , फले लुक् 4.3.163 | बहुषु बहुवचनम् 1.4.21 | भञ्जेश्च चिणि 6.4.33 |
| प्राचामवृद्धात् ॰ 4.1.160 |) फलेग्रहिरा ० 3.2.26 | बहोर्नञ्बदुत्त ० 6.2.175 | भय्यप्रवय्ये च ० 6.1.83 |
| प्राचामुपादेर ॰ 5.3.80 |) फल्गुनीप्रोष्ट ० 1.2.60 | बहोर्लीपो भू ० 6.4.158 | भर्गात् त्रैगर्ते 4.1.111 |
| प्राणभृजाति ० 5.1.129 | भाण्टाहृति ० 4.1.150 | बहृचः इञः ० 2.4.66 | भवतष्टक्छसौ 4.2.115 |
| प्राणिरजतादि ॰ 4.3.154 | | बह्रचः कूपेषु 4.2.73 | भवतेरः 7.4.73 |
| प्राणिस्थादा ० 5.2.96 | | बह्रचो मनुष्य ० 5.3.78 | भविष्यति गम्यादयः 3.3.3 |
| प्रातिपदिकान्त ० 8.4.11 | _ ਜ਼ _ | बह्वचोऽन्तोदा ० 4.3.67 | भविष्यति मर्या ॰ 3.3.136 |
| प्रातिपदिकार्थ ० 2.3.46 | , 20 | बह्वच्पूर्वपदाट्टच् 4.4.64 | भवे छन्दिस 4.4.110 |
| प्राद्यः 1.4.58 | का री व्यक्तीक ी ८ १ १ ४ | बह्दन्यतरस्याम् 6.2.30 | भव्यगेयप्रवच • 3.4.68 |
| प्रादस्वाङ्गं ० 6.2.183 | , बन्धुनि बहुव्रीहो 6.1.14 | बह्दल्पार्थाच्छस् ० 5.4.42 | |
| | | | |

भा

| भस्त्राऽऽदिभ्यः ष्टन् 4.4.16 | भूषणेऽलम् 1.4.64 | मनः 3.2.82 | मान्बधदा ० 3.1.6 |
|----------------------------------|---------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------|
| भस्त्रेषाऽजाज्ञा ० 7.3.47 | भूसुवोस्तिङि 7.3.88 | मनः 4.1.11 | मायायामण् 4.4.124 |
| भस्य 6.4.129 | भृञामित् 7.4.76 | मनसः संज्ञायाम् 6.3.4 | मालाऽऽदीनां च 6.2.88 |
| भस्य टेर्लोपः 7.1.88 | भृञोऽसंज्ञायाम् 3.1.112 | मनुष्यत ० 4.2.134 | मासाद्वयसि ० 5.1.81 |
| भागाद्यच 5.1.49 | भृशादिभ्यो ० 3.1.12 | मनोरौ वा 4.1.38 | मितनखे च 3.2.34 |
| भावकर्म्मणोः 1.3.13 | भोज्यं भक्ष्ये 7.3.69 | मनोर्जाताव ० 4.1.161 | मितां ह्रस्वः 6.4.92 |
| भावलक्षणे ० 3.4.16 | भोभगोअघो ० 8.3.17 | मन्किन्व्या ० 6.2.151 | मित्रे चर्षों 6.3.130 |
| भाववचनाश्च 3.3.11 | भौरिक्याद्येषु ० 4.2.54 | मन्त्रे घसह्ररणश ० 2.4.80 | मिथ्योपपदात् ० 1.3.71 |
| भावे 3.3.18 | भ्यसोऽभ्यम् 7.1.30 | मन्त्रे वृषेषपच ० 3.3.96 | मिदचोऽन्त्यात्परः 1.1.47 |
| भावे च 4.4.144 | भ्रस्जो रोप ० 6.4.47 | मन्त्रे श्वेतवहौ ० 3.2.71 | मिदेर्गुणः 7.3.82 |
| भावेऽनुपसर्गस्य 3.3.75 | भ्राजभासधुर्वि ० 3.2.177 | मन्त्रे सोमाश्वे ० 6.3.131 | मिश्रं चानुप ० 6.2.154 |
| भाषायां ० 3.2.108 | भ्राजभासभाष ० 7.4.3 | मन्त्रेष्वाङ्या ० 6.4.141 | मीनातिमि ० 6.1.50 |
| भासनोपसम्भा ० 1.3.47 | भ्रातरि च ० 4.1.164 | मन्थौदनसक्तु ॰ 6.3.60 | मीनातेर्निगमे 7.3.81 |
| भिक्षाऽऽदिभ्योऽण् 4.2.38 | भ्रातुर्व्यच 4.1.144 | मन्यकर्मण्यना ० 2.3.17 | मुखं स्वाङ्गम् 6.2.167 |
| भिक्षासेना ॰ 3.2.17 | भ्रातृपुत्रौ स्व ० 1.2.68 | मपर्यन्तस्य ७.२.९१ | मुखनासिका ० 1.1.8 |
| भित्तं शकलम् 8.2.59 | भ्रुवो वुक् च 4.1.125 | मय उ ञो वो वा 8.3.33 | मुचोऽकर्म ० 7.4.57 |
| भिद्योद्यौ नदे 3.1.115 | - म - | मयट् च 4.3.82 | मुण्डमिश्रश्र ० 3.1.21 |
| भियः कुक्कुकनौ 3.2.174 | मघवा बहुलम् 6.4.128 | मयद्वैतयोर्भाषा ० 4.3.143 | मुद्गादण् 4.4.25 |
| भियो हेतुभये षुक् 7.3.40 | मड्डुकझझराद ० 4.4.56 | मयतेरिदन्यत ० 6.4.70 | मू र्तौ घनः 3.3.77 |
| भियोऽन्य ॰ 6.4.115 | मतजनहलात् ० 4.4.97 | मयूरव्यंसकादयश्च 2.1.72 | मूलमस्याबर्हि 4.4.88 |
| भीत्रार्थानां भयहेतुः 1.4.25 | मतिबुद्धिपूजा ० 3.2.188 | मये च 4.4.138 | मृजेर्विभाषा 3.1.113 |
| भीमादयोऽपादाने 3.4.74 | मतुवसो रु 8.3.1 | मस्करमस्करि ० 6.1.154 | मृजेर्वृद्धिः 7.2.114 |
| भीरोः स्थानम् 8.3.81 | मतोः पूर्वमात् ॰ 6.1.219 | मस्जिनशोर्झलि 7.1.60 | मृडमृदगु ० 1.2.7 |
| भीस्म्योर्हेतुभये 1.3.68 | मतोश्च बहुजङ्गात् 4.2.72 | महाकुलादञ्खञौ 4.1.141 | मृदस्तिकन् 5.4.39 |
| भीह्रीभृहु मद ० 6.1.192 | मतौ च 4.4.136 | महान् व्रीह्यपरा ० 6.2.38 | मृषस्तितिक्षायाम् 1.2.20 |
| भीह्रीभृहुवां श्रुवच 3.1.39 | मतौ च्छः ० 5.2.59 | महाराजप्रोष्ठ • 4.2.35 | मेघर्तिभयेषु कृञः 3.2.43 |
| भुजन्यु ज्जौ ० 7.3.61 | मतौ बह्वचो ० 6.3.119 | महाराजाहुञ् 4.3.97 | मेर्निः 3.4.89 |
| भुजोऽनवने 1.3.66 | मत्वर्थे मासत ० 4.4.128 | महेन्द्राद्धाणौ च 4.2.29 | मो नो धातोः 8.2.64 |
| भुवः प्रभवः 1.4.31 | मदोऽनुपसर्गे 3.3.67 | माङि लुङ् 3.3.175 | मो राजि समः • 8.3.25 |
| भुवः संज्ञा ० 3.2.179 | मद्रवृज्योः कन् 4.2.131 | माणवचरका ० 5.1.11 | मोऽनुस्वारः 8.3.23 |
| भुवश्च 3.2.138 | मद्रात् परिवापणे 5.4.67 | मातरपितरा ० 6.3.32 | म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च 1.3.61 |
| भुवश्च 4.1.47 | मद्रेभ्योऽञ् 4.2.108 | मातुःपितुभ्यां • 8.3.85 | म्बोश्च 8.2.65 |
| भुवश्च महा • 8.2.71 | मधुबभ्र्वोब्राह्म ॰ 4.1.106 | मातुरुत् स ० 4.1.115 | - य - |
| भुवो भावे 3.1.107 | मधोः 4.4.139 | मातृपितृभ्यां स्वसा 8.3.84 | यः सौ 7.2.110 |
| भुवो वुग्लु ० 6.4.88 | मधोर्ज च 4.4.129 | मातृष्वसुश्च 4.1.134 | यङश्चाप् 4.1.74 |
| भूतपूर्वे चरट् 5.3.53 | मध्याद्वरौ 6.3.11 | मात्रोपज्ञोपक्रम ० 6.2.14 | यङि च 7.4.30 |
| भूते 3.2.84 | मध्यान्मः 4.3.8 | माथोत्तरपदपद ० 4.4.37 | यङो वा 7.3.94 |
| भूते च 3.3.140 | मध्येपदेनिवचने च 1.4.76 | मादुपधायाश्च ० 8.2.9 | यङोऽचि च 2.4.74 |
| भूतेऽपि दश्य न्ते 3.3.2 | मध्वादिभ्यश्च 4.2.86 | मानपश्वङ्गयोः ० 5.3.51 | यचि भम् 1.4.18 |
| भूवादयो धातवः 1.3.1 | 1.2.00 | माने वयः 4.3.162 | |
| | | | |

| ٦, |
|----|
| • |
| - |

| यच्चयत्रयोः | 3.3.148 | यजजपदशां ० 3 | .2.166 | यजध्वैनमिति च | 7.1.43 | यजयाचयत ० | 3.3.90 |
|---------------------|-----------------|--------------------------------|--------|---|---------|------------------------------------|---------|
| यजयाचरु ० | 7.3.66 | याज्याऽन्तः | 8.2.90 | योऽचि | 7.2.89 | रात्र्यहस्सं ० | 5.1.87 |
| यजुष्युरः | 6.1.117 | याडापः 7 | .3.113 | योगप्रमाणे च ० | 1.2.55 | राधीक्ष्योर्च ० | 1.4.39 |
| यजुष्येकेषाम् | 8.3.104 | याप्ये पाशप् | 5.3.47 | योगाद्यच | 5.1.102 | राधो हिंसायाम् | 6.4.123 |
| यजेश्च करणे | 2.3.63 | यावति विन्दजीवोः | 3.4.30 | योजनं गच्छति | 5.1.74 | रायो हिल | 7.2.85 |
| यज्ञकर्मण्य ० | 1.2.34 | यावत्पुरानिपात ० | 3.3.4 | योपधाद्गुरू ० | 5.1.132 | राह्रोपः | 6.4.21 |
| यज्ञर्त्विग्भ्यां ० | 5.1.71 | यावद्वधारणे | 2.1.8 | - र - | | राष्ट्रावारपाराद्धखौ | 4.2.93 |
| यज्ञे समि स्तुवः | 3.3.31 | यावद्यथाभ्याम् | 8.1.36 | र ऋतो हला ० | 6.4.161 | रि च | 7.4.51 |
| यञञोश्च | 2.4.64 | यावादिभ्यः कन् | 5.4.29 | रंकोरमनुष्ये ० | 4.2.100 | रिक्ते विभाषा | 6.1.208 |
| यञश्च | 4.1.16 | यासुट् परस्मै ० 3 | .4.103 | रक्ते | 5.4.32 | रिङ् शयग्लिङ्खु | 7.4.28 |
| यञिञोश्च | 4.1.101 | यीवर्णयोदीं ० | 7.4.53 | रक्षति | 4.4.33 | रीगृदुपधस्य च | 7.4.90 |
| यतश्च निर्धारणम् | 2.3.41 | युक्तारोह्यादयश्च | 5.2.81 | रक्षोयातूनां हननी | | रीङ् ऋतः | 7.4.27 |
| यतोऽनावः | 6.1.213 | युक्ते च | 5.2.66 | रजःकृष्यासुति ० | | रुग्रिकौ च लुकि | 7.4.91 |
| यथाऽसादृश्ये | 2.1.7 | युग्यं च पत्ने 3 | .1.121 | रजेश्च रजेश्च | 6.4.26 | रुच्यर्थानां प्री ० | 1.4.33 |
| यथातथयथा ० | 7.3.31 | युजेरसमासे | 7.1.71 | रथवदयोश <u>्च</u> | 6.3.102 | रुजार्थानां भा ० | 2.3.54 |
| यथातथयोर ० | 3.4.28 | युप्जुवोर्दीर्घ ० | 5.4.58 | रथाद्यत् | 4.3.121 | रुद्विदमुषग्र ० | 1.2.8 |
| यथामुखसंमुख ० | 5.2.6 | युवा खलति ० | 2.1.67 | रदाभ्यां निष्ठातो ० | | रुद्श्च पञ्चभ्यः | 7.3.98 |
| यथाविध्यनु ० | 3.4.4 | युवाल्पयोः ० | 5.3.64 | रधादिभ्यश्च | 7.2.45 | रुदादिभ्यः सा ० | 7.2.76 |
| यथासङ्ख्यम ० | 1.3.10 | युवावौ द्विवचने | 7.2.92 | रपापुः पद्य रधिजभोरचि | 7.1.61 | रुधादिभ्यः श्रम् | 3.1.78 |
| यथास्वे यथायथा | ₹ 8.1.14 | युवोरनाकौ | 7.1.1 | रभेरशब्लिटोः | 7.1.63 | रुष्यमत्वरसं ० | 7.2.28 |
| यद्तदेतेभ्यः ० | 5.2.39 | युष्मत्तत्ततक्षुः ० 8 | 3.103 | रलो व्युपधा ० | 1.2.26 | रुहः पोऽन्य ० | 7.3.43 |
| यद्वितुपरं छन्दस् | 8.1.56 | युष्मदस्मदोः ० | 8.1.20 | रश्मो च | 3.3.53 | रूपादाहत ० | 5.2.120 |
| यद्वृत्तान्नित्यं | 8.1.66 | युष्मदस्मदो ० | 7.2.86 | रषाभ्यां नो णः ० | 8.4.1 | रेवतीजगती ० | 4.4.122 |
| यमः समुपनिविष् | J 3.3.63 | युष्मदस्मदोर ० | 4.3.1 | रसादिभ्यश्च | 5.2.95 | रेवत्यादिभ्यष्टक् | 4.1.146 |
| यमरमनमातां ० | 7.2.73 | युष्मद रम दोर्ङसि 6 | .1.211 | राजदन्तादिषु ० | 2.2.31 | रैवतिकादि ० | 4.3.131 |
| यमो गन्धने | 1.2.15 | युष्मदस्मद्यां ० | 7.1.27 | राजनि युधिकृञः | 3.2.95 | रो रि | 8.3.14 |
| ययतोश्चातदर्थे | 6.2.156 | युष्मद्युपपदे ० 1 | 4.105 | राजान युवकुणः राजन्यबहुवचन व | | रोऽसुपि | 8.2.69 |
| यरोऽनुनासिके ० | 8.4.45 | यू स्त्र्याख्यौ नदी | 1.4.3 | राजन्यादिभ्यो वुञ | | रोः सुपि | 8.3.16 |
| यवयवकषष्टिकाद | त् 5.2.3 | यूनश्च कुत्सायाम् 4 | .1.167 | राजन्वान् सौराज्य | | रोगाख्यायां ० | 3.3.108 |
| यश्च यङः | 3.2.176 | यूनस्तिः | 4.1.77 | राजश्वशुराद्यत् | 4.1.137 | रोगाचापनयने | 5.4.49 |
| यसोऽनुपसर्गात् | 3.1.71 | यूनि लुक् | 4.1.90 | राजसूयसूर्यम् ० | 3.1.114 | रोणी | 4.2.78 |
| यस्कादिभ्यो गोत्रे | 2.4.63 | यूयवयौ जिस | 7.2.93 | राजातूपसूपमृ ज | 6.2.59 | रोपधेतोः प्राचाम् | 4.2.123 |
| यस्मात् प्रत्यय ० | 1.4.13 | येच 6 | .4.109 | राजा च प्रशं ० | 6.2.63 | र्वोरुपधाया ० | 8.2.76 |
| यस्माद्धिकं ० | 2.3.9 | ये च तिद्धते | 6.1.61 | राजाऽहस्स ० | 5.4.91 | - ਲ - | |
| यस्य च भावेन ० | 2.3.37 | ये चाभावकर्मणोः 6 | .4.168 | राजाऽहरस | 4.2.140 | लः कर्मणि ०. | 3.4.69 |
| यस्य चायामः | 2.1.16 | ये यज्ञकर्मणि | 8.2.88 | राज्ञ. या प रात् सस्य | 8.2.24 | लः परस्मैपदम् | 1.4.99 |
| यस्य विभाषा | 7.2.15 | ये विभाषा | 6.4.43 | रात् सस्य रात्राह्वाहाः पुंसि | 2.4.29 | लः परस्मपदम् लक्षणहेत्वोः ० | 3.2.126 |
| यस्य हलः | 6.4.49 | येन विधिस्त ० | 1.1.72 | रात्राहाहाः पुत्त रात्रेः कृति विभाष | | लक्षणहत्याः ॰ लक्षणे जायाप ० | 3.2.126 |
| यस्येति च | 6.4.148 | येनाङ्गविकारः | 2.3.20 | रात्रः कृति विमाप रात्रेश्चाजसौ | 4.1.31 | लक्षण जायाय ० लक्षणेत्थम्भूता ० | 1.4.90 |
| | | येषां च विरोधः ० | | रानवाजसा | 4.1.31 | रञ्जापत्यम्मूता ० | 1.4.90 |

| लक्षणेनाभिप्र ० 2.1.14 | लुङ् 3.2.110 | वञ्चेर्गतौ 7.3.63 | वशं गतः 4.4.86 |
|---------------------------------------|---|---------------------------------|------------------------------|
| लङः शाकटा ० 3.4.111 | <i>ন্তুভ্নভ্নৃ</i> ० 6.4.71 | वतण्डाच 4.1.108 | वश्चास्यान्यत ० 6.1.39 |
| ल टः शतृशान ० 3.2.124 | लुङ्गनोर्घसू 2.4.37 | वतोरिङ्वा 5.1.23 | वसतिक्षुधोरिट् 7.2.52 |
| लट् स्मे 3.2.118 | लुटः प्रथमस्य ० 2.4.85 | वतोरिथुक् 5.2.53 | वसन्ताच 4.3.20 |
| ਲਮੇश 7.1.64 | लुटि च क्रुपः 1.3.93 | वत्सरान्ताच्छ ० 5.1.91 | वसन्तादिभ्यष्टक् 4.2.63 |
| लवणाहुञ् ४.4.52 | लुपसद्चरज ० 3.1.24 | वत्सशालाऽभि ॰ 4.3.36 | वसुस्रंसुध्वं ॰ 8.2.72 |
| लवणाल्लुक् ४.४.२४ | लुपि युक्तवद्य ० 1.2.51 | वत्सांसाभ्यां ० 5.2.98 | वसोः समूहे च 4.4.140 |
| लशक्वतिद्वेते 1.3.8 | लुप् च 4.3.166 | वत्सोक्षाश्वर्ष ० 5.3.91 | वसोः सम्प्र ० 6.4.131 |
| लषपतपदस्था ॰ 3.2.154 | लुबविशेषे 4.2.4 | वदः सुपि क्यप् च 3.1.106 | वस्तेर्हञ् 5.3.101 |
| लस्य 3.4.77 | लुब्योगाप्रख्यानात् 1.2.54 | वदव्रजहल ० 7.2.3 | वस्नक्रयविक्रयाट्टन् 4.4.13 |
| लाक्षारोचनाट् ठक् 4.2.2 | लुभो विमोचने 7.2.54 | वनं पुरगामिश्र ० 8.4.4 | वस्त्रद्रव्याभ्यां ॰ 5.1.51 |
| लिङः सलोपो ० 7.2.79 | लुम्मनुष्ये 5.3.98 | वनं समासे 6.2.178 | वस्वेकाजाद्धसाम् 7.2.67 |
| लिङर्थे लेट् 3.4.7 | लृटः सद् वा 3.3.14 | वनगिर्योः ० 6.3.117 | वहश्च 3.2.64 |
| लिङस्सीयुट् 3.4.102 | लृट् शेषे च 3.3.13 | वनो र च 4.1.7 | वहाभ्रे लिहः 3.2.32 |
| लिङाशिषि 3.4.116 | लेटोऽडाटौ 3.4.94 | वन्दिते भ्रातुः 5.4.157 | वह्यं करणम् 3.1.102 |
| लिङ् च 3.3.159 | लोकसर्वलोकाट्ठञ् 5.1.44 | वमोर्चा 8.4.23 | वा क्यषः 1.3.90 |
| लिङ् चोर्ध्वमौह्र ॰ 3.3.9 | लोटो लङ्घत् 3.4.85 | वयसि च 3.2.10 | वा गमः 1.2.13 |
| लिङ् चोर्घ्व ॰ 3.3.164 | लोट् च 3.3.162 | वयसि ॰ 5.4.141 | वा घोषमिश्रशब्देषु 6.3.56 |
| लिङ् यदि 3.3.168 | लोट् च 8.1.52 | वयसि पूरणात् 5.2.130 | वा चित्तविरागे 6.4.91 |
| लिङ्निमित्ते • 3.3.139 | लोडर्थलक्षणे च 3.3.8 | वयसि प्रथमे 4.1.20 | वा छन्दिस 3.4.88 |
| लिङ्याशिष्यङ् 3.1.86 | लोपः पिबतेरी ० 7.4.4 | वयस्यासु ० 4.4.127 | वा छन्दिस 6.1.106 |
| लिङ्किचावात्म ॰ 1.2.11 | लोपः शाकल्यस्य 8.3.19 | वरणादिभ्यश्च 4.2.82 | वा जाते 6.2.171 |
| लिङ्किचोरात्म ० 7.2.42 | लोपश्चास्यान्य ॰ 6.4.107 | वर्गान्ताच 4.3.63 | वा जॄभ्रमुत्रसाम् 6.4.124 |
| लिटः कानज्वा 3.2.106 | लोपस्त आत्म ० 7.1.41 | वर्ग्यादयश्च 6.2.131 | वा दान्तशान्त ० 7.2.27 |
| लिटस्तझ ॰ 3.4.81 | लोपे विभाषा 8.1.45 | वर्चस्केऽवस्करः 6.1.148 | वा दुहमुहष्णु ० 8.2.33 |
| लिटि धातो ॰ 6.1.8 | लोपो यि 6.4.118 | वर्णः वर्णेष्वनेते 6.2.3 | वा नपुंसकस्य 7.1.79 |
| लिटि वयो यः 6.1.38 | लोपो व्योर्वलि 6.1.66 | वर्णदृढादिभ्यः ० 5.1.123 | वा निंसनिक्ष ० 8.4.33 |
| लिट् च 3.4.115 | लोमादिपा ॰ 5.2.100 | वर्णादनुदात्ता ० 4.1.39 | वा पदान्तस्य 8.4.59 |
| लिट्यन्यतरस्याम् २.४.४० | लोहितादिडा ॰ 3.1.13 | वर्णाद्वह्मचारिणि 5.2.134 | वा बहूनां ० 5.3.93 |
| लिट्यभ्यास ॰ 6.1.17 | लोहितान्मणौ 5.4.30 | वर्णे चानित्ये 5.4.31 | वा भावकरणयोः 8.4.10 |
| लिड्यङोश्च 6.1.29 | ल्यपि च 6.1.41 | वर्णो वर्णेन 2.1.69 | वा भुवनम् 6.2.20 |
| ਲਿੰਗਿ 6.1.193 | ल्यपि लघुपूर्वात् 6.4.56 | वर्णौ वुक् 4.2.103 | वा भ्राशभ्ला ॰ 3.1.70 |
| लिपिसिचिह्नश्च 3.1.53 | ल्युट् च 3.3.115 | वर्तमानसामी ० 3.3.131 | वा यौ 2.4.57 |
| लिप्स्यमानसिद्धौ च 3.3.7 | ल्वादिभ्यः 8.2.44 | वर्तमाने लट् 3.2.123 | वा लिटि 2.4.55 |
| लियः सम्मानन ॰ 1.3.70 | - व - | वर्षप्रमाण ० 3.4.32 | वा ल्यपि 6.4.38 |
| <mark>लीलोर्नुग्लुकाव० 7.3.3</mark> 9 | | वर्षस्याभविष्यति 7.3.16 | वा शरि 8.3.36 |
| लुक् तिद्धतलुकि 1.2.49 | वच उम् 7.4.20 वचिस्वपियजा ० 6.1.15 | वर्षाभ्यष्ठक् 4.3.18 | वा शोकष्यञ्रोगेषु 6.3.51 |
| लुक् स्त्रियाम् 4.1.109 | | वर्षाभ्वश्च 6.4.84 | वा षपूर्वस्य निगमे 6.4.9 |
| <mark>लुग्वा दुहदिहलि ०</mark> 7.3.73 | वचोऽशब्दसं ० 7.3.67 विञ्चलुञ्च्यृतश्च 1.2.24 | वर्षाह्रुक् च 5.1.88 | वा संज्ञायाम् 5.4.133 |
| लुङि च 2.4.43 | પાચછુસ્કૃતવ્ય 1.2.24 | वले 6.3.118 | वा सुप्यापिश्रलेः 6.1.92 |
| | | | . |

| | ઝ ષ્ટાધ્યાયા | सूत्रसूचा | () |
|-------------------------------|---------------------------|-------------------------------|----------------------------------|
| वा ह च च्छन्दिस 5.3.13 | वाऽऽक्रोशदैन्ययोः 6.4.61 | वाऽऽमि 1.4.5 | वाऽऽहितास्यादिषु 2.2.37 |
| वाऽन्यस्मिन् ० 4.1.165 | विधिनिमन्त्र • 3.3.161 | विभाषा द्वितीया ० 7.3.115 | विभाषाऽमनुष्ये 4.2.144 |
| वाऽन्यस्य सं ० 6.4.68 | विध्यत्यधनुषा 4.4.83 | विभाषा धातौ ० 3.3.155 | विभाषाऽवरस्य 5.3.41 |
| वाऽम्शसोः 6.4.80 | विध्वरुषोस्तुदः 3.2.35 | विभाषा धेट्श्योः 3.1.49 | विभाषितं वि ० 8.1.74 |
| वाऽवसाने 8.4.56 | विनञ्भ्यां ० 5.2.27 | विभाषा परा ० 5.3.29 | विभाषितं सो ० 8.1.53 |
| वाऽसरूपो ० 3.1.94 | विनयादिभ्यष्ठक् 5.4.34 | विभाषा परेः 6.1.44 | विभाषेटः 8.3.79 |
| वाकिनादीनां ० 4.1.158 | विन्दुरिच्छुः 3.2.169 | विभाषा पुरुषे 6.3.106 | विभाषोत्पुच्छे 6.2.196 |
| वाक्यस्य टेः ० 8.2.82 | विन्मतोर्छुक् 5.3.65 | विभाषा पूर्वा ०म् 4.3.24 | विभाषोदरे 6.3.88 |
| वाक्यादेरामन्त्रि • 8.1.8 | विपराभ्यां जेः 1.3.19 | विभाषा पृष्ट • 8.2.93 | विभाषोपप • 1.3.77 |
| वाचंयमपुरन्दरौ च 6.3.69 | विपूयविनीय ० 3.1.117 | विभाषा फा ० 4.2.23 | विभाषोपयमने 1.2.16 |
| वाचि यमो व्रते 3.2.40 | विप्रतिषिद्धं ० 2.4.13 | विभाषा बहो ० 5.4.20 | विभाषोपसर्गे 2.3.59 |
| वाचो ग्मिनिः 5.2.124 | विप्रतिषेधे परं ० 1.4.2 | विभाषा भा ० 7.2.17 | विभाषोणींः 1.2.3 |
| वाचो व्याहृता ० 5.4.35 | विप्रसम्भ्यो ॰ 3.2.180 | विभाषा भाषायाम् 6.1.181 | विभाषोशीनरेषु 4.2.118 |
| वातातिसारा ० 5.2.129 | विभक्तिश्च 1.4.104 | विभाषा रोगा ० 4.3.13 | विभाषोषधि ० 8.4.6 |
| वान्तो यि प्रत्यये 6.1.79 | विभाषर्जो ० 6.4.162 | विभाषा लीयतेः 6.1.51 | विमुक्तादिभ्योऽण् 5.2.61 |
| वामदेवाङ्ड्यङ्ड्यौ ४.२.९ | विभाषा 2.1.11 | विभाषा लुङ्लृङोः 2.4.50 | विरामोऽवसानम् 1.4.110 |
| वाय्वृतुपित्रुष ० 4.2.31 | विभाषा अञ्चे ० 5.4.8 | विभाषा वर्ष ० 6.3.16 | विशाखयोश्च 1.2.62 |
| वारणार्थानामी ० 1.4.27 | विभाषा कथ ० 3.3.143 | विभाषा विप्रलापे 1.3.50 | विशाखाऽऽषा ० 5.1.110 |
| वासुदेवार्जुना ० 4.3.98 | विभाषा कदाकर्ह्योः 3.3.5 | विभाषा विवधात् 4.4.17 | विशिपतिप ॰ 3.4.56 |
| वाह ऊठ् 6.4.132 | विभाषा कार्षा ० 5.1.29 | विभाषा वृक्ष ० 2.4.12 | विशिष्टलिङ्गो ० 2.4.7 |
| वाहः 4.1.61 | विभाषा कुरु ० 4.2.130 | विभाषा वे ० 6.1.215 | विशेषणं विशे ० 2.1.57 |
| वाहनमाहितात् 8.4.8 | विभाषा कृञि 1.4.72 | विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः 7.4.96 | विशेषणानां ० 1.2.52 |
| वाहीकग्रामेभ्यश्च 4.2.117 | विभाषा कृञि 1.4.98 | विभाषा रया ० 5.4.144 | विश्वस्य • 6.3.128 |
| विंशतिकात् खः 5.1.32 | विभाषा कृवृषोः 3.1.120 | विभाषा श्वेः 6.1.30 | विषयो देशे 4.2.52 |
| विंशतित्रिंशन्यां ० 5.1.24 | विभाषा गम ० 7.2.68 | विभाषा सपूर्वस्य 4.1.34 | विष्किरः शकु ० 6.1.150 |
| विंशत्यादिभ्य ० 5.2.56 | विभाषा गुणे ० 2.3.25 | विभाषा समीपे 2.4.16 | विष्यग्देवयो ० 6.3.92 |
| विकर्णकुषीत ० 4.1.124 | विभाषा ग्रहेः 3.1.143 | विभाषा साकाङ्क्षे 3.2.114 | विसर्जनीयस्य सः 8.3.34 |
| विकर्णशुङ्गच्छ ० 4.1.117 | विभाषा घ्राधे ० 2.4.78 | विभाषा सा ॰ 5.4.52 | विसारिणो मत्स्ये 5.4.16 |
| विकुशमिपरि ० 8.3.96 | विभाषा ङि ॰ 4.136 | विभाषा सुपो ० 5.3.68 | विस्पष्टादीनि ० 6.2.24 |
| विचार्यमाणानाम् 8.2.97 | विभाषा चत्वा ० 6.3.49 | विभाषा सृजिदृशोः 7.2.65 | वीरवीर्यों च 6.2.120 |
| विज इट् 1.2.2 | विभाषा चिण्ण ० 7.1.69 | विभाषा सेना ० 2.4.25 | बुञ्छण्कठ ० 4.2.80 |
| विजुपे छन्दिस 3.2.73 | विभाषा चेः 7.3.58 | विभाषा स्वसृपत्योः 6.3.24 | वृकज्येष्ठाभ्यां ० 5.4.41 |
| विद्वनोरनुना ० 6.4.41 | विभाषा छन्दिस 1.2.36 | विभाषा हवि ० 5.1.4 | वृकाट्टेण्यण् 5.3.115 |
| वित्तो भोगप्र ० 8.2.58 | विभाषा छन्दिस 6.2.164 | विभाषाऽऽख्या ० ३.३.११० | वृक्षासनयोर्विष्टरः 8.3.93 |
| विदाङ्कर्वन्तिव ० 3.1.41 | विभाषा छन्दिस 7.4.44 | विभाषाऽऽङि ॰ 3.3.50 | वृणोतेराच्छादने 3.3.54 |
| विदिभिदिच्छि ० 3.2.162 | विभाषा जिस 1.1.32 | विभाषाऽऽपः 6.4.57 | वृत्तिसर्गता ० 1.3.38 |
| विदूराञ्ज्यः 4.3.84 | विभाषा तिलमा • 5.2.4 | विभाषाऽकर्मकात् 1.3.85 | वृद्धस्य च 5.3.62 |
| विदेः शतुर्वसुः 7.1.36 | विभाषा तृतीया ० 7.1.97 | विभाषाऽग्रे ० 3.4.24 | वृद्धस्य च पू ० 4.1.166 |
| विदो लटो वा 3.4.83 | विभाषा तृन्नन्न ० 6.2.161 | विभाषाऽध्यक्षे 6.2.67 | वृद्धाच्छः 4.2.114 |
| विद्यायोनिसंब ० 4.3.77 | विभाषा दिक्स ० 1.1.28 | विभाषाऽभ्य ० 6.1.26 | वृद्धा ट्टक् सौ ० 4.1.148 |
| | | | |

वृ

| वृद्धात् प्राचाम् | 4.2.120 | व्यन् सपत्ने | 1.1.145 | शमिता यज्ञे | 6.4.54 | शीङः सार्व ० | 7.4.21 |
|----------------------|-----------|---------------------------------------|---------|--------------------|------------------|--------------------|---------|
| वृद्धादकेका ० | 4.2.141 | व्यवहिताश्च | 1.4.82 | शमित्यष्टा ० | 3.2.141 | शीङो रुट् | 7.1.6 |
| वृद्धिनिमित्त ० | 6.3.39 | व्यवहृपणोः ० | 2.3.57 | शम्याः ष्लञ् | 4.3.142 | शीतोष्णाभ्यां ० | 5.2.72 |
| वृद्धिरादैच् | 1.1.1 | व्यवायिनो ० (| 6.2.166 | शयवासवासि ० | 6.3.18 | शीर्षंश्छन्दसि | 6.1.60 |
| वृद्धिरेचि | 6.1.88 | व्यश्च | 6.1.43 | शरद्वच्छुनक ० | 4.1.102 | शीर्षच्छेदाद्यच | 5.1.65 |
| वृद्धिर्यस्याचा ० | 1.1.73 | व्याङ्वरिभ्यो रमः | 1.3.83 | शरादीनां च | 6.3.120 | शीलम् | 4.4.61 |
| वृद्धेत्कोसला ० | 4.1.171 | व्याहरति मृगः | 4.3.51 | शरीरावयवाच | 4.3.55 | शुक्राद्धन् | 4.2.26 |
| वृद्धो यूना त ० | 1.2.65 | व्युपयोः शेतेः ० | 3.3.39 | शरीरावयवाद्यत् | 5.1.6 | शुण्डिकादि ० | 4.3.76 |
| वृद्धः स्यसनोः | 1.3.92 | व्युष्टादिभ्योऽण् | 5.1.97 | शरोऽचि | 8.4.49 | शुभ्रादिभ्यश्च | 4.1.123 |
| वृन्दारकनाग ० | 2.1.62 | व्योर्लघुप्रय ० | 8.3.18 | शर्कराऽऽदि ० | 5.3.107 | शुषः कः | 8.2.51 |
| वृषाकप्यग्निकु ० | 4.1.37 | व्रजयजोर्भावे क्यप् | 3.3.98 | शर्कराया वा | 4.2.83 | शुष्कचूर्णरू ० | 3.4.35 |
| वृषादीनां च | 6.1.203 | व्रते | 3.2.80 | शर्परे विसर्जनीयः | 8.3.35 | शुष्कधृष्टौ | 6.1.206 |
| वॄतो वा | 7.2.38 | व्रश्चभ्रस्जसृ ० | 8.2.36 | शर्पूर्वाः खयः | 7.4.61 | शूद्राणामनि ० | 2.4.10 |
| वेः पादविहरणे | 1.3.41 | व्रातच्फञोर ० 🛚 : | 5.3.113 | शल इगुपधा ० | 3.1.45 | शूर्पादञन्य ० | 5.1.26 |
| वेः शब्दकर्मणः | 1.3.34 | व्रातेन जीवति | 5.2.21 | शलालुनो ० | 4.4.54 | शूलात् पाके | 5.4.65 |
| वेः शालच्छङ्कटर | बौ 5.2.28 | व्रीहिशाल्योर्ढक् | 5.2.2 | शश्छोऽटि | 8.4.63 | शूलोखाद्यत् | 4.2.17 |
| वेः स्कन्देरनि ० | 8.3.73 | व्रीहेः पुरोडा रो 4 | 1.3.148 | शसो न | 7.1.29 | शृङ्खलमस्य ० | 5.2.79 |
| वेः स्कभ्नातेर्नित्य | म् 8.3.77 | वीह्यादिभ्यश्च | 5.2.116 | शा हौ | 6.4.35 | शृङ्गमवस्थायां च | 6.2.115 |
| वेञः | 6.1.40 | - श - | | शाकलाद्वा | 4.3.128 | श्रतं पाके | 6.1.27 |
| वेञो वियः | 2.4.41 | शकटादण् | 4.4.80 | शाखाऽऽदि ० | 5.3.103 | शृवन्द्योरारुः | 3.2.173 |
| वेतनादिभ्यो ० | 4.4.12 | राकटाद्य शकधृषज्ञा ० | 3.4.65 | शाच्छासाह्वा ० | 7.3.37 | शृदृप्रां हस्वो वा | 7.4.12 |
| वेत्तेर्विभाषा | 7.1.7 | | 3.4.12 | शाछोरन्यतरस्या | प 7.4.41 | शे | 1.1.13 |
| वेरपृक्तस्य | 6.1.67 | | 3.4.12 | शाणाद्वा | 5.1.35 | शे मुचादीनाम् | 7.1.59 |
| वेशन्तिहम ० | 4.4.112 | शाकालङ् प शकिसहोश्च | 3.1.99 | शात् | 8.4.44 | शेवलसुपरिवि ० | 5.3.84 |
| वेशोयशआदे ० | 4.4.131 | शाकत्त्वाश्च शक्तियष्ट्योरीकक् | 4.4.59 | शारदेअनार्तवे | 6.2.9 | शेश्छन्दिस ० | 6.1.70 |
| वेश्च स्वनो भोजन | 8.3.69 | शासाम्बद्धारामाम् शक्तौ हस्ति ० | 3.2.54 | शार्ङ्गरवाद्यञो ङी | न् 4.1.73 | शेषात् कर्तरि ० | 1.3.78 |
| वैतोऽन्यत्र | 3.4.96 | शाम हास्स ^७ शण्डिकादि ० | 4.3.92 | शालीनकौपीने ० | 5.2.20 | शेषाद्विभाषा | 5.4.154 |
| वैयाकरणा ० | 6.3.7 | शतमानविंश ० | 5.1.27 | शास इदङ्हलोः | 6.4.34 | शेषे | 4.2.92 |
| वैवावेति च ० | 8.1.64 | | 5.2.119 | शासिवसिघ ० | 8.3.60 | शेषे प्रथमः | 1.4.108 |
| वो विधूनने जुक् | 7.3.38 | शतास्य ० | 5.1.21 | शि तुक् | 8.3.31 | शेषे लृडयदौ | 3.3.151 |
| वोताप्योः | 3.3.141 | _ | 5.1.173 | शि सर्वनाम ० | 1.1.42 | शेषे लोपः | 7.2.90 |
| वोतो गुणवचनात | Į 4.1.44 | शतुरसुमा उ शदन्तविंशतेश्च | 5.2.46 | शिखाया वलच् | 4.2.89 | शेषे विभाषा | 8.1.41 |
| वोपसर्जनस्य | 6.3.82 | शदुः शितः | 1.3.60 | शितेर्नित्याबह्द ० | 6.2.138 | शेषे विभाषा | 8.1.50 |
| वौ कषलस ० | 3.2.143 | शदुर गराता शदुरगतौ तः | 7.3.42 | शिलाया ढः | 5.3.102 | शेषे विभाषाऽक व | 8.4.18 |
| वौ क्षुश्रुवः | 3.3.25 | शप्रयनोर्नित्यम् | 7.1.81 | शिल्पम् | 4.4.55 | शेषो घ्यसखि | 1.4.7 |
| व्यक्तवाचां ० | 1.3.48 | शब्ददुर्दुरं करोति | 4.4.34 | शिल्पिन चाकुञ | 6.2.76 | शेषो बहुव्रीहिः | 2.2.23 |
| व्यञ्जनैरुपसिक्ते | 4.4.26 | शब्दवुर करात शब्दवैरक ० | 3.1.17 | शिल्पिनि घ्वुन् | 3.1.145 | शोणात् प्राचाम् | 4.1.43 |
| व्यत्ययो बहुलम् | 3.1.85 | शन्द्वरक्ष । शमामष्टानां ० | 7.3.74 | शिवशमरिष्ट ० | 4.4.143 | शौनकादिभ्य ० | 4.3.106 |
| व्यथो लिटि | 7.4.68 | रामामष्टामा ० शमि धातोः ० | 3.2.14 | शिवादिभ्योऽण् | 4.1.112 | श्रसोरछ्ठोपः | 6.4.111 |
| व्यधजपोरनुपसरे | î 3.3.61 | साम जाताः ४ | J.4.14 | शिशुक्रन्दयम ० | 4.3.88 | श्नाऽभ्यस्तयो ० | 6.4.112 |
| = | | | | - | | | |

| | | | -1 -1 | |
|--------------------------------|---------|--|-----------------------------------|------------------------------|
| श्रान्नलोपः | 6.4.23 | श्याऽऽद्यधास्तु ० 3.1.141 | २ येनतिलस्य ० 6.3.71 | इ योऽस्पर्झे 8.2.47 |
| श्रज्याऽवमक ० | 6.2.25 | षष्टी चानादरे 2.3.38 | सङ्ख्यासुपूर्वस्य 5.4.140 | संयोगादे ० 8.2.43 |
| श्रविष्ठाफल्गुन्य ० | 4.3.34 | षष्टी प्रत्येनिस 6.2.60 | संख्यैकवच • 5.4.43 | संयोगान्त ० 8.2.23 |
| श्राणामांसौ ० | 4.4.67 | षष्टी शेषे 2.3.50 | संग्रामे प्रयोज ॰ 4.2.56 | संयोगे गुरु 1.4.11 |
| श्राद्धमनेन ० | 5.2.85 | षष्टी स्थानेयोगा 1.1.49 | संघाङ्कलक्ष ० 4.3.127 | संवत्सराग्रहाय ० 4.3.50 |
| श्राद्धे शरदः | 4.3.12 | षष्टी हेतुप्रयोगे 2.3.26 | संघे चानौत्तराधर्ये 3.3.42 | संशयमापन्नः 5.1.73 |
| श्रिणीभुवो ० | 3.3.24 | षष्टीयुक्तरुछ ० 1.4.9 | संघोद्धौ गण ० 3.3.86 | संसृष्टे 4.4.22 |
| श्रीग्रामण्यो ० | 7.1.56 | षष्ट्यतसर्थप्रत्ययेन 2.3.30 | संज्ञापूरण्योश्च 6.3.38 | संस्कृतं भक्षाः 4.2.16 |
| श्रुवः शृ च | 3.1.74 | षष्ट्या आक्रोशे 6.3.21 | संज्ञायां कन् 4.3.147 | संस्कृतम् 4.4.3 |
| श्रुशृणुपृकृवृ ० । | 6.4.102 | षष्ट्या रूप्य च 5.3.54 | संज्ञायां कन् 5.3.75 | संहितशफल ० 4.1.70 |
| श्रेण्यादयः ० | 2.1.59 | षष्ट्या व्याश्रये 5.4.48 | संज्ञायां कन् 5.3.87 | संहितायाम् 6.1.72 |
| श्रोत्रियंश्छन्दो ० | 5.2.84 | षष्ट्याः पति ॰ 8.3.53 | संज्ञायां कन्थो ० 2.4.20 | संहितायाम् 6.3.114 |
| श्र्युकः किति | 7.2.11 | षात् पदान्तात् 8.4.35 | संज्ञायां गिरि ० 6.2.94 | सः स्यार्द्धधातुके 7.4.49 |
| श्राघह्रङ्स्था ० | 1.4.34 | षिद्गौरादिभ्यश्च 4.1.41 | संज्ञायां च 5.3.97 | सः स्विदिस्व ० 8.3.62 |
| श्चिष आलिङ्गने | 3.1.46 | षिद्भिदादि ० 3.3.104 | संज्ञायां च 6.2.77 | सक्थं चाकान्तात् 6.2.198 |
| श्लो | 6.1.10 | ष्ट्रना ष्टुः 8.4.41 | संज्ञायां जन्याः 4.4.82 | सख्यशिश्वीति ० 4.1.62 |
| श्वगणाटुञ्च | 4.4.11 | ष्टिवुक्कम्या ० 7.3.75 | संज्ञायां धेनुष्या 4.4.89 | सख्युरसम्बुद्धौ 7.1.92 |
| श्वयतेरः | 7.4.18 | ष्णान्ता षट् 1.1.24 | संज्ञायां भृतृ ० 3.2.46 | संख्युर्यः 5.1.126 |
| श्वयुवमघो ० (| 6.4.133 | ष्यङः सम्प्र ० 6.1.13 | संज्ञायां मन्मा ० 5.2.137 | सगतिरपि तिङ् 8.1.68 |
| श्वशुरः श्वश्र्वा | 1.2.71 | - स - | संज्ञायां मित्रा ० 6.2.165 | सगर्भसयू ० 4.4.114 |
| श्वसस्तुट् च | 4.3.15 | | संज्ञायां लला ० 4.4.46 | सत्यं प्रश्ने 8.1.32 |
| श्वसो वसीयः ० | 5.4.80 | स उत्तमस्य 3.4.98 | संज्ञायां शरदो वुञ् 4.3.27 | सत्यादशपथे 5.4.66 |
| श्वादेरिञि | 7.3.8 | स एषां ग्रामणीः 5.2.78 | संज्ञायां श्रवणा ० 4.2.5 | सत्यापपाशरू ० 3.1.25 |
| श्वीदितो निष्ठायाम् | | स नपुंसकम् 2.4.17 | संज्ञायां सम ० 3.3.99 | सत्सूद्धिषदुह ० 3.2.61 |
| - ष - | | संकलादिभ्यश्च 4.2.75 | संज्ञाया म ० 6.2.146 | सदिरप्रतेः 8.3.66 |
| · | 101 | सङ्ख्ययाऽव्य ॰ 2.2.25 | संज्ञायामुपमानम् 6.1.204 | सदेः परस्य ० 8.3.118 |
| षः प्रत्ययस्य | 1.3.6 | सङ्ख्या 6.2.35 सङ्ख्या वंश्येन 2.1.19 | सं ज्ञायाम् 2.1.44 | सदृशप्रतिरूप ० 6.2.11 |
| • | 6.2.135 | • | संज्ञायाम् 3.3.109 | सद्यःपरुत्परार्ये ० 5.3.22 |
| षद्गतिकतिप ० षद्गतुर्भ्यश्च | 5.2.51 | सङ्ख्याऽव्य ० 4.1.26 | सं ज्ञायाम् 3.4.42 | सध मादस्थ ० 6.3.96 |
| . • | 7.1.55 | सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः 2.1.52 | सं ज्ञायाम् 4.1.72 | सनः क्तिचि ० 6.4.45 |
| • | 6.1.179 | सङ्ख्याया अति ० 5.1.22 | सं ज्ञायाम् 4.3.117 | सनाद्यन्ता धातवः 3.1.32 |
| षञ्चो लुक् षढोः कः सि | 7.1.22 | सङ्ख्याया अव ० 5.2.42 | संज्ञायाम् 6.2.159 | सनाशंसभिक्ष उः 3.2.168 |
| | 8.2.41 | सङ्ख्याया गुण ० 5.2.47 | सं ज्ञायाम् 8.2.11 | सनि ग्रहगुहोश्च 7.2.12 |
| षण्मासाण्ण्यच | 5.1.83 | सङ्ख्याया विधा ० 5.3.42 | संज्ञोऽन्य ० 2.3.22 | सनि च 2.4.47 |
| षत्वतुकोरसिद्धः | 6.1.86 | सङ्ख्यायाः क्रिया ०५.४.१७ | संज्ञौपम्ययोश्च 6.2.113 | सनि मीमाघु ० 7.4.54 |
| | 6.4.135 | सङ्ख्यायाः ० 5.1.58 | संधिवेला ० 4.3.16 | सनिंससनिवांसम् 7.2.69 |
| षष्टिकाः षष्टि ० | 5.1.90 | सङ्ख्यायाः संव ० 7.3.15 | संपृचानुरु ० 3.2.142 | सनीवन्तर्धभ्र ० 7.2.49 |
| षष्ट्यादेश्चासं ० | 5.2.58 | सङ्ख्यायाः ० 6.2.163 | संभूते 4.3.41 | सनोतेरनः 8.3.108 |
| षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च | 5.3.50 | सङ्ख्यायाश्च गु ० 5.4.59 | संयसश्च 3.1.72 | सन्महत्परमो ० 2.1.61 |
| षष्ठी | 2.2.8 | सङ्ख्याविसा ० 6.3.110 | | |
| | | 0.01210 | संयोगादिश्च 6.4.166 | सन्यङोः 6.1. |

| सन्यतः 7.4.79 | समानकर्तृकयोः ० 3.4.21 | सम्बुद्धौ शाक ० 1.1.16 | सह सुपा 2.1.4 |
|-----------------------------|------------------------------|---------------------------------|---------------------------------|
| सन्लिटोर्जेः 7.3.57 | समानकर्तृकेषु ० 3.158 | सम्बोधने च 2.3.47 | सह न ञ्च ० 4.1.57 |
| सन्वल्लघुनि ० 7.4.93 | समानतीर्थे वासी 4.4.107 | सम्बोधने च 3.2.125 | सहयुक्तेऽप्रधाने 2.3.19 |
| सपन्ननिष्म ॰ 5.4.61 | समानस्य छन्द ० 6.3.84 | सम्भवत्यव ० 5.1.52 | सहस्य सः ० 6.3.78 |
| सपूर्वाच 5.2.87 | समानोदरे ० 4.4.108 | सम्भवानेऽल ० 3.3.154 | सहस्य सिधः 6.3.95 |
| सपूर्वायाः प्रथ ० 8.1.26 | समापनात् • 5.1.112 | सम्माननोत्स ० 1.3.36 | सहस्रेण ०घः 4.4.135 |
| सप्तनोऽञ् छन्दसि 5.1.61 | समायाः खः 5.1.85 | सरूपाणामे ० 1.2.64 | सहिवहोरो ० 6.3.112 |
| सप्तमी शौण्डैः 2.1.40 | समासत्तौ 3.4.50 | सर्ति शा स्त्य ० 3.1.56 | सहे च 3.2.96 |
| सप्तमी सिद्ध ॰ 6.2.32 | समासस्य 6.1.223 | सर्वं गुणकात्स्र्यं 6.2.93 | सहेः पृतन ० 8.3.109 |
| सप्तमीपञ्चम्यौ • 2.3.7 | समासाच • 5.3.106 | सर्वकूलाभ्रक ० 3.2.42 | सहेः साडः सः 8.3.56 |
| सप्तमीविशेषणे ० 2.2.35 | समासान्ताः 5.4.68 | सर्वचर्मणः ॰ 5.2.5 | साऽऽमन्त्रितम् 2.3.48 |
| सप्तमीहारिणौ ० 6.2.65 | समासेऽङ्गुलेः ० 8.3.80 | सर्वत्र लोहि ० 4.1.18 | साऽस्मिन् ० 4.2.21 |
| सप्तम्यधिकरणे च 2.3.36 | समासेऽनञ्पूर्वे ० 7.1.37 | सर्वत्र विभाषा ॰ 6.1.122 | साऽस्य देवता ४.२.२४ |
| सप्तम्यां चोप ० 3.4.49 | समाहारः स्वरितः 1.2.31 | सर्वत्र शाकल्यस्य 8.4.51 | साक्षात्प्रभृतीनि च 1.4.74 |
| सप्तम्यां जनेर्डः 3.2.97 | समि ख्यः 3.2.7 | सर्वत्राण् च ॰ 4.3.22 | साक्षाद्वष्टरि ० 5.2.91 |
| सप्तम्याः पुण्यम् 6.2.152 | समि मुष्टौ 3.3.36 | सर्वदेवात् तातिल् 4.4.142 | साढ्ये साद्वा ० 6.3.113 |
| सप्तम्यास्त्रल् 5.3.10 | समि युद्रुदुवः 3.3.23 | सर्वनामस्थाने ० 6.4.8 | सात्पदाद्योः 8.3.111 |
| सभा राजा ० 2.4.23 | समुच्चये सा ० 3.4.5 | सर्वनाम्नः स्मै 7.1.14 | साधकतमं करणम् 1.4.42 |
| सभाया यः 4.4.105 | समुच्चये ० 3.4.3 | सर्वनाम्नः स्या ० 7.3.114 | साधुनिपुणा ० 2.3.43 |
| सभायां नपुंसके 6.2.98 | समुदाङ्भ्यो ० 1.3.75 | सर्वनाम्नस्तृ ० 2.3.27 | सान्तमहतः ० 6.4.10 |
| समः क्ष्णुवः 1.3.65 | समुदोरजः पशुषु 3.3.69 | सर्वपुरुषाभ्यां ० 5.1.10 | साप्तपदीनं सख्यम् 5.2.22 |
| समः प्रतिज्ञाने 1.3.52 | समुद्राभ्राद्धः 4.4.118 | सर्वभूमिपृथि ० 5.1.41 | साम आकम् 7.1.33 |
| समः समि 6.3.93 | समूलाकृत ॰ 3.4.36 | सर्वस्य द्वे 8.1.1 | सामि 2.1.27 |
| समः सुटि 8.3.5 | समूहवच बहुषु 5.4.22 | सर्वस्य सुपि 6.1.191 | सायंचिरम्प्राह्ने ० 4.3.23 |
| समयस्तदस्य ० 5.1.104 | समो गम्यृच्छि ० 1.3.29 | सर्वस्य सोऽन्य ० 5.3.6 | सार्वधातुकमपित् 1.2.4 |
| समयाच ० 5.4.60 | सम्परिपूर्वात् ख च 5.1.92 | सर्वा दीनि सर्व ० 1.1.27 | सार्वधातुका ० 7.3.84 |
| समर्थः पदविधिः 2.1.1 | सम्पर्युपेभ्यः ० 6.1.137 | सर्वेकान्यकिं ॰ 5.3.15 | सार्वधातुके यक् 3.1.67 |
| समर्थानां प्रथमाद्वा 4.1.82 | सम्पादिनि 5.1.99 | सवाभ्यां वामौ 3.4.91 | साल्वावयव ० 4.1.173 |
| समवप्रविभ्यः स्थः 1.3.22 | सम्प्रतिभ्याम ० 1.3.46 | सविधसनीड ० 6.2.23 | साल्वेयगान्धा ० 4.1.169 |
| समवायान् ० 4.4.43 | सम्प्रसारणस्य 6.3.139 | ससजुषो रुः 8.2.66 | सावनडुहः 7.1.82 |
| समवाये च 6.1.138 | सम्प्रसारणाच 6.1.108 | ससूवेति निगमे 7.4.74 | सावेकाचस्तृ० 6.1.168 |
| समस्तृतीया ० 1.3.54 | सम्प्रोदश्च कटच् 5.2.29 | सस्नौ प्रशंसायाम् 5.4.40 | सिकताशर्करा ० 5.2.104 |
| समांसमां • 5.2.12 | सम्बुद्धौ च 7.3.106 | सस्येन परिजातः 5.2.68 | सिचि च पर ० 7.2.40 |
| सिचि वृद्धिः ० 7.2.1 | सिन्धुतक्षशि ० 4.3.93 | सुखप्रिययोर्हिते 6.2.15 | सुट् तिथोः 3.4.107 |
| सिचो यङि 8.3.112 | सिन्ध्वपकरा ० 4.3.32 | सुखप्रियादानुलोम्ये 5.4.63 | सुडनपुंसकस्य 1.1.43 |
| सिजभ्यस्त ॰ 3.4.109 | सिपि धातो रुर्वा 8.2.74 | सुखादिभ्यः ० 3.1.18 | सुधातुरकङ् च 4.1.97 |
| सिति च 1.4.16 | सिब्बहुलं लेटि 3.1.34 | सुखादिभ्यश्च 5.2.131 | सुधितवसुधि ० 7.4.45 |
| सिद्धशुष्कप ० 2.1.41 | सिवादीनां ० 8.3.71 | सुञः 8.3.107 | सुनोतेः स्यसनोः 8.3.117 |
| सिध्मादिभ्यश्च 5.2.97 | सुः पूजायाम् 1.4.94 | सुञो यज्ञसंयोगे 3.2.132 | सुप आत्मनः क्यच् 3.1.8 |
| सिध्यते रपा ० 6.1.49 | सुकर्मपापम ० 3.2.89 | सुट् कात् पूर्वः 6.1.135 | सुपः 1.4.103 |
| | | | |

| | गडान्याया | 18.18.11 | |
|--------------------------------|-------------------------------|--------------------------------------|----------------------------------|
| सुपां सुलुक्पू ० 7.1.39 | सोरवक्षेपणे 6.2.195 | स्थे च भाषायाम् 6.3.20 | स्वरितेनाधिकारः 1.3.11 |
| सुपि च 7.3.102 | सोर्मनसी अ ॰ 6.2.117 | स्थेशभासपि ० 3.2.175 | स्वरितो ० 8.2.6 |
| सुपि स्थः 3.2.4 | सौ च 6.4.13 | स्नात्व्यादयश्च 7.1.49 | स्वसु श्छः 4.1.143 |
| सुपो धातु ० 2.4.71 | स्कोः संयो ० 8.2.29 | स्रुक्रमोरनात्मने ० 7.2.36 | स्वागतादीनां च 7.3.7 |
| सुप्तिङन्तं पदम् 1.4.14 | स्तम्बकर्णयोः ० 3.2.13 | स्नेहने पिषः 3.4.38 | स्वाङ्गाचेतः 6.3.40 |
| सुप्रतिना मात्राऽर्थे 2.1.9 | स्तम्बशकृतोरिन् 3.2.24 | स्पर्धायामाङः 1.3.31 | स्वाङ्गाच्चोपसर्ज ० 4.1.54 |
| सुप्यजातौ ० 3.2.78 | स्तम्बे क च 3.3.83 | स्मृशोऽनुदके किन् 3.2.58 | स्वाङ्गे तस्प्रत्यये ० 3.4.61 |
| सुप्रातसुश्वसु ० 5.4.120 | स्तम्भुसिवु ० 8.3.116 | स्यृहिगृहिपति ० 3.2.158 | स्वाङ्गेऽध्रुवे 3.4.54 |
| सुबामन्त्रिते ० 2.1.2 | स्तन्भुस्तुन्भुस्क ० 3.1.82 | स्पृहेरीप्सितः 1.4.36 | स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते 5.2.66 |
| सुयजोर्ङ्वनिप् 3.2.103 | स्तम्भेः 8.3.67 | स्फायः स्फी ० 6.1.22 | स्वादिभ्यः श्वः 3.1.73 |
| सुवास्त्वादिभ्योऽण् 4.2.77 | स्तुतस्तोम ० 8.3.105 | स्फायो वः 7.3.41 | स्वादिष्वसर्व ० 1.4.17 |
| सुविनिर्दुर्भ्यः ० 8.3.88 | स्तुसुधूञ्भ्यः ० 7.2.72 | स्फिगपूतवीणा ० 6.2.187 | स्वादुमि णमुल् 3.4.26 |
| सुषामादिषु च 8.3.98 | स्तेनाद्यन्नलोपश्च 5.1.125 | स्फुरतिस्फुल ० 6.1.47 | स्वापेश्चङि 6.1.18 |
| सुसर्वार्धाज्जनपदस्य 7.3.12 | स्तोः श्रुना श्रुः 8.4.40 | स्फुरतिस्फुल ० 8.3.76 | स्वामिन्नेश्वर्ये 5.2.126 |
| मुह्दुर्हदौ ० 5.4.150 | स्तोकान्तिकदू ० 2.1.39 | स्मिपूङ्ख्वशां ० 7.2.74 | स्वामीश्वराधि ० 2.3.39 |
| सूत्रं प्रतिष्णातम् 8.3.90 | स्तौतिण्योरेव ० 8.3.61 | स्मे लोट् 3.3.165 | स्वे पुषः 3.4.40 |
| सूत्राच कोपधात् 4.2.65 | स्त्यः प्रपूर्वस्य 6.1.23 | स्मोत्तरे लङ् च 3.3.176 | स्वौजसमोद्ध ० 4.1.2 |
| सूददीपदीक्षश्च 3.2.153 | स्त्रियां क्तिन् 3.3.94 | स्यतासी लृखटोः 3.1.33 | - ह - |
| सूपमानात् क्तः 6.2.145 | स्त्रियां च 7.1.96 | स्यदो जवे 6.4.28 | ह ए ति 7.4.52 |
| सूर्यतिष्याग ० 6.4.149 | स्त्रियां संज्ञायाम् 5.4.143 | स्यश्छन्द सि ० 6.1.133 | हनः सिच् 1.2.14 |
| मृ स्थिरे 3.3.17 | स्त्रियाः 6.4.79 | स्यसिच्सीयुद्गा ० 6.4.62 | हनश्च वधः 3.3.76 |
| सृघस्यदः कार च् 3.2.160 | स्त्रियाः पुंवद्भाषि ० 6.3.34 | स्रवतिश्रणोति ० 7.4.81 | हनस्त च 3.1.108 |
| मृजिदृशोर्झ ० 6.1.58 | स्त्रियामवन्ति ० 4.1.176 | स्रोतसो विभा ० 4.4.113 | हनस्तोऽचिण्णलोः 7.3.32 |
| सृपितृदोः कसुन् 3.4.17 | स्त्रियाम् 4.1.3 | स्वं रूपं शब्द ० 1.1.68 | हनो वध लिङि |
| से ऽ सिचि कृत ० 7.2.57 | स्त्री पुंवच 1.2.66 | स्वं स्वामिनि | हन्त च 8.1.54 |
| सेधतेर्गतौ 8.3.113 | स्त्रीपुंसाभ्यां ० 4.1.87 | स्वतन्त्रः कर्ता 1.4.54 | हन्तेरत्पूर्वस्य 8.4.22 |
| सेनान्तल ० 4.1.152 | स्त्रीभ्यो ढक् 4.1.120 | स्वतवान् पायौ 8.3.11 | हन्तेर्जः 6.4.36 |
| सेनाया वा 4.4.45 | स्त्रीषु सौवीरसा ० 4.2.76 | स्वनहसोर्वा 3.3.62 | हरतेरनुद्यमनेऽच् 3.2.9 |
| सेर्ह्यपिच 3.4.87 | स्थः क च 3.2.77 | स्वपादिहिं • 6.1.188 | हरतेर्दृतिनाथयोः ० 3.2.25 |
| सोऽचि लोपे ० 6.1.134 | स्थण्डिला ० 4.2.15 | स्वपितृषोर्नजिङ् 3.2.172 | हरत्युत्सङ्गादिभ्यः 4.4.15 |
| सोऽपदादौ 8.3.38 | स्था घ्वोरिच 1.2.17 | स्वपिस्यमिव्ये ० 6.1.19 | हरितादिभ्योऽञः 4.1.100 |
| सोऽस्य निवासः 4.3.89 | स्थाऽऽदिष्व ॰ 8.3.64 | स्वपो नन् 3.3.91 | हरीतक्यादिभ्यश्च 4.3.167 |
| सोऽस्यांशव ० 5.1.56 | स्थागापापचां भावे 3.3.95 | स्वमज्ञातिधना ० 1.1.35 | हलः 6.4.2 |
| सोऽस्यादिरि ० 4.2.55 | स्थानान्तगो ० 4.3.35 | स्वमोर्नपुंसकात् 7.1.23 | हलः श्रः शानज्झौ 3.1.83 |
| सोढः 8.3.115 | स्थानान्ताद्वि ० 5.4.10 | स्वयं क्तेन 2.1.25 | हलदन्तात् ० 6.3.9 |
| सोदराद्यः 4.4.109 | स्थानिवदादे ० 1.1.56 | स्वरतिसूतिसू ० 7.2.44 | हलन्ताच 1.2.10 |
| सोममर्हति यः 4.4.137 | स्थानेऽन्तरतमः 1.1.50 | स्वरादिनिपात ० 1.1.37 | हलन्त्यम् 1.3.3 |
| सोमाट्यण् 4.2.30 | स्थालीबिलात् 5.1.70 | स्वरितञितः • 1.3.72 | हलश्च 3.3.121 |
| सोमे सुञः 3.2.90 | स्थूलदूरयुवह ० 6.4.156 | स्वरितमाम्रेडिते • 8.2.103 | हलश्चेजुपधात् 8.4.31 |
| सोमे ह्वरितः 7.2.33 | स्थूलादिभ्यः ० 5.4.3 | स्वरितात् ० 1.2.39 | evadiant 0.4.31 |
| | | | |

ह

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

| <u></u> | | अष्टाध्या |
|-----------------------------------|---------------------|-----------|
| हलसीराट्टक् 4.3.124 | हेतौ | 2.3.23 |
| हलसीराट्टक् 4.4.81 | हेमन्तशिशि ० | 2.4.28 |
| हलसूकरयोः पुवः 3.2.183 | हेमन्ताच | 4.3.21 |
| हलस्तद्धितस्य 6.4.150 | हेरचङि | 7.3.56 |
| हलादिः शेषः 7.4.60 | हैयंगवीनं ० | 5.2.23 |
| हिल च 8.2.77 | हैहेप्रयोगे हैहयोः | 8.2.85 |
| हिल लोपः 7.2.113 | हो ढः | 8.2.31 |
| हिल सर्वेषाम् 8.3.22 | हो हन्तेञ्जिंन्नेषु | 7.3.54 |
| हलो यमां ० 8.4.64 | होत्राभ्यइछः | 5.1.135 |
| हलोऽनन्तराः ० 1.1.7 | ह्यन्तक्षणश्वस ० | 7.2.5 |
| हल्ड्याञ्यो ० 6.1.68 | हस्वं लघु | 1.4.10 |
| हव्येऽनन्तः पादम् 3.2.66 | हस्वः | 7.4.59 |
| हशश्वतोर्लङ् च 3.2.116 | हस्वनद्यापो नुट् | 7.1.54 |
| हिश च 6.1.114 | हस्वनुङ्मां मतुप् | 6.1.176 |
| हश्च व्रीहि ॰ 3.1.148 | हस्वस्य गुणः | 7.3.108 |
| हस्ताजातौ 5.2.133 | हस्वस्य पिति ० | 6.1.71 |
| हस्तादाने चेरस्तेये 3.3.40 | हस्वाचन्द्रोत्तर ० | 6.1.151 |
| हस्ते वर्त्तिग्रहोः 3.4.39 | हस्वात् तादौ ० | 8.3.101 |
| हायनान्तयु ० 5.1.130 | हस्वादङ्गात् | 8.2.27 |
| हि च 8.1.34 | हस्वान्ते ० | 6.2.174 |
| हिंसायां प्रतेश्च 6.1.141 | हस्वे | 5.3.86 |
| हिंसार्थानां ० 3.4.48 | हस्वो नपुंसके ० | 1.2.47 |
| हितं भक्षाः 4.4.65 | हु ह्वरेश्छन्दसि | 7.2.31 |
| हिनुमीना 8.4.15 | ह्रादो निष्ठायाम् | 6.4.95 |
| हिमकाषिहतिषु च 6.3.54 | ह्नः सम्प्रसारणं ० | 3.3.72 |
| हिरण्यपरिमाणं ० 6.2.55 | ह्नः सम्प्रसारणम् | 6.1.32 |
| हीने 1.4.86 | ह्रावामश्च | 3.2.2 |
| हीयमानपापयो ० 5.4.47 | | |
| हुझल् न्यो हेर्घिः 6.4.101 | | |
| हुश्रुवोः सार्वधा ० 6.4.87 | | |
| हृकोरन्यतरस्याम् 1.4.53 | | |
| हृदयस्य प्रियः 4.4.95 | | |
| हृदयस्य हृल्लेख ॰ 6.3.50 | | |
| हृद्भगसिन्ध्वन्ते ० 7.3.19 | | |
| हृषेर्लोमसु 7.2.29 | | |
| हे मपरे वा 8.3.26 | | |
| हेति क्षियायाम् 8.1.60 | | |
| हेतुमति च 3.1.26 | | |
| हेतुमनुष्येभ्यो ० 4.3.81 | | |
| , , , , , , , | | |

हेतुहेतुमतोर्लिङ् 3.3.156

॥ परिभाषेन्दुशेखरः॥

नत्वा साम्बं शिवं ब्रह्म नागेशः कुरुते सुधीः । बालानां सुखबोधाय परिभाषेन्द्रशेखरम् ॥

1. शास्त्रत्वसम्पादकप्रकरणम्

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम् ॥1॥

यथोदेशं संज्ञापरिभाषम् ॥2॥

कार्यकालं संज्ञापरिभाषम् ॥३॥

अनेकान्ताः अनुबन्धाः ॥४॥

एकान्ताः ॥ ५॥

नानुबन्धकृतमनेकाल्त्वम्॥६॥

नानुबन्धकृतमनेजन्तत्वम्॥७॥

नानुबन्धकृतमसारूप्यम्॥४॥

उभयगतिरिह भवति॥१॥

कार्यमनुभवन्हि कार्यी निमित्ततया नाश्रीयते॥ 10॥

यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेन गृह्यन्ते॥11॥

निर्दिश्यमानस्याऽऽदेशा भवन्ति॥ 12॥

यत्रानेकविधमान्तर्यं तत्र स्थानत आन्तर्यं बलीयः॥ १३॥

अर्थवदग्रहणे नानर्थकस्य॥14॥

गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसम्प्रत्ययः॥ 15॥

अनिनस्मिन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति॥ 16॥

एकयोगनिर्दिष्टानां सह वा प्रवृत्तिः सह वा निवृत्तिः ॥ 17॥

क्वचिदेकदेशोऽप्यनुवर्तते॥ 18॥

भाव्यमानेन सवर्णानां ग्रहणं न॥ 19॥

भाव्यमानोऽप्युकारः सवर्णान् गृह्णाति॥20॥

वर्णाश्रये नास्ति प्रत्ययलक्षणम्॥ 21॥

उणाद्योऽव्युत्पन्नानि प्रातिपदिकानि॥ 22॥

प्रत्ययग्रहणे यस्मात्स विहितस्तदादेस्तदन्तस्य ग्रहणम्॥ 23॥

प्रत्ययग्रहणे चापञ्चम्याः॥ २४॥

उत्तरपदाधिकारे प्रत्ययग्रहणे न तदन्तग्रहणम्॥ 25॥

```
स्त्रीप्रत्यये चानुपसर्जने न॥ २६॥
संज्ञाविधौ प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणं नास्ति॥ २७॥
कृदुग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम्॥ 28॥
पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदन्तस्य च॥29॥
व्यपदेशिवदेकस्मिन्॥ 30॥
ग्रहणवता प्रातिपदिकेन तदन्तविधिर्नास्ति॥ 31॥
व्यपदेशिवद्भावोऽप्रातिपदिकेन॥ 32॥
यस्मिन्विधस्तदादावल्प्रहणे॥ ३३॥
सर्वो द्वन्द्वो विभाषयैकवद्भवति ॥ 34 ॥
सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते ॥ 35॥
प्रकृतिवदनुकरणं भवति ॥ 36॥
एकदेशविकृतमनन्यवत् ॥ 37॥
2. बाधबीजप्रकरणम्
पूर्वपरनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः ॥ 38॥
पुनः प्रसङ्गविज्ञानात् सिद्धम् ॥ ३९॥
सकृद्भतौ विप्रतिषेधे यदु बाधितं तदु बाधितमेव॥ 40॥
विकरणेभ्यो नियमो बलीयान्॥४1॥
[ परान्नित्यं बलवत् ]
कृताकृतप्रसङ्गि नित्यम्, तद्विपरीतमनित्यम्॥ ४२॥
शब्दान्तरस्य प्राप्नुवन्विधरनित्यो भवति॥४३॥
शब्दान्तरात् प्राप्नुवतः शब्दान्तरे प्राप्नुवतश्चानित्यत्वम् ॥ ४४ ॥
लक्षणान्तरेण प्राप्नुवन् विधिरनित्यः॥४५॥
क्वचित्कृताकृतप्रसङ्गमात्रेणापि नित्यता॥४६॥
यस्य च लक्षणान्तरेण निमित्तं विद्यन्यते न तद्नित्यम्॥ ४७॥
यस्य च लक्षणान्तरेण निमित्तं विद्दन्यते तदप्यनित्यम्॥४८॥
स्वरभिन्नस्य प्राप्नुवन्विधरनित्यो भवति ॥ ४९॥
[ नित्यादप्यन्तरङ्गं बलीयः ]
असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे॥ 50॥
नाजानन्तर्ये बहिष्ट्वप्रक्रुप्तिः॥ 51॥
```

अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गो लुग् बाधते॥ 52॥ पूर्वीत्तरपदिनिमित्तकार्यात् पूर्वमन्तरङ्गेऽप्येकादेशो न॥ 53॥ अन्तरङ्गानिप विधीन् बहिरङ्गो ल्यब्बाधते॥ 54॥ वर्णादाङ्गं बलीयो भवति ॥ 55॥ अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः॥ ५६॥ [अन्तरङ्गादप्यपवादो बलीयान्] येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति ॥ 57 ॥ क्वचिद्पवाद्विषयेऽप्युत्सगोऽभिनिविशत इति॥ 58॥ पुरस्तादपवादा अनन्तरान् विधीन् बाधन्ते नोत्तरान्॥ ५९॥ मध्येऽपवादाः पूर्वान् विधीन् बाधन्ते नोत्तरान्॥ 60॥ अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वेति ॥६१॥ पूर्वं ह्यपवादा अभिनिविशन्ते पश्चादुत्सर्गाः॥ 62॥ प्रकल्प्य चापवादविषयं तत उत्सर्गोऽभिनिविशते ॥ 63॥ उपसञ्जनिष्यमाणनिमित्तोऽप्यपवाद उपसञ्जातनिमित्तमप्युत्सर्गं बाधत इति॥६४॥ अपवादो यद्यन्यत्र चरितार्थस्तर्ह्यन्तरङ्गेण बाध्यते॥ ६५॥ अभ्यासविकारेषु बाध्यबाधकभावो नास्ति॥ ६६॥ ताच्छीलिकेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति॥ 67॥ क्तल्युटतुमुन्खलर्थेषु वाऽसरूपविधिर्नास्ति॥६८॥ लादेशेषु वासरूपविधिर्नास्ति ॥ 69 ॥ उभयनिर्देशे पञ्चमीनिर्देशो बलीयान् ॥ 70॥ 3 शेषार्थकथनम् प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्॥ 71॥ विभक्तौ लिङ्गविशिष्टाग्रहणम्॥ ७२॥ सूत्रे लिङ्गवचनमतन्त्रम्॥७३॥ निञवयुक्तमन्यसदशाधिकरणे तथा ह्यर्थगतिः ॥ 74॥ गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः॥ 75॥ साम्प्रतिकाभावे भूतपूर्वगतिः ॥ 76 ॥ बहुवीहौ तद्गुणसंविज्ञानमपि॥ 77॥

चानुकृष्टं नोत्तरत्र॥ 78॥

स्वरविधौ व्यञ्जनमविद्यमानवत्॥ ७९॥

हल्स्वरप्राप्तौ व्यञ्जनमविद्यमानवत् ॥ 80 ॥

निरनुबन्धकग्रहणे न सानुबन्धकस्य ॥ 81 ॥

तदनुबन्धकग्रहणे नातदनुबन्धकस्य ॥ 82 ॥

क्वचित् स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्ते॥ ८३॥

समासान्तविधिरनित्यः ॥ ८४ ॥

सन्निपातलक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विघातस्य॥ ८५॥

सन्नियोगशिष्टानामन्यतरापाय उभयोरप्यपायः ॥ ८६॥

ताच्छीलिके णेऽण्कृतानि भवन्ति॥ ८७॥

धातोः कार्यमुच्यमानं तत्प्रत्यये भवति ॥ 88 ॥

तन्मध्यपतितस्तदुग्रहणेन गृह्यते॥ ८९॥

लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्य ॥१०॥

प्रकृतिग्रहणे ण्यधिकस्यापि ग्रहणम् ॥११॥

अङ्गवृत्ते पुनर्वृत्तावविधिः॥ 92॥

संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वम् ॥ १३॥

आगमशास्त्रमनित्यम्॥ १४॥

गणकार्यमनित्यम् ॥ १५ ॥

अनुदात्तेत्त्वलक्षणमात्मनेपदमनित्यम्॥१६॥

नञ्घटितमनित्यम् ॥ १७७॥

आतिदेशिकमनित्यम्॥ १८॥

सर्वविधिभ्यो लोपविधिरिङ्विधिश्च बलवान्॥ ९९॥

प्रकृतिग्रहणे यङ्खुगन्तस्यापि ग्रहणम्॥ 100॥

विधौ परिभाषोपतिष्ठते नानुवादे ॥ 101 ॥

उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी ॥ 102॥

अनन्त्यविकारोऽन्त्यसदेशस्य॥ 103॥

नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधिरनभ्यासविकारे॥ 104॥

प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः ॥ 105॥

अवयवप्रसिद्धेः समुदायप्रसिद्धिर्बलीयसी॥ 106॥

व्यवस्थितविभाषयापि कार्याणि क्रियन्ते॥ 107॥

विधिनियमसम्भवे विधिरेव ज्यायान् ॥ 108॥

सामान्यातिदेशे विशेषानतिदेशः ॥ 109॥

प्रत्ययाप्रत्ययायोः प्रत्ययस्य ग्रहणम् ॥110॥

सहचरितासहचरितयोः सहचरितस्यैव ग्रहणम्॥ 111॥

श्रुतानुमितयोः श्रुतसम्बन्धो बलवान् ॥ 112॥

लक्षणप्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव ग्रहणम् ॥ 113॥

गामादाग्रहणेष्वविशेषः ॥ 114॥

प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिः॥ 115॥

ववचित्समुदायेऽपि॥ 116॥

अभेदका गुणाः ॥ 117॥

बाधकान्येव निपातनानि॥ 118॥

पर्जन्यवल्लक्षणप्रवृत्तिः॥ ११९॥

[लक्ष्ये लक्षणं सकृदेव प्रवर्तते]

निषेधाश्च बलीयांसः ॥ 120॥

अनिर्दिष्टार्थाः प्रत्ययाः स्वार्थे॥ 121॥

योगविभागादिष्टसिद्धिः॥ 122॥

पर्य्यायशब्दानां लाघवगौरवचर्चा नाद्रियते ॥ 123॥

ज्ञापकसिद्धं न सर्वत्र ॥ 124॥

पूर्वत्रासिद्धमद्वित्वे॥ 125॥

एकस्या आकृतेश्वरितः प्रयोगो द्वितीयस्यास्तृतीयस्याश्च न भविष्यति ॥ 126॥

सम्प्रसारणं तदाश्रयं च कार्यं बलवत्॥ 127॥

क्वचिदु विकृतिः प्रकृतिं गृह्णाति॥ 128॥

औपदेशिकप्रायोगिकयोरौपदेशिकस्य ग्रहणम्॥ 129॥

रितपा शपानुबन्धेन निर्दिष्टं यद्गणेन च । यत्रैकाज्यहणं चैव पञ्चैतानि न यङ्लुकि ॥ 130॥

पदगौरवादु योगविभागो गरीयान्॥ 131॥

अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः ॥ 132॥

इति श्रीमन्महोपाध्यायशिवभट्टसुतसतीगर्भजनागोजीभट्टकृतः परिभाषेन्दुशेखरः समाप्तः॥

वार्तिकानां परिभाषानां च सूची

| - अ - | अर्थवेदसत्याना॰ 3.1.25 | उपसञ्जनिष्यमाण ० प० 64 | कास्यनेकाच आम् ० 3.1.35 |
|--|---|---|---|
| अकर्मकधातुभिर्यो ० 1.4.51 | अर्थाचासन्नि ॰ 5.2.135 | उपसर्गविभक्तिस ० 1.4.57 | किंयत्तद्बहुष ० 3.2.21 |
| अकृतव्यूहाः पा ० प० 56 | अर्थेन नित्यसम ० 2.1.36 | उपसर्गादस्यत्य ० 1.3.30 | कुक्कुट्यादी ० 6.3.42 |
| अक्षादूहिन्याम ० 6.1.89 | अर्धमात्राला ० प० १३२ | उभयगतिरिह भवति ० प० १ | कुग्जनस्य परस् ० 4.2.138 |
| अङ्गवृत्ते पुन ० ५० १२ | अर्यक्षत्रियाभ ० 4.1.49 | उभयिनर्देशे पञ ० 🛮 प० ७० | कृताकृतप्रसङ्ग ० प० ४२ |
| अङ्गगात्रकण्ठेभ ॰ 4.1.54 | अवयवप्रसिद्धेः ० प० 106 | उभसर्वतसोः कार ० 2.3.2 | कृत्स्थस्य णत्वे ० 8.4.29 |
| अडभ्यासव्यवाये ० 6.1.136 | अवरापारद्विगृह ० 4.2.93 | <i>-</i> জ <i>-</i> | कृदिकारादिकन ० 4.1.45 |
| अज्विधिः सर्वध ० 3.1.134 | अवसाने च यरो ० 8.4.47 | ऊर्णोतेराम्नेत ॰ 3.1.36 | कृद्धहणे गति ० प० 28 |
| अत्यादयः क्रान ० 2.2.18 | अवादयः कुष्ट ॰ 2.2.18 | ऋति सवर्णे ऋ व ० 6.1.101 | केलिमर उपसङ्ख ० 3.1.96 |
| अधर्माचेति व ० 4.4.41 | अवोधसोर्लोपश्च ० 4.3.8 | - ऋ - | क्तत्युद्धमुन् ० प० 68 |
| अधिकरणाचेति ॰ 3.1.10 | अव्ययस्य चाव ० 7.4.32 | ऋते च तृतीया-स ० 6.1.89 | क्तिन्नपीष्यते 3.3.94 |
| अधिकरणे चोपस ० 2.3.28 | अव्ययानां भमात ० 4.3.11 | ऋलवर्णयोर्मिथ • 1.1.9 | क्रपेः सम्प्रस • 3.3.104 |
| अध्यात्मादेष्ठञ् • 4.3.60 | अरमनो विकारे ० 6.4.144 | ऋकारत्वादिभ्यः ० 3.3.94 | क्रियया यमभिप् ० 1.4.32 |
| अध्वनः प्रथमा ० 2.3.28 | असिद्धं बहिरङ् ० प० 50 | • | क्रियाविशेषणानां ० 2.4.18 |
| अध्वपरिमाणे च ० 6.1.79 | अस्य संबुद्धौ ० 7.1.89 | | क्रुपिसम्पद्य ० 2.3.13 |
| अनन्तरस्य विधि ० प० 61 | अहः खः कतौ ० 4.2.43 | - ए - | क्वचित् स्वार् ० प० ८३ |
| अनन्त्यविकारोऽ ० प० 103 | - आ - | एकतरात्प्रतिषे ० 7.1.25 | क्वचित्कृताकृत ० प० ४६ क्वचित्समुदाये ० प० 116 |
| अनाम्नवतिनगरीण ० ८.4.42 | आख्यानाख्यायिक ० 4.2.60 | एकदेशविकृतमनन् ० प० 37 | क्वचिद्पवाद्विषय ० प० 58 |
| अनिनस्मिन्ग्रह ० प० 16 | आख्यानात्कृतस् ० 3.1.26 | एकयोगनिर्दिष्ट ० प० 17 | क्वचिदेकदेशोऽ ० प० 18 |
| अनिर्दिष्टार्थ ० प० 121 | आगमशास्त्रमनित ० प० 94 | एकवाक्ये युश्म ० 8.1.20 | क्वचिदु विकृति ॰ प॰ 128 |
| अनुदात्तेत्त्व ० प० 96 | आचार्याद्णत्वं • 8.4.39 | एकस्या आकृतेश् ० प० 126 | विवब्वचिप्रच् ० 3.2.178 |
| अनेकान्ताः अनु ० प० ४ | आतिदेशिकमनित्य ० प० 98 | एकाचो नित्यम् ० 4.3.144 | क्षत्त्रियसमा न ॰ 4.1.168 |
| अन्तरङ्गानपि व ० प० 52 | आदि-खाद्योः प् ० 1.4.52 | एकान्ताः प० 5 | |
| अन्तरङ्गानपि व ० प० 54 | आदेश्च 4.3.8 | एतदोऽपि वाच्यः ० 5.3.24 | - ख - |
| अन्तश्शब्दस्या ० 1.4.65 | आद्यादिभ्य उपस ० 5.4.44 | एते वान्नावादय ० 8.1.20 | खच डिद्रा वक ० 3.2.38 |
| अन्ताच 6.3.11 | आपदादिपूर्वपदा ॰ 4.2.116 | - ओ - | खपरे शरि वा ० 8.3.36 |
| अन्यत्रापि दृश ० 3.2.48 | आशङ्कायामुपस ० 3.1.7 | ओकारसकारभका ॰ 5.3.71 | खलादिभ्यः इनिर ० 4.2.51 |
| अन्येभ्योऽपि द ० 5.2.112 | <u>- इ</u> - | - औ - | - ग - |
| अन्येभ्योऽपि द ० 5.2.109 | - | | गच्छतौ परदाराद ० 4.4.1 |
| अन्येभ्योऽपि द ० 5.2.120 | इक् कृष्यादिभ् ० 3.3.108 | औङः स्यां प्रत ० 6.4.148 औपदेशिकप्रायोग ० प० 129 | गजसहायाभ्यां च ० 4.2.43 |
| अन्वादेशे नपुं ० 2.4.34 | इक्इितपौ धात ० 3.3.108 इयङुवङ्भाविना ० 6.3.61 | | गणकार्यमनित्यम ० प० 95 |
| अपवादो यद्यन्य ० प० 65 | · . | - क - | गतिकारकेतरपूर् ० 6.4.82 |
| अभितः-परितः-सम ॰ 2.3.1 | इर इत्संज्ञा व ० 3.1.57 | कप्रकरणे मूलवि ० 3.2.5 | गतिकारकोपपदाना ० प० 75 |
| अभिवादिदृशोर ० 1.4.53 | इवेन समासे विभ ० 2.1.4 | कमेरनिषेधः ० 2.3.69 | गत्यर्थेषु नीव ० 1.4.51 |
| अभूततद्भाव इति ० 5.4.50 | - ई - | कमेश्लेश्रङ् ॰ | गमेः सुपि 3.2.38 |
| अभेदका गुणाः प० 117 | ईकक् च 4.1.85 | कम्बोजादिभ्य इ ० 4.1.175 | गम्यमानापि क्रिया ० 2.3.28 |
| अभ्यासविकारेषु ० प० 66 | - उ - | कर्मणि समि च 3.2.49 | गवादिषु विन्देः ० 3.1.138 |
| अमेहक्व-तसि-त् ॰ 4.2.104 | - उ - उणादयोऽव्युत्प ० प० २२ | कर्मव्यतिहारे • 8.1.12 | गा-पोर्घहणे ० 2.4.77 |
| अरण्याण्णः 4.2.104 | . 3 | ٠ | गामादाग्रहणेष् ० प० 114 |
| | उत्तरपदाधिकारे ० प० ७५ | कायेकालं संज् ० 🛮 प० ३ | undiene it. 1. 111 |
| अर्णसो लोपश्च 5.2.109 अर्थवद्रहणे ० प० 14 | उत्तरपदाधिकारे ० प० 25 उपपदविभक्तेः क ० प० 102 | कार्यमनुभवन्हि ० प० 10 | गुणवचनेभ्यो मत ० 5.1.94 |

वार्तिकानां परिभाषानां च सूची

| गोरजादिप्रसङ्ग ० 4 | .1.84 | त्यब्नेर्ध्रुव ० 4.2.104 | - u - | प्रादिभ्यो धात ॰ 2.2.24 |
|--------------------------|--------------|--|---|--|
| गोर्यूतौ छन्दस ० 6 | .1.79 | - द - | पञ्चमी-विधाने ० 2.3.28 | प्रादूहोढोढ्ये ० 6.1.89 |
| | प॰ 15 | - ५ - दार-जारौ कर्तर ० | पथः सङ्ख्याव्य ० 2.3.28 | - फ - |
| | प॰ 31 | दुरः षत्वणत्वय ० 1.4.59 | पदगौरवादु योगव ० प० 131 | - 11 - फल-पाक-शुषामु ० 4.3.166 |
| ग्ला-म्रा-ज्या ० 3 | .3.94 | दूरादेत्यः 4.2.104 | पदाङ्गाधिकारे ० प० 29 | |
| - घ - | | | पदान्ताच्चेति ० 7.4.85 | – ब – |
| 30 - | .3.58 | दन्करपुनः पूर ० 6.4.84 दशेः क्सश्च वक्तव्यः 3.2.60 | परिचर्या-परिसर् ० 3.3.101 | बहिर्देव-पञ्च ॰ 4.3.58 |
| | .3.30 | | परौ व्रजेः षः ० 8.2.36 | बहिषष्टिलोपो य ० 4.1.85 |
| _ ङ - | | | पर्जन्यवल्लक्ष ० प० ११९ | बहुवीहौ तद्ग ० प० 77 |
| ङावुत्तरपदे प् ० | 8.2.8 | द्वन्द्वतत्पुर ० 2.1.51 | पर्यादयो ग्लान ० 2.2.18 | बाधकान्येव निप ० प० 118 |
| - च - | | द्विगुप्राप्ता ० 2.4.26 | पर्य्यायशब्दान ० प० 123 | ब्रह्मणि वदः 3.2.78 |
| चतुरइछयतावाद् ० 5 | .2.51 | द्विपर्च्यन्ता。 7.2.102 | पाण्डोर्ड्यण् 4.1.168 | - भ - |
| | .4.48 | - घ - | पालकान्तान्न 4.1.48 | भय-भीत-भीति-भी ० 2.1.37 |
| | 1.100 | धर्मादिष्वनियम ० 2.2.31 | पिप्पल्यादयश्च 4.1.41 | भयादीनामुपसंख् • 3.3.56 |
| | 1.124 | धातोः कार्यमुच ० 🛮 प० ८८ | पुनः प्रसङ्गविज्ञानात् ० प० ३९ | भवतेश्चेति वक्त ० 3.1.143 |
| • | 70 78 | धात्वर्थनिर्दे ॰ 3.3.108 | पुरस्तादपवादाः ० प० ५९ | भस्याढे तद्धित • 6.3.35 |
| 3. | . ,0 | - न - | पुष्पमूलेषु बह ० 4.3.166 | भाग-रूप-नामभ्य ० 5.4.25 |
| - छ - | | न समासे 6.1.127 | पूरोण् वक्तव्य ० 4.1.168 | भाव्यमानेन सवर ० प ० 19 |
| छत्वममीति वाच् ० 8 | .4.63 | निञवयुक्तमन्यस ० प० ७४ | पूर्णमासादण् व ० 4.2.35 | भाव्यमानोऽप्यु ० प० २० |
| - ज - | | नञो नलोपोऽवक्षे ॰ 6.3.73 | पूर्वं ह्यपवाद् ० प० 62 | भाषायां धाञ्-क ० 3.2.171 |
| ज्ञापकसिद्धं न ० प | • 124 | नजोऽस्त्यर्थान ० 2.2.24 | पूर्वत्रासिद्ध ० प० 125 | भाषायां शा सि-य ० 3.3.130 |
| - ड - | | नञ्घटितमनित्यम ० प० ९७ | पूर्वपरनित्यान ० प० 38 | |
| | .1.12 | नञ्स्रजीकक्ख् • 4.1.15 | पूर्वशेषोऽपि द ० 1.2.72 | - म - |
| | 2.180 | नाजानन्तर्ये ब ॰ प॰ ५१ | पूर्वोत्तरपदिन ० प० ५३ | मत्वर्थाच्छः 3.3.108 |
| , , , | | नानर्थकेऽलोऽन् ० प० 104 | पृथिव्या ञाञौ 4.1.85 | म त्स्यस्य ङ्या ० 6.4.149 |
| | .2.38 | नानुबन्धकृतमनेक ० प० 6 | प्रकल्प्य चापव ० प० 63 | मध्येऽपवादाः प ० प० 60 |
| <i>-</i> त - | | नानुबन्धकृतमनेज ० प० ७ | प्रकृतिग्रहणे ० प० 91 | मस्जेरन्त्यात् ० 7.1.60 |
| | .1.97 | नानुबन्धकृतमसा ० प० 8 | प्रकृतिग्रहणे ० प० 100 | मातुलोपाध्यायय ० 4.1.49 |
| . • | प॰ 82 | नाभि नमं च 5.1.2 | प्रकृतिवदनुकरण ० प० ३६ | मूलविभुजादिभ्य ० 3.2.3 |
| | 2.135 | नित्यमाम्रेडित ० 6.1.100 | प्रकृत्यादिभ्य。 2.3.18 | - य - |
| · • | 1.36 | निमित्तपर्याय ० 2.3.27 | प्रत्ययग्रहणे ० प० २४ | यणः प्रतिषेधो • 8.2.23 |
| • | .3.28 | निमित्तात् कर् ० 2.3.36 | प्रत्ययग्रहणे ० प० 23 प्रत्ययाप्रत्य ० प० 110 | यतश्चाध्वकालनि ० 2.3.28 |
| | To 89 | निरनुबन्धकग्रह ० प० ८१ | प्रत्ययोत्रत्य ॰ प॰ 110 प्रत्यये भाषाय ॰ 8.4.45 | यत्रानेकविधमान ० प० 13 |
| | प॰ 87 | निराद्यः कान् ० 2.2.18 | प्रत्येकं वाक् ० प॰ 115 | यथेष्टं नामधात ० 6.1.3 |
| ~ | प॰ 67 | निर्दिश्यमानस् ० प० 12 | • | यथोद्देशं संज् ० ५० २ |
| ~ | .3.13 | निषेधाश्च बलीय ० प० 120 | प्रथमलिङ्गग्रह ० 1.4.3 प्रधानाप्रधानय ० प० 105 | यदागमास्तद्गुण ० प० 11 |
| * | .3.46 | निष्ठादेशः षत्वस्वर ० 8.2.3 | | यने नाप्राप्ते ॰ प॰ ५७ |
| | 4.149 | नील्या अन्, पी ० 4.2.2 | | यवनाल्लिप्याम् ० 4.1.49 |
| | .1.33 | नुमचिरतृज्वद्भ ० 7.1.54 | प्रश्नाख्यानयो ० 2.3.28 प्रातिपदिकग्रह ० प० 71 | यवलपरे यवला वा ॰ 8.3.26 |
| | .2.72 | नृति-खनि-रञ्जिभ ० 3.1.145 | प्राद्यो गताद्य ० 2.2.18 | यवाद्दोषे 4.1.49 |
| त्यदादीनां मिथ ० 1 | .2.72 | नृ-नर योर्वृद्ध ० 4.1. <i>7</i> 3 | नापुत्रा गताच ७ - ८.८.१४ | यस्मिन्विधस्त ० प० ३३ |
| | | | | |

वार्तिकानां परिभाषानां च सूची

| | पारायग्रगा पार | 11 11 1 1 12 11 |
|--|---|-------------------------------|
| यस्य च लक्षणान ० प० ४८ | - श - | सामन्ये नपुंसक ० 2.4.17 |
| यस्य च लक्षणान ० प० ४७ | शकन्ध्वादिषु प ० 6.1.94 | सामान्यातिदेशे ० ५० १०९ |
| योगविभागादिष्ट ० प० 122 | • | साम्प्रतिकाभाव ० प० ७६ |
| योपधप्रतिषेधे ० 4.1.63 | 3 3 3 5 | सिज्लोप एकादेश ० 8.2.3 |
| - ₹ - | शतसहस्रौ परेणेति ० 2.1.39 शब्दान्तरस्य प ० प० ४3 | सिब्बहुलं णिद्वक्तव्यः 3.1.34 |
| रप्रेकरणे ख-मु ० 5.2.107 | शब्दान्तरात् प ० प० ४४ | सूत्रे लिङ्गवच ० प० ७३ |
| राज्ञो जातावेव ॰ 4.1.137 | शरः खयो द्वे ० 8.4.47 | सूर्यागस्तययोश ० 6.4.149 |
| रीगृत्वत इति व ० 7.4.90 | शाकपार्थिवादी ० 2.1.60 | सूर्याद्देवताय • 4.1.48 |
| रूप-रात्रि-रथन ॰ 8.2.68 | शीलि-कामि-भक्ष o 3.2.1 | स्त्री-नपुंसकय ० 8.1.12 |
| | शुनः सम्प्रसार ० 5.1.2 | स्त्रीप्रत्यये ० प० 26 |
| <i>-</i> ਲ - | शे तृम्फादीनां ० 7.1.59 | स्थाघ्वोरित्त् ॰ 6.1.50 |
| लक्षणप्रतिपदोक ० प० 113 | शैषिकेष्विति व ० 1.1.75 | स्पृशमृशकृषतृप ० 3.1.44 |
| लक्षणान्तरेण प ० प० ४५ | रितपा शपानुबन ० प० 130 | स्वरभिन्नस्य प ० प० ४९ |
| लक्ष्ये लक्षणं सक् ० प० 119 | श्रुतानुमितयोः ० प० 112 | स्वरविधौ व्यञ् ० प० ७९ |
| लगकारेकाररफा ० 4 4.129 | श्रु-यजि-स्तुभ ० 3.3.94 | - ह - |
| लादेशेषु वासरू ० प० 69 लुग्विकरणालुग् ० प० 90 | श्वशुरस्योकारा ० 4.1.68 | हनो वा यदु वधश्च ० 3.1.97 |
| लृति सवर्णे लु ॰ 6.1.101 | - स - | हल्स्वरप्राप्तं ० प० ८० |
| लोम्नोऽपत्येषु ० 4.1.85 | • | हितयोगे च 2.3.13 |
| • | संज्ञापूर्वकवि ० प० ९३ | हिमारण्ययोर्मह ० 4.1.49 |
| <i>-</i> व <i>-</i> | संज्ञाविधौ प्र ० ५० २७ | |
| वर्णात्कारः 3.3.108 | संपुंकानां सो ० 8.3.5 | |
| वर्णादा ङ्गं बलीयो ० प० ५५ | सकृद्गतौ विप्र ० प० ४० | |
| वर्णाश्रये नास ० प० २१ | सङ्ख्यापूर्वं ० 2.4.29 | |
| वसेर३यर्थस्य ॰ 1.4.48 | सन्निपातलक्षणो ० प० ८५ | |
| वसेस्तव्यत्कर् ० 3.1.96 | सन्नियोगशिष्टा ० प० ८६ | |
| वा नपुंसकानाम् ० 8.2.8 | समानान्ययोश्चे ० 3.2.60 | |
| वा नामधेयस्य व ० 1.1.73 | समासान्तविधिरन ० प० ८४ | |
| विकरणेभ्यो निय ० प० ४१ | समाहारे चायमिष ० 2.1.20 | |
| विकारे स्नेहे तैलच् 5.2.29 | सम्पदादिभ्यः क ॰ 3.3.94 | |
| विधिनियमसम्भवे ० प० 108 | सम्प्रसारणं तद् ० प० 127 | |
| विधौ परिभाषोपत ० प० 101 | सम्राजः क्षत्र ॰ 4.1.151 | |
| विभक्तौ लिङ्गव ० ५०७२ | सर्वजनाट् ठ ञ् ० 5.1.9 | |
| विरूपाणामपि सम ० 1.2.64 | सर्वतोऽक्तिन्न ॰ 4.1.45 | |
| विहायसो विह च 3.2.38 | सर्वनाम्नो वृत ० | |
| वुग्युटावुवङ् ० 6.4.22 | सर्वप्रातिपदिक ० 3.1.11 | |
| वृद्धाचेति व ० 4.2.39 | सर्वविधिभ्यो ल ० प० ९९ | |
| वृद्धौत्त्वत ० 7.1.73 | सर्वे विधयश्छन्दिस ० प० ३५ | |
| व्यपदेशिवदेकस् ० प० ३० | सर्वो द्वन्द्वो विभाषयै ० प० ३४ | |
| व्यपदेशिवद्भाव ० प० 32 | सहचरितासहचरि ० प० 111 | |
| व्यवस्थितविभाष ० प० 107 | सहायाद् वा 5.1.132 | |
| व्याख्यानतो वि ० प० 1 | साधुकारिणि च 3.2.78 | |

| | | | ı | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------------|------------|-----------------------|---|---|-----|-----|----|------------------|---|---|---|---|---|--------|---|---|---|----|---|-------|
| V O W | | Simple vowels | | इ | उ (| ण् | ऋ | ल क् | | | | | | | | | | | | |
| E L S | Diphthongs | | ए | ओ | ভূ |) ऐ | ओ | चि | | | | | | | | | | | | |
| | | ह + Semivowels | ह | य | व | र | ट् | । ठुँ (ण् | | | | | | | | | | | | |
| С | S O | Class 5 (= Nasals) | ञ | म | ङ | ण | न | म् | | | | | | | | | | | | |
| O N | F T | Class 4 | झ | भ | ञ् | घ | ढ | ध (ष् | | | | | | | | | | | | |
| S O N | | Class3 | ज | ब | ग | ड | द | হা | | | | | | | | | | | | |
| A N T | Н | Class2 | ख | फ | छ | ठ | थ | | | | | | | | | | | | | |
| S | A R | R | R | R | R | | R | R | R | R | R | R | R | Class1 | च | 5 | त | व् | क | प (य) |
| | | Sibilants + ह | श | ष | स | र् | ह | (<u>&</u>) | | | | | | | | | | | | |

Visit www.arshaavinash.in

Website for free E-books on Vedanta and Sanskrit

All the E-books available on the website can be downloaded FREE!

PUJYA SWAMI DAYANANDA SARASWATI- A BRIEF BIOGRAPHY BY N. AVINASHILINGAM. It is available in English, Tamil, Hindi and Portuguese.

SWAMI PARAMARTHANANDA'S TRANSCRIBED CLASS NOTES: Gita (3329 pages), Isavasya Upanisad, Kenopanisad, Mundaka Upanisad, Mandukya Upanisad with karika, Aitareya Upanisad, Prasna Upanisad, Brihadarnyaka Upanisad (1190 pages), Brahma Sutra (1486 pages), Tattva Bodha, Atma Bodha, Vivekachudamani (2038 pages), Panchadasi, Jayanteya Gita, Naishkarmya Siddhi, Dakshinamurthy Stotram, Gayatri Mantram, Jiva Yatra, Manisha Panchakam, Upadesha Saara, Saddarsanam, Drg Drsya Viveka, Dhanyastakam, etc.

BRNI MEDHA MICHIKA'S BOOKS ON SANSKRIT GRAMMAR: Dhatukosah, Astadhyayi, Enjoyable Sanskrit Grammar-Basic Structure of the language, Phonetics & Sandhi, Derivatives (Pancavrattayah), Study Guide to Panini Sutras, etc.

There are many more books and articles on Yoga, Upasana, Holy chants, Indian culture and Spirituality.



Arsha Avinash Foundation 104 Third Street, Tatabad, Coimbatore 641012, India Phone: +91 9487373635

> E mail: arshaavinash@gmail.com www.arshaavinash.in